फीवर 104°F

सुरभि सिंघल

PUSTAK SANGRAHALAYA

FOR COMICS, NOVELS AND BOOKS REQUEST

join @comics4nostalgia @pustaksangrahalaya

फीवर 104° F

(उपन्यास)

फीवर 104° F

सुरभि सिंघल

हिन्द युग
hindyugm.com
BLUE

ISBN : 978-93-84419-86-8

प्रकाशक :
हिन्द-युग्म
201 बी, पॉकेट ए, मयूर विहार फ़ेस-2, दिल्ली-110091
मो.- 9873734046, 9968755908

कला-निर्देशन : विजेन्द्र एस विज

पहला संस्करण : 2017

© सुरभि सिंघल

Fever 104° F
(A novel by *Surbhi Singhal*)

Published By
Hind Yugm
201 B, Pocket A, Mayur Vihar Phase 2, Delhi-110091
Mob : 9873734046, 9968755908
Email : sampadak@hindyugm.com
Website : www.hindyugm.com

First Edition : 2017

कुछ भूली-बिसरी, धूल चढ़ी यादों के नाम
जिन्होंने इस कहानी को
पन्नों तक आने का रास्ता दिया

विशेष आभार

मेरे इस सपने को लाकर सच में मेरे हाथ में पकड़ा देने वाली, इसके हरएक पन्ने की साक्षी मेरी उस प्रेरणा के लिए आभार, जिसने हर कदम पर ऊर्जा बनकर मुझे सहायता दी। मेरे दोस्त जो मेरी इस कहानी का हिस्सा बने, जिनके बिना कहानी अधूरी होती। मेरे पिता जिनसे हिम्मत मुझे विरासत में मिली है, जो इसके लिए भी जरूरी रही। मेरे वो सभी सहपाठी जिनको मैंने इस कहानी में उनसे पूछे बिना लिया हुआ है। मेरी बचपन की मित्र जिससे मुझे हमेशा इसे आगे ले जाने का भरोसा मिला। मेरे वो रूममेट जिन्होंने मेरे साथ के तीन साल के सफर में ताउम्र के लिए मुझे यादें दे दीं। मेरे ग्रेजुएशन की मित्रमंडली जिसने कई बार मेरा हाथ तब पकड़ा, जब मुझे उसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी। मेरी बड़ी बहन कहूँ या सीनियर जिससे संबंधित दृश्य मैं इसमें उसकी बिना इजाजत ले रही हूँ, क्योंकि अब वो इस दुनिया में नहीं है... और एक बार फिर से अपनी उस प्रेरणा को मैं ये समर्पित करती हूँ, जिसके बलबूते मैंने इसके हर पन्ने की सीढ़ी को चढ़ा है।

प्रस्तावना

मुझे नहीं पता कि इसके बाद मेरी जिंदगी मेरा कमबैक वापस उस होस्टल में कैसे करेगी, मुझे नहीं पता कि इसके बाद की आने वाली एक साल की भी जिंदगी मेरे लिए वहाँ कैसी होगी। मैं बस जानती हूँ तो सिर्फ इतना कि बीते दो साल यादगार बने तो आगे भी वही होगा। हाँ, यादगार, पर इन्हें सिर्फ खुशनुमा या फिर सिर्फ दुखभरे साल नहीं कहा जा सकता। खिचड़ी में तेज/कम हो जाने वाले नमक का हमारे पास कोई न कोई सोर्स है, इसलिए मेरी ये लाइफ भी एक खिचड़ी जैसी है, जिसमें हर चीज आ रही है- सब्जी का स्वाद भी, तेज नमक की कड़वाहट भी, घी की खुशबू भी और दाल की जरूरत भी। ये कहानी है एक ऐसे ही मिले-जुले कॉम्बो की, जिसमें कभी गुदगुदाहट तो कभी आँसुओं का कोई गहरा-सा बाथटब है। आते-जाते हरएक कैरेक्टर की अपनी कुछ जरूरतें, कुछ ख्वाहिशें और कुछ अपनी खासियतें हैं। पल गम के रहे या खुशी के, पर एक बात तो पक्की है कि वहाँ उन पलों को वापस पाने के लिए मैं मरना भी पसंद करूँगी और ये मौत मेरा अपना प्यार होगी। अगर जिंदगी मुझे मौका दे, तो मेरे लिए वापस अपना ब्रेजुएशन जी पाना एक सपने जैसा होगा। जिंदगी और मौत के बीच का सबसे हसीन सपना।

पंजाबी फीवर

पता नहीं, अलार्म था या दिल की जोरों वाली घंटी, तभी तो इतना तेज बजी कि हम तीनों को ही हिला के रख दिया। सबसे देर से मैं ही उठी, क्योंकि मैं तो निद्रालोक के दर्शन को ही ब्रह्म मुहूर्त में गई थी। ज्यों ही मेरी आँख खुली, देखा कि हमारे अलार्म गला फाड़-फाड़कर पाँच बजने का इशारा कर रहे थे। वैसे, हम भी बिना ज्यादा परेशान किए उठ गए थे, जिसमें सबसे लेटलतीफ मैं ही रही थी। आसमान के तारे अभी तक अपना काम खत्म करके गए नहीं थे और हमारी ड्यूटी शुरू भी हो गई थी।

मैं, गीतू और नंदा, तीनों ही बिना कुछ कहे अपनी-अपनी बाल्टियाँ उठाकर चल पड़े, जिनमें नहाने का बाकी जरूरी सामान था। उन्हें भरकर एक के बाद एक, गिनकर पूरे तीन गलियारों को पार करते हुए, हवा की सनसनाहट के अनुकूल चलते-चलते हम पहुँचे थे उस डोर के बाहर, जिसके अंदर इतने सारे बाथरूम थे। इसका अंदाजा उस दरवाजे को देखकर तो कोई नहीं लगा सकता कि उसमें इतने बड़े-बड़े, इतने सारे बाथरूम भी हो सकते हैं। अँधेरे के तो वहाँ के क्या कहने, पर अगर उस टाइम वहाँ की लाइट चली जाए न, तो हार्ट अटैक से मेरी मौत ही हो जाए वहाँ। उस जगह की exortism part 2 की हिस्ट्री हमने खुद से अंदाजा लगा ली थी। कुल मिलाकर, अकेले वहाँ जाने का क्या कहें, हमें तो साथ में भी इतना डर बस बचपन में भूतों की कहानियाँ सुनकर और मूवी देखकर ही लगा था। सबसे मजे की बात तो ये रही कि अभी तक हम तीनों ने आपस में एक शब्द भी नहीं बोला था। मैं तो इतनी अलसायी-सी थी कि आँखें भी ठीक से नहीं खुल पाई थीं अभी तक। ये तो अच्छी ही था की बोलना तो दूर, हमने एक-दूसरे को नजर भरकर देखा तक नहीं था। और ये बात कहीं न कहीं अच्छी इसलिए थी, क्योंकि देखते तो शायद चीख पड़ते, ऐसी हालत हुई थी उस वक्त डर के मारे दिलों की।

सफेद रंग की खड़िया से पुती दीवारें और लगभग एक ही साइज की ट्यूबलाइट, दो बाथरूमों के बीच एक इस हिसाब से लगाई गई थी कि दोनों बाथरूम को बराबर एक साथ कवर कर ले। डिजाइन के एक ही कतार में बने एक के बाद एक बाथरूम थे, जिनमें वन-बाई-वन हम तीनों साइड-साइड में घुस गए थे और इस बात का इकलौता सब्र मन में रखकर नहा लिए थे फटाफट कि चलो, अकेले नहीं हैं यहाँ आज हम, वरना क्या होता, कैसे नहाते। ये देखकर भी हम जैसे अंदर तक हिल गए थे कि आपस में बात करने पर वहाँ आवाज गूँजती थी, जैसे कहीं कोई और तो नहीं बोल रहा हमारी आवाज निकालकर। मैंने जो अंदाजा अब तक लगाया, वो ये था कि उससे भयानक दृश्य कोई दूसरा उस हॉस्टल में कोई हो ही नहीं सकता था। इसी उपलक्ष में 5 बजकर 20 मिनट पर नहाकर हम बहुत खुश थे। गीतू और नंदा मेरी पहली-पहली रूममेट थीं, जो मेरे इस हॉस्टल में मेरे साथ ही फ्रेशर आई थीं। गीतू हद वाली सीरियस लड़की होने के साथ-साथ

मेरी स्कूलमेट भी रही थी, जबकि नंदा रोती-सी रहने वाली, अपने में परेशान पाई थी मैंने अभी तक के इस एक दिन के सफर में।

"अब से रोज ऐसे ही जल्दी नहा लिया करेंगे।" कमरे में लौटते हुए पहले शब्द बोली नंदा।

"हाँ यार, सही बात है, न भीड़ का चक्कर, न कुछ। बताओ, यहाँ तो स्साले नेस्ती लोग अभी तक उठे भी नहीं, क्या प्रेयर बिना नहाए करते हैं ये हॉस्टल वाले।" गीतू बोली।

"ये तो मैं भी सोच रही, यहाँ प्रेयर को सीरियसली नहीं लिया जाता क्या।" मैंने भी बात छौंकी।

पर अभी तक हॉस्टल में हलचल हुई क्यों नहीं, सोचकर हम तीनों ही एक से बढ़कर एक, ज्यादा परेशान थे। बचे हुए कुछ मिनटों में हमारे पास करने के नाम पर उस कमरे की सफाई थी, जहाँ हम रहते थे। कमरा नंबर 22 के भी आज दिन सुधर रहे थे, क्योंकि हमने मन बना लिया था, वहाँ दीवारों पर लगे उन पोस्टरों को फाड़कर वहाँ से दीवारें क्लीन करने का, जिन्हें पिछले कुछ सालों में यहाँ रही लड़कियों ने गंदा किया था। दीवारों पर कुछ चित्रकारी थी, जो आमतौर पर लड़कियों के कमरों में होती ही है, जैसे- हार्ट शेप की कलाकारी, कुछ अलग-अलग कलर की स्माइली, कुछ कोटेशन, कुछ तितलियाँ रंग-बिरंगी, कुछ आई लव यू सुमित, अमित, अंकित जैसे स्लोगन, कुछ बर्थडे स्लोगंस, कुछ क्रेप्स, कुछ बार्बी, कुछ परियाँ कुछ हैंडमेड, कुछ मार्किट मेड अल्फाबेट्स, कुछ ब्ला-ब्ला-ब्ला। सब हटाकर नए सिरे से कमरे को बना दिया हमने इतनी देर में ही और घड़ी के काँटे देखे तो 5 बजकर 50 मिनट का समय बता रहे थे।

"ओह्ह्ह्ह थक गए यार बहुत।" नंदा बैठते हुए बोली।

"पर थैंक गॉड, अब सारा कम हो चुका है। टाइम का सही इस्तेमाल किया हमने।" मैंने खुश होकर कहा।

"चलते हैं अब ग्राउंड में यार, क्या पता सब आ भी गए हों, यहाँ से कुछ दिखता भी तो नहीं ग्राउंड का।" गीतू बोली, जो काफी देर से नीचे जाने को परेशान दिख रही थी।

"जा बाहर झाँक के आ पहले।" मैंने कहा।

"मैं तो नहीं जा रही अकेले, तुम दोनों भी चलो। वही बैठेंगे, अब 10 ही मिनट तो बचे हैं बस अब।" गीतू ने जवाब दिया।

बाहर निकले हम, तो तारे अब अपने देश जा चुके थे वहाँ के आसमान की ड्यूटी पूरी करके और उजाला अब होने को था बस। सूरज की आज की नई शिफ्ट आने वाली थी और हम एक-एक कदम सीढ़ियों से नीचे ग्राउंड की तरफ बढ़ा रहे थे।

सीढ़ियाँ पार करके मेस के रास्ते होते हुए सँकरे गलियारे को पार करके वाटर कूलर की टेब ऑन करके दो घूँट पानी गले से उतारते हुए हमारे कदम बढ़ गए थे ग्राउंड की ओर, जहाँ पहुँचकर नजारा कुछ-कुछ तो चौंका देने वाला था ही, क्योंकि अभी तक कोई भी वहाँ नहीं आया था। यह देखकर अब गीतू वाली हालत मेरी और नंदा की भी होने लगी थी।

"बड़ी अजीब सी बात है।" मैं बुदबुदाई।

हम इंतजार करते रहे, करते रहे, करते ही रहे, बिना कुछ बोले, बिना कुछ देखे। बढ़ता टाइम और चढ़ता सूरज फिर एक बार रात वाले तारों की तरह जीभ दिखाने लग गया और पारा अपने चरम पर पहुँचकर बार-बार फिर से डूबने-चढ़ने जैसा, लुकाछिपी का खेल खेलने लगा।

मैं अब कुछ ही देर में मिलने वाली, अपने लिए प्यारे-प्यारे सुवचन रूपी गालियों की बौछार

से परिचित होने लगी थी, जो मुझे नंदा और गीतू के मुँह से मिलने वाली थीं।

"पता नहीं यारो, हम कबसे इंतजार कर रहे हैं। क्या हमसे कोई गलती हुई है?" मैंने बोला, तो जैसे आग पर कपूर डाल दिया हो किसी ने।

"क्यों न हम चलकर नोटिस-बोर्ड देखें, शायद कुछ गलती रही है।" मैंने हिम्मत-सी करके फिर कहा, तो नंदा बिना कुछ कहे चल दी उठकर। उसके पीछे-पीछे गीतू थी और सबसे पीछे थी मैं, जिसके साथ अपराधियों जैसा व्यवहार हो रहा था।

नोटिस-बोर्ड तक पहुँचते-पहुँचते हम तीनों को ये तो यकीन हो ही चला था कि मूर्ख तो हम बन ही चुके हैं, बस मुहर लगनी बाकी थी, जो बाहर जाकर नोटिस-बोर्ड पर लगे फरमान को फिर से पढ़कर पूरी हो गई थी। उस पर साफ-साफ शब्दों में प्रेयर टाइम 6:00 pm लिखा था। सुबह का उजाला अब हल्की-हल्की धूप और चमक के साथ आसमान के माथे पर चढ़ आया था और फर्श की लाल-लाल धब्बेनुमा ईंटें आसमान के उजरे रंग से मिलकर आपस में नारंगी लालपन लिए कोई शेड बना रही थीं।

"जिस दिन अक्ल बाँट रहे थे भगवान मैं कहाँ थी, यही सोच रहे हो ना?" मैंने गेट खोलते हुए कहा।

उम्मीद तो नहीं थी, पर हँस पड़ी नंदा।

"कैसे नहाई मैं उस अँधेरे भूतिया बाथरूम में उस टाइम में, ये मुझे ही पता है।" गीतू ने दो टूक कहा।

"चल कोई बात नहीं, सबसे होता है... पर कुछ भी कहो आज बन बंदर ही गया यार," कहकर नंदा जोर-जोर से हँसने लगी, तो गीतू भी मुस्करा उठी।

'थैंक गॉड' – मैंने सोचा।

देर तक कमरे में आकर हँसते रहे हम इस वादे के साथ कि इस बारे में कभी किसी को नहीं बताएँगे। कुछ राज ऐसे होते हैं, जो दोस्ती के अध्याय को एक पूर्णविराम के साथ और भी दमदार बनाते हुए अगला वाक्य शुरू करते हैं और इसी की उम्मीद अब मुझे थी।

उठापटक, खेलकूद, गाली-गलौज और गॉसिप ने कब लेटकर झपकी लगवा दी, इसका पता ठीक 7 बजकर 55 मिनट पर चला, जिसके पाँच मिनट बाद ही हमारी कॉलेज की बस जानी थी।

"उठ बे," नंदा ने मुझे पीछे से इतनी जोर की लात मारी थी कि झल्ला पड़ी मैं।

"क्या हुआ, कौन मर गया?" मैंने झल्लाहट भरे स्वर में कहा।

"बस जाने वाली है कॉलेज की, मर तो अभी तक कोई नहीं गया, मरेगा तो वो भी तुझे पता लग ही जाएगा।" नंदा गुर्राने लगी।

गीतू मुँह धोकर आ रही थी और मैंने घड़ी की व्यस्तता को बेवकूफी से बदकिस्मती का नाम दे दिया, क्योंकि अब वक्त की नजाकत को समझते हुए मैं कॉलेज के पहले दिन उतना सज-धजकर नहीं जा सकती थी, जितना कि जाना चाहती थी।

"चलो भैया तैयार हैं हम और क्या।" मैंने अफसोस के साथ कहा।

"मेकअप किट ले चल बस में, पोत लेना थोड़ा-बहुत जितना हो पाए करमहीन।" गीतू ने मेरे दिल की कसमसाहट को समझते हुए कहा।

"अरे न रे पगलो, ऐसा नहीं है। मैं तो वैसे ही सिंप्लिसिटी में यकीन रखती हूँ।" मैंने मन ही

मन कसमसाते हुए अंगूर खट्टे हैं वाले भावों को छुपाया।

"ओह्हह्हहो क्या बात है, सिंपल ही रहना चाहिए यार, तभी अच्छे लगते हैं।" नंदा बोली, जो लगातार अपने फेस पाउडर को डार्क कर रही थी।

"रियली!" गीतू आँखें तरेरकर ऐसे बोली, तो अब झेंपने की बारी नंदा की थी।

"हुँह, सरक ले अब।" मैं और गीतू बाहर आते ही बोले, तो जल्दी से निकल आई वह भी।

हॉस्टल से बस की दूरी 100 मीटर होगी, जहाँ आज बस 10 मिनट लेट आने की सूचना पर हमें राहत दी गई थी और वार्डन ने जाना परमिट कर दिया था। ...पर ये पहले दिन की माफी है, इसके बाद लेट होने पर बाहर नहीं जाने दिया जाएगा का अल्टीमेटम साथ ही बाय वन-गेट वन फ्री की तरह परोसकर हमें मिला, जिसने ये भी साफ कर दिया था कि यहाँ किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा। हॉस्टल के फ्रंट गेट से दो गलियाँ सामने और साइड में जाती थीं। सामने की तरफ इशारा करके गार्ड ने जाने को कहा और हमें हैरानी हुई इस पर कि जब तक हम सामने से मुड़ नहीं गए, वह हमें घूरता ही रहा ये देखने को कि हम बस पर ही जा रहे हैं या नहीं। "बड़ा कर्मठ और मेहनती बुढ़ऊ है अपना ये वाला गार्ड तो," कहकर नंदा ठहाके लगाकर हँस पड़ी तो मैं भी खुद को दाँत दिखाने से रोक नहीं पाई। बस तक पहुँचने के जस्ट पहले एक ईजी डे पड़ा था, जिसमें मैं ज्यादा नहीं तो अपने बिस्किट-नमकीन-मैंगी का काम और थोड़ा-बहुत शॉपिंग का सुख ले सकती थी। इसलिए ये वो जगह थी, जिसे देखकर मेरी इतनी जान में जान आई मानो मछली को पानी अब नसीब हुआ हो।

गीतू ने ग्रीन कलर का ब्लैक लाइनिंग वाला टॉप और ब्लू जींस पहना था, जो सलमा-सितारों वाला बिलकुल नहीं था पर कोई खास भी नहीं था, जिसे उसने बड़ी ही सफाई के साथ सोबर-सिंपल का नाम दिया था। वहीं दूसरी तरफ नंदा को देखकर कुछ हद तक बेढंगा भी कहा जा सकता था, पर मुझे उससे इससे ज्यादा उम्मीद नहीं थी, इसलिए मुझे उसका ड्रेस देखकर कोई दिक्कत और आश्चर्य नहीं हुआ था। उसने ब्राउन रेड कलर का अपने से भी दुगने ढीले साइज का एक लेगिंग सूट पहना था, जो बहुत ही चटकीला नजर आ रहा था। बस में चढ़ते ही उसे देखकर तीसरे नंबर की सीट वाली लड़कियों का ग्रुप ताली मारकर हँसा था और जिस पर नंदा उन्हें रास्तेभर गालियाँ देती गई थी और हम दोनों उसके पीछे खड़े बॉडीगार्ड जैसे उसे संभालते गए थे, क्योंकि हमारी छठी इंद्री ने उसकी पहले ही दिन बस में किसी से जूत बज जाने का संकेत हमें दे दिया था, जो कम से कम हम दोनों तो नहीं चाहते थे।

"क्यों रोका, आज बताकर रहती मैं उन कमीनियों को...।" बस से उतरकर भी नंदा बिदकी जा रही थी।

"अबे यार नंदा, तू कुछ पागल-वागल है क्या?" मैंने कहा।

"समझा इसे कुछ, अक्ल दे इसे," चित्रा ने मुझसे कहा हाथ झटकते हुए, तो मैं सीना तानकर चौड़ी हुई।

"वो सीनियर भी हो सकते थे न।" मैंने समझाते हुए कहा।

"तेरा बदला तो लेके रहेंगे, हमें कम समझ रही क्या तू?" गीतू बोली तो खुश हो गई नंदा।

"ठीक फिर," कुछ सोचकर मुस्कराई नंदा, तो सब्र आया हमें भी।

गीतू ने आँखे मटकाई और मन ही मन नंदा के लुक को देखकर जोर-जोर से हँस पड़े हम दोनों।

"क्या सोच रहे हो, चलें क्या?" नंदा ने जैसे ख्यालों से बाहर खींचा मुझे।

अंदर जाने जितनी ही देर रही बस, हम तीनों तो चल पड़े थे बाकी सबकी ही तरह। हम तीनों के रास्ते अलग-अलग थे अब यहाँ से- उस ओर बिल्डिंग की तरफ जहाँ-जहाँ के हमारे ब्लॉक्स थे। मेरे दिमाग की नसें अंदर से ब्लाक हो जाने वाली हालत में होती जा रही थीं और जरा-सी सहानुभूति दिखाते ही आँसू बस टपक ही पड़ने थे। वजह मेरा पहली बार कॉलेज जाना या अकेले होने का डर नहीं, बल्कि कुछ और थी। वजह थी इतनी सारी लड़कियों को एक साथ अपने चारों तरफ देखना।

देखा जाए तो हालाँकि मैं खुद एक लड़की हूँ, पर मैंने अपनी जिंदगी में एक साथ इतनी लड़कियाँ नहीं देखी थीं। जाहिर है, मैं इसलिए असहज-सा महसूस कर रही थी। यहाँ तो जिस ओर नजर जाए, बिस्मिल्लाह-बिस्मिल्लाह वाली कहावत फिट हो रही थी। यहाँ के ढंग अजीब थे और तौर-तरीके निराले। सब अपनी ही धुन में यहाँ से वहाँ भागे जा रहे थे। अब अगर इसी सब में मैं यहाँ के रूल्स की बात कर दूँ, तो मामला और खराब हो जाएगा ये तो पक्का है। यहाँ के हिसाब इतने चलते पुर्जे थे कि कोई बाहर वाला तो जब चाहे अंदर आ सकता था बस विजिटर आईडी या परमिशन हो, लेकिन कोई भी अंदर वाला बाहर नहीं जा सकता था।

'ओ तेरी की, ऐसा होता है क्या कॉलेज' – मैं मन ही मन बड़बड़ाई।

'इतनी सख्ती तो स्टूडेंट्स पर स्कूल में भी न हो, ये तो मनहूस कॉलेज है। एक तो यहाँ लड़के नहीं पढ़ते, ऊपर से ये हाल कि बाहर न जाने देंगे ये। खत्म है अब तो जिंदगी, अब जीकर क्या करूँगी मैं...' – खुद ही बड़बड़ाकर चुप हो गई मैं।

टक्क से कुछ टूट जाने की आवाज आई, जो दिखाई किसी को नहीं दिया। अब मुझे तो पता था कि मेरा दिल ही है ये, जो कॉलेज के जाने क्या-क्या अरमान सजाए था और हो गया ये क्या-क्या। अब मैं जेल में कैद उस पंछी के जैसे फड़फड़ा रही थी, जो उम्मीदें तो बड़े-से आसमान में पंख पसारकर उड़ने की करे, लेकिन हाथ में आखिर में बस पिंजरा ही आए।

"चलो प्रेयर शुरू होने वाली है," अचानक किसी ने कहकर जैसे गहरी नींद से जगाया, तो कूद-सा पड़ी मैं। रेगिस्तान की रेत-सी उड़ती हुई आई वो और कहकर उड़ती-सी जाने कहाँ चली गई और मैं समझ तक नहीं पाई कि ये हुआ क्या।

'डिसिप्लिन मेंटर होगी शायद कॉलेज की' – मैंने दिमाग लगाया।

उसके कहे अनुसार इतने में कोई क्लासरूम या हॉल ढूँढ़ ही रही थी कि एक और प्रोफेसर आकर मुझे टोक गई, जिससे मैं अब परेशान हो चुकी थी।

"चलो बच्चे फटाफट हॉल में, पास ही में है, यहाँ यूँ ही खड़े रहना अलाउड नहीं है। आप ऐसे मत घूमिए, जाइए यहाँ से हॉल में या अपनी क्लास में...।" वे मंत्र-सा पढ़ रही थीं, जिसके उत्तर में मैंने जाकर पूछ ही लिया।

"कहाँ है हॉल, मैडम?" मैंने कहा तो मेरा ऊपर से नीचे तक अवलोकन किया पहले उन्होंने।

मोटी-सी दिखने वाली सुंदर महिला रहीं वो, जिन्होंने बड़ी ही शालीनता से हॉल का रास्ता मुझे बताया।

"फ्रेशर हो शायद।" उन्होंने जाते हुए पीछे मुड़कर टोका मुझे।

"जी मैडम" – मैंने बस इतना कहकर वहाँ से रपक लेना सबसे सही समझा और किया भी

वही ही।

"अजीब असमंजस है भई, बुरे फँसे यहाँ तो," कहकर मैंने ईश्वर को याद किया।

और आखिरकार वो जगह दिख गई थी, जिसके शीशे के पुश-पुल दरवाजे के ऊपर गोल्डन कलर की बड़ी-सी शाइनी नेमप्लेट पर रेड ब्राउन कलर से लिखा था- हॉल नंबर 2। इससे पहले कि कोई और टोक मारे, चल ले अंदर पाशना... मेरे दिमाग ने शरीर को धक्का मारा और घुस गई मैं। अंदर की बेतरतीबी तो देखते ही होश फाख्ता कर देने वाली थी।

"अबे प्रेयर है या किसी आतंकवादी के द्वारा बम लगाए जाने की सूचना का सीधा प्रसारण!" अचानक ही खुद से बोल पड़ी मैं, तो ये देखकर झेंप छूट गई के आसपास खड़ी लड़किया हँस पड़ी थीं। अगले ही पल लगा कि चलो अच्छा है, कोई तो हँसा मेरी बात से।

"गुड मॉर्निंग फ्रेशर्स एंड आवर ओल्ड स्टूडेंट्स, देयर इज एन इंपोर्टेंट अनाउंसमेंट, लिसन प्लीज।" माइक के शोर ने तभी ध्यान अपनी ओर खींच लिया।

"फर्स्ट ऑफ आल..." अचानक आवाज बदली, माइक किन्हीं और हाथों में गया हो जैसे।

"हम अपने कॉलेज परिसर में आपका स्वागत और अभिनंदन करते है। बाहर से आए सभी नए और पुराने स्टूडेंट्स को कॉलेज के इस नए सत्र की शुरुवात पर हार्दिक बधाई।" माइक की आवाज ज्यों-ज्यों और तेज होती जा रही थी, वहाँ मौजूद भीड़ की हलचल भी शांत पड़ती जा रही थी। मैंने ध्यान से उन यूनिफॉर्म और कुछ बिना यूनिफॉर्म वालों को नोटिस किया था, जो लाइन बनवाने में अपना पूरा जी-जान झोंके दे रहे थे।

"यहाँ खड़ी हो जाओ तुम," किसी ने पीछे से कहा, तो बिना मुड़कर देखे उसके कहे अनुसार अपनी जगह से खिसक गई मैं।

"फ्रेशर हो?" उसने पूछा।

"हाँ।" मैंने सूक्ष्म सा जवाब दिया।

"ठीक है," कहकर आगे बढ़ गई वो।

"ओह, यह सब यहाँ रोज-रोज का तो नहीं होगा न, शुरुवाती ड्रामे होंगे न?" मैंने बड़े बेफिक्र अंदाज में अपने पड़ोस में खड़ी एक लड़की से पूछा, जो वहाँ ज्यादातर फ्रेशर्स की तरह ही पंजाबी सूट पहने थी।

"नहीं रे, शुरुवाती नहीं है। रोज होगा, शुरुवाती नहीं है।" एक लोकल लड़की ने बताया, जो पहले से उस कॉलेज में आ रही थी।

'ऐ मालिक तेरे बंदे हम...' जैसे ही बजना शुरू हुआ, हम सब हॉल के प्राणी हाथ जोड़े खड़े हो गए मूर्तिवत। यह प्रॉसेस 10-12 मिनट चली, जिसके पूरे होने के साथ-साथ सभी अपनी अपनी क्लासेज की तरफ चल पड़े और मैं रिसेप्शन की तरफ।

"बीएससी नॉन मेडिकल 1st इयर का क्लासरूम किधर है सर?" मैंने पूछा, तो चश्मा लगाए रिसेप्शन पर बैठे वो सर चश्मा नीचे करके देखने लगे।

"बताइए सर।" मैंने फिर रिपीट किया। 'कब से घूर रहा ये, बोल नहीं रहा है कुछ। ठरकी है शायद, बताऊँगी इसे भी किसी दिन,' सोच रही थी मैं।

"आगे से लेफ्ट," कहकर वह अपने काम में लग गया।

'हुँह, कैसा सड़ू आदमी है बताओ,' मैंने सोचा और चल पड़ी आगे के गलियारे की तरफ।

गलियारे जो इतने तंग और कंजस्टेड थे कि फँसा एक बंदा भी साइड ले-लेकर निकल पा

रहा था। कुल मिलाकर दिल्ली के चाँदनी चौक जैसा जाम था ये, जो यहाँ के गलियारों में रोज सुबह आफ्टर प्रेयर लगा करता था। बाहर निकलने वाले हालत खराब कॉरिडोर में चार लाइनें बन गई थीं, दो आने वालों की और दो जाने वालों की। हर तंग लाइन को संभालने वाला वो कॉरिडोर जैसे चिल्ला-चिल्ला कर अपने को जल्दी आजाद कर देने का रहम माँग रहा था। उसे पार करते करते ही मुझे मिल गया था अपनी क्लास तक पहुँचने की मंजिल का रास्ता, जहाँ से लेफ्ट लेकर मुझे मेरी वो मंजिल, वो कमरा, दिखाई दे रही थी जिसमें मुझे अपने आने वाले तीन साल गुजारने थे।

"ये सीट तो फ्री है न?" अचानक एक लड़की ने पूछा जिसके साथ एक काली लड़की और थी।

मेरे जवाब से पहले ही बैठ गई वो दोनों, तो थोड़ी हैरत हुई मुझे।

"फिर पूछा ही क्यों?" मैंने बेधड़क कह दिया।

"तो क्या यहाँ कोई बैठा है तुम्हारे साथ? वैसे तुम्हारा लटका-सा मुँह देखकर लगता तो नहीं।" उनमें से एक ने कहा, जो गोरी मेम जैसी थी एकदम।

गोरी से याद आया, उन दोनों का डिस्क्रिप्शन... देखने में तो लँगोटिया यार लग रही थीं, पर थीं एकदम उड़द-चावल कॉम्बो। एक सीरियल देखा करती थी अपने 11th स्टैंडर्ड में- 'विदाई'। उसकी गोरी-काली बहनों- साधना-रागिनी की जोड़ी सामने आ गई थी मेरे। एक तो उड़ती-इठलाती परी जैसी प्यारी और खूबसूरत लेकिन सरदर्द एक नंबर की, क्योंकि जबसे मैंने देखा, वो एक बार भी चुप नहीं दिखी मुझे।

"तुम्हारी ये फ्रेंड तो इतनी बकवास नहीं करती न जितनी कि तुम।" मैंने उसकी बेइज्जती करने के तरीके से कहा, जिसकी वजह से उसकी काली दोस्त के चेहरे पर उभरी व्यंग्यमिश्रित मुस्कान मैं साफ देख सकती थी।

"इसको बोलना ही नहीं आता गूँगी है ये..." वह इतना तेजी में बोलकर हँसने लगी थी वो भी बिना मेरी बात का बुरा माने कि आश्चर्य हुआ मुझे।

"हॉस्टलर है न?" उसने पूछा मुझसे।

"गेस पावर बड़ी कमाल की है तुम्हारी।" मैंने फिर हैरान होकर कहा।

"तुम्हारी नहीं तेरी, तू क्लासमेट है मेरी समझी, ये फॉर्मेलिटी नहीं चलेगी... और हाँ, तेरी शक्ल पे लिखा है साफ-साफ कि हॉस्टलर है तू।" वह बोली तो हैरान हुई मैं।

"तुझे पता है, मेरा स्कूल बहुत मस्त था। हम दोनों बहुत मिस कर रहे हैं, पर ये भी ठीक ही है। आफ्टरऑल हम अपनी ही मर्जी से तो आए यहाँ।" उसने बताया।

"हम दोनों? पर उसने तो ऐसा कुछ नहीं कहा।" मैंने बीच में उसको स्पीड ब्रेकर की तरह रोका।

"मैं कह तो रही हूँ न, ये कम ही बोलती है।" उसने बताया।

"मौका कहाँ दे रही है तू उसे।" मैंने कहा तो हँस पड़ी वो काली लड़की।

"हाँ, वही तो मैं कबसे कहना चाह रही हूँ।" पहली बार आवाज सुनाई दी उस लड़की की भी।

"थैंक गॉड, तुम बोल सकती हो।" मैंने कहा तो हँसने लगीं वो दोनों ही फिर से और माहौल अब कुछ झरोखे से चमकी हल्की-सी धूप जैसा हो गया था।

"हमें यहाँ इस कॉलेज में संजू लेकर आया एडमिशन कराने, वरना हम तो को-एड में जाना

चाहते थे। उसको इसी गर्ल्स में कराना था हमारा, उसको लगा कि हम लड़के ताड़ेंगे इसलिए...।" गोरी लड़की ने कहा।

"संजू?" मैंने पूछा।

"मेरा bf है, एंड ही इज सो केयरिंग अबाउट मी यार।" गोरी लड़की आहें भरते हुए बोली।

मैंने काली वाली लड़की के चेहरे को देखा ध्यान से। क्या इसका अपना कोई इंटेंशन नहीं है, ये अपने सेल्फ रेस्पेक्ट तक के लिए नहीं बोल रही। क्या इसे वाकई बिलकुल बुरा नहीं लग रहा होगा... ब्ला-ब्ला... सवाल मेरे मन में आते-जाते रहे। साथ ही गोरी लड़की की कभी न बंद होने वाली बक-बक भी, जिनमें उसकी स्कूलिंग से लेकर उसकी चप्पल तक से भी कुछ न कुछ जरूर था, जो उसने बता डाला था बिना ये जाने कि मैं सुनना चाहती भी हूँ या नहीं।

वो लड़की वह नॉनस्टॉप एक्सप्रेस थी, जो कौन-से स्टेशन पर रुकना है ये तक भूल गई हो या फिर वो गाड़ी जिसके ब्रेक बिना किसी रीजन के फेल हो गए हों। मैं बस मुँह फाड़े सुनती जा रही थी, क्योंकि मेरे पास और कोई भी ऑप्शन नहीं था। वो किसी भी सूरत में रुकने को तैयार नहीं थी। मैंने आज तक किसी को इतना स्पीड से बोलते नहीं सुना था। उसकी बातों ने मुझे अपने मायाजाल की सलाखों के पीछे किसी जन्मजात कैदी परिंदे जैसा बंद कर लिया था और अब मेरा सिर फटने को हो रहा था। इसके अपोजिट उसकी वो काले टीके-सी दोस्त एकदम शांत और गंभीर थी, जैसे सारे ठेके अपनी गोरी दोस्त को देकर इत्मीनान से हो, इसलिए भी मैं उसे उस मुलाकात में इससे ज्यादा नहीं जान पाई थी। वैसे भी कहावत है कि घुन्ने के मन में कुछ और आँखों में कुछ और, इसलिए उन पर यकीन जरा कम ही किया जाता है।

"...पर तुम दोनों ने अपना-अपना का नाम नहीं बताया।" मैंने बहुत देर बाद मुश्किलों से उसे रोकते हुए कह ही दिया, तो सन्नाटा-सा पसर गया उस सीट पर।

"अरे हाँ, नाम तो मैंने बताया ही नहीं।" पूरे 10 मिनट की चुप्पी के बाद सिर पर हाथ मारते हुए बोली वो।

"मेरा नाम नीतिका है और इसका नीतू कहते हैं।" वह फटाक से ऐसे बोली, जैसे कहीं उसने देर कर दी तो नीतू न बोल दे अपना नाम खुद से। दोनों के नाम बहुत साधारण-से थे और लगभग एक जैसा ही साउंड करते थे, पर आदतन दोनों थीं कितनी अलग अलग।

"तुमने मेरा नाम भी नहीं पूछा।" मैंने फिर उसकी चलती ट्रेन को रोका।

"हाँ, बता चल फिर।" वह उबासी-सी लेते हुए बोली।

"पाशना।" मैंने कहा।

"ये नाम है क्या तेरा!" वह बोली।

"है तो, क्यों, और क्या सब्जी का नाम लग रहा क्या ये तुम्हें?" मैंने मुँह बनाते हुए कहा।

"सॉरी यार, मुझे नाम पहले पूछना चाहिए था तेरा।" वह बोली तो सुनकर अजीब लगा मुझे पहली बार उससे ये वर्ड सॉरी।

"तो हॉस्टल में खाना कैसा मिलता है तुझे?" उसने पूछा।

"खराब ही होगा इसमें कौन-सी पूछने वाली बात है, मैं भी न...।" खुद ही जवाब भी दे गई वो।

"अच्छा खाना खाने का मन हो तो संडे मेरे घर आजा तू, तेरी पार्टी करा दूँगी मम्मी से कहकर।" उसने ऑफर किया, तो खुश हो गई मैं।

"हाँ ठीक, पर मेरे रूममेट भी साथ आएँगे, ठीक है न?" मैंने नंदा और गीतू की भी बुकिंग बनाई।

प्रोफेसर का अचानक क्लास में आ जाना मेरे अच्छे टाइम का संकेत था, क्योंकि इससे नीतिका की बक-बक बंद हो गई थी।

"गुड मॉर्निंग क्लास, दिस इज संगीता घोष एंड आई एम योर मैथ्स टीचर," कहकर वह गोल चेहरे वाली महिला सीधे पोडियम की तरफ आने लगीं, जो क्लास के पिछले छोर पर यानी हमारी तरफ रखा हुआ था। देखते ही देखते लेक्चर एक के बाद एक आते गए और जाते गए, दिन कब बीता, भूख-प्यास से आत्मा कितनी बार मचली ये बताना अभी थोड़ा मुश्किल है, क्योंकि गिनने तक का टाइम प्रोफेसर्स ने नहीं दिया।

"कुछ ज्यादा ही कर्मठ हैं यहाँ के प्रोफेसर्स, लगता है।" मैंने नीतिका से कहा, जब लास्ट लेक्चर और टाइम 3 बजकर 40 मिनट हुए थे।

"अबे, यहाँ तो ऐसे ही भूखे-प्यासे मार देते हैं।" नीतिका बोली।

"संजू को जरूर सुनाऊँगी... यहाँ क्यों फेंककर गया मुझे, कैसा कॉलेज है ये!" वह फिर बड़बड़ाई जैसे मेरे कहते ही उसकी बैटरी चार्ज हो गई हो, जब से तो चुप थी वरना इस टॉपिक पे।

"अब इस पर भी उस बेचारे को कोसेगी क्या तू?" मैंने कहा।

"बेचारा क्यों समझता है हर कोई उसे, बेचारा नहीं है वो, बहुत तेज है, मैं सीधी।" वह झल्लाकर बोली।

"चल चल रहने दे।" मैंने कहा।

देखते-देखते लेक्चर कब खत्म हुआ इसका पता तब चला, जब फाइनल सायरन बजा छुट्टी का, जिसके बाद कॉलेज बंद हो रहा था। सब अपने-अपने घरों को भागने लगे और पूरे कॉलेज में हमें छोड़कर बस एक ही क्लास और बची थी, वो बीएससी फाइनल ईयर की थी।

वापसी का मंजर ये था कि गीतू और नंदा को आए भी बहुत ज्यादा टाइम नहीं हुआ था, पर खाना दोनों ही खा चुकी थीं। अकेले खाना खाने का अनुभव प्यासे खेत को एक और साल बादलों के इंतजार जैसा रहा, क्योंकि खाना एक तो ठंडा, ऊपर से अकेले। नीचे उतरा ही नहीं, बस उतरा अगर कुछ तो वो था दो बूँद पानी जो आँखों को छोड़कर टेबल पर रखी प्लेट में लुढ़ककर राजमे के रेशे में मिल गया और चाहकर भी अगला निवाला मैं खा नहीं पाई।

हॉस्टल में मैं और मेरे दोनों रूमिज अच्छे से रचने लगे थे अब। लगभग हर चीज, जिसमें से कुछ वक्त के साथ भा गई थीं और कुछ जबरदस्ती भानी पड़ गई थीं दिल को। लेकिन जैसे हर शायर हर अच्छी गजल नहीं कह सकता, वैसे ही कुछ चीजें अब भी थीं, जो हाजमोला डालकर भी हजम नहीं हो रही थीं। उनमें पड़ोस में रहने वाले कुछ ऐसे पड़ोसी जो हमेशा आते-जाते हमें घूरते थे, कुछ प्रोफेसर जैसे कैमिस्ट्री वाली चुड़ैल मैडम आँचल, क्लासरूम में सामने वाली दाई ओर बैठी तीन-चार उन लड़कियों का ग्रुप जिनसे मेरी महाशनि दशा कुछ ठीक नहीं थी वो, कुछ और टीचर्स जो अपना असली रूप असाइनमेंट के टाइम पर ही दिखाते थे, इसके अलावा वाले इरादे टॉप सीक्रेट हैं, बता नहीं सकते।

कब वहाँ आए दिन बीतकर महीना बन गया इसका पता चला तब, जब बेवजह मिलते-मिलते नीतिका, मैं और नीतू अपनी एक महीने की दोस्ती को सेलिब्रेट करने आइसक्रीम पार्लर गए।

"मोटो, आज हम यहाँ आए क्यों हैं, ये पता है तुझे?" नीतिका ने पूछा, जब मेरा पूरा ध्यान चॉको आइसक्रीम की बार पर था।

"म्मम्मम नहीं पता।" मैंने जवाब देकर फिर एक बार अपना ध्यान आइसक्रीम में जुटा दिया।

"इधर देख खाने की सूअर।" वह झल्लाई तो नीतू जोर से हँस पड़ी।

"क्या है, मुझे क्या पता है भला, तुझे खाने की बात पे मौत आ जाती है। अब आज तू लाई, इसलिए आ गई मैं फटाफट बिना सवाल किए।" मैंने सच-सच जवाब दिया।

"आज हमारी फ्रेंडशिप को वन मंथ हुआ है भुलक्कड़।" नीतू बोली।

"तू भी बोली अब, अनपढ़।" मैंने ताना कसा उस पर।

"अब फ्लेवर देखें कौन-सा लेना है।" नीतिका ने आइसक्रीम की तरफ देखते हुए ललचाई नजरों से कहा।

"अब तुझे सूझ गई ठूँसने की, मैं देख रही थी तो ताऊ मर रहा था तेरा?" मैंने कहा।

"ऐसे मत कह ताऊ के बारे में, मेरे ताऊ जी फिट हैं अभी।" वह बोली।

"अच्छा चल, चाचा, अब तो ठीक है?" मैंने पूछा।

"हाँ, वो तो एग्जिस्ट ही नहीं करते, अब ठीक है।" वह चहककर बोली।

"मुझे टूटीफ्रूटी चाहिए।" नीतू की आँखों में टूटीफ्रूटी आइसक्रीम का प्रतिबिंब साफ देखा जा सकता था।

"मुझे चॉकलेट वाली।" मेरी आँखें भी चॉको क्रीम जैसी चॉकलेटी हो गई थीं उसमें डूबकर।

नीतिका ने काफी देर कन्फ्यूज होने के बाद बटर स्कॉच पर हाथ रखा।

मैं सोचते-सोचते अपनी बेरंग वाली हल्की-हल्की रंगीन दुनिया के चॉको ब्राउन रंग में अपनी राहत को महसूस कर रही थी और यहाँ आए एक महीना उस आइसक्रीम के फ्लेवर जितना ही कॉमन लगने लगा था, जिसका पहला बाइट तो डिफरेंट था पर धीरे-धीरे पटरी बैठने लगी थी उससे।

यूँ तो मुझे उस कॉलेज में आए एक मंथ से ज्यादा बीत चुका था, पर जितना टाइम गुजर रहा था, उतना उतना मन पढ़ाई से कोसों दूर होता जा रहा था। हर हॉस्टल की अपनी एक कैमिस्ट्री होती है, जिसे वही समझ पाता है जो वहाँ से गुजरा हो और कई बार जो वहाँ से न भी गुजरा हो। पर बीतती तो सब पर है, जो वहाँ रह चुका हो। नीतिका और नीतू अपनी जिंदगी की डायरी के दो नए चैप्टर बना दिए थे मैंने, जिनके साथ रोज एक नया किस्सा मेरी डायरी आफ्टर डिनर में जुड़ जाता था।

अब लेक्चर बंक करके बाहर घूमने के लिए सिक्योरिटी गार्ड को बेवकूफ बनाना रोजमर्रा की आदतों में शुमार हो गया था, जिसका बकरा हम नीतू को बनाते थे। हम तीनों में मैं और नीतिका तो ठीक सेहत के थे पर नीतू थी एक डंडी पर लिपटा कपड़ा, हड्डी पर एक सेंटीमीटर खाल भी नहीं थी, पूरी तरह तो एक पुल्टा मात्र दिखती थी वो। उसको बीमार बनाकर आउट पास लेना हमारे लिए बहुत मुश्किल नहीं होता था। उसे डॉक्टर के पास ले जाने के लिए ऑटो में बैठकर आने को हम दो हेल्पर थे- नीतिका और मैं। उसके सहारे हम आउटिंग पर निकलते और मार्केट में घूमते थे।

आज की इस सुबह इस खिड़की पर आज फिर धूप आकर ठहरी थी, जिसका गुलाबी रंग अभी लाल भी नहीं हुआ था कि मेरी सीधी आँख ने फड़कना शुरू कर दिया था।

“दिन ही मनहूस निकला है भाइयो और बहनो, आज तो शायद।” नाश्ते पर मैंने नंदा से कहा, तो बिफर पड़ी वो।

“पागलो वाली बातें तू ही करा करेगी, ये ठेका कभी तो किसी को दे।” नंदा बोली तो झुँझला गई मैं।

“क्या अब यहाँ किसी की आँख भी नहीं फड़क सकती?” मैंने तेज आवाज में कहा।

“पाशना कुछ नहीं होता इस सबसे, ये इतने वहम मत रखा कर मन में।” गीतू ने पराठे का निवाला मुँह में डालते हुए कहा।

“इस जन्मों की भूखी को क्या पता, ये बाप का पैसा असली वसूल कर रही है खा-खाकर।” नंदा ने कहा।

“मत मान, देख लेना मेरी बात को।” मैंने कहा।

“हाँ चल, तेरे साथ बुरा जरूर होगा, बस।” नंदा ने कहा तो काफी बुरा लगा मुझे।

मुँह बनाकर वहाँ से उठ गई मैं, तो गीतू और नंदा ने रोकने की कोशिश भी नहीं की।

तैयार होकर आज अकेले ही बस पकड़ने की तैयारी में जल्दी-जल्दी ड्रेसअप होने लगी मैं, तभी नंदा ने टोक दिया।

“इसलिए ही तुझसे कुछ कहती नहीं हूँ मैं यार, तू एकदम चिढ़ जाती है।” नंदा फिर बोली।

“तो क्यों कहा तूने ऐसा?” मेरे सब्र का भी बाँध टूटा।

“अब कह दिया, हो गया, एक बात को पकड़कर बैठ जाती है तू तो। छोड़ न अब, मिट्टी पा सारी बातों पर, सब अच्छा होगा देखना।” उसने कहा तो सब सॉल्व हो गया।

कॉलेज पहुँचने से पहले कॉल आया नीतिका का, तो पता चला कि आज संजू का बर्थडे है, पार्टी में जाना है, खास इनविटेशन है संजू की तरफ से। ये बात काफी खास इसलिए नहीं थी कि संजू से मिलने का पहला चांस था मेरा। बल्कि इसलिए खास थी, क्योंकि हमारी तिगड़ी में नीतिका ही ऐसी अकेली कन्या थी, जिसका कोई बॉयफ्रेंड था और वो भी इतना केयरिंग। इससे पहले इतनी केयर करने वाले लड़के मैंने बस टीवी में ही देखे थे।

“तुम सब तो अपने-अपने घर से पार्टी प्लेस पहुँच सकते हो, पर मैं नहीं।” मैंने मुँह लटकाकर कहा, जब नीतिका फोन पर थी।

“तेरी भी बड़ी दिक्कतें रहती हैं यार, अब बता क्या करना है, हम कैसे भगाएँ तुझको, जैसे तू कहे।” नीतिका बोली।

“फिर नीतू को बीमार बनाओ और क्या, तब निकालकर लाओ इसे।” पीछे से किसी की आवाज आई।

“ये कौन है?” मैंने पूछा।

“अरे कोई नहीं, मेरी बहन है, इसको सब पता है हमारा... टेंशन मत ले।” उसने कहा।

“देख, वो ठीक कह रही, तुम दोनों कॉलेज आओ, वहीं बताती हूँ क्या करना है। वहीं से निकलेंगे हम।” मैंने कहा और फोन कट हो गया।

हॉस्टल बस ने हमेशा की तरह मुझे कॉलेज गेट के अंदर ही उतारा जहाँ से बाहर के दरवाजे बंद होते हैं और बाहर जा पाने की कोई भी पॉसिबिलिटी नहीं बनती है।

लक्ष्मण रेखा लाँघे बिना तो सीता मैया भी न जा पाई दूर, हम तो चीज क्या फिर! अंदर कदम रखते ही सेलफोन आर नॉट अलाउड के साइन बोर्ड जगह-जगह पाए जा सकते थे, जिन्हें

मैं पिछले कई दिनों से देखती आ रही थी। गेट पर हुई कंपलसरी चेकिंग के बावजूद यदा-कदा डिसिप्लिन और मेंटनेंस के नाम पर क्लासेज में घुसे चले आना और कभी-कभी टीचर तक को ईरीटेट कर देना वहाँ क्लास सीआर के अधिकारों में शामिल था जो उन्हें प्रिंसी मैडम की तरफ से दिए जाते थे। क्लास रिप्रेजेंटेटिव हर क्लास से एक होता था और उसका सिलेक्शन भी हम ही लोगों की वोटिंग से किया जाता था। ये लोग आकर बिना मौसम बारिश जैसे पाँच मिनट में सब बिखेरकर फिरकी की तरह गुम हो जाते थे, जिसे वापस पटरी पर लाने में प्रोफेसर और हमें, दोनों को ही काफी टाइम लग जाता।

आज के इस खास दस्तूर के लिए भी नीतू को ही बीमार बनाकर हेड ऑफ डिपार्टमेंट से जाकर आउट पास लैटर लेने का प्लान बनाया था हम तीनों ने। सोचते हुए मैंने क्लास में एंटर किया, तो उम्मीद के मुताबिक दोनों पहले ही बैठी आज की प्लानिंग का इंतजार कर रही थीं। नीतिका आज और दिनों से भी ज्यादा खूबसूरत लग रही थी। उसने डार्क ब्लू कलर का पटियाला सूट पहना हुआ था, जिससे उसका गोरा रंग और भी खिला हुआ लग रहा था।

"क्या सोच रही है बे?" नीतू ने पूछा।

"आज तो लाइट मार रही है ये फ्यूज ट्यूब लाइट।" यह कहकर मैंने नीतू की तरफ आँख मारी, तो रिप्लाई किया उसने।

"ये पकड़ लैटर डॉक्टर का।" नीतू ने निकालकर मुझे लैटर पकड़ाया तो जाँच करने लगे मैं और नीतिका लैटर की।

"सही है न, हो गई हो जाँच तो बता दो।" नीतू ने व्यंग्य किया।

"एक ही काम तो ठीक से करती है तू, ये आउट पास का।" नीतिका ने कहा तो चिढ़ गई नीतू।

"अरे-अरे, बस करो दोनों।" मैंने इस वक्त बात को समेटना चाहा।

"अब सोचो बस बाहर जाने का।" नीतू ने कहा।

"वैसे ही एच.ओ.डी. तो आउट पास के नाम से ही ऐसे देखती है, जैसे आउटिंग लैटर नहीं उसकी जायदाद पे सिग्नेचर माँग लिए हों।" नीतिका ने दुख व्यक्त करते हुए कहा।

"सारी अग्नि परीक्षा से होकर अगर सफल हो जाते हैं, तो मिलेगा बंपर इनाम।" मैंने चहककर कहा।

"मेरी वजह से तुम दोनों भी आकर फँसी हो न, देखना, बाहर तो मैं तुम दोनों के साथ जाकर ही रहूँगी। मैं ही करती हूँ कुछ।" मैंने कहा। मेरी आँखों में चमक थी और माथे पर आत्मविश्वास की लकीरें।

करेंगे क्या आज हम, सबसे पहले ये सवाल हम तीनों के दिमाग में चल रहा था, जिसका जवाब अभी तक हमारे पास नहीं था। बिना किसी सॉलिड बहाने के तो प्रोफेसर के सजदे में सिर भी टिका देंगे, तब भी काम नहीं बनेगा।

"हाँ, मुझे पता है कि हमें सबसे पहले क्या करना है।" मैंने कहा तो हलचल मच गई हमारी सीट पर, नीतिका और नीतू दोनों के मन में।

"जल्दी बोल क्या सोचा है?" नीतिका बोली।

"सबसे पहले इस क्लास के बाद वाली क्लास में कुछ ऐसा करना है, जिससे मैडम हमें धक्के देकर क्लास से बाहर फेंक दे।" मैंने कहा।

“पर क्यों?” नीतू ने कहा।

मेरी बात मानो यार तुम लोग बस, मैं कह रही हूँ ना। देखो, हमें जल्दी से जल्दी पार्टी में जाना है, हमारे लेक्चर एक के बाद एक हैं और जब तक फ्री लेक्चर आएगा, बहुत देर हो जाएगी।” मैंने कहा।

“तभी आंटी कहती हैं, तेरे चक्कर में मारी गई वरना हम तो नीतू को आर्ट्स दिलाते, इसमें साइंटिफिक अक्ल जीरो है।” नीतिका ताना देकर बोली फिर से।

“बेटा, यही तो कला है, बाकी तो सब विज्ञान है।” मैंने आँख मारते हुए कहा।

“अपना देख तू, मैं बस पूछ ही तो रही थी।” नीतू ने चिढ़कर कहा।

“प्लीज यार, तुम दोनों कुछ देर के लिए बंद हो जाओ, यहाँ से निकलकर चाहे लात-घूँसों से लड़ लेना।” मैंने कहा।

“चल ओए, कल की आई बता रही है, हम क्यों लड़ें, लड़ते होंगे हमारे दुश्मन।” नीतू तपाक से बोली।

“मर भी अभी तुम दोनों ही रहे थे, मैं नहीं।” मैंने कहा।

“अच्छा चल ठीक, अब आगे बता, यहाँ से निकले बाहर फिर...?” नीतिका ने कहा।

“फिर बिना इंतजार किए इसे बाहर बैठाकर सिग्नेचर लेंगे कैसे भी, लैटर से मिल जाएँ शायद, और निकल लेंगे फटाफट।” मैंने गर्व से बताया।

“वो तो ठीक है माता, पर अभी क्लास से बाहर एक साथ तीनों कैसे निकलें।” नीतू ने आशंका जताई।

“मेरे पास एक तरीका है।” इस बार आँखें चमकने की बारी नीतिका की थी।

“पर्ची गेम।” उसने कहा और कूद पड़े हम तीनों।

“तुझसे दो कदम आगे जाकर रहेगी ये लोमड़ी भी।” नीतू ने मुझसे कहा और हँस पड़े हम सब।

“ओह, तो अब बिल्ली का प्रोमोशन होकर लोमड़ी हो गया है।” मैंने नीतिका को इशारा किया।

ये एक बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण टास्क था, जिसकी हरएक बारीकी से इन कुछ महीनों में हम खूब वाकिफ हो गए थे। जरा-सी चूक सारा प्लान खराब करने के साथ-साथ हमें सजा दिलवा सकती थी, इसलिए इसे हमने कुछ छोटे-छोटे स्टेप्स में बाँट दिया था।

इसका पहला पार्ट था- हम तीनों का एक साथ किसी भी तरह क्लास से बाहर निकल जाना, जिसके बाद हम अपनी आगे की कार्रवाई को अंजाम दे सकते थे। चूँकि क्लास बंक कर देना संभव नहीं था, इसलिए हम पहले क्लास में आकर बैठे थे। बंक कर भी देते, पर सुबह-सुबह की क्लास कभी बंक नहीं हो पाती थी, जो भी सुबह 8 से 10 बजे तक की होती थी। इस टाइम में पूरे कॉलेज में सिर्फ साइंस सेक्शन की ही क्लासेज लगा करती थीं, बाकी सब सेक्शन की क्लासेज 10 बजे के बाद से ही थीं। पहले आना इसलिए जरूरी होता था, क्योंकि एक तो नीतिका और नीतू के घर वालों को कॉलेज का टाइम पता था, दूसरा- वहाँ बैठकर हमें साथ में अपनी प्लानिंग करने का मौका मिल जाता था, जो हम तीनों फोन पर नहीं कर पाते थे। 10 के पहले के लेक्चर बंक करना मतलब यहाँ-वहाँ घूमकर या कैंटीन में बैठकर किसी भी C.R की नजर में आना और उसके सवालों का सामना करना ही था।

लेक्चर होने ही वाला था अगला और नीतू ने चार पर्चियाँ तैयार कर ली थीं, जिन पर कुछ फिल्मी गाने लिखे थे। उन पर्चियों को हम लोग एक-दूसरे पर मारते थे। पूरी क्लास में जिस पर भी पर्ची जाए, वो उठाकर उस पर लिखे गाने को कट करके अपनी पसंद का कोई गाना पीछे लिखकर वापस उस तरफ फेंकती थी, जहाँ से पर्ची आई होती थी और जिस पर पर्ची जाती थी, वो भी इसी प्रॉसेस को आगे फॉलो करती थी।

"गुड मॉर्निंग क्लास फर्स्ट ईयर।" जैसे ही प्रोफेसर ऐरिका आई, सारी क्लास खड़ी हो गई।

"गुड मॉर्निंग मिस।" हम सबने विश किया और अपनी-अपनी जगहों पर बैठ गए।

हमने अपने खेल को शुरू करने से पहले एक-दूसरे की तरफ देखा और एक शैतानी मुस्कान दी। तीन पर्चियाँ फेंक चुके थे हम, जिस दौरान हुई हलचल से प्रोफेसर थोड़ा चौंकीं, लेकिन जल्दी ही वापस अपने काम में लग गईं।

"चौथी पर्ची किसके पास है?" नीतू ने पूछा।

"मेरे।" मैंने हाथ में पर्ची दिखाते हुए फुसफुसाया।

"क्या है बैक साइड बेंचेस।" प्रोफेसर ने मुड़कर कहा तो साँप-सा सूँघ गया हम तीनों को। वापस चेतावनी देकर आगे मुड़ गई प्रोफेसर प्रोजेक्टर की तरफ।

"शह्हहह्हह्ह नीतिका, पर्ची फेंक दूँ क्या अब?" मैंने कहा।

"अभी नहीं।" वह बोली।

"पर क्यों।" मैंने पूछा।

"मैं शुरू के 10 ही मिनट में बाहर नहीं निकलना चाहती।" नीतिका ने कहा, तो खिसिया पड़ी मैं।

"कौन है ये?" प्रोफेसर चिल्लाई, "नहीं मन है पढ़ने का तो बता दो, मैं चली जाऊँ यहाँ से।"

'हाँ यार, प्लीज जल्दी निकलो जाओ।' मैंने अंदर ही अंदर सोचा।

"खुसर-पुसर कौन कर रहा ये? इस बार आवाज आई तो बाहर चली जाऊँगी मैं और अगर मैंने देख लिया कि कौन है तो उसे निकाल देना है मैंने।" कहकर वो वापस अपने काम में लग गई।

टिक-टिक 1

टिक-टिक 2

टिक-टिक 3

इसी के साथ गोल-गोल हाथ घुमाकर एक फास्ट बॉलर की तरह मैंने पर्ची फेंकी... पर ये क्या!

अचानक प्रोफेसर मुड़ गई हमारी लाइन की तरफ। वो शोर से परेशान हो चुकी थीं और मेरा दुर्भाग्य कि मैंने इस पल को पूरी तरह महसूस भी नहीं किया था कि प्रोफेसर का अगले ही पल सनसनाता हुआ मार्कर मेरे मुँह पर आकर पड़ा और बेइज्जती के मारे तिलमिला उठी मैं।

"यू, लास्ट सेकंड गर्ल, स्टैंड अप।" प्रोफेसर की आँखों में जैसे खून-सा उतर आया था गुस्से से।

सुन्नी-सी छा गई मेरे दिलोदिमाग पर। चुपचाप खड़ी हो गई मैं डरकर।

मार्कर लगा तो मेरे गाल पर आकर था, पर शर्म से लाल मेरे कान और आँखें हो गईं। कोई और दिन होता, तो मैं तिलमिला उठती चाहे बाद में कुछ भी हो, पर आज हमें बाहर निकलना था

इसलिए सिचुएशन को संभालना इस बेइज्जती से भी ज्यादा जरूरी था।

"मैडम... वो मैं बस, मैडम एम रियली सॉरी, प्लीज फॉरगिव मी।" मैंने आँखों में आँसू भरकर कहा।

"बाहर निकलो तुम इससे पहले कि मैं आपे से बाहर हो जाऊँ।" प्रोफेसर घायल शेरनी की तरह दहाड़ी।

"प्लीज मैडम, माफ कर दीजिए, मैं कभी आगे से ऐसा नहीं करूँगी।" मैंने मनुहार लगाते हुए कहा।

"अभी तुम चली जाओ मेरी आँखों के सामने से, बस।" वह पूरी ताकत से चिल्लाई।

मैं ऐसे अकेले न तो जाना चाहती थी और न जा सकती थी। मेरा दिमाग बहुत तेजी से आइडिया लगा रहा था और प्रोफेसर कुछ देर सर पकड़कर चेयर पर बैठ गई थीं। नीतिका और नीतू मन ही मन करोड़ों गालियों की बौछार कर रही थीं, ये उनकी मुझे घूरती शक्लों ने ही बता दिया था।

"अरे हाँ, ये कर सकते हैं।" मेरी चंट खोपड़ी में ऐसा ख्याल जरूर आ सकता था और आया भी।

"प्रोफेसर।" मैंने मुड़कर कहा तो जैसे उछल पड़ीं मैडम ऐरिका।

"गई नहीं तुम अब तक।" वह फिर चिल्लाते हुए बोलीं।

"मैम, प्लीज सुनिए तो, ये बाकी सब भी तो पर्ची गेम खेल रहे हैं, मैं अकेले थोड़ी हूँ। आप देख लीजिए, पूरी लाइन के पास पर्चियाँ हैं हाथों में, तो सिर्फ मैं ही क्यों सजा भुगतूँ, इन्हें भी निकालिए।" मैंने कहा।

"व्हाट? ये क्लास है या साइंस सेक्शन में कूड़े का ढेर इकट्ठा हो गया है इस बार, आई डोंट बिलीव दिस टाइप ऑफ नॉनसेंस बिहेवियर, व्हाट दा हेल आर यू गर्ल्स।" उम्मीद के अनुसार ही प्रोफेसर का पारा हमारे सूरज देवता को भी पीछे छोड़ गया और एक साथ सारी लाइन को धक्के देकर बाहर निकाल दिया गया।

हम सब बाहर आ गए और हम तीनों के अलावा काफी सारी लड़कियों ने जितना मुझे उस दिन पानी पी-पी कर कोसा, शायद ही कभी उतनी बददुआएँ मिली हों। पर हम खुश थे अपने पहले स्टेप के पूरे हो जाने पर। ये उतना स्मूथली नहीं हुआ था, जितना हमने सोचा था पर हो गया था और अब बारी थी हमारे दूसरे चरण को अंजाम देने की।

'देख लूँगी इसे भी।' सोचकर वहाँ से भाग लिए थे हम एच.ओ.डी. के केबिन की तरफ। हमें आउटिंग लैटर पे ऑटोग्राफ भी लेना था उसका।

"मेरे साथ इतना बुरा सुलूक कैसे कर सकती है भला ये, इसे सबक जरूर सिखाकर रहूँगी मैं।" मैं बुदबुदाई तो नीतिका हाथ जोड़कर बोली- "बस आज के लिए बख्श दे पाशना प्लीज, हम खुद तुझे इसमें सपोर्ट करेंगे, पर आज निकलना है बस अब।"

"संजू घर से निकल गया है और अब जल्दी आउट पास लेकर निकलते हैं हम भी।" नीतिका बोली।

"बात उतनी भी सिंपल नहीं है नीतिका यार जितनी दिख रही है।" मैंने परेशान होते हुए कहा।

"तू मरवा मत देना, डर लग रहा है आज मुझे।" नीतू बोली।

हम तीनों ने इसके बाद इस पर कोई बहस नहीं की, पर जाहिर है, मुझे ये साफ था कि इस वक्त नीतिका और नीतू में से कोई नहीं चाहता कि मैं यहाँ से बाहर जाने के अलावा किसी भी बारे में सोचूँ। हम तीनों सीधा सबसे पहले एच.ओ.डी. के केबिन के बाहर पहुँच गए थे, जहाँ केबिन खाली मिला था हमें।

"मैडम कहा मर गई अब ये एच.ओ.डी.।" नीतिका टेबल पर हाथ मारकर बोली।

"कहीं 3rd ईयर की क्लास लेने में डूब रही होगी, आ जाएगी। अपनी बीमार को तो बाहर बैठा देते हैं, वरना इसे दाँत फाड़ता देखेगी तो आउटिंग लैटर के 56 टुकड़े कर देगी।" मैंने कहा।

"हाँ, ये तो है। चल बे नितुड़ी, जा टिक बाहर, बुला लेंगे तुझे बाद में अंदर।" नीतिका ने कहा।

"हाँ, वैसे भी सोचेंगी वो तो कि जाने मेरे पीछे मेरे केबिन में कर क्या रही हैं ये दोनों।" नीतिका ने भी फरमाया।

नीतू को बाहर बैठाकर खड़े हो गए हम दोनों भी वहीं और इंतजार करने लगे एच.ओ.डी. का लेक्चर ओवर होने और उसके केबिन में आने का। इसी बीच हमने काफी-कुछ डिस्कस किया, अगर कुछ डिस्कस नहीं किया तो वो थी मेरे सीने की आग जो आज प्रोफेसर ऐरिका को लेकर मन को फूँक रही थी।

"इस टाइम यहाँ से जाना हमारी प्रायोरिटी है पाशु तू बात को समझ, संजू बाहर आने वाला है।" नीतिका ने मुझे देखकर कहा, तो मुझे अहसास हुआ कि मैं कबसे उसकी बातों का जवाब नहीं दे रही थी।

"हम्म्म्म।" मैंने सर हिलाया।

"एक मिनट वाशरूम जाकर आती हूँ।" कहकर मैं कुछ देर के लिए वहाँ से उठकर चली गई।

मैं भी ये मन बना चुकी थी कि नीतिका ठीक कह रही है। पर न जाने क्या मेरे दिमाग में आया, मैंने अपनी जींस की पॉकेट से वो पेपर पेन निकाला, जो मैंने नीतिका और नीतू की नजरें बचाकर पॉकेट में छुपाया था। मौका भी हसीन रहा और दस्तूर भी लाइलाज। गालियों से भरा बेहतरीन पेपर तैयार करके अपनी पॉकेट में वैसे ही अंदर रख दिया मैंने जैसे प्यार से उसे निकाला था, क्योंकि उसमें थे ही ऐसे प्यारे-प्यारे प्यार भरे पैगाम। बिना अपनी इन दोनों संगिनियों को बताए। उसमें माँ, बहन, भाई, भतीजे और जाने किस-किसकी देसी गालियाँ थीं। जो भी मुझे उस वक्त समझ आई वो सजा दीं। इसके बाद थोड़ा-थोड़ा मन का सुकून वापस आ रहा था। जब बिना फुल स्टॉप, बिना कॉमा के काम होता है, वहाँ चैन और सुकून अपनी जायदाद तो कब्जा ही लेते हैं।

अगर अभी हम बात करें मन के गुबार की तो जितना होता है ना ये सब अलग-अलग तरीकों से बाहर आकर ही रहता है। रोने की कैटेगरी में सुबक-सुबक कर रोना, तकिए में मुँह छुपाकर रोना, दहाड़ें मारकर रोना, चिल्ला-चिल्ला कर रोना, आदि ब्ला-ब्ला टाइप के रोने आते हैं। पर कम ही सही, वो गर्ल्स भी हैं जो चाहे जो हो जाए जब तक उनका खून न निचोड़ दें जिसकी वजह से सब तरह के रोने मयस्सर हुए हैं, उन्हें तब तक उनके खाना जाने वाले डाइजेस्टिंग सिस्टम से लेकर बॉडी के नर्वस सिस्टम तक, सब ब्लाक रहता है- यहाँ तक कि सायटोप्लाज्म भी।

मैं आज के आज ही उस लैटर की गंगा में मिस ऐरिका को डुबोकर खुद सुकून के समंदर में गोते लगाते हुए बाहर आना चाहती थी और इस तैराकी के लिए मेरा मन इस कद्र बेताब था कि संजू का बर्थडे मेरे दिमाग से हवा की तरह उड़ चुका था।

"एच.ओ.डी. आ गई है इतनी देर कहाँ लगा दी तूने।" नीतू बोली।

"क्या हुआ इसे।" प्रोफेसर ने नीतू को देखते ही पूछ लिया, तो आधी से ज्यादा हेजिटेशन तो वहीं दूर हो गई हमारी। मैंने देखा, नीतू की आँखों में भरे थे मोटे-मोटे, सीप जैसे आँसू, जिससे पूरी कायल हो गई आज मैं नीतू के टैलेंट की।

"बाहर आ, आज तो नीतू तेरे चरण पकड़ लेने हैं मैंने।" मन ही मन मेरा मन मंदिर प्रसन्न होकर उसकी एक्टिंग की तारीफ में कसीदे गढ़ रहा था।

"औह्ह, प्लीज, प्लीज इसको बिठाओ पहले। ये खड़ी क्यों है ऐसे।" एच.ओ.डी. ने कहा।

"मैडम, वो इसकी तबियत अचानक से ही खराब हो जाती है दौरे पड़ते हैं इसे। आज का अपॉइंटमेंट है डॉक्टर का।" मैंने कहा।

"हाँ ओके। तो आउट पास लेना होगा न, लाओ जल्दी कहाँ है लैटर?" वह बोलीं।

हमने खुशी से चौगुने फूलकर लैटर आगे बढ़ाया, तो प्रोफेसर ने कहा कि सिर्फ आउट पास दो बस, डॉक्टर के लैटर की जरूरत नहीं।

"आज तो निकल पड़ी रे।" नीतिका कान में फुसफुसाई, तो जोरदार चिकोटी काटी मैंने उसको एक।

"ओके, तो ध्यान से लेकर जाना इसे। कल मुझे आकर बताना कि क्या रिपोर्ट है इसकी।" वह बोलीं।

"ऑफकोर्स मैडम।" कहकर बहुत शांति के साथ लैटर और नीतू को लेकर बाहर आ गए हम।

"हिप-हिप हुर्रे, हिप-हिप हुर्रे" चिल्लाते हुए हम तीनों सीढ़ियों के सहारे पिछले छोर से होते हुए गलियारे की बाई तरफ के रास्ते पर चलकर आगे बढ़ रहे थे, जो रास्ता कॉलेज के बैक गेट पर जाता था। संजू गेट पर आ गया था और हमें बस जल्दी पहुँचना था। पर दिमाग पर कुछ तो था, जो चरस की बढ़ती पैदावार की तरह अपना तीखा असर दिखा रहा था। कुछ था जो आकर्षण के सिद्धांत जैसा काम कर रहा था और टाँगों को तालाबी मेंढक की तरह पीछे खींच रहा था। अब दरवाजे और मेरे कदमों के बीच बस कुछ ही सेंटीमीटर का फासला बचा था और मेरे दिमाग के घोड़ों ने तेजी से भाग-भाग कर मेरी बुद्धि की जमीन की अच्छे से सिंचाई कर दी थी। अचानक नीतिका ने देखा, मुझे आगे न बढ़ते हुए... मैं कुछ पीछे छूट गई थी।

"चल ना।" नीतू ने कहा।

"मैं आती हूँ, तुम दोनों रुको एक मिनट।" मैंने कहा।

"पाशना प्लीज यार।" नीतिका ने मान-मनुहार करते हुए कहा।

"मैं ऐसे कैसे जा सकती हूँ, मेरी तो आत्मा भी यहीं पड़ी रहेगी ऐसे तो, तू तो जानती है ना।" मैंने दयनीय-सा चेहरा पसारा।

"अरे बाबा बस इसी का डर था।" नीतिका ने कहा।

"अच्छा, एक काम कर सकते हैं, चलो गार्ड को कह देते हैं लैटर दिखाकर कि हम तीनों का आउट पास है। तुम दोनों बाहर संजू के साथ वेट करना मैं बस दो मिनट में अपना काम करके

यूँ गई और यूँ आई।" मैंने कहा।

कुछ सोचने लगीं नीतिका और नीतू रुककर।

"करमजली फिर इतना क्यों मरी जा रही है, रुक जा यहीं, आ तो रही हूँ ऐरिका की अक्ल ठिकाने लगाकर दो मिनट में, फिर निकलते हैं पार्टी में।" मैंने कहा।

"हाँ, इतना भारी बोझ अपने उससे कई गुना भारी शरीर पे लेकर कहाँ चल पाएगी तू जन्म-जन्म की दुश्मन।" नीतिका बोली और बातों के फव्वारों से बैंक गेट का 50 मीटर के अंदर का एरिया हिल पड़ा।

"बीमार को अभी और खड़े रहना है मतलब।" नीतू कहने लगी।

"जा, मरजा तू तो," कहकर चिपट गई मैं उससे।

इस शोर से उपजे सन्नाटे में मन के कंपन का सामना उसकी ही अपनी उपज वाले सवाल-जवाब से होने लगा। सर्दी में कड़ाके वाली पछादी हवा जो टाँगों और जोड़ों में दर्द पैदा कर दे, उसके बीच चलते अलाव जैसे सुकून थे मेरी जिंदगी में नीतिका और नीतू, जो हमेशा मुझे हॉस्टल और कॉलेज की टोटल कैदी जिंदगी से खूबसूरत निजात दिलाते थे कुछ देर के लिए। ऐरिका से पंगा लेना एकदम नारियल से जूस निकलने जैसा था, तो परेशानी का होना या न होना कोई मायने ही नहीं रखता था, क्योंकि अब अगर बात मेरी आदत की आ जाए तो पागलपन करना भी मेरी आदत की एक छोटी-सी कैटेगरी में आता जिसे मैं तो रुटीन कहूँगी। ये खुशी मुझे पागलपन तक ले जाती है, जो मुझे और खुशी देता है।

दोस्त अगर सिर्फ कहने के दोस्त रह जाएँ तो जिंदगी से झेल कोई वस्तु विशेष नहीं होती। लेकिन अगर दोस्त इन दोनों जैसे हों तो लाइफ से पटाखा कोई चीज भी नहीं होती। कभी-कभी हजारों शाम किसी अजनबी-से पर्सन के साथ हम गुजारकर जिंदगी पूरी कर देते हैं और तब समझ आता है कि हम तो गलत जगह थे, हम साथ थे ही क्यों।

जाने कितनी ही शामें अनजानी बीत जाती हैं, किसी बनती कहानी के इंतजार में, जो बस इंतजार ही करती रह जाती हैं, कभी पूरी तो क्या अधूरी भी बन नहीं पातीं। हम अधूरे-से रह जाते हैं, कहीं कुछ चीनी कम-सी लगती है और उस कमी को ढूँढ़ते हम देखते हैं कि वक्त फिसल गया रेत बनकर इन हाथों से। सालों का सफर यूँ ही पीछे रह जाता है और हम एक लंबा अरसा पीछे छोड़ आते हैं, लेकिन उन्हीं बोझिल शामों में कुछ लोग इस सफर के चलते ऐसे टकरा जाते हैं, जो थे तो उसी नाव के सवार, बस जाने क्यों नजर में नहीं आए थे और उनके हमसे टकराते ही हमारी शामें खूबसूरत होने लग जाती हैं। गलियारे छोटे होने की वजह से सर्दियों में भी गर्म-गर्म कॉफी के सिप जैसे सुकून भरे कायलाना एहसास देते थे। इसीलिए वहाँ की दीवारों से सटकर चलना हमने अपना ट्रेडमार्क बनाया था, जो अगर हम किसी दिन जल्दी में भूल भी जाते, तो वापस आकर फिर सटकर निकलते और फिर तब जाते थे वहाँ से।

"ओए मरजानी, अब तक यहीं खड़ी है ड्रामा क्वीन।" चौंककर पलटी मैं, तो देखा पीछे नीतिका खड़ी थी।

"तू भी आ गई।" मैंने चहककर कहा।

"नीतू भी आ रही, सिर्फ मैं ही नहीं। वो जरा बीमार है न, धीरे-धीरे आएगी।" नीतिका ने जोक बनाया नीतू का, तो ताली मार गए हम दोनों।

"ये लैटर अंदर ऐरिका की टेबल पर रखूँगी। गाली और धमकियाँ लिखी हैं इस पर।" हमारी

हँसी ने एक बार फिर कॉलेज गुँजा दिया था।

"जल्दी कर।" नीतू डरी हुई सी हो गई।

"हाँ-हाँ, जा रही बस।" मैंने कहा और आगे चल दी मैं।

"संभाल के करना काम, cct1 है वहाँ।" नीतू ने पीछे से टोका।

"मनहूसियत ही बिखेरना बस तू तो यहाँ आकर।" मैंने तुनककर कहा नीतू को।

"एक तो सावधान करो, ऊपर से इसकी बक-बक सुनो।" नीतू बड़बड़ाई।

"तो मैं जाऊँ?" मैंने ताना कसकर कहा।

"न-न, रुक जा, पंडित जी बुला लूँ, मुहूर्त बता देंगे।" नीतू ने भी तेवर बदलकर कहा।

"क्या है?" कहकर मैं और नीतिका दोनों अंदर की ओर बढ़ गए।

घुटनों के बल सरक-सरक कर केबिन के अंदर एंटर करना इतना भी आसान नहीं होता है, ये हमें आज पता चला था। पैर टूट रहे थे हम दोनों के और अभी तो ऐसे ही वापस भी जाना था घुटनों के बल सरक-सरक कर। हम दोनों ने एक शब्द भी इस बीच नहीं बोला था सावधानी के लिहाज से, इसका जश्न हम मन ही मन मना रहे थे पर पीछे मुड़कर देखने तक बस।

इसके बाद से आज के महाकाले दिन ने हमारे a to 5 सारे दीए बुझाकर अँधेरे कर दिए थे। अब हाँ! हम बुरी तरह फँस चुके थे।

नीतू चीखकर बेहोश हो गई थी, नीतिका के चेहरे का रंग उसके सफेद रंग-रूप से ज्यादा सफेद हो चुका था और मेरे चिड़िया-तोते पूरी तरह उड़ चुके थे। मुझे साफ-साफ दिख गया था कि हमारा एक अकेला ये फैसला कितना गलत साबित हुआ है। सामने प्रोफेसर ऐरिका खड़ी थीं, जो हैरानी से हम तीनों को बारी-बारी से देख रही थीं, जिसका बंपर कारण प्रोफेसर का हमें वो लैटर रखते हुए देख लेना था।

हम पर कोई प्रतिक्रिया न देते हुए प्रोफेसर लैटर की तरह बढ़ीं और हमारे दिल की घंटी ने जैसे मानों नगाड़े बजाने शुरू कर दिए। प्रोफेसर ने लैटर हाथ में लेकर एक साँस में उसको पढ़ लिया और उनकी गहरी पैनी निगाह ने उसके तुरंत बाद पानी के ग्लास की तरफ देखा, जिसे वो बिना रुके अगले ही सेकंड पूरा गटक गईं। नीतू बेहोश पड़ी रही और उसे उठाने का ख्याल ने भी हमारे दिमाग को उस टाइम कहीं से कहीं तक नहीं छुआ। लैटर कहूँ या हम तीनों की मौत का फरमान, कहा नहीं जा सकता।

अचानक से बैठकर फिर खड़े हो गई उसके तुरंत बाद प्रोफेसर, तो डर गए हम। लैटर उठाकर उनको केबिन से निकलते देखकर लगा शायद वो हमें कहीं माफ करने का सोच रही हैं, पर अपने पीछे आने को कहकर वो सीधा आगे सीढ़ियों से तेजी से उतरने लगीं।

"मर गए।" मैंने सोचा और बिना कुछ कहे नीतू पर पानी उड़ेल डाला। हमारे मुँह में एकदम दही जम गया था मानो, जिसकी वजह से हमारा मुँह तक नहीं खुल पा रहा था। डर से और हम तीनों यंत्रवत प्रोफेसर के पीछे चल दिए।

सुन्न पड़ चुके हमारे शरीर में सिर्फ पैर काम कर रहे थे, जो सीधे प्रोफेसर के पीछे सीध में चलते चले जा रहे थे। दिमाग का सुन्नपन और बर्फीला होता जा रहा था। हम अच्छी तरह जानते थे कि अब कोई शक्ति नहीं जो हमें प्रोफेसर के प्रकोप से बचा सके और बस उसी पल से मैं नीतिका, नीतू और सबसे ज्यादा संजू की अपराधी हो गई थी, जो अब भी बाहर गेट पर हम तीनों का इंतजार कर रहा था बिना कुछ जाने। उसे बिना कुछ बताए नीतिका ने सेलफोन स्विच ऑफ

कर दिया था।

प्रोफेसर को कॉरिडोर से लेफ्ट टर्न लेते देखकर दिल दहल जाना लाजमी था! क्या मैं सही थी, क्या सच में प्रोफेसर प्रिंसिपल ऑफिस लेकर जा रही थीं हमें?

इस वक्त हमारी दयनीयता उस हारी हुई भिखारिन के जैसी थी, जिस पर चार बच्चों को खाना खिलाने का भारी बोझ हो। वो यहाँ से सिर्फ 20 पग का प्रिंसी ऑफिस तक का फासला पैरों की बेड़ियों को इस कद्र कसे दे रहा था कि कदम आगे बढ़ने से पहले ही मुड़कर टूट जाएँ। हजारों-लाखों ख्यालो-ख्वाहिशें दिल को छूकर दिमाग से पार होते हुए बॉडी में घूमकर आँखों के रास्ते बह पड़ी थीं, जिन्हें बहुत करीने से रोका मैंने। सबसे भयानक चरित्र चित्रण हमारे पेरेंट्स को बुलाकर इसके बारे में बताया जाना हो सकता था, हमारे कॉलेज से निकाले जाने से भी ज्यादा बुरा। इससे ज्यादा डरावनी और शर्मनाक कहानी शायद हमारी जिंदगी में अबतक कभी नहीं गढ़ी गई थी।

हम तीनों ही बर्थडे पार्टी को लगभग भूल चुके थे। मेरे दिल की धड़कनें दिल को फाड़कर बस बाहर ही आकर रखी गई थीं, क्योंकि बदकिस्मती से वहाँ काफी सारे टीचर्स आज बैठे थे। मैंने अपनी बर्बादी के दृश्य को अपनी आँखों के सामने होते फ्यूचर में जाकर इमेजिन कर लिया था। क्या प्रिंसी हमसे थोड़ी भी नरमी से पेश आएँगी हमारी हरकत सुनने के बाद? आँखे भरकर, पैर पकड़कर गिड़गिड़ाते देखकर वो पहले अपनी शैतानी मुस्कान देकर हमारा मजाक तो उड़ाएँगी, पर क्या फिर हमें रियायत दे देंगी? क्या मैं इस सी.डी. को रिवर्स पर लगाकर वापस पीछे जाकर सबकुछ ठीक कर सकती हूँ? क्या मैं फ्लशबैक में जाकर वो लैटर रखने का बेवकूफाना विचार अपने दिमाग से निकालकर नीतिका के कहे अनुसार उसके साथ बैक गेट से सीधा बाहर जाकर संजू की पार्टी एंजॉय कर सकती हूँ? फलाना ख्याल मेरे दिमाग के न्यूक्लियस में किसी इलेक्ट्रान की स्पीड से आ जा रहे थे।

"चिल पाशना, चिल! अभी तुझे प्रिंसी और बाकी सबके तीर जैसे भेदी सवालों का सामना करना है।" मैंने एक गहरी ठंडी साँस छोड़ते हुए अपने दिमाग पर जोर डालना बंद किया अब।

हम तीनों अपराधी की फॉर्म में बाहर खड़े अपनी पेशी का इंतजार कर रहे थे, जो कुछ ही मिनट बाद प्रिंसी के सामने होने वाली थी। नीतू का पूरा शरीर डर के मारे कंपन करने लगा था, जैसे उसकी किसी डंडे से पिटाई की गई हो। मैं जानती थी कि ये शर्मसार करने वाला कांड था जो मेरी वजह से हुआ था। आज अपने आपको गुनहगार मान लेना आसान नहीं लगा मुझे। मैं चाहती थी कि प्रोफेसर ऐरिका मुझे चप्पलों से मारे, मार-मार कर मेरा चेहरा बिगाड़ दे, मेरे हाथ ऊपर करके मुझे पूरा दिन खड़ा रखे, मुझे बाल्टी भर-भर कर सारे कॉलेज के लॉन में पानी डलवाए, मुझसे असाइनमेंट कराए जो कम से कम 250 पेज का हो या फिर हर वो बुरी से बुरी सजा दे जो भी वो देना चाहे, जिससे भी उसे खुशी मिलती हो, पर वो इसकी सजा नीतू और नीतिका को न दे और इसमें हमारे पैरेंट्स और प्रिंसी को इन्वॉल्व न करे।

नीतिका के चेहरे पर लगातार पसरा सन्नाटा इसका सबूत था कि शायद वो किसी सदमे से गुजर रही है। उसके लिए पैरेंट्स तक बात पहुँचना सबसे मुश्किल दौर हो सकता था ये मैं बहुत अच्छी तरह से जानती थी। मानो मैंने अपनी जिद के लिए इन दोनों की बलि चढ़ा दी थी। नीतू के हालात मैंने देखे थे, पर नीतिका की तरफ अब मैं नहीं देख रही थी या यूँ कहो कि मैं देख नहीं पा रही थी। मुझमें इतनी भी हिम्मत नहीं थी कि मैं उससे नजरें मिला सकूँ। मुझे पता था उसके अंदर

की हर हलचल का। मैं जानती थी, किन हालात में वो कॉलेज में आती थी। मैंने देखा था संडे में उसके घर जाकर कॉलेज आने के लिए उसका संघर्षपूर्ण जीवन, उसके घर के लोगों का पढ़ाई से ज्यादा उसकी शादी के लिए चिंतित रहना। अगर प्रिंसी ने सजा के लिए उसको कॉलेज से निकाल दिया, तो क्या मैं इसके लिए खुद को कभी माफ कर पाऊँगी? नहीं, मैं नहीं कर पाऊँगी, ये मैं जानती थी और इसलिए ही बिना उन दोनों से कोई जिक्र किए सारा कुछ अपने सिर लेने का ठान चुकी थी मैं। सहसा मुझे याद आने लगा पापा का वो उम्मीद भरा चेहरा, जो उन्होंने मुझे हॉस्टल छोड़ते वक्त कहकर दिखाया था। मैं नहीं भूली थी हर वो उम्मीद, जो उन्हें मुझसे रही थी। सारा कॉलेज क्या सोचेगा, जब मुझे कॉलेज से निकालने की सजा दी जाएगी? क्या प्रिंसी, पापा को कॉलेज बुलाकर कहेगी कि उनकी बेटी कॉलेज के नाम पर एक कलंक हैं? पापा को कैसा महसूस होगा तब? क्या पापा इस बेइज्जती के बाद मुझे हमेशा के लिए घर में बंद कर देंगे? क्या अब मुझे यहाँ से चले जाना होगा? क्या लुधियाना की हर वो गली जो अब अपनी-सी लगने लगी है, वो अब हमेशा के लिए बेगानी हो जाएगी?

सवालों का बड़ा-सा फंदा मेरा दम घोंटने लगा था और उसमें घिरी मैं कब तक वहाँ खड़ी रही अनंत में, मुझे मालूम नहीं। चेतना का दौर तब आया, जब बाहर हमें कब से घूर रहे चपरासी ने प्रिंसी के आदेशानुसार अंदर जाने को कहा, जहाँ प्रोफेसर ऐरिका पहले से ही सारा कच्चा-चिट्ठा प्रिंसी और बाकी स्टाफ के सामने खोल चुकी थीं। चपरासी हमें अंदर जाने को कहके ऐसे मुस्करा रहा था, मानो हमारी ये तेहरवीं होने में उसी का सबसे ज्यादा फायदा हो। होता भी क्यों न, उसे भी तो हमारा ढसरा बिगड़ता देखने में मजा आने वाला था। बैठे-बिठाए फ्री का शो मिले तो भला कौन न देखना चाहेगा? प्रोफेसर से भी ज्यादा दुष्ट इस वक्त वो चपरासी दिखाई दे रहा था। ये उस शैतान बच्चे की तरह था, जिसका हम कर तो कुछ पाते नहीं, बस कसमसाकर रह जाते हैं। वो बच्चा जो सबको धक्का देकर नीचे गिराकर भागता है और खुद हँसता है दूसरों को रोता देखकर। हम तीनों एक, एक करके अंदर खिसक रहे थे। सबसे आगे मैं, फिर नीतिका और नीतू लगभग साथ-साथ थे। उनके चेहरों से लग रहा था कि बस रो पड़ने वाली हैं।

नीतिका अभी दूसरे नंबर पर थी अंदर जाने में, जो हमेशा की तरह प्रिंसी के सामने तक पहुँचते-पहुँचते पीछे खिसक गई थी। सब प्रोफेसर हमें ऐसे देख रही थीं, जैसे हमने मिस ऐरिका का किसी अबला नारी की भाँति तबला वादन किया हो। आपस में उनकी बातचीत की चटर-पटर उनके वकील और प्रिंसी के जज होने की भूमिका अदा कर रही थी। यूँ तो प्रिंसी ऑफिस में मेरा ये पहला फेरा नहीं था। मैं यहाँ अपना ही घर समझकर एक हॉस्टल गर्ल होने की हैसियत से कभी होम लीव, किसी लैटर या हॉस्टल फी से रिलेटेड किसी डॉक्यूमेंट पर सिग्नेचर लेने प्रिंसी के पास आती रहती थी, लिहाजा प्रिंसी को मुझे पहचानने में कोई दिक्कत नहीं महसूस हुई।

प्रिंसी ने जोर-जोर से बोलकर पहले लैटर को पूरा पढ़ा, जिस दौरान मेरी आँखे बंद रहीं एकदम। मेरे अंदर का रक्त जम चुका था किसी बर्फ की तरह और पारा लुढ़ककर −104° F होता महसूस हो रहा था। मेरी आँखें वो पत्थर हो गई थीं जो अब खुलना नहीं चाहती थीं लैटर खत्म होने के बाद भी। मेरे कानों में अभी-अभी बहने जैसा कोई रिसाव शुरू हो गया था, मानो किसी बड़ी बीमारी के अभी-अभी शुरू होकर चरम पर पहुँच जाने का आभास हो। अपनी आँखों को खोलना जितना कष्टदायी आज लगा था, उतना सौ पुरखों में भी कभी लगा हो तो कहूँ।

जिंदगी में कभी ऐसा भी समय आता है, जब हम इतना ज्यादा डर जाते हैं कि मन करता है

भाग जाएँ सबकुछ छोड़कर। बदल डालें उस पूरे के पूरे देशकाल को। तोड़ डालें उस मोटी-सी, बाँस से बँटी रस्सी की मजबूती को एक जोरदार दहाड़ के साथ और खत्म कर दें उस दहशत को जो आसपास पसरी है। कहीं दूर निकल जाएँ उस जहान में, जहाँ डर और सजा का नामोनिशान न हो, जो दुनिया में हर आडंबर से परे हो, जहाँ बस खुशी और मुस्कान बसती हो।

प्रिंसी अब भी शांत दिख रही थीं, पर उनकी आँखों में पड़े सुन्न भावों के बारे में मैं क्या शायद वहाँ मौजूद कोई शख्स कुछ नहीं कह सकता, क्योंकि उनकी आँखें हमेशा ही एक जैसे भाव दिखाती थीं। लेकिन प्रोफेसर ऐरिका हमें एक ऐसे खूंखार भेड़िए की तरह देख रही थीं, जो बस इजाजत का ही इंतजार कर रहा है, निगल जाएगा अभी हमें कच्चा ही और हम तीनों की नजरें उस आठ महीने के मासूम बच्चे जैसी देख रही थीं, जिसने अभी बस हाथ ही फेंकना सीखा हो और कुछ नहीं।

नीतू लगभग बेहोश होने लगी थी फिर से, जो पहली बार वाकई में डर था और जिसे प्रोफेसर्स ने पहली बार नाटक समझा था। पर तभी प्रिंसी ने हमसे कुछ पूछा था, जो इतनी धीमी आवाज में था कि मुझे हमेशा की तरह ही लगभग सुनाई नहीं दिया था।

"आई से, किसने लिखा ये।" प्रिंसी ने हमेशा की तरह ही धीमी आवाज में पूछा था।

सन्नाटा!

एक मिनट बाद फिर से,

"किसने लिखा है ये, बताइए?" प्रिंसी ने बहुत आराम से कहा।

सन्नाटा पहले की ही तरह!

टेबल पर अचानक सन्न की तेज आवाज हुई और हम अंदर तक हिल गए, समझ आने में कुछ टाइम तो लगा पर कुछ ही सेकंड का फासला रहा हमारी समझ और उस पेन स्टैंड के बीच जो प्रिंसी ने गुस्से से झल्लाकर पटका था।

"मैंने मैडम।" मैंने काफी जल्दी में हड़बड़ाकर जवाब दिया।

"क्यों? क्या तुम अपने प्रोफेसर्स की वैल्यू, उनकी इज्जत इतनी सी भी नहीं करतीं... या जो तुम्हें पढ़ा रहा है, तुम्हारा गुरु है या वो भी छोड़ो वो तुमसे बड़ा है, इन सब में से किसी एक भी लिहाज से क्या वो थोड़ी-सी भी रेस्पेक्ट डिजर्व नहीं करता है?" प्रिंसी ने कहा तो मेरी आँखें जो पहले से ही झुकी थीं, वो शर्म से और झुक गईं, बल्कि नीचे ही गड़ गईं।

कोई जवाब नहीं दिया मैंने, मेरे पास कोई जवाब था ही नहीं।

"बताओ मुझे तुमने ऐसा क्यों किया।" प्रिंसी ने फिर कहा।

"सॉरी मैडम, वी आर एक्सट्रीमली वैरी सॉरी, वी विल नेवर डू दिस अगेन।" नीतिका ने कहा।

"यू जस्ट कीप क्वाएट।" प्रिंसी दहाड़ी तो डर गई नीतिका अंदर से क्योंकि काँप रही थी वो।

"तुम दोनों का भी नंबर आएगा, साथ तो तुम दोनों भी इसके ही थीं न, पर अभी मैं तुमसे बात नहीं कर रही हूँ, तो बीच में मत बोलो।" प्रिंसी ने कहा तो गर्दन हाँ में हिलाई दोनों ने।

प्रिंसी ने दुबारा मेरी तरफ रुख किया।

"हाँ... तो तुम कुछ कहोगी या नहीं अब, मैं तुम्हें चेतावनी दे रही हूँ।" प्रिंसी ने कहा।

मुझे जैसे काला साँप सूँघ गया था। मैं खुद हैरान थी कि मैं कुछ भी क्यों नहीं बोल पा रही हूँ। गलती ही एक्सेप्ट करूँ, पर बोलूँ तो सही। मैंने कोशिश की, उस बंजर खेत में हल को पहली

बार खींचने जैसी नाकाम और बेकार कोशिश। पर मैं नहीं बोल पाई, तब भी नहीं जब प्रोफेसर ऐरिका ने कांड में जो हुआ उससे भी कहीं ज्यादा बढ़ा-चढ़ा कर, उसमें हमारी बहस जो दरअसल नहीं हुई थी उसको मिलाकर प्रिंसी को बताया। मेरी ही तरह नीतिका और नीतू, वहाँ मौजूद प्रोफेसर्स और प्रिंसी, सब मूकदर्शक जैसे सुनते रहे। फाँसी के मुजरिम को साथ में उम्रकैद मिल भी जाएगी तो भी क्या हो जाएगा, जैसी ही वो कुछ हल्की-फुल्की मिर्च-मसालेदार बातें थीं।

तभी हमने देखा कि अभी शनि की ग्रहदशा बस यहीं तक नहीं है, अभी तो साढ़े साती और बाकी है। हमारी किस्मत अभी पूरी तरह नहीं फूटी है, अभी रही-सही और फूटनी है। असर तब पूरा हुआ जब हमें सजा बस सुनाई ही जाने वाली थी कि बीच में एक और प्रोफेसर की एंट्री हुई जो एच.ओ.डी. थीं। उन्हीं से हमने बाहर जाने के लिए नीतू की बीमारी बताकर आउट पास साइन कराया था।

"मैडम, ये आज के शेड्यूल को लेकर..." कहते-कहते वो अंदर आई, तो हमें देखकर रुक गई।

"तुम लोग यहाँ, गए नहीं तुम लोग और क्या हुआ मैडम, सब ठीक तो है ना।" वो भौंचक्की-सी इधर-उधर ताकने लगीं।

हमने कोई जवाब नहीं दिया, त्रिलोक की सैर असली तो अब होनी थी।

"कहाँ जाने वाले थे ये लोग, पहले आप ये बताइए।" प्रिंसी ने कहा।

"मैडम ये लोग आउट पास लेकर गए थे मुझसे, पीछे उस लड़की की तबियत काफी खराब थी इसलिए।" एच.ओ.डी. ने बताया।

"और आपने इन्हें आराम से आउट पास दे दिया।" प्रिंसी ने व्यंग्य से कहा।

"मैडम ये मेडिकल रिपोर्ट लाए थे, लड़की भी देखकर ही इतनी बीमार लग रही थी कि मैंने जाने की परमिशन दे दी इन्हें।" उन्होंने कहा।

प्रोफेसर ऐरिका ने सारी कथा फिर एक बार बाँच दी, जिसमें हमें क्लास से निकाले जाने तक का पूरा ब्योरा सुसज्जित रूप से बना था।

"ओह! बच्चों की चालाकियाँ, मार्केट में डोलना चाहते थे आउट पास लेकर क्या भला।" वह पूछने लगीं।

'शुक्र है इस बात का क्लेरीफिकेशन नहीं देना पड़ा।' यह सोचकर मुझे कुछ शांति मिली।

"जी मैडम।" मैंने सिर झुकाकर कहा।

"इनके पैरेंट्स को बुला लीजिए मैडम।" एच.ओ.डी. ने प्रिंसी को राय दी, तो वही अपने जाने-माने इहलोक-परलोक सबके दर्शन हो आए हमें मानो।

"ठीक कहा, पैरेंट्स को कॉल करके अभी आने को कहो यहाँ।" प्रिंसी ने हमसे कहा।

प्रोफेसर ऐरिका न्यायी मुद्रा में जीती हुई मुस्कान के साथ कुर्सी पर पसर गई, जो प्रिंसी के जस्ट सामने पड़ी हुई थी। यह देखकर मुझे अपने स्कूल के लफंगे टीचर सर दुबे की याद आती थी, जो अपना दंभ शांत करने के लिए किसी के भी फ्यूचर की बलि देने में जरा भी नहीं कसमसाता था।

"मैडम, प्लीज मत कीजिए न... हम और कोई भी सजा भुगत लेंगे, पर मैडम सॉरी, प्लीज, पैरेंट्स को मत बुलाइएगा।" नीतू ने विनती की।

"नंबर दो।" प्रिंसी की आँखों में क्रोध और दृढ़ता के मिले-जुले स्पष्ट भाव थे।

"मेरे पैरेंट्स नहीं आ पाएंगे मैडम, मैं...।" मैंने इतना ही कहा था।

"हॉस्टलर हो, यही न?" प्रिंसी ने पूरा किया, "नंबर दो मैं बात करना चाहती हूँ।"

हम तीनों के पैरेंट्स से बात करने तक हमें बाहर रुकने का अल्टीमेटम दिया गया, इसलिए जिस पोजीशन में हम तीनों खड़े थे, ठीक उसी में उल्टे घूमकर वापस चले आए।

बाहर खड़े रहने का वो 12 मिनट का समय काबिले-तारीफ था, जिसमें प्रिंसी ने हम तीनों के पिताओं को हमारी आधी-अधूरी नहीं बल्कि पूरी-पूरी कहानी बताने से लेकर जल्दी से जल्दी पेश को कहा था। बाहर खड़े हम उन तीन मुसाफिरों की तरह थे इस वक्त, जो घुल-मिल कर फिर से सफर के अंत में अजनबी हो जाते हैं। मैं कुछ कह नहीं पाई आगे और नीतिका व नीतू ने कहने की जरूरत नहीं समझी। मैं उनसे माफी नहीं माँग पाई अपनी इस कुछ मिनटों पहले की गाढ़ी दोस्ती के चलते और वो दोनों मूक हो गई कहीं न कहीं मेरे द्वारा पहुँचाई गई इस चोट को लेकर।

उस दौरान नीतिका ने एक भी बार मेरी तरफ नहीं देखा। हमें अंदर बुलाया गया और तब जब नीतू, नीतिका और मेरे पापा से बात हो चुकी थी। मेरे पापा कल आ रहे थे और नीतू और नीतिका के पैरेंट्स जस्ट अभी। कहते हैं कि जब गलती अपने की हो या यूँ कहें कि सिक्का अपना ही खोटा हो, तो फेंकते बनता है न पास रखते। यही हाल नीतू के पैरेंट्स का रहा, जब पता चला कि मेडिकल रिपोर्ट भी अब की नहीं बल्कि एक हफ्ते पुरानी थी।

"मैडम डेट चेंज की है बच्चों ने, वरना आज का अपॉइंटमेंट होता तो हम तो इसे कॉलेज ही न भेजते, बल्कि खुद ही लेकर जाते डॉक्टर के यहाँ।" नीतू के पापा ने कहा।

"अब क्या कुछ और भी बचा है, जो झूठ है आज के इस वाकये में।" प्रिंसी ने हमें लताड़ा।

हम तीनों की आपस में प्रिंसी द्वारा की गई क्रॉस क्वेश्चनिंग को लेकर कोई जिरह, किसी तरह की कोई बात नहीं हुई थी। मैं डरी हुई थी, मैं डरी हुई थी इसलिए कि पापा ये सब सुनकर मेरे बारे में क्या सोच रहे होंगे। मुझे डर लग रहा था इस बात से कि पापा को कितना दुख हुआ होगा ये सुनकर कि जिससे वो इतनी उम्मीदें रखते हैं, वो क्या हाल कर रही है, कैसे-कैसे फोन जा रहे हैं कॉलेज की प्रिंसिपल के उनके पास। हाँ, मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लग रहा था ये सोचकर कि नीतिका और नीतू आज मेरी वजह से इतनी बड़ी मुसीबत में फँसी हैं। मैं शर्मसार थी नीतिका और नीतू के पैरेंट्स के लिए, जिन्हें आज मेरी वजह से प्रिंसी की कड़वी बातों से बेइज्जत होना पड़ा था। उन्हें माफी माँगनी पड़ी थी बिना किसी गलती के, मेरी वजह से। सबसे ज्यादा मैं आज अपराधी थी संजू की, जिसका बर्थडे आज मेरी वजह से उसके दोस्तों और उसकी गर्लफ्रेंड के बिना मना था, वो भी हमारे गर्ल्स कॉलेज के बाहर घंटो इंतजार की धूल फाँककर। आज अगर नीतिका मुझे माफ कर भी दे न, जो मुझे पता है कि वो कर ही देगी आज नहीं तो कल जितना मैं उसे जानती थी, पर आज मैं खुद से बहुत नाराज थी। इसलिए नहीं कि मैंने प्रोफेसर ऐरिका को परेशान करने की नाकाम कोशिश की, बल्कि इसलिए क्योंकि मैं आज इतने सारे उन लोगों की परेशानी का कारण बनी जो मेरे लिए खास हैं।

"कुछ कहेंगी आप अपनी सजा से पहले?" प्रिंसी ने फाइनल सुनाने से पहले कहा।

"मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था मैडम। मैं गलत थी और मैं इसे स्वीकार करती हूँ। हो सके तो मुझे माफ कर दीजिए। आप जो भी सजा देंगी वो...।" कहकर मैंने सिर झुका लिया।

"ठीक है।" प्रिंसी ने पानी का गिलास उठाया और एक घूँट अपने गले से नीचे उतारी।

"तुम दोनों को कहना है कुछ?" प्रिंसी ने नीतिका और नीतू से बारी-बारी से पूछा, जिन्होंने

अब भी कोई जवाब नहीं दिया।

"मुझे कहना है मैडम, जो सच है और जो ये दोनों नहीं कह रही हैं।" मैंने कहा तो प्रोफेसर ऐरिका ने बुरा-सा मुँह बनाया।

"बोलो।" प्रिंसी ने कहा।

"हम तीनों मार्केट जाने के लिए आउट पास लेना चाहते थे ये सच है, लेकिन प्रोफेसर ऐरिका वाले लैटर के केस में इन दोनों का कोई इन्वॉल्वमेंट नहीं था मैडम। प्रोफेसर ने मेरे मुँह पर मार्कर देकर मारा था, ये वहाँ मौजूद हर स्टूडेंट जानता है और इसलिए मैं नाराज थी और ये मैंने अकेले प्लान किया था कि प्रोफेसर परेशान हो जाएँगी। ये दोनों बस मुझे ऐसा करने से मना करने ही आई थीं।" मैंने आत्मविश्वास के साथ सारी बात प्रिंसी को बताई।

जैसी कि मुझे उम्मीद थी, प्रिंसी और वहाँ मौजूद हर एक टीचर ने इस बात को बताने के लिए मुझे शाबाशी दी, सिवाय प्रोफेसर ऐरिका के। उससे कोई फर्क नहीं पड़ता था, मैं जानती थी इतनी ही नफरत प्रोफेसर मुझसे ये बात पता चलने से पहले भी कर ही रही थीं तो अभी ही क्या खास हो जाना था। पर मैं नीतू और नीतिका की आँखों में जो मुस्कान इसके लिए देखना चाहती थी, मुझे वो अब भी नहीं दिखी। दोनों की आँखें अभी भी वैसे ही ठंडी और सूनी पड़ी हुई थीं। यह मेरे लिए शायद आज का सबसे मुश्किल समय रहा था।

बस फर्क के नाम पर तो इतना तो हुआ था कि निश्चित तौर पर नीतिका और नीतू की सजा में गिरावट आना लाजिमी था और आया भी। नीतिका और नीतू को एक-एक हजार रुपए का फाइन और मुझे एक हजार के फाइन के साथ एक महीने के लिए कॉलेज से निकाल दिया गया था।

मैं हॉस्टल वापस आ रही थी, आज अकेले, पैदल।

मुझे खुद से आज नफरत थी और कुछ जर्म्स, कुछ फंगस मुझे अपने अंदर चलते से महसूस हो रहे थे, जिन्हें मैं बीच-बीच में अपने शरीर से रगड़ रही थी, कपड़ों से साफ कर रही थी। मुझे लग रहा था कि सड़क पर चलता हर कोई आज मुझे ही देखकर हँस रहा है। मैं कन्फ्यूज़ हुई उस चौराहे पर, जहाँ से हॉस्टल के लिए मोड़ कटता था। मैं भटककर रुक गई, कुछ दूर पानी का एक हैंडपंप देखकर। वहाँ जाकर मैंने अपने मुँह पर पानी के छींटे मारने की पुरजोर कोशिश की, पर अकेले होने की वजह से कोई हैंडपंप चलाने वाला मिला नहीं।

किस्मत कहो या बदकिस्मती, कोई वहाँ होता और हत्थी चलाकर मेरी मदद कर भी देता, तो वो कंधा तो न बन पाता, जिस पर सिर रखकर आज मैं बहुत जोर-जोर से बिलखना चाहती थी, चिल्लाना चाहती थी, रोना चाहती थी। कोई भी, जिससे मैं सिर्फ अपना मन शेयर कर सकती, जो मेरे रोने का कभी मजाक न बनाए। कोई ऐसी जगह ढूँढ़ना चाहती थी, जहाँ मैं घंटों अकेले बैठकर ही सही, पर चिल्ला सकूँ, रो सकूँ, दहाड़ सकूँ... पर कोई जगह नहीं थी। शहर आज बहुत छोटा और बारीक पड़ गया था। कोई पार्क, कोई खाली जगह, कोई मैदान, दूर-दूर तक ऐसी कोई जगह नहीं थी।

आज इस शहर में होने का अफसोस था, क्योंकि मैं लड़की थी। आज लड़की होने का भी अफसोस था, क्योंकि इसी वजह से मैं कहीं सुनसान में जाकर कुछ देर रो भी नहीं सकती थी। ये भी मेरे लिए वहाँ सेफ नहीं था। बहुत कुछ था आज अफसोस करने के लिए, जिनमें से मेरा एक लड़की होना भी था, क्योंकि हमारे समाज में लड़की को कभी ये अधिकार नहीं कि वो रात को

बियर लेकर निकल जाए, अगर उसे गुस्सा आए। वो दारू पीकर ड्रामे करे, अगर उसे गुस्सा आए। वो कहीं कुछ देर अकेले बैठकर रोए भी नहीं, अगर उसे गुस्सा आए, क्योंकि छोटी सोच और घटिया मानसिकता का गिरोह हर उन्नति से ऊपर बढ़कर आज भी, और हमेशा से लड़की को एक पायदान नीचे होने का एहसास दिलाता रहता है।

मैं हॉस्टल आ गई थी, जहाँ वाशरूम ही बस एक ऐसी जगह थी जहाँ मैं घंटों रो सकती थी, कमरे में भी रूममेट्स जो विराजमान थे। वाशरूम में मन हल्का करना हमेशा से मेरी आदत रही थी। वहाँ टाइम लगाने पर शक करने वालों की संख्या जरा कम ही रहती है। कमरे में आकर बिना खाना खाए औंधे मुँह पड़ गई मैं और बेड के बाई ओर रखी टेबल के एक सिरे से लगकर बना मकड़ी का जाला देखकर न जाने कितने सेकंड, कितने ही मिनट और कुछएक घंटे बाद नींद का झोंका मुझे उड़ाकर अपने साथ कहीं दूर ले गया।

रिजल्ट्स 3 पांच

इस सबका असर ये हुआ था कि संजू का बर्थडे बर्बाद हो गया था, जिसका सीधा असर मेरे और नीतिका के दोस्ती के रिश्ते पर पड़ा था। हमारी मुलाकात इस एक महीने में एक बार भी नहीं हुई थी और पूरे महीने मैं एक बार भी न हॉस्टल से बाहर निकली और न कोई मुझसे मिलने हॉस्टल में आया। हाँ, एक सवाल था जो इस पूरे महीने मेरे जेहन में बार-बार आया था और वो ये कि संजू इस सबको लेकर क्या सोचता होगा मेरे बारे में? नीतिका और नीतू के पैरेंट्स क्या सोचते होंगे कि मैंने कैसे एक बेहूदी और बेवकूफाना हरकत की, जिसकी वजह से सबको कितनी परेशानी हुई? क्लास मेरे बारे में क्या सोच रही होगी, जब प्रोफेसर ऐरिका ने मजे लेकर सबको मुझे मिलने वाली सजा के बारे में बताया होगा? ब्ला-ब्ला टाइप ख्यालों से पार पाना कोई हँसी-खेल कहाँ था।

'कॉलेज का पहला दिन है मेरे लिए भी एक तरह से, सोच-सोचकर बी.पी. क्यों इधर-उधर करना।' मैंने सोचा।

कॉलेज पहुँचते ही सीट पर बैठकर आँखों ने नीतिका और नीतू को तलाशना शुरू तो किया, पर तलाश पूरी होने में ही नहीं आई। आज कॉलेज नहीं आई हैं दोनों शायद, सोचकर मन को तसल्ली दी मैंने।

"कैसा लग रहा है एक महीने बाद आकर।" एक लोकल डे स्कॉलर ने मुझसे पूछा।

"म्मम्मम क्या बताऊँ, बस, अजीब लग रहा है बहुत, पता नहीं यहाँ तो क्लासेज भी बहुत आगे पहुँच गई होंगी न।" मैंने मुस्कराकर कहा।

"हाँ, ये देखो मैं बताती हूँ किस-किस सब्जेक्ट में क्या-क्या हुआ है।" कहकर एक के बाद एक बुक्स और कॉपी उसने दिखानी शुरू की। इससे इतना तो ठूँस-ठूँस कर दिमाग में मेरे भर गया कि पानी सिर से ऊपर ही है।

"...पर परेशान होने की जरूरत नहीं, हो जाएगा ये सब, देख लेना।" उसने कहा तो बस तसल्ली जैसी हुई मन को वो तो ठीक ही है, पर उसको जरूर मुस्कराकर सिर हाँ में हिला दिया मैंने।

"डे स्कॉलर हो?" मैंने पूछा, "परेशानी नहीं होती क्या, अप डाउन करने में?"

"होती है इसी महीने पी.जी. ले रही यहाँ इसीलिए। देख लिया है, कॉलेज से ज्यादा दूर नहीं है, यहीं पास ही है।" उसने कहा।

"हॉस्टल पसंद नहीं हमें, खाना नहीं खा पाएँगे हम वहाँ का। तू कैसे रह पाती है वहाँ, हम तो ये सोचते हैं।" यह एक दूसरी लड़की थी, जो अभी-अभी क्लास में एंटर हुई और हमारी वाली सीट पे आकर बैठी थी।

मैं इसी के साथ पी.जी. ले रही हूँ, अपने आप बनाएँगे और मजे से खाएँगे।" वह ख़ुशी से बोली।

"हाँ ये भी ठीक है।" मैंने कहा।

"तू क्यों नहीं पी.जी. में आ जाती, हमारे साथ ही आजा, वहाँ मन कैसे लगता है तेरा?" उसकी फ्रेंड ने कहा।

"मेरे पापा पी.जी. में रहना अलाउड नहीं करते, सेफ्टी मैटर।" मैंने कहा।

"अच्छा छोड़ न," पहली वाली ने बीच में बात रोकते हुए कहा, "तेरी फ्रेंड्स नहीं दिखाई दीं आज, आई नहीं क्या?" वह बोली।

"नहीं, शायद।" मैंने फिर से चारों तरफ नजरें घुमाई।

"मेरा नाम प्रीति है और ये है मेरी दोस्त पूजा।" उसने कहा।

ये मेरी पहली मुलाकात थी प्रीति और पूजा से, जो हमारे साथ एक ही क्लास में, एक साथ पूरा दिन बैठने के बावजूद आज पाँच महीने बाद हुई थी।

प्रीति मीठी-सी आवाज वाली, सबको अपनी बातों से एक बार में मोह लेती थी। ऐसा मैं इसलिए कह रही हूँ क्योंकि मुझे तो मोह ही लिया था उसने। लेक्चर के बाद छुट्टी में अपना पी.जी. दिखाने के वादे के बाद प्रीति, पूजा और मैं लेक्चर में ध्यान देने लगे, जिसने कब शाम कर दी आज पता ही नहीं चला। बाकी दिनों की शाम और आज की शाम में काफी फर्क था। सबसे बड़ा तो यही कि और दिन जब शाम होती तो होने में अपने पूरे एहसान दिखाती, वक्त काटे न कटता। लगभग रोज के दो या चार आँसू मेरी आँख से निकलकर शाम होने का नेग करते, क्योंकि मैं बहुत बोर हो जाया करती थी। बड़े दिनों बाद आज थकान महसूस हुई थी- एक मीठी-सी, सुकून भरी थकान जिसके बाद की नींद चेहरे पर मुस्कान लेकर आती है और उसी के साथ चली जाती है। आज जाकर बड़े दिनों बाद अच्छे-से घोड़े बेचकर सोना चाह रही थी मैं, जिसके लिए मैंने प्रीति से इजाजत ली। वह उसका पी.जी. देखने के बाद वापस बस तक छोड़ने आई थी मुझे। यहाँ जब नीतिका से दोस्ती जैसे वेंटिलेटर पर लग रही थी, कह सकते हैं कि ये एक नई दोस्ती की छोटी-सी शुरुवात थी।

जैसे-जैसे हॉस्टल में गीतू को मैं और नंदा दिन-दिन बढ़ने के साथ-साथ नए-नए कामों में ऑब्जर्व कर रहे थे, वहीं दूसरी ओर प्रीति के साथ बढ़ती दोस्ती में अब नीतिका और नीतू का रोल मानो चैप्टर क्लोज्ड जैसा हो गया था। अब हम सामने होकर भी एक-दूसरे के आगे से निकल जाते थे। न उसे कोई फर्क पड़ता था और न मुझे। ये एक तरह का ठहराव-सा था- एक लंच ब्रेक जैसा, मानो ये कोई इंटरवल हो, जिसमें प्रीति के साथ मैं उतने ही मजे कर पाती थी जितने मुझे अपना मन लगाने के लिए चाहिए थे।

क्या दोस्ती में वाकई सब जायज हैं? अगर हाँ, तो मैं कहूँगी कि अगर दोस्ती में सब जायज होता तो नीतिका क्या उस दिन के इंसिडेंट के लिए मुझसे ऐसे बिहेव कर रही होती अब तक, नहीं न। तब तो हमारी हर गलती, हर मजाक माफ हो जाता भई, पर हुआ नहीं कभी।

तब फिर कहाँ जायज हुआ दोस्ती में कुछ! असल बात ये है कि रिलेशन चाहे दोस्ती हो या कोई और, कुछ भी तभी तक जायज है, जब तक किसी दूसरे चहेते रिश्ते पर उससे इफेक्ट न पड़े।

यहाँ हॉस्टल में मेरे और नंदा के लिए जहाँ गीतू के तौर-तरीकों को समझ पाना काफी दिक्कत वाला होता जा रहा था, वहीं टाइम बढ़ने के साथ-साथ गीतू शायद पहले से भी ज्यादा

रिजर्व नेचर की हो गई है, ये बात मुझे और ज्यादा सताए रहती थी। गीतू अक्सर अपने अचार के डिब्बे से लेकर अपनी अलमारी में रखे ऑरिओ के बिस्किट के पैकेट तक का सारा सामान अकेले और छुपकर यूज करती थी। हमें ऑफर करना तो दूर, वो हमारे सामने निकालना तक ठीक नहीं समझती और इस सबका पता नंदा हमारे कमरे के बाहर रखे डस्टबिन में पड़े पैकेट फूड वाले रेपर से लगाती, जिसके कुछ टुकड़े गीतू के बेड पर पड़े मिलते और नंदा के अंदर का जग्गा जासूस जाग जाता।

वहीं कॉलेज में प्रीति एक शांत स्वभाव की मीठी छुरी जैसी लड़की थी, जितना अब तक मैंने उसे जाना था। वैसे थी तो उसके साथ एक के साथ एक फ्री वाले कॉम्बो की तरह ऐडीशन पूजा भी, लेकिन मैं उसको एक तरह से नापसंद करती थी। इसके बावजूद हम साथ रहते थे। अब भी मेरा हर हॉलीडे मजे से घर का बना खाना खाकर ही होता, बस अब अंतर ये था कि नीतिका की जगह प्रीति ने ले ली थी।

"तू वाकई बहुत अच्छा खाना बनाती है प्रीतो।" मैंने कहा जब हम हर बार की तरह उस संडे भी प्रीति के पी.जी. में बैठे पनीर के पराठे खा रहे थे।

"अपनी रूममेट को कभी नहीं लाती तू वैसे, उनको भी ले आया कर न, वो भी बेचारी एक दिन हॉस्टल के खाने से बच जाएँगी।" प्रीति ने कहा।

"इस लायक न हैं वो।" मैंने व्यंग्य करते हुए कहा।

"अच्छा... और तू है?" पूजा बोली।

"तेरे लिए एक सजेशन है पूजा, तू मुँह बंद रखा कर, सुंदर तभी लगती है तू।" मैंने पटाक से कहा तो खींसें निपोरने लगी पूजा।

"तू मेरा पहला ऑफिशियल बॉयफ्रेंड है प्रीति।" मैंने कहा।

"जी जनाब।" उसने कहा और माहौल दूर-दूर तक लालमय हो गया।

"ओए, यहाँ इलेक्शन होने हैं इंचार्जशिप के लिए।" गीतू ने आकर कहा, जब मैं और नंदा शाम की चाय पी रहे थे।

"जाएँगे क्या हम?" नंदा ने कहा।

"मैं तो नहीं।" मैंने एलान किया।

"क्यों, ऐसा क्या करेगी तब तू?" गीतू ने पूछा।

"हवन करेगी तब ये, हहहाहा।" नंदा ने दाँत दिखाने शुरू कर दिए।

"नहीं, तब तांडव होगा तांडव।" मैंने गुर्राकर कहा।

इस शाम से शामें जैसे खुशनुमा होने लगी थीं। जानकारी के लिए बता दूँ कि हमें रात 9 से 12 बजे तक अपने सेलफोन ऑफ करने होते थे, क्योंकि हॉस्टल के नियम-कायदों के मुताबिक ये स्टडी टाइम होता। इस टाइम पीरियड के दौरान किसी को भी अपने कमरे से बाहर जाने की इजाजत नहीं थी, सिवाय दो इमरजेंसी केसेस के जिनमें नंबर 1 और नंबर 2 वेल नोन हैं। इस टाइम में हमें बाहर निकलकर शोर मचाना, यहाँ से वहाँ डोलना, सहेली के कमरे के फेरे लगाना (किसी और के कमरे में बैठना), बर्तन धोना, नहाने जाना या सबसे मेन, फोन पे बात करना इवन फोन का ऑन होना ये सब गंभीर पाप की श्रेणी में आते थे। कॉरिडोर में निकलकर साँस लेना भी वर्जित था, ऐसे में बस कुछ काम थे जो हमें करना अलाउड थे, जिनमें सिर्फ अपने ही कमरे में बैठकर धीमी आवाज में गप्पें लगाने या बुक खोलकर आगे रखकर बकबक करने के

अलावा वाशरूम यूज़ करना हो सकता था। गप लड़ाते अगर वार्डन राउंड पर आ जाए (जो एक सजग वार्डन की तरह ऑलमोस्ट रोज ही राउंड पर आती थी), तो उसके बनते मुँह देखकर हमारी समझदानी इतना काम तो कर जाती थी कि अब इसके आने पर मौनव्रत रखना है। बाकी सीनियर्स जब हाजिरी लेने आते, तब चाहे जैसे उन्हें ट्रीट किया जा सकता था, पर हॉस्टल में उनका रौब देखकर आखिर किसकी इच्छा नहीं प्रबल होगी सीनियर बनने की। ये सुपरपावर उनको प्रोवाइड होनी थी आज रात, जब हम सब फ्रेशर को अपने पसंदीदा सीनियर को चुनना था। उसे हमारी वोटिंग के द्वारा सुपर पावर्स मिलनी थीं।

वक्त की रफ्तार का अंदाजा न तो कोई आइंस्टीन लगा पाया और न कोई ऋषि-मुनि। एयर इंडिया पर सवार होकर वक्त दिन से महीने में बदल जाता है। देखते ही देखते चुटकियों में छह महीने होने को आए, तो हमारे फर्स्ट सेमेस्टर के एग्जाम भी बस आ ही गए थे। अब जाकर इसका एहसास होने लगा था कि हॉस्टल आए एक लंबा अरसा गुजरा हमारा। इन महीनों में सिवाय पढ़ाई के ऐसा कुछ नहीं था जो हमसे रहा हो करने से। पर अब बारी थी इंसाफ की, तो जाहिर है टेंशन होनी ही थी। कभी भी आइए, कभी भी जाइए वाले फॉर्मूले पर पेपर हुए, लेकिन हम खुश थे कि चलो हो गए बस।

कुछ शामें होती तो गुनगुने पानी की तरह सर्दियों में आराम और सुकून देने वालीं ही, पर इनके दूरगामी परिणाम किसी अनचाही खुश्की जैसे रहते हैं, जो बाद में बढ़ती जाती है और मॉइश्चराइजर की उचित व्यवस्था न होने के कारण बढ़कर शरीर पर कई किस्म की खुजली और इन्फेक्शन दे सकती है।

नाइंथ स्टैंडर्ड में पढ़ाया गया रिफ्लेक्शन ऑफ लाइट, बोले तो प्रकाश का परावर्तन समझ आना तो टेढ़ी खीर है ही, पर सिर्फ किताबी दुनिया तक क्योंकि असल जिंदगी में इसका अप्लाई होना कितना दर्द भरा होता है, ये हमारे रिजल्ट के जरिए जल्दी ही हमें मालूम होने वाला था। हमें पता तो था इन दो महीनों का भी, लेकिन इनमें हम ऐसे खोए कि कब अंगड़ाई लेकर मौसम और दो महीने बीतते चले गए, हम देख ही नहीं पाए।

सोर्स ऑफ ब्रेन से जब प्रकाश आंसर शीट की सतह पर डालकर आए थे, ताजा हालात तो मालूम-ए-रिजल्ट हमें तभी हो गए थे, लेकिन वो इतना पेनफुल हो जाएगा इसका पता आज की इस खुशनुमा सुबह के मक्खी छींके जैसे माहौल से हो गया था।

आखिर जो जगह धनिए की चटनी में धनिए की है, वो जगह हमारी जिंदगियों में रिजल्ट की रही है हमेशा से। मेरी एक मित्र कहती थी कि लड़कियों की सोच शुरू मार्क्स से होती है और चूल्हे पर खत्म। कसम से, बहुत बुरा लगता था, ऐसा बुरा कि सोचती थी, कभी किचन में नहीं जाऊँगी अपनी लाइफ में। पर जैसे दुकानदार माल के बिना कैसे जिए, वैसे लड़कियाँ किचन के बिना कैसे! ये उनकी मजबूरी नहीं, उनकी आदत है।

इस सुबह भी हम बाकी सुबह जैसे जागे थे। एक-दो मच्छर होने लगे थे, मौसम जो बदल रहा था, सुबह चादर पर मरे मिले थे जिन्होंने रातभर कान पर कुनकुन करके सोना हराम किया था मेरा। कुछ अंगड़ाईयाँ आवाज करके बिस्तर पर पड़ी रह गई थीं कल के लिए और कुछ साथ में उठकर आगे चल रही थीं बाथरूम तक जाने के लिए।

बाकी सब वही रहा ब्रेकफास्ट की टेबल से लेकर नंदा-गीतू की मीठी-खट्टी नोंक-झोंक तक, सिवाय एक अच्छी बल्कि यूँ कहो कि बहुत अच्छी बात के। वो अच्छी बात ये थी कि आज

नीतिका की आवाज बड़े दिनों बाद सुनाई दी, जिसे मैं शायद हमेशा से मिस करती रही थी।

"पाशु।" मैं क्लास के लिए सीढ़ियाँ चढ़ ही रही थी कि एक जानी-पहचानी आवाज ने मुझे रोक लिया।

"कैसी है पाशु?" अगर मैं ठीक देख पाई थी तो ये नीतिका थी।

"सॉरी यार, उस दिन के लिए मैं वाकई शर्मिंदा हूँ, मेरी वजह से तू और नीतू...।" मैंने अधूरा ही बोला था कि बीच में रोक दिया नीतिका ने। "उसकी कोई जरूरत ही नहीं।"

"थैंक्स यार।" मैंने खुशी से कहा। दिल की मानूँ, तो आज मेरी खुशी किसी पीपीटी की स्लाइड पर बनी थैंक्यू के बाद आने वाली बड़ी सी स्माइली नहीं, बल्कि अंदर से निकली सिस्टमैटिक स्माइल थी। उसे देखकर कौन भला यकीन करेगा कि ये अब कुछ ही पलों की मेहमान थी।

"अच्छा, तू ये बता कि एग्जाम्स कैसे हुए थे?" नीतिका ने पूछा।

"क्या ही बताऊँ इस बारे में।" मैंने रुआँसा-सा चेहरा बनाते हुए कहा।

"अच्छा मतलब मेरे जैसे हुए थे, ये कह न।" कहकर वह जोरों से हँसने लगी और मेरे चेहरे पर भी एक मुस्कान वापस से पाई गई।

हम क्लास में पहुँच गए थे और मेरी दोस्त प्रीतो मुझे नीतिका के साथ आता देखकर कोई खासा खुश नहीं हुई थी।

"इसे क्यों बुलाया यहाँ तूने।" प्रीति मेरे कान में फुसफुसाई।

"श्हह्ह।" मैंने उसे अभी चुप रहने का इशारा किया।

"लो, ये भी आ गई।" प्रीति अब पूजा से फुसफुसाई, जिसे मैंने सुन लिया।

"प्रीतो, प्लीज यार, चुप कर।" मैंने धीरे से कहा।

"मुझे ये दोनों बिलकुल पसंद नहीं हैं, मैं बता दूँ तुझे, एक इसका वो बॉयफ्रेंड जिसके बारे में ये सबको बकती फिरती है।" प्रीति ने नाक-भौं सिकोड़कर कहा।

"मेरी माँ, चुप कर, तू लड़ाई करवाएगी।" मैंने उसको साइड में करके कहा।

"अच्छा, फिर क्यों बुलाया है तूने इन्हें यहाँ।" प्रीति लगभग गुर्राते हुए बोली।

"कोई जल रहा है क्या?" मैंने आँख मारते हुए कहा।

"ओह बिलकुल नहीं।" प्रीति मुँह बनाकर बोली।

"कोई प्रॉब्लम है क्या यहाँ।" नीतिका शायद थोड़ा समझ गई थी।

"बिलकुल नहीं, ये एक्चुअली पूछ रही थी कि संजू कैसा है अब।" मैंने बात को संभालते हुए कहा।

"अच्छा है, बल्कि उसने तो उस दिन भी हम ही को कहा कि हमने ऐसे तुझसे बात करना क्यों बंद कर दिया।" नीतू ने बताया।

"हाउ स्वीट।" मैं मुस्कराई।

"हम तो कब का भूल चुके हैं वो सब।" नीतू ने दोहराया तो सुनकर ठंडक पड़ी मेरे दिल को।

"अभी शायद क्लास नहीं हो रही है, पाशना मेरे साथ कैंटीन जा रही है, तुम लोग चाहो तो यहीं रुक जाओ, नहीं तो चलो फिर साथ ही।" प्रीति ने मेरा हाथ पकड़कर उठाते हुए कहा।

यह नीतिका को तो लगना ही था, मुझे भी बहुत अजीब लगा।

“प्रीतो, तुझे हो क्या गया है?” मैंने कहा।

प्रीति को ये सब अच्छा नहीं लगा था, जब बात उसकी किसी भी दोस्त के कहीं भी बढ़ रहे अटैचमेंट की हो। होता है, एक अलग-सी असहजता हम महसूस करते हैं जब हमारे नेल पेंट के कलेक्शन में से कोई हमारा पसंदीदा रंग उधार ले जाए और वापस लाने में देर लगाए, कुछ ऐसा ही लगता है उस वक्त जब अपनी बेस्ट फ्रेंड एक नई बेस्ट फ्रेंड बनाए। कसम से, सौतन वाली फीलिंग के मजे ले लिए जाते हैं बिना पिया के।

नीतिका ने जैसे बरसों की रुकी बातें एक घंटे में हमेशा वाले अपने फ्लो में बिना कॉमा, बिना फुलस्टॉप के बता डाली थीं, जिसके बाद प्रीति लगभग चक्कर खाकर गिरने ही वाली थी।

“तुम सब यहाँ ठूँसते रहना बैठकर चाय-समोसे, वहाँ दुनिया लुट रही है कंबख्तो।” ये पूजा थी जो इतना चीखकर बोली थी कि हमारे साथ-साथ बाकी कैंटीन में पसरे लोग भी हिल गए।

“पागल है क्या, धीरे बोल एक तो।” मैंने सकपकाते हुए कहा।

“हुआ क्या, इतना जल्दी में क्यों मर रही है तू।” प्रीति ने पूछा।

“मर तो तुम सब जाने वाले हो अब जो मैं बताउंगी।” वह झेंपकर बोली।

रिजल्ट आ गया है स्सालो, छोड़ो समोसा और चलो जल्दी कैफे।” उसने कहा तो जैसे एकदम ही हमारे दिल के अमीटर की रीडिंग मैक्सिमम करंट को पार करके बंद पड़ गई।

“जल्दी चलो।” मैंने कहा, आवाज जैसे जमीन में धँस गई मेरी।

और हमारे चाय-समोसे ज्यों के त्यों तिरस्कृत-से पड़े रह गए वहीं।

“नहीं प्लीज, मुझे नहीं देखना, मुझे इस कम उम्र में हार्ट अटैक से नहीं मरना।” नीतू ने कहा।

“क्यों नौटंकी कर रही है, चल न नीतू।” प्रीति बोली।

जैसे एकदम-से मातम-सा छा गया था सबके चेहरों पर। जो मोहरें अभी कुछ देर पहले तक शतरंज की बिसात पर चौकन्ने सिपाहियों के जैसे जश्न रच रही थीं, वहीं पर कुछ ही क्षण बीतते ही जैसे दुनिया उजड़ी-सी लग रही थी। हाल मेरा भी वही था- लंगड़े घोड़े जैसा।

बिना एक-दूसरे से कोई बहस किए हम सब कॉलेज के नेट कैफे की तरफ भागे। वहाँ जाकर एहसास हुआ कि रिजल्ट देखने का नंबर आना तो मुश्किल ही नहीं नामुमकिन भी था। भीड़ का आलम... ओहहो! जैसे चाँदनी चौक का फड़िया बाजार, सुबह से रात हो जाए पर जैसे पत्तों में से भी लोग टपककर गिरते हैं न, वैसे गिरे जा रहे थे जाने कहाँ-कहाँ से।

“बाहर जाकर देखना पड़ेगा, पर कैसे जाएँ बाहर, अभी तो 1 बजने में काफी टाइम है।” मैंने घड़ी पर निगाह घुमाते हुए कहा।

“अभी तो सिर्फ 12 ही बजे हैं।” नीतू ने माथे पर सिलवटें और बढ़ा ली थीं, जिससे वो पहले से भी ज्यादा भूतिया नजर आ रही थी।

“क्लास ही में चलकर इंतजार करें फिर।” मैंने कहा।

चल पड़ने के अलावा कोई और चारा नहीं था। क्लासरूम अभी हमारी जगह से दो फ्लोर ऊपर था, जिसके बाद हमें बाहर से अंदर आने के लिए पूछता देख मैडम ने हमे ऐसे देखा था, जैसे उनके पति की प्रेमिका रही हों हम कभी।

“कभी-कभी तो नजर आती हो, बाहर भी क्या रखूँ तुम्हें, आ जाओ, आसन ग्रहण करो।” मैम ने तीखे स्वर में कहा।

वो एक घंटा काटना कितना दुखदायी था। जैसे किसी अपने की लाश लेकर पुलिस आ रही हो पहचान कराने। इसका एहसास उस टाइम उस क्लासरूम के घुटनभरे वातावरण में बिताकर हमें हुआ था।

घड़ी ने 1 बजाए और हमारे दिलों की बीट ने 72 से बढ़कर 90 पर ला दिया खुद को। कुछ बुखार-सा करा दिया, लगभग 104° F वाला, अंदर ही अंदर जो किसी तरह से शरीर के लिए तो नुकसानदेह नहीं था, पर मन (दिमाग) पर इसका असर बहुत ज्यादा तगड़ा था।

हम भाग पड़े गेट की ओर जिसे निश्चित तौर पर टीचर ने अपनी तौहीन ही समझा होगा। ये अच्छी तरह जानते हुए भी मैं भागी थी टाइम सायरन होते ही। आगे कौन था, पीछे कौन, पता नहीं पर हम सब अपनी पूरी ताकत लगाकर भागे थे।

कभी-कभी लगता है, टाइम बस ऐसा आए कि घड़ी वहीं रुक जाए, सारी दुनिया पॉज हो जाए अपनी जगह पर, बस हम चलते रहें, भागते रहें, उस काम को सबसे पहले हम ही अंजाम दे दें। खंभे पर जिस स्पीड से बिजली आने पर हमारी यू.पी. में तहलका मचता है, उसी रफ्तार से हम गेट पर लपके।

"प्लीज अंकल, जल्दी गेट खोलो।" ये मैं थी।

"न खोलें तो।" गार्ड बेशर्मों-सा मुस्कराया।

"आपको कोई चुल है क्या।" मैं चिल्लाई, तो आसपास से निकलती लड़कियाँ भी गार्ड पर हँसने लगीं, जिसकी वजह से बुरी तरह झेंप गया वह।

"आप तमीज में रहेंगे न अंकल तो मैं कभी आपसे ऐसे बात नहीं करूँगी, पर उसके लिए जरा आपको भी अपनी उम्र का लिहाज करना ही होगा," कहकर मैं गेट से बाहर निकल गई, बाकी सबके साथ गार्ड को वहीं गुर्राता छोड़कर।

"इसे कुछ ठंडा पिला देना।" गार्ड पीछे से चिल्लाया, तो दाँतों की बत्तीसी चमकने लगी पूजा की।

कैफे पर पहुँचकर मुआयना किया हम चारों ने पहले चारों तरफ का। कैफे एक बहुत ही तंग घुटनभरे कमरे में बना था, जहाँ कुछ कुर्सियाँ, कुछ pc के आगे रो वाइज लगी थीं। कैफे के सारे कोनों पर बैठने वाले लड़कों या जो भी लोग वहाँ बैठते होंगे, उन्होंने सिगरेट के टोटे और गुटके के पीक सजा रखे थे। उधर देखना अभी पी हुई सारी चाय को बाहर निकाल देने जैसा था, सो उसकी तरफ ध्यान बिलकुल न देने का सख्ती से मन बना लिया था मैंने। दीवारों पर हर कैफे की तरह जाले लगे थे, क्योंकि आज तक जितने कैफे में मैं गई, सभी में कंप्यूटर के किनारे जालों से भरे ही पाए गए थे।

"देख लिया हो चारों तरफ तो pc ले लें उससे बात करके?" पूजा बोली मुझसे।

"भैया, पहले सेमेस्टर दा रिजल्ट देखना-सी, निकाल दोगे क्या?" नीतिका ने कैफे वाले से कहा।

"हाँ जी, बिलकुल निकाल देंगे, होर बैठे किस वास्ते हैं हम।" कैफे वाला बड़े शायराना अंदाज में बोला।

'बड़ा अजीब आदमी है।' मैंने सोचा।

"भैया, एक्चुअली रिजल्ट्स काफी हैं तो हम देख लेंगे साइट, आप बस pc अलॉट कर दो हमें।" मैंने कहा।

“ठीक है मैडम, जैसे आप चाहो। pc-4 ले लो आप सब।” वह बोला और pc ऑन करके चला गया और हम सबने pc को चारों तरफ से घेर लिया।

“सबसे पहले किसका देखें?” पूजा ने साइट खोलते हुए कहा।

“मेरा नहीं, प्लीज।” प्रीति और नीतिका एक साथ चिल्लाई।

“क्या ड्रामा फैलाए हो बे, देखोगे नहीं क्या, इतना टाइम नहीं है, कोई क्लास का आ गया तो देखते रहना उसके सामने और कटाते रहना अपनी नाक।” मैंने कहा।

“…पर मैं ही क्यों, नीतू का देख लो, वो है भी नहीं यहाँ।” मैंने उस पर डालते हुए कहा।

“वो कमजोर प्राणी है कहाँ, अब तक नहीं आई।” नीतिका बाहर देखने लगी।

“बताओ, मेरे उस गरीब सेहत वाले बच्चे को जाने कहाँ छोड़ आए तुम।” मैंने कहा।

मेरे बार-बार रोकने के बावजूद मेरे बैग से उड़ता-उड़ता मेरा आइडेंटिटी नंबर प्रीति के हाथ में था, जिसके बाद देखते ही देखते डेट ऑफ बर्थ रोल नंबर लोडिंग 1%, 6%, 17%, 45%, 78%, 96%, ... 100%.

लोडिंग कंप्लीट।

और जैसे मेरी आँखों के आगे सब काला अँधेरा बादल छा गया।

वहाँ बड़े-बड़े अक्षरों में बैक आ गई थी मेरी। जैसे कोमा में महीनों पड़ा मरीज सब्र से पड़ा तो रहता है, पर असली रोने की रस्म तो प्राण निकलने के बाद ही शुरू होती है न वैसे ही इसका पुराण था।

बिना कुछ देखे, बिना किसी से कुछ कहे, सीधा कैफे से बाहर आ गई और हॉस्टल की तरफ बढ़ चली।

कोई आवाज जैसे अब नहीं आ रही थी कानों तक, कुछ धँस रहा था बस दिल में, इसके अलावा न कोई एहसास था न कोई आहट। आती-जाती दुनिया कुछ कह रही थी मुझे देखकर, पर क्या? कुछ समझ नहीं आया। कुछ निचुड़-सा रहा है अंदरखाने में, जैसे कीड़ों ने खुरच-खुरच कर किसी बड़े शरीर के अंदर अपनी सतह बना ली हो और घाव को नासूर बनाने की कोशिश में लगे वो कीड़े तेजी से अपने मंसूबों में कामयाब हो रहे हों।

“आ गई मैं भी।” नीतू ने अपनी बढ़ी हुई हार्ट बीट का एहसास मुझे कराते हुए कहा।

मैंने कोई जवाब नहीं दिया।

वो हैरान-सा मुँह लिए अंदर चली गई। पूरी तरह अंदर पहुँची भी नहीं होगी कि अगले ही पल सारी पंगत मुँह लटकाए बाहर थी।

“मैं तो देख लूँ।” यह कहते हुए नीतू लास्ट में बाहर आई।

“क्या देखेगी तू अलग से, क्या हो जाएगा उससे, तेरी सबसे ज्यादा सब्जेक्ट में बैक है, मुँह सबसे ज्यादा तू ही छुपा दुपट्टे से।” नीतिका बोली, तो शांत पड़ गई नीतू एकदम।

“चल, हम कहीं घूमने चलें, मुझे तुझसे कुछ जरूरी बात करनी है।” प्रीति बोली।

“मेरा मन नहीं है प्रीतो, आज नहीं, मुझे हॉस्टल वापस जाना है।” मैंने रोना-सा मुँह लेकर कहा।

“तेरा मूड ठीक हो जाएगा पाशु, चल न, किसी पार्क में चलकर बैठते हैं। शांति चाहिए न तुझे, चल तेरी फेवरेट जगह चलते हैं, जिंदल पार्क।” प्रीति ने कहा।

“मैं पीजी जा रही।” कहकर पूजा चली गई।

"असल में ठीक ही रहा, पूजा अपने आप चली गई।" प्रीति बोली।

"क्यों?" मैंने कहा।

"परेशान मत हो पाशु, कुछ सोचेंगे इसका भी।" प्रीतो बोली।

"पार्क में सबसे गर्म जगह ढूँढ़ ली थी हमने और आराम से घास पर पसरकर माथे पर हाथ रखकर शोकसभा में बैठ गए थे मानो हम।"

ख्याल आते ही डर-सा गई थी मैं, पापा की डाँट से नहीं बल्कि उन उम्मीदों से जो पापा को मुझसे थीं। मैं शर्मिंदा थी मन से। मुझे गिल्ट था उन सब चीजों के लिए, जिनके चलते मैंने अपनी पढ़ाई और उनके सपने को इग्नोर किया था, जो मेरी आँखों में पल रहा था। मुझे पता था कि वो मुझे कुछ नहीं कहेंगे, पर कई बार रिएक्शन न देना रिएक्शन देने से ज्यादा दर्द भरा होता है। कुछ चुप्पियाँ अंदर तक तोड़ देती हैं और कुछ पछतावे जीने नहीं देते, आत्मग्लानि से डूबकर जा मरो कहीं ये मन करता है। नजर अगर पार्क की तरफ घुमाएँ तो हर तरफ हरियाली थी, जो बारहों महीने ही हुआ करती थी। इस पार्क को स्पेशल केयर जो दी जाती थी। पर ठंडी वाली सुनहरी धूप आज नहीं दिखाई दे रही थी लिहाजा मुँह से भाप निकलना अच्छा लग रहा था।

"अब हम क्या करेंगे यार, कैसे पास होंगे, पूरे साल बाद बैक के एग्जाम देंगे न।" मैंने कहा प्रीतो की तरफ देखते हुए।

"इसे अब बंद कर न।" मैंने परेशानी जताते हुए कहा प्रीति से, जो कबसे फोन में लगी थी।

"रुक पाशु, मैं हमारे लिए ही कुछ इंतजाम कर रही हूँ।" वह बोली।

"मतलब?" जैसे मैं कुछ समझ नहीं पाई।

"यूनिवर्सिटी में...।" वह बोली।

मेरी आँखें उस लॉन जैसी चमक उठीं, जहां सर्दी के कोहरे में धूप एक-एक किरण करके फूटने लगती है।

"कोई वहाँ है तो जिसे मैं जानती हूँ भैया के थ्रू, भैया उसका नंबर पता नहीं देंगे भी या...।" प्रीति बोली।

प्रीति मुझे देखकर मुस्कराई, तो ये बात थी जो तुझे करनी थी, कहकर मैं एक बार फिर अपने उम्मीदों के घड़े में लगे पौधे को पानी देने की तैयारी में लग गई। कोई नई कली अभी-अभी दिखी थी, आँखों को उठाकर सूरज की तरफ को मुस्काई थी, मानो अपने जन्म के लिए खुशियाँ मनवाने की उम्मीद में हो। आसमान की खुद की कसमसाहट मेरी पुतली में दिख रहे रेटिना से मिलकर अपना रंग उसमें घोल चुकी थी और धुंध अब छँटने की तैयारी में लग रही थी, मानो बस्ता समेटकर अब जा रही हो विदाई लेकर।

"भैया से बात करके कॉल करूँगी तुझे रात के पहले।" प्रीति ने आश्वासन दिया, जो मेरे लिए इस वक्त सबसे जरूरी चीज थी।

"मुझे जल्दी जाना होगा प्रीतो, कॉलेज ओवर होने में बस एक ही घंटा बचा है। बस से ही तो जाना है न कॉलेज, तुझे तो पता है ही।" मैंने कहा।

"हाँ, उसके पहले हम वापस पहुँच जाएँगे, तुझे बस तक छोड़कर ही जाऊँगी मैं पीजी वापस।" वह बोली।

"खाना भी खाकर चले जाती।" प्रीति ने बड़े लगाव के साथ कहा, तो पानी भर आया मेरी आँखों में।

"परेशान मत हो पाशु, मुझसे जितना हो सकेगा मैं जरूर करूँगी, मेरी भी तो है न बैक।" वह बोली।

"ठीक है, बात होते ही कॉल करना," कहकर मैं बस में बैठ गई।

सफर छोटा हो या लंबा, बस का सफर अपने अलग ही मिजाज रखता है। टेंशन भी कम और समय की कमी वालों के लिए सबसे बढ़िया साधन भी। यूँ तो मैं उनमें से नहीं थी जिनके पास समय की कोई कमी हो, पर समय बहुत ज्यादा भी नहीं था। हाँ, कह सकते हैं कि सफर मुझे पसंद है, चाहे वो बस का हो या ट्रेन का या फिर पैदल।

मेरी तरह ये जो सफर प्रेमी होते हैं न, इनको पता होता है कि कोई भी ताकत इनके उस सफर में लगने वाले कम से कम समय को और कम नहीं कर सकती है। तो क्यों न शांति से, बिना बेचैन हुए उसे बस उसी में खोकर एंजॉय किया जाए। इसलिए भी ख्यालों की दुनिया मेरी ही तरह जिनकी फेवरेट है, सफर उनकी सेकंड फेवरेट जिंदगी हो सकता है।

रूम में पहुँचकर बहती बड़ी-बड़ी आँसुओं की नदियाँ देखकर वहाँ के रिजल्ट के भी ताजा समाचारों का अंदाजा लगाया जा ही सकता था।

"अरे, इस दुनिया में आज कोई पास भी हुआ है या नहीं?" मैंने जोर से कहा।

"क्या तू भी...?" नंदा ने सिर्फ इतना पूछा।

"हाँ, मेरी सारी दोस्त भी, एक-एक, गिन-गिन के।" मैंने बताया।

"सच में।" गीतू जो कोपभवन में पड़ी थी, उठ बैठी मुझे देखकर अब।

ये सुनकर उन दोनों के चेहरों पर सुकून आता साफ पाया गया, जिसे देखकर समझ आ गया कि जितनी खुशी दूसरों के रिजल्ट के दुख को देखकर है न, दुनिया में उतनी कहीं नहीं।

कमरे का माहौल ये कह तो नहीं रहा था कि वहाँ खाना मिलेगा, पर भूख के आगे कोई कब तलक घुटने न टेक पाए भला।

"खाना तो खा लिया होगा तुम दोनों ने?" मैंने धीरे से पूछा, हालाँकि मुझे उम्मीद थी कि खा लिया होगा अब तक तो।

"कहाँ, ऐसे में तो बड़ा खाना ही उतरता न हमारे गले से।" गीतू ने कहा तो जैसे जान में जान आई मेरे।

"तो चलें अब खाने।" थैंक गॉड, अब अकेले तो नहीं खाने जाना पड़ेगा, सोचा मैंने।

"खा ले तू तो पहले।" गीतू बड़बड़ाई।

"तू ऐसे बिहेव कर रही जैसे तेरी बैक में मेरा हाथ हो।" मैंने गीतू को उसके व्यवहार के लिए झिड़क दिया।

"मैंने ऐसा कब कहा?" गीतू ने चिढ़कर कहा।

"जो भी है, चल रहे हो तुम दोनों क्या फिर...।" मैंने स्पून उठाते हुए कहा।

"हाँ, चल रहे हम भी।" नंदा और गीतू बोले।

"इतने सारे राजमा चावल।" मेस में मेरी प्लेट को घूरते हुए नंदा ने कहा।

"बैक आई है कोई टॉप नहीं किया तूने, थोड़ी तो शर्म से ठूँस।" गीतू कसमसाते हुए बोली।

"तो क्या मर जाऊँ अब, हद है, खाना तो खाऊँगी ही न। तुम दोनों रखो व्रत, मैं इतनी पागल नहीं हूँ।" मैंने भड़काऊ बयान देते हुए कहा।

"अब तुम दोनों चील-कौओं जैसे लड़ना बंद करोगे, सबको बता दोगे ऐसे कि किस लायक

हो तुम, क्या गुल खिलाए हैं एग्जाम में तुमने गधो।" गीतू बोली तो दिमाग पर प्रेशर आकर पड़ा हम दोनों के।

"देखो, यहाँ किसी को पता नहीं चलना चाहिए कि हमारी बैक आई है, अपनी इज्जत अपने हाथ," समझाते हुए गीतू ने हम दोनों के माइंड सेट कर दिए।

"हाँ, ये तो है, पर हमारा कोई दोस्त है कहाँ यहाँ, जो पता करने आएगा हमसे?" मैंने कहा।

"तब भी, ऐसी शक्लें लेकर फिरोगी तो पड़ोसी तो नोटिस करते ही हैं न, क्या सोचेंगे वो।" गीतू बोली।

"हाँ यार, किसी को नहीं दिखाना है हमारा ये।" नंदा बोली।

"तू कटिया जैसी, बड़ा रुक जाती बिना खाए, बना रही हमें," कहकर जोरों से हँसने लगे मैं और गीतू।

"अब जो होना था हो गया, अब अच्छे से पढ़ाई करनी है, नो शैतानी, नो मोर मस्ती। मस्ती करेंगे बट साथ-साथ पढ़ने का टाइम टेबल बनाना पड़ेगा।" गीतू, मैं और नंदा खाने की टेबल पर बैठे डिस्कस करने लगे।

"अपने पास न होने का रीजन पता है मुझे।" मैंने दिमाग पर बाल्टी भरके जोर डालकर सोचते हुए कहा।

"अच्छा, वो क्या?" गीतू बोली।

"मेरा मनोरंजन नहीं हो पा रहा।" मैंने अफसोस जताने वाला चेहरा बनाकर गीतू को दिखाते हुए कहा।

"क्या?" गीतू चौंक गई। उसे लगा था कि मैं हमारी लापरवाही और बेमतलब रिस्क लेकर मजे मारने वाली आदत को दोषी करार देते हुए अब ऐसा न करने का फैसला करूँगी।

हम अपने फेवरेट राजमा चावल पर अपना आधा-अधूरा ध्यान लगाये खाते जा रहे थे और सोचते जा रहे थे फन की कोई तरकीब, जो हमारे आधे-अधूरे प्रोग्राम को पूरा करके हमारे कलंक जैसे रिजल्ट को सुधारकर हाथ में दे दे, बस।

आज काफी दिनों बाद मेस में बैठकर मैंने अपने क्रश नंबर 3 को बहुत मिस किया, जिसके सहारे पूरा ट्वेल्थ पढ़ गई थी मैं सुकून से। आज तो बस सामने से वो आए कहीं से और बैठ जाए कहीं जस्ट पीछे वाली लड़कों की रो में, जहाँ से मैं कनखियों से उसे पता चले बिना उसे देख सकूँ और सिलेबस करते-करते कब दिन बीत जाए मुस्कराकर ये पता ही न चले। एक कहानी फिर इस मेस में बन जाए, जो स्कूल में न जाने कितनी बार बनते-बनते बस रह गई क्योंकि वो कभी कहने नहीं आया और मैंने कभी कोशिश नहीं करनी चाही। गीतू और मैं तो क्लासमेट रहे थे, इसी रिश्ते-नाते से हम अच्छा-खासा वक्त इस पर बात करके बिताते थे।

बीत चुके स्कूली कनेक्शन। आपस की बन रही, बन चुकी या बनते-बनते रह गई कही-अनकही कैमिस्ट्री। किसका क्रश कौन रहा और कौन किसे लेकर काफी कन्फ्यूज़ रहा, ब्ला-ब्ला। ऐसे टॉपिक मेरी और गीतू की रात-रात तक बातें करने की वजह हुआ करते और इसमें हम दोनों हमेशा अच्छा फील करते थे। कभी खट्टी इमली जैसा लगता जब कोई सीक्रेट पता लगता और कभी मीठी मिठाई जैसा जब वो बात सुनकर इतना अच्छा लगता कि खुद बताने वाला नहीं जानता होगा कि वो क्या बता गया दरअसल। ऐसी नई से नई बातें सामने आती रहतीं और हमेशा इनसे गुदगुदाते रहते। इतने महीनों में भी न गीतू का स्टॉक खत्म हुआ इन बातों को लेकर और

न ही मेरा। ये ऐसे टॉपिक माने जा सकते थे जिन्हें चाहे सुप्रीम कोर्ट से घोषित करा लो।

जो मिलता रिजल्ट ही पूछता, चाहे जान-पहचान न हो तब भी। चेहरे के उड़े रंग ही पैमाना बन जाते आए हुए रिजल्ट के, इसलिए हम तीनों ने ये तय किया कि हम आज शाम बाहर ही नहीं घूमेंगे, प्रेयर होते ही सीधे अपने कमरे में आएँगे और दरवाजा जल्दी से बंद कर लेंगे। किसी को फेस ही नहीं करेंगे, तो कोई पूछ भी नहीं पाएगा हमसे इस बारे में और खाना खाकर रात को जल्दी सोने का नाटक करेंगे, जिससे पड़ोस वाले जिनसे हमारी आते-जाते स्माइल पास है, वो भी हमसे बात नहीं कर पाएँगे। तो तय रहा। हालाँकि मुश्किल बहुत हुई, पर आखिरकार मैं ये पचा पाई थी कि प्रीति वाले किसी सोर्स के बारे में जिक्र नहीं करना है।

"ट्रिन-ट्रिन।" जोर की एक फोन बेल ने हमें हिलाया, जिसे बिना साइलेंट करे हम खाना खाकर अभी-अभी लेटे थे।

"धत तेरे की, इससे घटिया रिंगटोन और नहीं मिली तुझे फोन की?" नंदा ने कानों पर हाथ रखने का अभिनय किया।

"हाँ प्रीतो बोल, कुछ बात बनी क्या?" मैंने उत्सुकता से कहा।

"हाँ, मैं वही बता रही।" उधर से वही धीमी-धीमी आवाज आई हमेशा वाली, "एक लड़का है। मेरे गाँव का है। वहाँ यूनिवर्सिटी में क्लर्क है शायद, उससे बात हुई है मेरे भैया की। भैया उसको पैसे दे देंगे उसके काम के, हमें बस यूनिवर्सिटी जाकर उससे मिलना है।" उसने कहा।

"अच्छा, ठीक-ठीक, मिल लेते हैं फिर जल्दी से जल्दी उस बंदे से, तू जानती है क्या उसे?" मैंने पूछा।

"कल चलते हैं, अगर तुझे आराम से लीव मिल जाए तब, नहीं तो परसों चलते हैं, तू बात कर ले अपनी वार्डन से और आ जा, सुबह से शाम तक हम लौट भी आएँगे वापस।" उसने कहा।

"ठीक है, थैंक्स यार प्रीति।" मैंने एहसान मानते हुए कहा। आज वाकई मैं उसकी दोस्ती के तले दब गई थी और सच में आज उसकी अच्छाई को मैंने महसूस किया था।

"पागल है तू भी न, तुझे रोते थोड़ी देख सकती हूँ मैं कभी ये बता... और फिर मुझे अकेले यूनिवर्सिटी जाने में अजीब लगता, इसलिए साथ भी हो जाएगा किसी का।" वह बोली।

"लव यू।" मैंने कहा।

"न-न माता, बस इसके बदले एक एहसान तू कर दे कि अपनी उस नीतिका को या अपने हॉस्टल में किसी को हमारी इस जर्नी के बारे में कुछ मत बताना, कभी वो सब मेरे पीछे पड़ें फिर।" वह बोली।

"सुन प्रीतो, इन दोनों को क्या बोलकर जाऊँ, क्या बहाना बनाऊँ, पकड़ी गई तो झूठ पर?" मैंने आशंका जताई।

"वो तू देख।" उसने कहा।

"ठीक, फिर कल सुबह निकलते हैं। मैं ले लूँगी लीव वार्डन से और वैसे भी यूनिवर्सिटी के लिए वो मना नहीं करेगी, इन दोनों को भी संभाल लूँगी मैं।" मैंने कहा।

"ठीक है, लीव लेकर एक बार मुझे कॉल कर देना, मैं उसी हिसाब से करूँगी फिर, एक परसेंट न मिले ये भी तो है न।" वह बोली।

"ओके डार्लिंग, सी.यू सून।" कहकर मैंने फोन रख दिया।

कमरे में आई तो देखा, पड़े सो रहे थे मेरे दोनों दुष्ट रुमिज, जो सोते हुए बड़े ही इनोसेंट

लग रहे थे। रोकर सोने का भी अलग ही मजा है, थक इतना जाते हैं कि नींद बहुत अच्छी वाली आती है।

यूनिवर्सिटी के कल के प्लान के बारे में सोचा मैंने अपने बिस्तर पे लेटकर।

घड़ी देखी तो टाइम था अभी प्रेयर में। कैसी होगी यूनिवर्सिटी? जिससे हम मिलने जा रहे उस क्लर्क के बारे में सोचा, तो फाइल्स और मार्कशीट्स के बीच घिरा हुआ एक नवयुवक मेरे जेहन में आया। प्रेयर के कुछ देर पहले उठे ये लोग। तब तक दिमाग लगातार सोचता रहा, चलता रहा यूनिवर्सिटी की राह पर।

"टाइम हो गया क्या प्रेयर का?" गीतू आँखें मलते हुए बोली।

"हाँ लगभग।" मैंने कहा।

"विचारों के दरिया से बाहर निकलो जानेमन, यहाँ कोई कुछ पूछ रहा है।" गीतू बोली तेज आवाज में, तो नंदा भी उठ गई।

"क्या?" मुझे सुनकर थोड़ा अजीब लगा।

"क्या-क्या बोल रही तू ये?" नंदा कहने लगी।

"अपनी ही टोन समझ नहीं आई क्या पाशु तुझे, तू तो हमेशा ऐसे ही फिलोसफी में बात करती है।" गीतू ने कहा।

"हम्मम्म।" मैं कुछ सोचकर बोली।

"आइडिया।" मैं बुदबुदाई, जैसे बहुत देर बाद दिमाग की बत्ती जली थी, जैसे किसी मयखाने में ताजा रोशनी हुई हो घंटों के अँधेरे के बाद। मैं मुस्कराई।

"गीतू बहन सुन ना" मैंने उसकी तरफ देखकर बच्चों जैसे अंदाज में कहा, "मैं सोच रही हूँ कि प्रीति के पीजी जाकर एक-दो दिन टाइम बिताऊँ उसके साथ। उसको भी अच्छा लगेगा और मेरा भी मन बदल जाएगा, है न?" मैंने उसकी तरफ देखकर उसकी आँखों में अपनी बात के लिए भरोसा ढूँढ़ने की कोशिश की।

"कुल मिलाकर साफ कह न कि शोकसभा करना चाह रही अपनी मित्रमंडली के साथ मिलकर तू।" नंदा बोली तो कसम से, आधा सिर दीवार में ही दे दिया हमने हँसते-हँसते।

"लीव?" मैंने सवाल उठाया।

"तू एप्लीकेशन डाल आ वार्डन ऑफिस में लिखकर, कुछ पूछेगी तो हम कह देंगे कि अर्जेंट काम से यूनिवर्सिटी गई है, सही रहेगा न?" गीतू बोली।

'वाह बेटे, वहीं तो जा रही मैं।' मेरे दिमाग के चीते ने दिमाग में अपना करतब दिखाना शुरू कर दिया।

यही तो मैं चाहती थी।

"ठीक, वो पक्का यूनिवर्सिटी के नाम पर लीव दे देगी न?" मैंने कहा।

"अरे बच्चा, 100% श्योर।" नंदा बोली।

"एप्लीकेशन लिख लूँ न तब तो मैं?" मैंने कहा।

"हाँ ठीक कह रही, प्रेयर में जाएँगे तो सबमिट कर देंगे।" नंदा ने कहा।

"आजकल लीव आसानी से इसलिए दी जा रही, क्योंकि कोई फेस्टिवल तो है नहीं, ऊपर से एग्जाम के रिजल्ट के बाद अभी-अभी सबके दिल टूट चुके हैं।" नंदा प्रेयर में भी फुसफुसाई, तो मैंने इशारे से चुप करा दिया उसे।

प्लान के हिसाब से ज्यों ही प्रेयर खत्म हुई, हम तीनों लगभग भाग पड़े अपने कमरे की ओर, जैसे कोई चोर हो जो बच रहा हो चोरी करके किसी नजर से, जो बस देखते ही धर लेगी उसे। जैसे ही हम चले, वही हुआ जिसका हमें डर था, एक पड़ोसन रचना ने हमें निकलते देखकर लपकने की कोशिश की मार्क्स और रिजल्ट का ब्योरा लेने के लिए। सूत्रों की मानें तो वो कभी किसी को बचकर निकलने देती नहीं थी, जैसे आज हमें भी नहीं दिया था। मिल्खा सिंह की फुर्ती से भागे हम, तब भी ये आ टपकी मानो बारिश की एक-डेढ़ बूँद छाते के छेद को फाड़ती आ ही गिरी हो सिर पर।

"इतनी जल्दी में कहाँ चली सवारी?" वह पास आकर बोली। वह हमारी ही पड़ोसी थी।

ये दो लड़कियाँ थीं, दोनों ही लंबी-सी। लगभग सेम हाइट, सेम कलर कॉम्बिनेशन की इन दोनों लड़कियों के नाम रचना और शिखा थे। कंप्यूटर साइंस की फर्स्ट ईयर स्टूडेंट थीं दोनों और हमारे पड़ोस वाले कमरे में ही रहती थीं। वैसे तो बहुत ही बड़बोले किस्म की प्राणी मानी जाती थीं दोनों, पर हमारी कभी इनसे बहुत ज्यादा बात नहीं हुई थी।

"नहीं, ऐसा कुछ नहीं है, काफी थक गए हैं कॉलेज से आकर, तो जाकर बस सोना चाहते हैं।" मैंने साफ बहाना बनाया।

"सबसे चालू तुम तीनों में से ये ही लग रही है, ये ही है क्या पाशना?" शिखा ने इतना साफ-साफ कहा कि मुझे बहुत ही कुढ़न महसूस हुई।

"कर लियो आराम भी स्वीटू, हम कहाँ रोक रहे।" रचना ने मेरे गाल खींचते हुए कहा।

"कितने सॉफ्ट गाल हैं इसके, देख तो शिखा।" वह अपनी फ्रेंड से बोली तो बहुत खीझ हुई मुझे।

"ऊपर चलते हैं।" गीतू ने कहा, जो इन दोनों से मुझसे भी कहीं ज्यादा इरिटेट हो रही थी।

साथ में वो दोनों भी बिना बुलाए चली आई।

"कमरा तो काफी मेंटेन किया हुआ है तुम लोगों ने।" रचना ने चारों तरफ अपनी नजरें घुमाई।

'कब जाएँगे ये लोग।' गीतू ने मुझसे इशारे से पूछा।

'इशारों-इशारों में दिल दे दिया है बता ये हुनर तूने सीखा कहाँ से...' गाकर ठहाके लगाकर हँस पड़ी रचना और शिखा, तो अब ये हमारे खिसियाने की इंतेहा थी।

"कैसी बाज जैसी तेज नजर है तेरी रचना।" नंदा ने कुछ झेंप कम करते हुए कहा।

मैंने उन्हें भगाने में अपनी असमर्थता जताते हुए इशारे में सिर हिलाकर मना कर दिया।

"भई, पहली बार आए मेहमानों के सामने बैठे होने के बावजूद मेजबान ऐसे इशारों में बातें करेंगे, तो हम क्या कहें इसे भला।" शिखा बोली तो जैसे घड़ों पानी पड़ गया हम तीनों के सिरों पर।

'जब से आई हैं दोनों मनहूस-सी मूड खराब कर रही हैं।' मैं और गीतू मन ही मन गालियों की बौछार करने में लगे थे उन दोनों पड़ोसियों पर।

"पहली बार आए हो कमरे में तुम दोनों, कुकीज खाओगे?" मैंने पूछा।

"हाँ यार दे," कहकर दोनों मुस्कराकर आराम से पीछे को पसर गई नंदा के बेड पर, जिससे नंदा की तो आत्मा ही कराह उठी।

शर्म से डूब मरना इसी को कहा जाता होगा हमारी देसी में।

"राज-ए-निगाह कुछ यहाँ भी तो खोलो।" रचना जैसे म्यूजिक की ताल में बोली।

"बड़े खुश हो वैसे तुम दोनों, पास हो गए क्या?" मैंने कहा।

जैसे कुछ पल सन्नाटा पसर गया कमरा नंबर बाईस में।

"अदा-ए-गम, तुम कहाँ से समझोगे सनम।" शिखा बोली।

"मतलब?" गीतू ने हैरान होकर कहा।

"बैक है तेरी बहन की मैथ्स में, दोनों की।" रचना बोली।

"और तुम्हारा?" शिखा ने पूछा।

"सेम।" गीतू बोली।

"तीनों?" रचना ने कहा।

"नहीं, नंदा की बायो कैमिस्ट्री में।" मैंने कहा।

"हह्हः वेरी नॉटी, हम जानते हैं इसके पास मैथ्स नहीं है।" रचना ने फिर अपना हाथ मेरे गालों की तरफ बढ़ाया, जिसे मैंने इस बार रोक दिया।

"प्लीज यार, कोई मेरे गाल छुए ये पसंद नहीं मुझे।" मैंने कहा।

"वो तू जरा क्यूट-सी है, काफी बच्ची-सी, इसलिए... अच्छा चल, नहीं छू रही अब।" रचना बोली।

अब हम पाँचों बैठे कुकीज खा रहे थे और इरिटेशन कहीं दूर जा रहा था कुकीज की मिठास में घुलकर।

"हम बहुत दुखी हैं, तुम्हें क्या बताएँ, अब तक घर पर भी कुछ नहीं बताया रिजल्ट के बारे में।" शिखा ने अपना दर्द बयाँ करना शुरू किया।

"वैसे भी मुझे अपनी बैक का रीजन भी पता है और उसका सॉल्यूशन भी।" वह बोली।

"क्या वाकई, ये तो अच्छी बात है।" मैंने कहा।

"क्या रीजन है?" गीतू बोली।

"लड़के ना है यहाँ कॉलेज में, सुबह से शाम हो जाती है लड़किया देख-देख कर मूड की माँ बहन हो जाती है।" रचना बोली।

"ओ तेरी... सेम प्रॉब्लम डार्लिंग।" मैं उछल पड़ी जैसे।

"दिल के दरवाजे पर पड़ी बड़ी पुरानी साँकल बजा दी तेरी बात ने तो रचना।" मैंने खुश होकर कहा।

"(एंटरटेनमेंट + धमाका) दोनों की कमी है यहाँ।" गीतू अफसोस के साथ बोली।

"एग्जेक्टली।" नंदा ने कहा।

"मैं तो यहाँ कितनी ही बार बिना नहाए तक चली जाती हूँ कॉलेज।" गीतू ने राज खोला।

"हईन्न्न्नन्न पंडितानी।" मैंने कहा अचरज से।

"स्कूल कितना अच्छा था, कॉम्प्टीशन था, लड़के थे, एंटरटेनमेंट था, मार्क्स लाने होते थे अपने इंप्रेशन के लिए।" रचना ने दुखी सा मुँह बनाया।

"और यहाँ जिंदगी बड़ी बोझिल-सी हो गई है।" नंदा बोली।

"अब हमें उन पड़ोसियों की बातें अच्छी लगने लगी थीं, जिनसे थोड़ी देर पहले हम खार खाए बैठे थे। जब अपने दिल की खुराक किसी दूसरे की जुबान से मिलने लग जाए, तो मन मिल जाना स्वाभाविक ही है। बातें कुछ ही मिनटों में रसीली लगने लगी थीं हमें भी अपने उन्हीं

पड़ोसियों की जिन्हें कुछ देर पहले हम कोस रहे थे।

"सॉल्यूशन क्या है?" नंदा एक्साइटेड होकर बोली।

"बाबू, सिर्फ मैथ्स वालों के लिए है न, इसलिए।" रचना ने कहा।

"अरे तू हमें बता।" गीतू जल्दी में बोली।

"ट्यूशन लगा देते हैं मैथ्स का, आफ्टर कॉलेज।" वह कूदकर बोली।

"देखो, मैंने पता किया है, आरुष सर पढ़ाते हैं यहाँ एक, पूजे जाते हैं मैथ्स के लिए भई साहब यहाँ, इतना अच्छा पढ़ाते हैं।" वह बोली।

"...पर बाहर ट्यूशन जाना...।" गीतू असमंजस में थी कुछ।

"मैं तो तैयार हूँ, मुझे सही लग रहा ये।" मैंने अपना निर्णय सुनाया।

"है भी को-एड, तो एंटरटेनमेंट भी होगा।" शिखा ने आँख मारी।

"मैं भी चलूँगी, चलो।" गीतू कुछ सोचकर बोली।

"डन फिर, बात कर लेते हैं किसी दिन चलकर उनसे, पर उसके पहले वार्डन से।" मैंने कहा।

"अरे, इसकी तो ऐसी की तैसी। सीधा प्रिंसी के ऑफिस जाते हैं और उससे लैटर साइन कराते हैं, फिर कैसे मना कर देगी ये। पैरेंट्स की बात भी करा देंगे, साथ में चलते हैं प्रिंसी के पास।" शिखा बोली।

"टाइमिंग और पता कर लो क्या रहेगी।" गीतू ने कहा।

"देखो, इस मंथ का एंड चल रहा है, जनवरी से शुरू करते हैं अब।" मैंने कहा।

"सब साथ चलेंगे तो परमिशन भी जरूर मिलेगी।" शिखा फिर बोली।

"कल तो मैं कहीं जा रही, परसों करें बात प्रिंसी से?" मैंने कहा।

"कल तुम लोग सर से बात कर आओ, टाइम ले लो।" गीतू बोली।

"ठीक, हम ले लेंगे कल सर से तो...।" रचना ने कहा।

"परसों लंच के बाद जिसका जो लेक्चर है सब बंक करेंगे, तब चल लेंगे प्रिंसी ऑफिस।" गीतू बोली।

"मैं तो प्रिंसी की हिट लिस्ट में हूँ, कभी मेरे चलते तुम्हें भी परमिशन न मिले, सोच लो।" नीतिका का वाकया गीतू के भी जेहन में उभर आया मेरे साथ-साथ।

"वाह बेटे, पंगे फैलाए बैठी है तू पहले ही, लग रहा।" शिखा ने चुटकी ली।

"कुछ भी हो, मैं नहीं जाने वाली फ्रंट में।" गीतू की हवा टाइट हो गई थी मेरी बात से।

"अरे, अरे मर मत, कितनी फट्टू है रे तू? चल कोई न, मैं चली जाऊँगी सबसे आगे।" रचना बोली।

"बस कहना क्या-क्या है, उसका तो कुछ आइडिया होगा या वो भी नहीं?" शिखा ने दम ठोंककर कहा।

"देख, कहना, हम हॉस्टल से हैं और हमारी बैक आ गई है, फिर पापा को लेकर फैमिली की बात लाकर इमोशनल करना कि मैडम, आप तो जानती ही हैं पिछड़ी सोच वाली फैमिली का, मैडम वही हाल है हमारा, घर बैठा दिए जाएँगे पास न हुए तो, ट्यूशन जाना बहुत एसेंशियल है इसीलिए हमारा, प्लीज मैडम प्रिंसी, कहकर रोने लगना।" मैंने रोकर दिखाते हुए कहा।

"फिर एकदम से हम सब भी प्लीज मैडम, प्लीज कहेंगे और उनके आगे अपनी-अपनी

एप्लीकेशन सरका देंगे।" मैंने सब कह दिया।

"ओह।" रचना ने भी एक गहरी साँस ली।

"मास्टरमाइंड।" शिखा ने मुँह फाड़कर कहा।

"अब तक कहाँ थी रे तू, चरण तो दिखा अपने।" रचना हाथ जोड़कर बोली।

"क्यों, क्या करेगी मेरे चरणों का?" मैंने चुटकी ली।

"खींचकर बाहर लाऊँगी उनके साथ तुझे भी।" वह कमरा हिला देने वाली राक्षस हँसी के साथ बोली।

कमरे में ठहाके चारों तरफ देख गूँज रहे थे और दीवारें आपस में फुसफुसा रही थीं हमारी आज की कहानी की थर्मामीटर रीडिंग।

"आरुष सर से बात करना जब, तो 5 बजे से पहले-पहले की टाइमिंग लेना, क्योंकि हॉस्टल से निकलना पॉसिबल कहाँ हो पाता है बुड़बको।" शिखा बोली।

"8 बज गए हैं, खाना खा लें क्या?" नंदा बोली जो हमारे इस कन्वर्सेशन में बहुत बोर हो रही थी।

"अभी तो ठूँसा था कुछ देर पहले, जब तो भूख थी नहीं तुझे।" मैंने कहा।

"क्या स्यापा है।" गीतू अपना स्पून उठाने बढ़ी अपनी टेबल की तरफ।

"हम भी चल रहे खाने या ज्यादा खाना है इसलिए अकेले जाएगी?" मैंने मुस्कराकर कहा।

"मैं क्यों खाती ज्यादा, तू ही खाती है ज्यादा, तभी तो देख वेट अपना।" गीतू बोली।

"खाते-पीते बच्चे ऐसे ही होते हैं समझी बेटा... और खाया-पिया गैरत करने वाले तेरे जैसे।" मैं बोली।

"हुँह, चलो खाने अब।" गीतू बोली तो चल दिए हम सब बाहर की तरफ।

वहाँ से हम मेस की तरफ मुड़ गए और रचना और शिखा अपने कमरे की तरफ। आगे आने वाली परेशानी का रामबाण इलाज तो ये दोनों पड़ोसी-कम-दोस्त हमें बता गए थे, पर पिछली बैंक अब भी दिमाग को लगातार चुभ रही थी।

अभी का सबसे बड़ा सच ये था कि सामने एक बहुत बड़ा टारगेट खड़ा था। मैं कल प्रीति के साथ अपने कर्मों पर आँसू बहाने यूनिवर्सिटी जा रही थी। मन ही मन यूँ तो मैं पाशना, ये एलान कर चुकी थी कि मैं अपनी गलतियों को सुधारने के लिए हर रास्ता अपनाऊँगी, जो मुझसे बन पड़ेगा वो करूँगी मैं, बस किसी तरह इस मुसीबत से छुटकारा मिल जाए मुझे। ऐसे में मन के बहाने, मन के समझाने तो लाखों होते हैं, पर वो एक बात, वो एक चीज जो इस सबका इलाज है, बस वही नहीं मिलती। उसी की तलाश में दर-बदर भटकते कब मेरे जैसे कितने ही स्टूडेंट्स के ग्रेजुएशन पूरे हो जाते हैं, पता ही नहीं लगता। भटकने की अगली उम्र आ जाती है और पिछला सफर अधूरा ही अपनी मंजिल ढूँढ़ता रह जाता है। फिर कब हम आगे निकल आते हैं उस अधूरे रास्ते को बीच में ही छोड़कर, ये तब पता चलता है जब सालों बाद शायद कहीं किसी सदी में किसी वक्त हालात के चलते हम उसी शहर जाएँ और उसी गली से टकरा जाएँ, जहाँ अपना सफर अधूरा छोड़कर गए थे कभी। तब फिर वही सब जेहन पर जोर से हथौड़ा मारकर हमें वहीं बेहोश कर दे और पूछे कि हमारी हिम्मत कैसे हुई उसे उसकी मंजिल तक पहुँचाए बिना जाने की! तब हम समझ पाएँ कि हमारी गलती कहाँ थी, क्यों हम सबकुछ पूरा करके नहीं गए। हजारों किस्से, लाखों कहानियाँ और करोड़ों नगमे यूँ ही रास्तों पे अधूरे मिल जाएँगे, सड़क पर महसूस करके

तो देखिए।

मैं अपनी किसी कहानी को अधूरा छोड़कर नहीं जाना चाहती थी यहाँ से।

"मैं अपनी एप्लीकेशन देख आऊँ।" मैंने खाना खाते हुए बीच में कहा, "तुम लोग खाओ, इतने में चेक करके आ जाती हूँ।" यह कहकर मैं वार्डन ऑफिस की तरफ बढ़ गई, जहाँ मेरी एप्लीकेशन इत्मीनान से, साइन की हुई आराम फरमा रही थी।

ये रात जो थम गई थी जैसे बिना रोके। वक्त और सोच के बीच बस कैद-सी होकर रह गई थी मैं, जैसे हजारों डर अपनी जंजीरों में बाँध रहे हों। मान लिया जाए कोई जो जूझ रहा है किसी ऊहापोह से इसी तरह, जी रहा है अगले पल के भ्रम में, वो अपने साथ कितने डर लिए जीता है, कैसे हर पल हजारों बार घुटता है, हजारों तरीकों से सोचकर दिमाग की नसों को दुख देता है, हर हथकंडे को अपनाने की कोशिश करता है मुसीबत से बचने के लिए।

वो रोता है अपनी की गई हर उस गलती के लिए जो अनजाने में या जान पूछकर उसने की हो, उसके आँसू उसकी हर उस गलती को धोकर उसकी आत्मा इतनी पवित्र कर देते हैं जैसे अग्निपरीक्षा के बाद सीता फिर लौट आई हो अपने राम के पास। उस वक्त में परमात्मा ठीक उसके अंदर बसता है, उसके हर विश्वास पर विश्वास करता है वो। उसका हर आँसू उसे उसकी एक सात्विक राह पर ले जाता है जो उसे फिर से उठ जाने की रोशनी देती है। दूर कहीं जलती एक मशाल दिखाई देती है उसकी सूजी आँखों को जो जरा-सी खुली थीं बस उसी मशाल को देखने के लिए जो उसका हाथ पकड़कर फिर खींच लेती है उसे हर उस अँधेरे से बाहर, जो मन में डर के तहत समाए हुए थे।

ये आज हमारे ही किए का एक आईना था, जो एक न एक दिन हमारे आमने सामने आना ही था। हर किसी को अपने हर सच से एक न एक दिन रूबरू होना ही होता है, चाहे वो उससे कितना भी क्यों न भाग ले। हर कमजोर इंसान अपनी गलतियों को मानकर सुधार कर ले, तो भला दुनिया में मुसीबत नाम का वर्ड शब्दकोश से ही न गायब हो जाए!

अब मुझे भी तो अपनी गलती छुपानी थी सबकी नजरों में सबकी ही तरह। अब गलत और नया भी क्या, ये कोशिश तो बच्चा-बच्चा कर रहा था वहाँ इस रिजल्ट के मौके पर।

घड़ी रात के 10 बजा रही थी। आसमान के साफ होने के साथ-साथ कुछएक हल्के-गाढ़े तारों का दिखाई देना आसमान को दूधिया किए दे रहा था। मौसम के शबाब ने रजाई को निकाल दिया था संदूकों से, जो सारा दिन हमारे बेड पर पड़ी हमारी बिन पैसे की नौकरी बजाती थी। ये 9 से 12 वाला स्टडी टाइम किसी सजा से कम नहीं कट रहा था, क्योंकि मेरी आँखों से नींद का कोसों का फासला था और काम कोई और था ही नहीं सिवाय इस गम के।

आँखों ही आँखों ने 12 बजा दिए थे और दुबारा फोन देखने पर प्रीति के मैसेज ने ये भी जता ही दिया था कि मेरी ही कश्ती की वो भी एक सवार है। बीतती रात की गहराई के साथ मन की अंदरूनी सतह पर जमती धूल गहरी से और गहरी होती जा रही थी। कैसी होगी वो जगह? क्या ये उसी अधूरी कहानी का पार्ट टू है, जो कुछ वक्त पहले छोड़ आए थे हम, मानो रेत के किसी टीले पर कोई प्रेमिका अपने प्रेमी का नाम लिखकर छोड़ आई हो। जिस पर्सन से हम जाकर मिलने वाले हैं, वो हमारा काम कर पाएगा या नहीं? करेगा भी तो किन परेशानियों को हमें फेस करना होगा? अगर वो नहीं कर पाया, तो क्या होगा हमारा अगला कदम? आँखें खुल गई एकदम से, शायद मैं सो गई थी इस बीच। पता नहीं, कुछ याद नहीं आया, कुछ इसके बीच कुछ

ऐसा रह गया हो जो सुलझा नहीं इसलिए समझ नहीं आया, देखा तो पसीने से नहा गई थी मैं।

सपना रहा शायद, सो गई होऊँगी शायद मैं, कहकर दिल को तसल्ली देकर मैंने पानी का गिलास उठाया टेबल से और पीकर वापस आकर लेट गई। हार्ट बीट अब भी बहुत तेज चल रही थी, जैसे किसी ने बुरी तरह डरा दिया हो।

फिर सोच के गुब्बारे ने कब हाथ से निकलकर निद्रालोक में पहुँचा दिया, वहाँ मौजूद किसी को नहीं पता चला। इसके बाद नींद शायद ही खुली हो। कहीं जब किसी वक्त का जब पलकें रोके इंतजार हो रहा हो, तो वो इतनी तेजी से हाथ से छूटकर भागता है, मानो कोई छोटा जिद्दी बच्चा माँ की पकड़ से छूट भागा हो।

अभी फोन उठाकर देखने पर पता चला कि घड़ी सुबह के 4 बजकर 55 मिनट बता रही थी और 5 बजने में अभी पूरे 5 मिनट थे, जिसके बाद अलार्म बजना था। इन 5 मिनटों के पूरे होने का इंतजार मैं लेटकर करती रही।

यूनिवर्सिटी फीवर

चेहरे देखे मैंने गीतू और नंदा के अलार्म के बजते ही। उसको आनन-फानन में तुरंत बंद किया। चेहरे देखकर लगा जैसे अलग-सी बेचैनी, एक अशांति है उनके मन में। फोन में टॉर्च का फीचर खास इसी वक्त के लिए बनाया गया होगा, ऐसा लगा मुझे उस वक्त। रात की मुलाकात सुबह से करवाने वाले इसी वक्त में सो रहे लोगों के चेहरे पढ़ने के लिए।

चाहे अपने दोस्त हों या अपनी फैमिली के मेंबर, चेहरों की ये बेचैनी कुछ स्क्रीन कार्ड के ब्रेक होने जैसा एहसास करवाती है फोन में। एक तो सर्दी का मौसम, ऊपर से नींद का पूरा ही न होना, जाऊँ नहाने या नहीं। मैंने मन ही मन खुद से पूछा।

फिर मुझे याद आया नंदा का 'ड्राई क्लीन' बाथ। सारी दुनिया की हिम्मत एक जगह और सर्दी में अर्ली मॉर्निंग बाथ एक जगह। इसके बाद नहाने का विचार त्यागकर अपने डिओ को ही पनाह दे दी मैंने अपने शरीर पर। फिर भी कौआ स्नान तो बनता है, आखिर यूनिवर्सिटी जा रहे भई, वो भी पहली बार।

'यूनिवर्सिटी भी तर जाएगी आज तो।' सोचकर मंद-मंद मुस्कराई मैं।

5:30 बजे का वक्त था, लिहाजा मैं बाहर आई कमरे से। आसमान में मोटे-मोटे गुच्छे जैसे बादलों के बीच कम, लेकिन सूरज की किरण फूटने के आसार ये बता रहे थे कि मौसम ठीक रहने वाला है। हवा के नाम पर मन में चलने वाली पुरवाई ही थी, बाहर बाकी कुछ नहीं। कॉरीडोर अभी पूरा खाली और सुनसान होने की वजह से डरावना-सा लग रहा था, जिसे पार करके बाथरूम तक जाना महाभारत की तरह हो गया था। ड्राई क्लीन लेकर बिना नंदा और गीतू को जगाए मैंने प्रीति को फोन किया वहाँ से निकलने के लिए।

"मैं रेडी हूँ, बस निकल रही हूँ, बस स्टैंड पर मिलें सीधा?" मैंने कहा।

"तेरा ब्रेकफास्ट?" वह बोली।

"ज्यादा माँ बनने की कोशिश न कर इस टाइम, जितना जल्दी पहुँचेंगे उतना ही टाइम से काम हो पाएगा।" मैंने कहा।

"पाँच मिनट लगने हैं, तू पीजी आजा, रास्ते में ही तो पड़ेगा।" वह बोली।

"नहीं, मैं बस स्टैंड आऊँगी, मुझे वैसे भी इतनी सुबह भूख नहीं लगती है।" मैंने कहा।

"पीजी आ चुपचाप। मत खाना, पर साथ चलेंगे।" वह बोली।

"होप सो, वो गार्ड ड्रामा न करे बस।" मैंने आशंका जताई।

"एप्लीकेशन है न तेरे पास?" वह बोली।

"अबे हाँ यार, है, हर बार थोड़ी मैं भागकर ही आती हूँ बाहर। इसके बावजूद उसके मूड का नहीं पता चलता, कब कह दे कि पहले वार्डन से बात करूँगा, मेरी बात कराओ कि साइन उसी

के हैं।" मैं झींककर बोली।

"ऑटो में बैठकर बताती हूँ तुझे।" कहकर फोन कट कर दिया मैंने।

कहते हैं, जब हम किसी से कोई बात छुपा रहे होते हैं, तो हम उससे नजरें मिलाकर बात नहीं कह पाते। शायद यही कारण था कि मैं अपना सामान पैक करके बस निकल चली थी। जरूरत उनकी भी थी, पर कहीं मैं न रह जाऊँ, इस स्वार्थ ने मुझे रोक दिया था उनकी मदद के लिए आगे बढ़ने से।

'एक बार मेरा काम हो जाए, फिर इन दोनों को भी जरूर लेकर जाऊँगी अपने साथ वहाँ,' सोचकर बाहर निकल गई मैं कमरे से।

बाहर आकर देखा तो दिन चढ़ आया था। सुबह के 7 बजने में कुछ ही मिनट बाकी थे और मौसम आज जैसा कि अंदाजा लगाया था, साफ ही था। क्यारियों के फूल रोज अपनी डोज मिलने के कारण खूब खिलकर मुस्करा रहे थे, जिनकी लाल-पीली रंगत से हॉस्टल नहाया हुआ था और मॉर्निंग वाक करती कुछ लड़कियाँ अलसाए-से स्वर में ऐसे बातें कर रही थीं, जैसे अभी अभी जबरदस्ती उठकर शरीर को कष्ट देने आई हों।

"कहाँ जा रही हो, घर?" गार्ड ने मुझे आता देखकर रजिस्टर उठाते हुए कहा।

"यूनिवर्सिटी, अंकल।" मैंने लीव उसके सामने बढ़ाते हुए कहा।

"सीधे यहीं आने की कोशिश करना, वार्डन मेम पसंद नहीं करती हैं ऐसे बच्चियों का बाहर घूमना, समझीं?" वह सख्ती से बोला।

"जी अंकल।" मैंने कहा। सुबह के टाइम इतने सारे सवाल-जवाब यूँ तो खीझ-सी पैदा करते हैं मन में, पर इस समय जरूरी था समय का ख्याल करते हुए वहाँ से निकलना।

"क्या बताऊँ अंकल, रिजल्ट में गड़बड़ी है। मैं तो खुद बाहर जाती नहीं कभी, पर मजबूरी है, पैरेंट्स तक बड़े दुखी हैं मेरे तो इस बात से।" मैंने दुखी-सा चेहरा बनाकर कहा।

"अरे बेटा बस, पढ़ाई है करनी पड़ती है, वरना घर से दूर रहना किसे पसंद होता है।" वह भी भावनाओं में गोते खा-खा कर निकलने लगा।

"जी अंकल, तो अच्छा मैं निकलती हूँ फिर।" मैंने कहा।

"हाँ-हाँ बेटा, ठीक।" गार्ड ने मुस्कराकर जाने दिया।

"मैडम क्या...?" ऑटो वाला बोला, तो मुझे ध्यान हो आया, ऑटो में बैठकर खुद से ही बातें करना।

"कुछ नहीं भैया।" मैंने कहा।

प्रीति का पीजी आ चुका था, जहाँ मेरे लाख मना करने के बावजूद उसने जबरदस्ती पराठे पैक करके मेरे बैग में रख दिए थे, क्योंकि उसका बैग फुल था न जाने किस चीज से।

ठीक 8 बजे थे और हम दोनों साथ में बस स्टैंड पहुँच चुके थे।

"पूजा ने नहीं पूछा कुछ?" मैंने कहा।

"वो सो रही थी अभी तो, कल मैंने कोई जिक्र किया ही नहीं था।" वह इत्मीनान से बोली।

"हमें वहाँ जाकर सबसे पहले करना क्या होगा?" मैंने बस ढूँढ़ते हुए पूछा।

"भैया से मेरी बात हो गई है, वो सब संभाल लेंगे।" प्रीति ने बेफिक्री से कहा।

"हमें बस जाकर बंदे से मिलना है, आगे जो वो कहे वो करना है, बाकी सब भैया देख लेंगे।" वह बोली और हम बस में बैठ गए। मीलों का सफर धीरे-धीरे तय हो रहा था और आज हम

दोनों आपस में इतने चुप सिर्फ और सिर्फ आगे आने वाली कंडीशन को फेस करने को लेकर थे।

"टिकट, मैडम?" कंडक्टर अचानक आया, जिससे हम लगभग चौंक गए।

"कहाँ खोई हैं मैडम।" वह मुस्कराकर बोला।

"...वो कुछ नहीं।" मैंने झेंपकर कहा।

"दो टिकट, यूनिवर्सिटी।" मैंने कहा।

"50 रुपए" वह मेरी आँखों में देखकर बोला।

"एक का या दोनों का?" मैंने पूछा।

उसने कोई जवाब नहीं दिया।

मैं कन्फ्यूज थी, पर जब वो कुछ नहीं बोला तो मैंने उसे 50 दे दिए। उसके बाद उसने मुझे दो टिकट दिए और टकटकी लगाकर देखने लगा। मैंने मुस्कराकर टिकट लिया ओर वापस बाहर की तरफ देखना शुरू कर दिया। कंडक्टर आगे बढ़ गया।

"ये क्या स्माइल-स्माइल चल रही है हम्म्म?" प्रीति ने कोहनी मारी।

"क्या, कब?" मैंने चौंककर कहा।

"आँख मारी न तूने उसे?" प्रीति चुटकी लेकर बोली।

"मैंने कब दी स्माइल, मैंने कब मारी आँख?" मैंने हैरानी से कहा।

"हहहहहः, अबे मजाक कर रही, पर वो दो टिकट देकर एक के पैसे क्यों ले गया फिर?" प्रीति ने कहा।

"हाँ, मैं सोच तो रही थी कि पैसे कुछ कम लिए इसने।" मैंने कहा।

"हहहहाहा... बेचारे को आँख मारकर कन्फ्यूज कर दिया तूने।" प्रीति कहकर जोर-जोर से हाहा करने लगी, तो मैं भी हँस दी। फिरकी बनता माहौल अब खुशनुमा-सा लगने लगा था।

बस के पहिए भागते हुए एक ऐसी जगह ले जा रहे थे, जहाँ न मैं पहले कभी गई थी और चाहती थी कि दुबारा कभी जाना भी न पड़े। कुछ ही पलकें झपकी थीं, हमने देखा कंडक्टर आवाज लगा रहा था, यूनिवर्सिटी वाले उतरो। दिल जोरों से धड़कने लगा और घबराहट से अंदर की तरफ दिल में कुछ चुभता-सा महसूस हुआ। पाँच मिनट बाद शायद मेरी आँखें अगर मुझे परफेक्ट विजन दिखा रही थीं, तो मैं यूनिवर्सिटी के गेट पर खड़ी थी। मैंने प्रीति से कहना चाहा कि वो मुझे इसके लिए जोर से चिकोटी काटे, पर वो किसी को बार-बार कॉल करने में बिजी थी, जो हमें यहाँ रिसीव करने वाला था। चारों तरफ की ऑब्जरवेशन के नाम पर बड़ी-बड़ी चौमुखी मीनारें और आसमान को धरती से मिलाने की कोशिश करते उनके ऊपर करीने से सजे कंगूरे गहरे भूरे रंग की स्याही से पुते हुए थे। मेन गेट पर बड़ा-सा मोनोग्राम लाल स्याही से लिखा हुआ था- 'असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय'। उस पर धूप की चमक पड़कर उसको शान से चमका रही थी। उसके नीचे चटख लाल रंग की स्याही गेट के नाम को दर्शा रही थी। सैकड़ों लोग गेट के दूसरी ओर चहलकदमी कर दिखे। बड़े-से उस द्वार के बाहर खड़ी मैं देख पा रही थी अंदर चलती बाइक, एक्टिवा, अन्य गाड़ियाँ... सबकुछ।

द्वार के अंदर एक रास्ता या यूँ कहो कि एक राजपथ था, जिसके देखकर मुझे याद आई अपने घर के बाहर निकलकर बराबर वाली कॉलोनी से होते हुए एक मेन रोड जाती थी, वह। इसे सामने से देखने पर तो ये न जाने कहाँ जाकर मिल रही थी, कुछ कह नहीं सकते। शायद अनंत आसमान से या शायद उस दूरी से जहाँ सूरज और चाँद मिलकर पानी में एक होते हैं, जहाँ धरती

जाकर आसमान को छू सकती है, जहाँ फूल अकेले में बातें करते हैं और जहाँ भौंरे बैठकर आइसक्रीम खाते हों, शायद कहीं नहीं। उसका कोई अंत ही नहीं दिखाई दे रहा था। अंदर की तरफ झाँकने पर गेट की दाईं ओर करीब 30 मीटर की दूरी पर जाकर एक बड़ा-सा, प्लास्टिक फ्रेम वाला मानचित्र लगा था, जो एक बहुत ही कन्फ्यूज़िंग मैप लग रहा था। प्रीति ने बताया कि ये यूनिवर्सिटी का मैप है, जगह-जगह डायरेक्शन बताने के लिए अंदर और भी लगे हैं।

'कमाल है।' मैंने मन ही मन सोचा।

काफी देर खड़े हम इंतजार करते रहे, जिसके बाद एक लड़का जैसे मानो प्रकट हुआ, जिससे मैं डर-सा गई।

"अरे पाशु, क्या हुआ?" प्रीति हड़बड़ाकर बोली।

"इतने अचानक," कहकर मैं रुक गई।

"हाहा, कोई बात नहीं।" हँसने लगा वह।

"हेल्लो।" वह बोला और उसने प्रीति से हाथ मिलाया।

"ये कुलदीप है, यूनिवर्सिटी में ही काम करता है, भैया इसके बारे में बता रहे थे।" प्रीति ने बताया।

"अच्छा।" मैंने मुस्कराकर कहा।

"तो चलें फिर अंदर।" मैंने कहा।

"अभी तो सिर्फ 9:30 हुए हैं।" वह अपनी कलाई पर बँधी चौड़े-से डायल वाली घड़ी देखते हुए बोला, जिसे देखकर मुझे याद आई बचपन में देखी एक बहुत पुरानी दिलीप कुमार की वो मूवी, जो पापा की फेवरेट होने के चक्कर में न चाहते हुए भी जाने कितनी बार देख गए थे हम।

'सेम ले रखी बाय गॉड घड़ी तो।' मैं मन ही मन बुदबुदाई।

"जी क्या?" उसने जैसे सुन लिया हो।

"कान बज रहे क्या?" प्रीति ने उससे कहा तो हँस पड़ा वो।

"तुम इतना जो मुस्करा रहे हो क्या गम है जिसको छुपा रहे हो?" मैंने प्रीति के कान में कहा, तो जोर से मेरे पेट में मारा उसने।

"अवव्व्व कमिन, इतना तेज कौन मारता है?" मैंने कहा तो कुलदीप ने देखा, जो अभी अपनी किसी कॉल में बिजी था।

"क्या हुआ?" वह अचानक बोला।

"कुछ नहीं, सब ठीक है।" मैंने कहा।

"कुछ खाया नहीं न सुबह, इसलिए पेट में दर्द होगा इसको जरूर।" प्रीति ने आँखें निकालते हुए कहा।

"देख लूँगी तुझे वापस चल जरा।" मैंने फुसफुसाकर प्रीति को धमकी दी।

"पाशु तू समझ, ऐसे कॉमेडी करेगी तो वो क्या सोचेगा, क्या इंप्रैशन पड़ेगा हमारा उसके सामने, अगर हम ऐसे काना-फूसी करके हँसेंगे और उसे नहीं बताएँगे?" प्रीति समझाते हुए बोली।

"फाइन।" मैंने मुँह बनाकर कहा।

"देखो भई, सब जगह फिर से पता कर लिया, आज भी कोई ऑफिस 11 बजे के पहले नहीं खुलेगा, हमारा ऑफिस भी नहीं।" वह बताने लगा।

"अरे, हम जल्दी आ गए क्या?" प्रीति बोली।

“अरे सही तो है, 11 बजते ही अंदर चल लेंगे, काम के लिए भी जल्दी बात कर लेंगे न।” वह बोला।

“ठीक है, तो इतने धीरे-धीरे चलें? है भी कितना बड़ा यहाँ तो, दूर होगा न?” मैंने कहा।

“हमारे पास बाइक है, पाँच मिनट लगेंगे। पैदल जाओगे क्या मैडम, थक जाओगे।” वह बोला।

‘हमारे?’ मैंने सोचा हम कौन, फिर मैंने हिसाब लगाया कि शायद अपने आपको हम कह रहा होगा।

“चलो, तब तक कुछ खा लेते हैं।” वह बोला।

“नहीं, हमें भूख नहीं है।” मैंने कहा।

“हाँ प्लीज कुलदीप, अभी कुछ नहीं खा रहे हम, बाद में ही खाएँगे।” प्रीति बोली।

“पर-वर कुछ नहीं, चलो बस।” वह बोला।

मैं और प्रीति एक-दूसरे की शक्लें देखने लगे।

“ये कुछ ज्यादा ही फ्रैंक हुआ जा रहा है। पैसे ले, काम कर और अपना रास्ता नाप।” मैंने प्रीति के कान में फुसफुसाया।

“अरे, अरे रुको, बाइक तो निकाल लेने दो।” कुलदीप ने पार्किंग की तरफ इशारा किया।

“एक पर हम तीनों कैसे जाएँगे?” मैंने हैरानी से कहा।

“हाईवे नहीं है ये, यहाँ कोई नहीं देख रहा, इस पर तो चार आ जाते हैं।” वह बोला।

“क्या?” प्रीति और मैं आँखें फाड़कर देखने लगे, कभी कुलदीप को और कभी एक-दूसरे को।

वह बाइक निकलने लगा तो प्रीति ने कहा कि तीन नहीं जा सकते।

“इतना मोटा तो कोई भी नहीं है कि तीन आ नहीं पाएँगे, क्यों पाशना मैडम?” वह बोला तो एकदम से सर हिला दिया हाँ में मैंने, जिसके बाद मुझे बिना सोचे सिर हिलाने का पछतावा भी हुआ।

“...पर बीच में तू बैठेगी।” मैंने प्रीति को कहा।

“मैं क्यों बैठूँ बीच में।” प्रीति तुनक गई।

“क्योंकि ये तेरा जानने वाला है, मेरा नहीं।” मैंने साफ कहा।

“इसका मतलब ये नहीं कि मैं बीच में बैठूँ।” वह बोली।

“चलो, बैठो दोनों।” कुलदीप हमें कह रहा था।

मैंने फुर्ती दिखाई और कूदकर बैठ गई, फिर पीछे होकर प्रीति को आने को कहा। इसके बाद मेरे होंठों पर विजयी मुस्कान थी, क्योंकि प्रीति कसमसाकर बैठ तो गई थी, पर धीरे-धीरे लगातार मुझे गालियाँ दे रही थी। जरा-सी ही दूर जाकर एक रेस्तराँ के सामने रुके हम।

“उतरिए मैडम।” वह बोला।

मैं और प्रीति नीचे उतर गए। मैं सोच रही थी कि कोई कोई दिन बना ही झेंपने के लिए होता है, जैसा कि आज का।

“बी कंफर्ट बोथ ऑफ यू?” उसने पूछा, तो हम दोनों ने हाँ में सिर हिलाया।

“पानी ले आओ।” कुलदीप वेटर से कह रहा था।

“ये डॉक्यूमेंट हैं हमारे।” मैंने कुलदीप की तरफ बढ़ाए।

"आपको कहीं और भी जाना है क्या मैडम?" उसने पूछा।

"नहीं तो।" मैंने कहा।

"तो आपको इतनी जल्दी क्या है, तसल्ली से बैठिए, खा लीजिए और खाने दीजिए, फिर देखते हैं ये भी।" वह बोला तो फिर झेंप गई मैं।

"ओके।" कहकर मैंने मरे मन से डाक्यूमेंट्स वापस बेग में सरका दिए।

प्रीति और कुलदीप अपने गाँव की बातें करते रहे और मैं उन दोनों को सुनती रही।

मैं कहूँ क्या इसमें, पर काफी असहज महसूस कर रही थी, जबकि प्रीति एकदम नॉर्मल दिखाई दी मुझे।

गुस्सा तो मुझे कुलदीप के टोकने पर बहुत आया। 'कोई और मौका होता तो ऐसा झाड़ती इसे कि सारी भूतली उतर जाती इसकी।' मैंने सोचा।

"हेहेहे, तो बताओ, सबसे अच्छा क्या है यहाँ का, वही लेते हैं।" मैंने कहा।

"ये हुई न बात, बर्गर अच्छा है।" वह बोला।

"भैया तीन बर्गर ले आओ।" मैंने वेटर से कहा।

इतनी देर में वहाँ एक लड़का आया। लंबा-सा था, पर जितना लंबा उतना ही पतला। गोरा-सा होने के बावजूद उतना हैंडसम नहीं लग रहा था, क्योंकि नैन-नक्श उतने अच्छे नहीं थे।

"काश ये लड़की होता तो कितना खूबसूरत लगता। इसकी पर्सनालिटी उसी के हिसाब से कमाल की है।" मैंने फुसफुसाया तो कुलदीप ने सुन लिया।

"ये मेरा दोस्त है, आपके काम में यही आपकी मदद करेगा। एग्जामिनेशन सेल और मार्कशीट के पंगे यही देखता है अब।" कुलदीप बोला।

"हेल्लो।" मैंने कहा उससे।

"मैं, कुलदीप।" वह बोला तो चौंक गए प्रीति और मैं।

"इसका नाम भी कुलदीप ही है।" कुलदीप ने बताया।

तो अब हम इसे क्या कहें, कुलदीप का दोस्त।" प्रीति बोली, तो खिलखिलाकर हँसने लगी मैं।

इसके बाद अब माहौल और भी झेल होने लगा था मेरे और प्रीति के लिए। यूँ तो बैठे हम वहाँ चार लोग थे, पर सबके मन में अकेलापन इस कद्र पसरा हुआ था, जितना शायद मैं अकेले बैठकर भी महसूस न करती। जैसे लोगों से भरी भीड़ में भी मन न मिल रहे हों।

"आप लोगों ने कुछ लिया या नहीं?" कुलदीप का दोस्त बोला।

"नहीं, थैंक्स।" प्रीति ने कहा तो अचरज हुआ मुझे उसके इतने जबरदस्त फॉर्मल होने की कला पर।

"अच्छा जूस तो ले ही लो।" वो दोनों जिद करने लगे।

"ठीक है, ऑरेंज जूस लेंगे।" मैंने जान छुड़ाने को कहा।

"शुक्र है, आप कुछ तो लेने को तैयार हुई पाशना जी।" कुलदीप का दोस्त बड़े ही फ्लर्टी अंदाज में बोला, जिसे देखकर मुझे ठीक वैसा ही लगा जैसा कि मोहल्ले के बाइक वाले लफंगे लौंडों के घटिया कमेंट करने का अंदाज होता था।

"जूस बहुत अच्छा है, कह रही है अब तक क्यों नहीं ट्राई किया हमने ये।" प्रीति ने अपनी आर्टिफीशियल मुस्कान के साथ कहा, जिसके बाद मेरी तरफ आँख निकलने वाली थी वो, ये मुझे

पता था।

"सब करना पड़ता है भाई, काश ऐसे कर्म न होते हमारे।" प्रीति मेरे कान में बोली, जिसके बाद रोक सको तो रोक लो वाली हँसी मेरे अंदर से आई लेकिन, होंठों पर ही जैसे रुक गई।

"एक्चुअली हम दोनों वाकई में काफी परेशान हैं अपनी बैंक की वजह से। आप लोगों के लिए ये रोज का काम है, पर प्लीज, आप हमें समझिए ना।" मैंने कहा तो जैसे सन्नाटा-सा छा गया वहाँ।

"सॉरी मैडम, डाक्यूमेंट्स देख लेते हैं, फिर चलते हैं बस, टाइम भी हो ही गया है। थोड़ा आराम-आराम से चलेंगे तो आपको यूनिवर्सिटी भी दिखा देंगे कैसी है, आप शायद पहली बार आए हो न यहाँ?" कुलदीप के दोस्त ने कहा।

"हाँ।" मैंने मुस्कराकर जवाब दिया।

"हजारों की तादाद में बच्चे रोज आते हैं यहाँ, क्या करें बताओ।" कुलदीप ने भी कहा।

चुप रह गए हम दोनों।

"आप लोग न परेशान हों पर, देखते हैं जल्दी से जल्दी कि क्या हो सकता है बात करके।" कुलदीप के दोस्त ने दिलासा दी।

जाहिर है, यहाँ से मुझे और प्रीति को अलग-अलग बाइक से जाना पड़ रहा था, जिससे हम दोनों ही कोई खास खुश नहीं थे, लिहाजा हम दोनों ने ही दोनों कुलदीप को घूरा, जैसे अभी भूखे कच्चा चबा जाएँगे उन्हें।

यूनिवर्सिटी में एंटर होने के साथ-साथ मैंने देखी वो रेलिंग टाइप बनी एक फुट ऊँची सड़कें, जिनके दोनों तरफ फुटपाथ बना हुआ था, जिस पर फूल-पौधे और हरी घास बिछी हुई थी। हर कुछ मीटर पर रोड डायरेक्शन कट होकर रास्ते अपनी-अपनी दिशा में जा रहे थे। साथ ही बिल्डिंग दर बिल्डिंग वातावरण का मुआयना करतीं मेरी नजरें किसी एक जगह पर नहीं टिक पा रही थीं, क्योंकि देखने को नजारे बहुत थे और टाइम कम।

कई सौ एकड़ में बनी इस यूनिवर्सिटी की भव्यता के बारे में पहले मैंने उतना नहीं सोचा था, जितनी ये वास्तव में निकली। चारों तरफ से बागीचे और हरियाली से घिरी थी, जहाँ बैठने के लिए बेंचेस और टिन शेड पड़ी थी और साफ-सफाई के लिए कई सौ कर्मचारी लगातार अपने काम में लगे थे।

"तो कैसी लगी आपको यूनिवर्सिटी, पाशना जी?" कुलदीप के दोस्त ने इस बार बाइक रोककर पूछा।

"बहुत बड़ी है।" मैंने कहीं खोए-खोए जवाब दिया।

अगर मैं वहाँ अपनी बैंक को नंबर दो के तरीके से क्लियर कराने न आई होती, तो इस जगह को अपना दिल दे बैठती, ये मैं शर्तिया कह सकती हूँ। वैसे मौजूदा हालात से तो जाहिर था कि कोई और भी था वहाँ, जिसका दिल बल्लियों उछल रहा था और वो था कुलदीप का दोस्त कुलदीप।

"आप सिर्फ इन फूलों की ब्यूटी देख रही हैं मैडम, आपकी ब्यूटी इनसे तो कहीं ज्यादा है, देखना ही है तो शीशा देखिए।" कुलदीप का दोस्त बोला।

"थैंक यू।" मैंने मन ही मन झींककर जवाब दिया, जिसके बाद न चाहते हुए भी फीकी-सी एक मुस्कान पास करनी पड़ी मुझे उसे।

“तो मैं आपको क्या बुलाऊँ कुलदीप के दोस्त, कोई निकनेम तो होगा न तुम्हारा?” मैंने कहा।

“जो आप कह दो प्यार से, वही कहलवा लेंगे हम तो।” उसने मुस्कराकर कहा।

“तो ठीक है, मैं आपको कोल्वो कहूँगी अब से।” मैंने एलान करते हुए कहा।

सबसे खतरनाक चीज होती है जरूरत, जिसके चलते हम किसी से भी कोई भी काम किसी भी हद तक जाकर करवा लेना चाहते हैं। कई बार हम अपनी मजबूरी को अपने सामने दिख रही इकलौती उम्मीद पर इस कद्र डाल देते हैं कि उसके भी कंधों को झुक जाना होता है और हमारे भी, जिसके चलते कई फैसले हम सही लेते हैं। जो आज मैं और प्रीति आगे आकर कर रहे थे, हम जानते थे जिसे हम थोड़ी-सी एक्स्ट्रा मेहनत और परेशानी झेलकर खुद कर सकते थे, उसके लिए हमने एक आसान और शॉर्टकट अपनाया था जिसमें खतरा तो था, पर ज्यादा उन्नति के सूत्र नजर आए थे हमें।

“लो जी आप खोए रहो, हम पहुँच गए हैं एग्जाम सेल -1।” कोल्वो बोला।

“थैंक्स कोल्वो।” मैंने कहा।

कोल्वो फ्लर्ट कर रहा था और मैं सब समझते हुए भी न समझने की एक्टिंग कर रही थी। ये मेरे गर्ल होने की छठी इंद्री का कमाल था, जिसके चलते समझ तो सब आ जाता है पर न दिखाना ही भला होता है।

“उफ, मुझे उस शर्मा ने पकड़ लिया था, इसलिए देर हो गई। उसका काम अब तक नहीं हुआ क्या?” कुलदीप ने आकर कोल्वो से कहा।

इसके बाद अब हम चारों एग्जाम सेल -1 के बाहर खड़े थे, जिसके अंदर कहीं किसी ढेर में हमारी किस्मत का फैसला छुपा था, जो या तो होना था या नहीं होना था।

अंदर एंट्री में हमें किसी तरह की परेशानी नहीं हुई थी, क्योंकि कोल्वो उसी डिपार्टमेंट से था।

ये दोनों लड़कियाँ मेरे साथ हैं।” कोल्वो ने गार्ड से कहा, जब वह हमें अंदर जाने से रोक रहा था।

“चलो आओ।” कोल्वो हमारे साथ होते हुए बोला, जिसके बाद गार्ड ने हमें नहीं रोका और हम अंदर की तरफ बढ़ गए। मैंने देखा, कोल्वो को गार्ड ने कुछ बात करने के लिए वहीं रोक लिया था।

कुल मिलाकर 20-25 सीढ़ियाँ चढ़कर हम प्रत्येक फ्लोर को पार करके टॉप फ्लोर पर पहुँच ही गए थे, मानो इस पर चढ़कर आना ही जीत का आखिरी पड़ाव था और ऐसी ही खुशी हमें वहाँ पहुँचकर महसूस हो रही थी। वो बात अलग है कि मेरी तो हालत वो सीढ़ियाँ चढ़ने में ही ऐसी हो गई थी, मानो कुत्ते को हड्डी के पीछे बिना पानी के दौड़ा दिया हो।

सबसे ऊपर फ्लोर पर भी बाकी फ्लोर्स की तरह सँकरे गलियारे थे, जिनके दोनों तरफ बड़े-बड़े हॉल जैसे ऑफिस बने हुए थे, जिन्हें देखकर ऐसा नहीं लगता था कि गलियारा इतना सँकरा होगा बाहर का। जहाँ आते ही सबसे पहले मैं वाटर कूलर की तरफ ऐसे लपकी, मानो जन्मों की प्यास हो और बस आज, अभी इसी वक्त इसी वाटर कूलर से ही बुझ सकती है, वरना नहीं। अभी भी नहीं और कभी भी नहीं। इतना चढ़कर आए हमारे पेट के अंदर जल रहे प्यासे ज्वालामुखी को शांत करने का यही इकलौता तरीका था।

"सब्र से पी पानी को, सब्र से।" प्रीति ने कहा भी और मेरे कानों ने सुना भी, पर असर के नाम पर सब निल बटे सन्नाटा था।

"जान है तो जहान है प्रीतो, चुप रह तू इस वक्त।" मैंने कहकर वापस पानी के टैब पर अपना हाथ रख दिया और जब पीकर हटी, तो देखा कि पीछे कोल्वो और प्रीति खड़े हँस रहे थे।

"हो गया मैम आपका या अभी रहता है?" कोल्वो हँसी रोकते हुए बोला।

"कम बोलो, समझे।" मैंने कहा।

"कुछ बचा है उसमें अब?" प्रीति ने कहा।

"है उसमें अभी।" मैंने तुनक कर कहा।

"हाहा, नहीं पीना हमें, बच्चा हमारी हालत इतनी बुरी नहीं होती है अभी।" प्रीति बोली।

"अब चलो फिर कहाँ चलना है?" मैंने तसल्ली से कहा।

एक गहरे अँधेरे गलियारे से होकर पीछे की तरफ एक ऑफिस था, जहाँ छह-सात लोग अलग-अलग कुर्सियों पर काफी दूरी पर जमे थे। ऐसा महसूस हुआ कि उन फरियादियों में से हम कोई खास फरियादी हैं, क्योंकि कोल्वो हमारी तरफ से गुहार लगा रहा था।

"सुनिए मैडम।" कोल्वो को कहते सुना हम दोनों ने।

ये कोई 45-50 साल की गंभीर चेहरे-मोहरे वाली महिला थीं। आँखों पर नजर का चश्मा और नाक पर टिका हल्का-सा गुस्सा लेकर एक बुने तारों वाली कुर्सी पर बैठी थीं।

इस कुर्सी को देखकर मुझे याद आई वे कुर्सियाँ, जो पुराने टाइम में टेंट में इस्तेमाल की जाती थीं। जब हम किसी गाँव में शादी-ब्याह में जाते, तो वहाँ ऐसी ही कुर्सियाँ अक्सर देखने को मिल जाती थीं। व्यवहार के नाम पर ऐसा लग रहा था, जैसे इन्होंने न सुनने की कसम खाई हुई हो।

"आप सुन क्यों नहीं रही हैं मैडम, आप यहाँ सबको पागल समझती हैं क्या?" मैंने चिल्लाकर कहा।

ईगो पर जैसे चोट-सी लगी हो उनके, उछलकर खड़ी हो गई वो।

"क्या है, बोलो?" उन्होंने झिड़ककर जवाब दिया।

पहले बता देतीं कि आप बिना चिल्लाए सुनती नहीं हैं, कोल्वो क्या तुम्हें ये नहीं पता था?" मैंने टॉन्ट मारा तो चोट खाई नागिन की तरह फुफकार पड़ीं वो मुझ पर।

"मैडम, इनकी मार्कशीट में बैक शो हुई है...।" कोल्वो ने कहा ही था कि बात पूरी होने से भी पहले उस महिला ने बात काट दी।

"ये बैक लाए हैं, शो नहीं हुई है, साफ बोलो न... और इसमें मैं क्या करूँ?" कोल्वो डरा-डरा सा हो गया, तो मुझे उस पर और गुस्सा आया।

"अब ये कैसा स्टाफ है, इससे तो बात तक न हो रही।" मैंने कोल्वो के लिए प्रीति से फुसफुसाया।

"मैडम, बैक नहीं आ सकती है, इनका एग्जाम बहुत अच्छा हुआ था।" कोल्वो ने साफ झूठ बोला।

"रिचेकिंग डलवा दो, देखते हैं क्या होता है।" वह बोलीं।

"तेरी क्या लगती हैं ये दोनों?" महिला ने पूछा।

"रिश्तेदार हैं मैडम।" उसने कहा।

हर 15 दिन में बड़ी रिश्तेदार आती हैं तेरी।" वह हँसने लगीं।

हम दोनों ही महिला की बात पूरी-पूरी समझी थीं।

'खैर, हमें क्या।' मैंने सोचा।

"काम हो जाए एक बार, इसको एक तरफ कर ही देंगे। एक मिनट की दोस्ती या रिश्तेदारी नहीं निभानी है हमें इससे।" प्रीति धीरे से बोली मुझसे।

"वैसे, कोल्वो है तो हैंडसम।" मैंने आँख मारकर कहा प्रीति को।

"एक सीन तो बनता है स्साला इसके साथ।" प्रीति बोली।

"यहीं ट्राई कर ले, मैं किसी से नहीं कहूँगी।" मैंने कहा।

"चल बे, मजाक कर रही हूँ।" वह बोली।

"कोई फायदा होगा इससे मैथ्स में मैम, मैं पर्सनली पूछ रही हूँ।" पूछा मैंने तो महिला थोड़ा झेंप गई (जैसा कि मैंने बताया, आज वर्ल्ड झेंपू डे था।

"अरे प्लीज मैडम, आप ही की बच्चियाँ हैं।" कोल्वो ने मस्का मारा उनको।

"हमें अलाउड नहीं है।" उन्होंने कहा।

हम दोनों ने मैथ्स के फॉर्म काउंटर पर चलकर भरे, जहाँ लाइन लगी हुई थी सबमिट करने की। पर हमने अपनी फॉर्म फी और फोटोग्राफ के साथ वो फॉर्म कोल्वो को ही दे दिए, जिसने अंदर जाकर स्टाफ कोटे से वो सबमिट कर दिए।

"मुझे फिजिक्स का फॉर्म भी भरना है।" प्रीति बोली, तब मुझे याद आया प्रीति के एक नहीं दो बैंक पेपर्स हैं।

"ठीक है, आप दूसरी बिल्डिंग में कुलदीप के पास चली जाओ। वो वहीं है, वो भरवा देगा।" कोल्वो बोला।

"हम भी चलते हैं ना।" मैंने कहा।

"हम क्या करेंगे जाकर, कुलदीप को कह दिया है मैंने, वो बाहर यहीं मिल जाएगा इनको, ये भर आएँगे, तुम यहीं रुको।" वह बोला।

"तो आपका नंबर किस नाम से सेव कर लूँ मैं।" कोल्वो बोला।

"आपके पास मेरा नंबर है ही कहाँ?" मैंने आश्चर्य से कहा।

"हाँ, नहीं है, तभी तो कह रहा।" वह बोला।

"वैसे आपका ये काम दो से तीन महीने में हो जाएगा मैडम, पर फिर भी आप मुझे कॉल करके याद दिलाते रहिएगा, मैं इस ब्लॉक में आता रहता हूँ, इनको हाँकता रहूँगा तो टाइम से कर देंगे ये।" वह बोला।

"ठीक है।" मैंने मुस्कराकर कहा।

"शाम के टाइम से लेकर सुबह तक फ्री हूँ मैं, आप कभी भी कॉल कर लेना मुझे।" उसने कहा।

"मैं सुबह करूँगी।" मैंने कहा।

"आपके लिए तो कभी भी।" वह फिर अपनी फ्लर्टी स्टाइल में आ गया।

"कितने फ्लर्टी हो तुम।" मैंने आखिर कह ही दिया।

"अरे कहाँ मैडम, आप हैं ही इतनी खूबसूरत।" वह बोला तो बड़ी हिचक-सी महसूस हुई मुझे।

“चलो, जब तक आपकी फ्रेंड का कोई फोन नहीं आता है, आप मेरे केबिन में चलकर वेट कर लो, वहीं बैठते हैं।” वह बोला।

“ठीक है, चलो।” मैंने फोन देखते हुए कहा, जिस पर प्रीति का क्या, किसी का भी कोई कॉल या मैसेज नहीं था।

बड़ी-बड़ी लंबी और पतली पट्टी वाली सीढ़ियाँ उतरते हुए मैंने शीशे में से एक बिल्डिंग देखी, जिस पर एग्जाम सेल-3 लिखा था।

“उसमें क्या काम होता है?” मैंने कोल्वो से कहा।

“आप लोगों की किस्मत का फाइनल प्रिंट निकलता है वहाँ।” कोल्वो ने रहस्यमय मुस्कान के साथ जवाब दिया, “मतलब वहाँ पर होती है मार्कशीट प्रिंट।”

मैंने चौड़ी-सी मुस्कान दी।

“हम जा सकते है क्या वहाँ?” मैंने पूछा।

“हम वहीं ही जा रहे हैं।” कोल्वो बोला।

“ओह रियली।” मैंने खुशी से कहा।

“ये मैडम मेरे साथ हैं।” कहकर कोल्वो और मैं बिना किसी गार्ड की ना-नुकर के अंदर चले गए।

थोड़ा भी ध्यान से देखने पर ये अंदाजा लगाया जा सकता था कि वो एक बहुत ही पुरानी बिल्डिंग थी और जिन तीन बिल्डिंग को अब तक मैंने देखा था अंदर से, उनमें ये सबसे ज्यादा पुरानी और गई-गुजरी लग रही थी, जिसे देखकर मैंने हिसाब लगाया कि लगभग सभी ब्लॉक यहाँ के एक ही जैसे होंगे। किनारियों पर गुटके की पीक के निशान एक के ऊपर एक चढ़े जा रहे थे और गलियारे वैसे ही अँधेरे थे जैसे बाकी दोनों एग्जाम सेल 1 और 2 में थे। सँकरी काहीनुमा दीवारों वाला ये गलियारा भी साइड्स पर बड़े-बड़े हाल लिए बना था, जिन्हें देखकर बाहर से कोई ये अंदाजा नहीं लगा सकता है कि ये अंदर से इतने बड़े होंगे। उसके एंड पर कोल्वो का केबिन बना था, इस सेल में बाकी दोनों सेल के मुकाबले लोग बहुत कम थे, लिहाजा चहल-पहल भी कम हो रही थी।

लोगों के मामले में एकदम सुनसान इस जगह को भरा हुआ था एक ही तरह की चीजों ने। ये जगह भरी थी कागजों से, कागजों की उस रद्दी से जो यहाँ जैसे रुपए किलो की बेकद्री से बिखरी पड़ी थी। वो रद्दी जो मेरे जैसे लाखों विद्यार्थियों का भविष्य बनाने और बिगाड़ देने का माद्दा रखती थी। ये वही मार्कशीट रूपी रद्दी के ढेर थे, जो कहीं न कहीं लिए बैठे था न जाने कितनी ही किस्मतों को अपने अंदर।

अखबार वाले कबाड़ी की दुकान पर रद्दी पेपर की कद्र इससे ज्यादा होती होगी। ये दृश्य मेरे लिए दिल दहला देने वाला था।

“इन्ही में कहीं मेरी मार्कशीट भी दबी होगी न?” मैंने कोल्वो से कहा। कोई जवाब नहीं आया, ये थोड़ा अजीब था।

“क्या हुआ?” मैंने पीछे मुड़कर दोबारा पूछा, पर कोल्वो बस लगातार देखता रहा। उसका देखने का यह तरीका इतना अलग था कि मुझे अपने शरीर में जैसे एक्सरे के पास होने की अनुभूति हुई।

दरवाजा अंदर से बंद था केबिन का और अंदर सिर्फ वो और मैं ही थी। हमारे अलावा वहाँ

अगर कोई था, तो वो था बस वहाँ पड़ी मार्कशीट का बड़ा-सा ढेर, जिसके ऊपर मैं लगभग गिर गई, जब कोल्वो मेरी तरफ बढ़ा।

कई बार हम हर बात को, हर पनपती अनकही कहानी को समझते तो हैं, पर खुद को गुरूर में दिखाने का अनचाहा अभिनय करते-करते इतना खो जाते हैं कि खुद हमें भी वही अभिनय सच लगने लगता है। सच्चाई खुद ही भूल जाते हैं, ये भी कि हमारी भावनाएँ हैं किस तरफ और किस तरफ बस कुछ वक्त का अट्रैक्शन है।

कोल्वो की आँखें उसके दिल की हर अनकही दास्ताँ को साफ बयाँ कर रही थीं और हम दोनों इस गुजरते पल में एक-दूसरे को चाहने लगे थे, जिसकी वजह से शरीर में हो रहे विपरीत के प्रति आकर्षण को नकार पाना अभी के लिए संभव नहीं था। कोल्वो के इतना नजदीक आ जाने पर पता चला कि अभी तक की जो अनकही दास्ताँ थी, वो असल में ये थी और न चाहते हुए भी हम दोनों आँखो में आँखें, फिर हाथों में हाथों की नियम अनुसार तालमेल की सजावट देख रहे थे। ये पहली बार था, जब मैंने किसी को मैंने अपने इतने करीब महसूस किया था।

अभी के इस वक्त में न कोई यूनिवर्सिटी थी, न कोई बैक, न मैं पाशना थी और न वो कोल्वो, न यहाँ मार्कशीट थी और न ये उसका केबिन। उस एक पल में मैं वो पाशना नहीं होना चाहती थी जो मैं असल में थी, मैं वो बन जाना चाहती थी जो मैं कभी हो ही नहीं सकती थी।

अचानक फोन की घंटी बजी और मुझे गहरी तंद्रा के टूटने का आभास हुआ, तो मैंने देखा कोल्वो के आँखों में तैर रहे उन एहसासों को जिन्हें फोन के बजते ही मैंने खुद से मीलों दूर झटक दिया था। कोल्वो से पूरे साढ़े तीन फीट की दूरी बनाकर दो सेकंड के अंदर फोन उठाया मैंने।

"हाँ-हाँ प्रीति, मैं, मैं... मैं यहाँ हूँ, कोल्वो के साथ ही, बिल्डिंग 3 में।" मैंने हकलाते हुए कहा।

"हाँ, यहाँ हो गया है, कैंटीन जा रहे हम, तू भी कोल्वो को बोल यहीं ले आए तुझे।" उसने कहा।

"ठीक है, मैं आ रही हूँ," कहकर मैं बिना कोल्वो से कुछ कहे, निकल पड़ी सीढ़ियों से होकर।

"मैं चल रहा हूँ पाशना जी, आप बताइए तो कहाँ जाना है?" कोल्वो पीछे आते हुए बोला।

"कुछ नहीं।" मैंने बस इतना कहा।

"देखिए, अगर आपको बुरा लग गया है तो मुझे माफ कर दीजिए।" वह तेज आते हुए बोला।

"कैंटीन चल रहे हैं।" मैंने कहा।

"इस तरफ आइए।" उसने कहा और हम चल दिए।

अंदर से मेरे मन में फिर से उसके लिए इरिटेशन और चिढ़ और बढ़ती जा रही थी और मुझे लग रहा था कि ऐसी भी क्या मुसीबत है, जो इसी के साथ जाना पड़ रहा है मुझे। जो कोल्वो कुछ मिनट पहले तक मेरे दिल में बह रही चाहत था, वो अचानक फिर से इतना बुरा क्यों लग रहा है। अपने काम का मैं इसे पैसा दे रही हूँ तो मेरी क्या मजबूरी, जो मैं इसे झेलूँ। थकान लग रही थी अब मन और मस्तिष्क के इस सवाल-जवाब से, ख्यालों के इस टकराव ने मन में एक अजब स्थिति बना दी थी। क्या इस बारे में प्रीति को बताना चाहिए मुझे? नहीं, बिलकुल नहीं, क्या सोचेगी वो मेरे बारे में! क्वेश्चन मार्क की तरह बार-बार यही बात दिमाग में डंडा किए दे रही थी।

"ओए, कब से वहाँ खड़ी है, इधर आकर बैठ।" प्रीति ने कैंटीन के अंदर से आवाज दी।

“कहाँ खोई पड़ी है मेरी जूलियट?” प्रीति बोली तो मुस्करा दी मैं।

मैंने कोई जवाब नहीं दिया, बस वहाँ जाकर बैठ गई।

इतने अचानक उसने आवाज दी थी और मेरा सोच-सोच कर वैसे ही माइंड ब्लॉक हो चुका था, मानो भूसे के ढेर पर किसी ने बड़ी सुई गँवा दी हो।

“अरी भूखो, मुझे तो पता था कि भूख के मारे तेरी आँतें अंदर चली गई होंगी, है न?” वह बोली।

चार कोल्ड ड्रिंक का आर्डर देकर कुलदीप और कोल्वो आपस में बात करने में बिजी हो गए और हमने अपना टिफिन खोला, जो प्रीति मेरे लिए पैक करके बैग में जबरदस्ती रखवा लाई थी।

“हम भी खाएँगे खाना, टाइम भी हो रहा।” कुलदीप बोला, “यही जो आपके हाथ में है।”

“ये पराठे... मेरे हैं ये।” मैंने कहा।

“हम ऑर्डर कर देंगे आपके लिए।” प्रीति ने मक्खन लगाया।

“हम तो यही, आपके हाथ के खाएँगे।” कोल्वो ने कहा।

“भैया, इन दोनों के लिए पराठे,” कहकर मैंने टिफिन से खाना शुरू कर दिया, जो कोल्वो का तो पता नहीं, पर एक हद तक कुलदीप को काफी बुरा लगा।

“सॉरी, लेकिन प्रीतो ने ये मेरे लिए बहुत प्यार से बनाए हैं, मैं नहीं दे सकती।” मैंने उसको मनाया।

“चलिए, कोई बात नहीं।” कुलदीप मुस्करा दिया।

कुलदीप और कोल्वो खाना खाने में लग गए थे अपने ऑर्डर का और प्रीति अपनी इकलौती कोल्डड्रिंक के साथ बिजी हो गई।

पहली रात का खाना खाए-खाए मैं जैसे खाना शुरू हुई, तो बस खाती ही चली गई, खाती ही चली गई, जिसे देखकर शॉक के मारे कोल्वो के मुँह से कोल्ड ड्रिंक ही बाहर निकाल पड़ी। इस बीच कुलदीप का अचानक कोई कॉल आ जाने से उसको अचानक उठकर जाना पड़ा। उसने हमसे वहीं से विदा ली और बाकी बातें फोन पर बताने का निर्णय लिया।

“अच्छा, ठीक फिर।” कहकर कुलदीप से मिले हम, जिसके बाद वो चला गया।

“तुम अकेले बोर नहीं हो जाओगे, इससे तो तुम भी जाओ चाहे।” मैंने कोल्वो से कहा।

“पाशु तुझे अचानक हो क्या गया है, तू कैसे बिहेव कर रही उससे।” प्रीति ने कहा।

“मैडम थक गई हैं शायद।” कोल्वो ने बात लीपते हुए कहा।

प्रीति को मैं अचानक से बदली-बदली सी लग रही थी, जिसके लिए मैंने उसको काफी सफाई भी दी।

“कुछ भी तो बात नहीं है प्रीतो, मैं बस हमारी बैंक कब क्लियर होगी इसे लेकर परेशान हो जाती हूँ, तू बार-बार यही पूछकर अब इंबरेस क्यों कर रही है?” मैंने कहा।

“इसी से याद आया, तुम्हारा जो भी पे होगा वो हम मार्कशीट मिलने के बाद दे देंगे।” मैंने साफ कहा कोल्वो से।

“जी, ठीक है।” कोल्वो बोला।

“यहाँ से हम अपने आप चले जाएँगे, दरअसल हमें अब निकलना है, देर हो रही है, पहुँचने में भी टाइम लगता है फिर।” प्रीति ने कोल्वो से कहा, तो मुझे काफी सुकून मिला।

“अरे, हाँ, आप हमें बस स्टैंड छोड़ देते, तो हम और भी जल्दी पहुँच जाते।” मैंने कोल्वो को

कहा।

"आप दोनों आपस में डिसाइड कर लो कि मुझे रुकना है या जाना है?" कोल्वो हँसते हुए बोला।

"बीच में तू बैठेगी समझ ले।" प्रीति ने मुझे धीरे से कहा।

ओह, मुझे याद आया कि कुलदीप तो है नहीं, फिर एक पर तीन कैसे।

"तुम जाओ कोल्वो, हम चले जाएँगे।" मैंने कुछ सोचकर जवाब दिया।

"हहहाहा।" प्रीति जोर से दाँत चमकाने लगी, जो कोल्वो को बिलकुल समझ नहीं आया।

"ठीक है, फिर मैं निकलूँ।" वह बोला।

"हाँ, ओके।" हम दोनों ने एक साथ कहा।

"उम्मीद करते हैं कि जल्द ही फिर मुलाकात फिर होगी," कहकर कोल्वो चला गया और बिल देकर हम दोनों भी बाहर आ गए। कोल्वो की कही गई बात का मतलब अच्छे से हम दोनों ही जानते थे।

"लास्ट बस पता कर ले, बस।" मैंने मजे से कहा।

"पाँच तक तो जाती ही होगी, मैं श्योर हूँ।" वह बोली।

"क्या बात है, प्रीतो तो बड़ी खुश नजर आ रही है?" मैंने मुस्कराकर कहा।

"हाँ, अब काम हो जाने के चांसेस हैं न, इसलिए तो हल्का महसूस हो रहा है।" प्रीति ने कहा, उसकी आँखें खुशी से चमक रही थीं, मानो कोई ढलका दे रहा बोझ कंधे से उतर गया हो।

"वी आर फ्री-फ्री-फ्री बर्ड्स जैसा।" मैंने प्रीति का दुपट्टा उतारकर हवा में लहराकर संगीतमय लहर के साथ जैसे कोई राग छेड़ा।

ये कुछ देर की सुकून भरी हँसी हर उस दर्द के लिए मरहम थी, जो इन दो दिनों में मैंने झेला।

कई बार दर्द इतना बढ़ जाता है कि उसके बाद आई कुछ पलों की खुशी ही दुनिया की सबसे बड़ी चीज लगती है। ऐसे में दो रास्ते होते हैं हमारे पास। पहला ये कि उसको खुलकर जी लो और दूसरा ये कि उसको निगाहों के कैमरे में कहीं कैद कर लो, कैद कर लो किसी भी ऐसी जगह, जहाँ तुम्हारे पास वो हमेशा के लिए रह जाए। मैं दूसरा वाला रास्ता ज्यादा पसंद करती हूँ, क्योंकि इसका अपना एक पर्सनल फायदा भी होता है। वो ये कि जब चाहे खोलकर देख लो, खुश हो लो और किसी को दिए बिना चुपचाप बक्से में बंद करके रख दो अगली बार खुशी से चहकने के लिए।

हम दोनों आगे बढ़ रहे थे। प्रीति के पास नया नोकिया 2690 था, जिसमें पूरे 2 जीबी का मेमोरी कार्ड डाला हुआ था उसने। हर उस जगह पोज दिए मैंने जहाँ मैं दे सकती थी, ज्यादा से ज्यादा, बागीचे में फोटो, पेड़ के नीचे फोटो, डस्टबिन के पास फोटो, पेड़ लगाएँ के स्लोगन के नीचे फोटो, रास्ते पर फोटो, रास्ते पर बैठकर कोहनी जमीन पर टिकाकर फोटो, इस सब में हम न तो थके थे और न ही हमारा मन भरा था। अगर कोई चीज भर गई थी, तो वो थी प्रीति के फोन की मेमोरी।

"ओह्ह्ह एस.डी. कार्ड फुल।" प्रीति ने अफसोस जताया।

जब हमारे पास टचस्क्रीन फोन नहीं थे न, तब हमारे आपसी रिश्ते बहुत टचिंग होते थे। मुझे याद नहीं कि हमें एक-दूसरे की कमी कभी महसूस हुई हो जब हम सादे फोन लिए होते थे, पर ये

भी याद नहीं है जबसे टच आया हमने कब आखिरी बार एक-दूसरे से बात की हो।

आज ये हमारा बनाया गया संसाधन हम पर राज कर रहा है और हम इसी में अपना सुकून ढूँढ़ते हुए सुकून से बहुत आगे निकल आए हैं। इसके बाद भी हम समझ नहीं पाते कि सुकून तो वहीं माचिस की डिबिया में, पिछले चौराहे वाली नुक्कड़ की दुकान में बंद हमें पुकारता रह गया। हमारे उस छोटे-से फोन की मेमोरी मुश्किल से कुछ फोटोज, कुछ फिल्मी गाने और एक-डेढ़ मूवी तक सीमित रहती थी। उस बात को यूँ तो एक जमाना लगता है बीते, पर जैसे आज भी इतनी करीब है जितनी मेरी खुद की आत्मा।

फोन मेमोरी का पूरा हो जाने का मतलब ये तो नहीं था कि चित्र अब कैद नहीं होंगे, दृश्य अब अपनी छटा हमें रखने नहीं देंगे, बादल अब नाराज होकर हमारी धूप को ढँक देंगे। नहीं! ऐसा नहीं था। दृश्य अब भी कैद हो रहे थे हमारी गिरफ्त में, आँखों को कैमरा बनाकर मन के कोने में अपनी जगह ले रहे थे।

इसके बाद चित्रों को पकड़ते-पकड़ते वक्त कब रेत जैसा मुट्ठी से फिसलता गया, इसका पता तब चला जब तीन किलोमीटर की पैदल यात्रा करके एग्जाम सेल से मेन गेट तक आए हम।

इसके बाद हम दोनों बस की तरफ भागे। छोटी-सी कंजस्टेड बस थी ये, जिसमें सीट बहुत ही कम और बहुत ही छोटी थीं। सिर्फ टू-सीटेड बस थी ये, जो इसकी इकलौती खासियत थी। आमतौर पर देखा जाए तो मुझे कम स्पेस वाली बस बिलकुल पसंद नहीं थी, क्योंकि ये असुविधाजनक होती है, पर इसमें ये अच्छा था कि कोई और तो पास में नहीं बैठेगा हमें दुखी करने को। दिन अब ढलने लगा था और मन का सूरज अब खुशी-खुशी विदा लेकर अपने घर की दूसरी ड्यूटी पूरी करने जा रहा था।

"उफ, आज तो भई फंसे पड़े हैं इस बस में हम, जल्दी से बैठ जा।" प्रीति मुझसे बोली, जो एक साइड पर बैठकर दूसरी पर अपना हाथ जमाए मेरी सीट घेरे हुए थी।

"लगभग हो ही गई आज की सिंदबाद यात्रा तो समझो।" मैंने बैठकर एक गहरी साँस लेते हुए कहा।

"हाँ, इस बार दो टिकट के पैसे देना।" प्रीति ने सुबह की याद दिलाई।

"मैं तो एक के ही दूँगी, तू दे दे दोनों के।" मैंने चुटकी ली।

"लोग कितने भी हों, तू तो एक ही के पैसे देती है और टिकट पूरे लेती है... बेचारा कंडेक्टर।" प्रीति बोली।

"गम तो ऐसे मार रहा तुझे, जैसे तेरे पापा की बस हो।" मैंने कहकर मजे लिए।

"ऊऊऊऊ, मेरा एंग्री बर्ड, मेरा पटोला, मेरा बेबी।" प्रीति ने मनाते हुए कहा।

"अभी तो दो सब्जेक्ट में आई है, अब सब में लाना है न फिर। पैसे देकर सब हो तो रहा, ठीक है ना।" मैंने साफ कह दिया।

इसके बाद प्रीति के चेहरे के हाव-भाव बता रहे थे कि उसको मेरी बात काफी बुरी लगी है।

"सॉरी प्रीतो।" मैंने कहा।

"देख, बस मैं ये चाहती हूँ कि जितनी दिक्कत हमें उठानी पड़ी, हम रोए, मन दुखी हुआ, टेंशन हुई, वो फिर दुबारा न हो। न तुझे न मुझे।" मैंने कहा।

"हाँ, ये तो है।" वह बोली।

"सुन, कुछ बात भी करनी है तुझसे, कल कॉलेज इसलिए भी मुझे जरूर जाना है, क्योंकि

प्रिंसी से एप्लीकेशन साइन करानी है, ट्यूशन के लिए।" मैंने कहा।

"ट्यूशन?" वह चौंक गई।

"हाँ, मैंने शायद तुझे बताया होगा...नहीं बताया क्या, अच्छा चल अब बता रही, ट्यूशन लगा रहे हैं हम।" मैंने कहा।

"कौन-कौन, किस सब्जेक्ट का, किससे?" वह बोली।

"एक आरुष सर हैं, पड़ोसियों ने बताया हमें। मैथ्स के हैं, बहुत अच्छा पढ़ाते हैं। आगे कभी बैक नहीं आएगी फिर।" मैंने कहा।

"हाँ, ये तो ठीक है।" वह बोली।

"तू भी आ जा हमारे साथ, अच्छा रहेगा।" मैंने कहा।

"ठीक फिर, मेरी भी बात कर लेना, पूजा को भी ले आऊँगी, अकेले नहीं आना पड़ेगा।" वह बोली।

"ओके।" कहकर हल्का-सा मुस्करा दी मैं।

शाम सूरज को अपनी बाँहों में लेकर धीरे-धीरे ढल रही थी और मेरा मन बस के पहिए की स्पीड के साथ धीरे-धीरे कहीं कच्चे, कहीं पक्के रास्तों पर भागता जा रहा था, फोन के उस ओपेरा मिनी एप्प की तरह, जिसमे सारे पेजेज बैक में भी रन होते रहते हैं। कोल्वो मेरी जिंदगी का वही यू टर्न था, जहाँ पर अभी मैं अटकी थी। उसके साथ मेरी पहली मुलाकात में कोई एहसास तो थे जो पनप गए थे। मेरे अंदर की चिंगारी को कोल्वो के आने से एक हवा-सी मिल गई थी और कहीं न कहीं इसलिए ही मैं उससे भागने की कोशिश कर रही थी।

"अरे सुन, कोल्वो को मैसेज कर दूँ क्या, हमारे पहुँच जाने का?" मैंने कहा।

"देख ले, तेरी मर्जी है।"

मुझे सुनकर लगा, जैसे प्रीति ऐसा नहीं चाहती है।

सोचकर मैंने नहीं किया उसे कोई मैसेज।

"अभी तो पाँच भी नहीं बजे और हम पहुँच भी गए न।" मैंने बस स्टैंड वाली रोड आते ही प्रीति से कहा।

"ठीक, तू चाहे तो यहीं उतर जा। हॉस्टल यहीं है, इस रूट से पास पड़ेगा।" प्रीति ने कहा।

मैंने बैग उठाया और प्रीति को झप्पी देकर उतर गई।

सामने खड़े देखा तो ठीक आगे हॉस्टल की वही रोड थी। "अरे! यहाँ से भी रास्ता है, मुझे तो पता ही नहीं था।" मेरे दिमाग के घोड़ों ने अपना काम किया।

'शाम हो गई है और टाइम भी प्रेयर का है, गार्ड भी कुछ नहीं पूछेगा।' मैंने चलते-चलते सोचा।

अगले तीन मिनट में मैं हॉस्टल पहुँच गई थी, जहाँ सुबह वाला ही गार्ड था। उसने मुझे कोई सवाल नहीं किया और सही-सलामत बिना किसी दिक्कत के मैं अपने रूम में पहुँच गई।

"तू आज ही आ गई?" गीतू मुझे देख खुश होकर बोली, मानो बच्चा अपने पापा के काम से लौटने पर चहकता है।

"हाँ।" मैंने कहा।

"चल सही है और क्या।" नंदा बोली।

"तुम दोनों सोए नहीं क्या आज?" मैंने कहा।

कॉलेज से आई ही चार बजे आज तो, ये सो रही थी बस, मैं भी गई थी आरुष सर से बात करने और हाँ, प्रिंसी से भी साइन करा लिए हैं।" गीतू ने बताया।

"क्या, मेरे बिना ही, मेरी एप्लीकेशन अब फिर!" मुझे आश्चर्य के साथ साथ दुख भी हुआ।

"हम चार बंदों के लिए करा ली है, डोंट वोर्री।" वह बोली, तब साँस में साँस आई मुझे।

देर रात तक आने वाले कल के पहले ट्यूशन को लेकर बातों में खुद को गुदगुदाते रहे हम।

जिन्दगी ऑन अ बैक ट्रैक

थी तो ये भी मॉर्निंग ही पर और दिन जैसी बिलकुल नहीं, क्योंकि ये ठहरी 1 जनवरी, यानी सही समझे आप- हैप्पी न्यू ईयर। पर हमारे लिए जैसे सबकुछ खास होने की वजह कुछ अलग ही होती थी, वैसे ही आज का दिन खास इसलिए नहीं था क्योंकि आज न्यू ईयर का फर्स्ट डे था, बल्कि इसलिए था क्योंकि आज हमारे ट्यूशन का फर्स्ट डे था- हमारे को-एड वाले ट्यूशन का।

कॉलेज से जल्दी वापस आकर मैं और गीतू आज बड़े दिनों बाद इतना तैयार हुए थे। मैं अपने बैग को लेकर बहुत कन्फ्यूज थी।

"गीतू देख न, मेरी ड्रेस ब्लू है वैसे तो, पर ब्लू बैग तो है नहीं मेरे पास।" मैंने शिकायती लहजे में कहा।

"अरे, कोई भी ले ले। वहाँ पढ़ने ही तो जा रहे हैं।" गीतू मेरी तरफ बिना देखे बोली, जो खुद अपनी मैचिंग को लेकर खासी परेशान दिखाई दे रही थी।

"तू क्यों इतनी दुखी दिख रही है फिर?" मैंने कहा।

"मैं कहाँ?" वह छुपाते हुए बोली।

"दिख रहा है वो तो।" मैं बोली।

"चलो रे।" रचना भागते हुए कमरे में अचानक से आई और रुक गई कुछ देखकर।

"ओह तेरी हीरोइनो, खूब सज-धज कर फिट... हम्म्म।" वह बोली।

"ट्यूशन जा रहे या फैशन शो करने, पता नहीं।" नंदा कुलबुलाई। वह बहुत देर से ये सब देख रही थी।

"हाँ, बंदर क्या जाने...।" गीतू ने जानबूझकर वाक्य अधूरा छोड़ दिया था।

"मैं कर दूँ सेंटेंस पूरा?" शिखा बोली, जिसके बाल आज हमने पहली बार बिखरे देखे थे।

"अब अफ्रीकन हाथी हमारे हॉस्टल में भी पाए जाने लगे हैं।" नंदा ने कहा, तो बुरी तरह चिढ़ गई शिखा।

"न तो मैं अफ्रीकन जैसी काली हूँ और न ही हाथी जैसी मोटी, समझी।" शिखा ने चिल्लाकर कहा।

"हुँह, अंगूर खट्टे हैं न, इसलिए।" रचना ने भी उसका साथ दिया, तो मुँह बनाकर अपनी रजाई खोल ली नंदा ने।

इसके बाद हम चारों हॉस्टल से निकल गए। कुछ चुनिंदा गलियाँ और सड़कों को पार किया हमने रास्ते के दरमियाँ। वहीं एक गोलगप्पे की शॉप भी थी।

"अरे, रुको भाइयो और बहनो, मेरे पैर जम गए हैं, आगे नहीं जा रहे।" मैंने आवाज लगाई, तो काफी तेज चले रहे गीतू और शिखा मुड़े।

“पता था, ये शॉप देखकर पागल हो गई होगी तू, पर अभी नहीं, चल जल्दी।” गीतू ने मुझे खींचा।

दिल में दर्द तो बड़ा हुआ, पर आगे चलकर लिकोपर के शोरूम के आगे से निकलने तक दुख जरा कम हुआ। वहाँ पर एक प्ले स्कूल था, जिसके अंदर ऊपर के एक तंग कमरे में थी हमारी कोचिंग क्लास। हम चारों पतले और गहरे-से लंबे सीढ़ीनुमा जीने पर चढ़कर जा पहुँचे ऊपर की मंजिल पर, जहाँ बहुत बड़ी तादाद में आरुष सर के दर्शनों के लिए भक्त रूपी स्टूडेंट्स की भीड़ जमा थी। इसके नीचे एक प्ले स्कूल चलता था और ऊपर कोचिंग, जहाँ बाहर छत-सी थी। बाहर की जगह काफी बड़ी थी और कमरा जिसमें बैठकर या लटककर पढ़ना था, वो काफी छोटा। अंदर फर्नीचर के नाम पर लकड़ी की कुछ बेंचेस थीं, जिन पर मुझसे दो किलो ज्यादा वेट वाला भी बैठे, तो शायद वो टूट जाएँ। पानी की कोई व्यवस्था नहीं थी, जिसके बारे में पूछने पर पता चला कि वाटर टैंक आता है सुबह, पर वो दोपहर तक खत्म हो जाता है। स्टूडेंट्स इतने खड़े थे कि निकलना भारी हो गया भीड़ में, जैसे राशन की कोई लाइन हो। लगा कि हम वहाँ अगर सिटिंग अरेंजमेंट करने लगे, तो पार्लियामेंट हाउस शायद कम पड़ जाए। इसलिए हम सिर्फ खड़े होकर जगह मिले तो खड़े और बैठने को मिल जाए तो मौजा ही मौजा वाला काम समझे थे। वहाँ जाकर हमने सही ही समझा था, इसका पता हमें तब चला जब हमने अपने से पहले वाले बैच को पढ़कर जाते देखा।

“चलो अंदर।” शिखा बोली, जब बैच निकल गया पहले वाला।

“ओह, मैं समझ गई अब आगे क्या होना है।” मैंने अपनी तंग हालत पर तरस खाते हुए कहा।

इतने सारे लड़के-लड़कियाँ एक छोटे से कमरे में बेंचेस पर कुछ बैठकर और कुछ उनके ऊपर लटककर पढ़ रहे थे।

“इनमें से आरुष सर कौन से हैं?” मैंने रचना से पूछा।

“वो ग्रीन शर्ट वाले, गोरे-चिट्टे बछड़े जैसे दिख रहे हैं।” वह बोली।

“ओह।” मैं देखती रही उनको।

“बच्चे-से लग रहे यार।” मैंने कहा।

“पढ़ा-पढ़ा कर बाल चले गए पर।” शिखा हँसते हुए बोली।

“हॉस्टलर्स।” अचानक आरुष सर का ध्यान हमारी तरफ गया, जिसके बाद हम उनके साथ मुस्कराए।

“बैठो मिस पिंकी।” मेरा पिंक बैग देखकर सर ने कहा, जिसके बाद मेरे कान लाल हो गए।

अब मैंने उनको ध्यान से देखा। एक चीज थी जो इतनी इंप्रेसिव थी कि मेरी नजर बार-बार वहीं जा रही थी। वो थीं उनकी ग्रीन कलर की आँखें। पतले-दुबले से, लंबे-से... कमर 26 होने के बावजूद बॉडी फिट कपड़े पहन रखे थे उन्होंने। पीछे की तरफ से वो एकदम वो लड़की लग रहे थे, जिस फिगर की ख्वाहिश मुझे हमेशा से अपने लिए रही।

“इतनी पतली कमर तो लड़कियों के भी नसीब में नहीं आजकल।” मैंने रचना से कहा, तो वो वहीं जोर-जोर से गँवारों जैसे तालियाँ पीट-पीट कर हँसने लगी। वहाँ मौजूद हर कोई हम दोनों को ही देख रहा था, जिसकी वजह से मुझे बहुत ही शर्म महसूस हुई थी।

“चुप कर।” रचना से कहकर मैं वहाँ से शिखा की बेंच पर शिफ्ट हो गई थी।

“इनकी आँखें…।” मैंने जो सोचा था गीतू ने वो कह दिया था।

“शर्ट की मैचिंग के लेंसेस हैं।” शिखा ने बताया।

“ओह मैचिंग के लेंसेस!” मैंने हैरानी जताई।

“जलवे हैं।” गीतू ने कहा।

“हाँ तो हॉस्टलर्स, अपना नंबर दो मुझे। इन केस कोई टाइम चेंज होगा तो मैसेज आएगा तुम्हारे पास।” आरुष सर हमसे बोले।

गीतू तो हमेशा से जैसे कि हर बात में सबसे पहले बैंक सीट पकड़ लेती थी, मैंने बिना गीतू को कुछ कहे अपना नंबर दे दिया। अंदर हमारे आसपास की सीट्स पर काफी लड़के-लड़कियाँ थे जो पहले से जान-पहचान या फिर सेम कॉलेज के होने से आपस में गपशप कर रहे थे और हम चोरी-चोरी कनखियों से उन्हें देख रहे थे। हमारा सारा ध्यान इन्डायरेक्टली उन्हीं पर रह-रह कर जा रहा था। डायरेक्टली हम चारों के लिए ही ये शो करना मुश्किल था कि हम उन्हें नोटिस कर रहे हैं। मेरी निगाह में ये लड़कियों का सिक्स्थ नहीं, सेवंथ सेंस है।

“2nd सेमेस्टर हैं यहाँ सब।” सर ने एक आखिरी बार कहा और उसके बाद उनकी क्लास शुरू हो गई।

आज का ये एक घंटा वाकई कब बीता, कहाँ हवा हुआ, पता ही नहीं चला, जैसे तन्हाई में आज कोई था, जो लगातार साथ चलकर हमें अपने होने का एहसास कराए दे रहा था। यहाँ आने का डिसिजन कितना सही रहा था हमारे लिए। इसे मैं अपने ब्रेज़ुएशन की शुरुवात कहूँ, तो भी कोई बड़ी बात नहीं होगी।

लौटते हुए हमने गोलगप्पे खाए, जिनका पानी इतना टेस्टी था कि क्या तेज कैंची की धार से कटा कपड़ा होगा। इतना बारीक, इतना इकसार, इतना खट्टा और आत्मा को इतनी शांति देने वाला, जितनी कोई बड़ी उपासना भी न दे। आज, अभी, इसी वक्त से गोलगप्पे से मुझे सच्चा वाला प्यार हो गया था, जिसके बाद मेरे दिल की आफत गोलगप्पे के पानी ने कर दी थी।

“और नहीं खा सकते क्या यार?” मैंने मायूसी से कहा।

“नहीं।” रचना मुझसे भी कही ज्यादा मायूस लगी मुझे तो।

“सारे आज ही खा लेंगे क्या, इसका तो अब मंथली बजट बनाना पड़ेगा।” गीतू बोली।

“कॉस्मेटिक के पैसे बचाएँगे अब।” मैंने कहा।

“हाँ और क्या, हम भी देखते हैं कहाँ एडजस्ट हो सकता है।” शिखा बोली।

इसके बाद गहरे अफसोस के साथ गोलगप्पे की प्लेट छोड़नी पड़ी हमें।

“हाँ जी मैडम, पढ़ आई ट्यूशन?” प्रीति ने जायजा लेते हुए पूछा।

“हाँ, बहुत सरस छो।” मैंने कहा।

“मुझे नहीं समझ आती ये गुजराती।” वह बोली।

“फिर कैसे पता कि मैंने गुजराती में कहा है?” मैंने कहा।

“हर जगह लॉजिक नहीं लगते बेटा, काम की बात सुन अब।” वह बोली।

“कल से मैं और पूजा भी आएँगे ट्यूशन, बाकी सब मैं तुझे कॉलेज में बताऊँगी।” उसने कहा।

“हाँ, ठीक।” मैं खुश हो गई सुनकर।

हम सीधे हॉस्टल आ रहे थे, जहाँ आकर जैसा कि टाइम हुआ था उसी के अकॉर्डिंग प्रेयर

चल रही थी।

"चाय पी लेंगे सीधा चलके बस, सही है प्रेयर से भी बचे।" रचना और शिखा अपने मग लेकर कमरे में पहुँचीं। प्रेयर भी समाप्ति की ही ओर थी।

धुल्लक-धुल्लक आई कुछ देर बार नंदा चलकर और आते ही हमें देखकर ऐसे किया जैसे हम कोई अनजान हों।

"चाय पी ली क्या?" वह बोली।

"तेरे बिना पी लेंगे क्या वैसे हम?" मैंने कहा तो मुस्कराई नंदा।

"चलें फिर अब?" नंदा बोली।

हम तो मजे से आज डिस्कस कर रहे थे, पर हमारे न्युक्लिअस का एक एलिमेंट शांत चल रहा था।

"क्या हुआ नंदा?" मैंने नंदा को पीछे लेकर कहा, जब गीतू आगे रचना और शिखा के साथ चल रही थी।

"बोर हो जाती हूँ मैं बहुत। तुम लोग तो ट्यूशन भी पढ़ आते हो, आउटिंग भी कर आते हो और लड़के भी ताड़ आते हो, यहाँ मुझे देखो, कैसे रहूँ मैं।" वह बोली।

"कुछ तो सोचना पड़ेगा तेरे लिए।" मैंने दिमाग दौड़ाते हुए कहा।

"हाँ।" वह थोड़ा चहकी इस बात पर।

"तू एक वो अपना कंप्यूटर सेंटर वाला टीचर बता रही थी न?" मैंने याद करके कहा।

"अच्छा वो, हाँ।" उसकी आँखों में जैसे बिजली-सी कौंध गई थी याद आते ही।

"देखो तो, नंदा के गाल कैसे ब्लश मार रहे हैं, लाल लाल टमाटर जैसे।" मैंने छेड़ा तो नंदा हंसने लगी।

"हाँ था तो, उसका क्या?" वह जल्दी में बोली।

"कॉल कर उसको बेबी, वाइ यू वेस्ट योर टाइम?" मैंने कहा।

"पर बैलेंस?" वह बोली।

"मर जा अब इसमें भी बैलेंस को खाकर।" मैंने सिर पकड़ लिया अपना।

"बाकी सब तो तू आगे संभाल लेगी, जानती हूँ मैं तुझे, पक्की चेप्पड़ है वैसे तो तू।" मैंने कहा।

"हाँ, उसकी तो फिर टेंशन नहीं है।" वह कॉन्फिडेंट होकर बोली।

वह अब खुशी से चाय ले रही थी और रचना से भी अच्छे से बात कर रही थी।

"अचानक क्या हुआ अब इसे?" गीतू बोली।

"मूड खराब था इसका, मैंने जोक सुना दिया।" साफ गप मारी मैंने।

"अजीब है वैसे ये तुम्हारा गोल पैकेट भी।" रचना मुझसे बोली।

हम चाय लेकर शिखा के कमरे में आ गए।

"ओए, पाशना, आज वो ब्लू जैकेट वाला मुझसे एकदम मैच हो रहा था न?" रचना बोली।

"चुप कर, शर्म कर, जीजा है वो तेरा।" ये गीतू थी।

"हैं... गीतू??" हम चारों ने एक साथ आँखें फैलाकर गीतू की तरफ देखा।

और तभी हमें पता चला कि हम तीनों, यानी मैं, गीतू और रचना एक ही लड़के पर फिदा हुए थे जिसका नाम... नाम...।

“नाम उसका?” मैंने कहा मायूस-सा चेहरा बनाकर।

“शिव।” शिखा आँखों में शैतानी भरकर बोली।

“मैं पार्वती जानी जाऊँगी आज से, सब सुन लो।” मैंने एलान करके कहा।

“चुप कर बे, तू क्यों?” रचना बोली।

“आज दोस्ती में ऐसे करोगे क्या तुम अब, पाशु तू, एक लड़के के लिए आज ऐसी हो गई है?” गीतू मजे लेते हुए बोली।

“अबे, हम इसे सीधा समझते थे और कितनी बड़ी वाली है ये।” शिखा बोली गीतू की तरफ इशारा करके।

“बड़ी वाली क्या?” गीतू ने कहा।

“ठरकी और क्या, देवी समझेंगे ये तुझे?” मैंने एकदम जवाब दिया।

“पहले तो कभी नहीं बताया तूने।” रचना नाराज होते हुए बोली।

“तूने पहले कभी अपनी गंदी नीयत उस पर रखी भी कहाँ।” शिखा ने जोर-जोर से हँसते हुए कहा।

“हाँ-हाँ, मैं कोई उस पर नीयत नहीं रख रही, लड़के कितने कमीने होते हैं ये मुझे बताने की क्या जरूरत है तुम सबको।” रचना जैसे प्रवचन देने वाली कोई साध्वी नजर आ रही थी इस वक्त।

“क्या मैं उस पर नीयत डाल रही हूँ पाशना, बता तू।” उसने जैसे मुझसे अपने पक्ष में रहने की उम्मीद करते हुए कहा।

“अबे छोड़ दे इसे, मेरे पास एक तरीका है।” शिखा मुझे उसके चंगुल से छुड़ाते हुए बोली।

“क्या?” गीतू ने कहा।

“मैं उसी से पता कर लूँगी कि वो तुम तीनों में से किसमें इंट्रेस्टेड है।” शिखा ने कहा।

“हाँ यार प्लीज, जल्दी करियो।” गीतू बोली।

“सच्ची रूममेट और दोस्त के फर्ज अगर कोई भूल गया हो, तो मैं याद दिलाना चाहूँगी।” रचना बोली।

“शिखा, ये बकवास कर रही, तेरी बात करे बस ये ऐसा अन्याय नहीं करेगी कभी।” मैंने कहा।

और वहाँ माहौल हद वाला मजाकिया होता जा रहा था।

“मुझे कोई बताएगा ये शिव कौन है?” अचानक चुप्पी छा गई, जब नंदा ने ये बेवकूफाना सवाल किया।

“तुम्हारी इस रूममेट का दिमाग कुछ धीरे चलता है क्या?” शिखा ने कहा तो बिदक गई नंदा।

“अब पूछ ही तो रही हूँ।” वह बोली।

“तेरा जीजा है होने वाला, जिसे ये दोनों गद्दार अपना वाला बता रही हैं।” गीतू बोली।

“अरे, मरो मत, मैं बात करूँगी उससे, उसका इंटरेस्ट भी तो पता करना पड़ेगा न।” शिखा ने कहा।

“पहले ही उसकी इज्जत की ले-दिए रहे हो।” नंदा बोली और मुँह फाड़कर हँसने लगे हम सब।

"हहहाहा।" रचना ऊपर-नीचे लोटपोट हो रही थी, शिखा की आधी चाय बाहर, आधी अंदर हो रही थी और गीतू सबको हमेशा की तरह सही-गलत का मतलब समझाने में लगी थी।

"बेचारा, मेरा भाई समान शिव।" शिखा उसकी चिंता करने लगी, जिसके बाद पिटने का नंबर उसका था।

"कोई मर गया है क्या?" गीतू ने पूछा, जो मुझे भी एकदम-से अजीब लगा।

"क्यों?" नंदा ने घूरा उसे।

"ऐसे चुप क्यों हैं?" मैंने नंदा को आँख मारी जिसके बाद वो कुछ ध्यान आ जाने पर वापस चहकने लगी।

गीतू और वहाँ मौजूद बाकी लोगों को माजरा समझ नहीं आया और हम दोनों इस बात पर विशेष अच्छा महसूस कर रहे थे। मानो गर्मागर्म चाय के साथ गर्मागर्म समोसे की अंदर वाली आलू फिलिंग मिल गई हो, जो इस सर्दी में हाथों के साथ-साथ मन को भी गर्मा रही हो। एक और खास बात थी कि इस सब में कोल्वो कुछ देर के लिए पूरी तरह मेरे मन से निकल गया था।

अब हम ट्यूशन के साथ-साथ कॉलेज और हॉस्टल में भी टाइम की कमी के बावजूद दिन और रातें यूँ ही हँसते-हँसते निकाल दे रहे थे। साथ ही बचे हुए टाइम में ट्यूशन को लेकर प्रॉपर मसाला भी था अब हमारे पास। इस सबसे भी अगर कुछ बचता, तो रचना और शिखा की चौकड़ी के साथ हमारी गॉसिप एक अलग ही नया क्रेज, एक नया स्पार्क लेकर आती रोज। फ्री कॉल्स नंदा और उसके कंप्यूटर सेंटर वाले सर की कैमिस्ट्री को काफी आगे ले जा रहे थे। इस सब में प्रीति से बातों का दौर अब बस कॉलेज के फ्री टाइम में ही रह गया था, जो अब नहीं आता था। लिहाजा हम साथ बैठकर भी बस चुपचाप क्वेश्चन सॉल्व करते रहते थे।

कोल्वो को मैं टाइम-टाइम पर अपनी मार्कशीट के बारे में याद कराती रहती थी, जिसके चलते वह फ्लर्ट करने से कभी बाज नहीं आता था। हालाँकि अब मैं इसकी आदी हो गई थी, तो उतना खून अब नहीं खौलता था। शायद मैंने इसी को नियति मान लिया था, क्योंकि ये मेरी जरूरत थी। इसी बीच उस शाम भी बाकी शामों की तरह हम चाय पी रहे थे कि अचानक प्रीति का कॉल आया, जिसे बाकी सबकी तरह मैंने भी नॉर्मल ही लिया था।

"हाँ जानू, बोलो।" मैंने कहा।

"हाँ, वो कुछ बात थी।" उसने कहा।

"क्या बात है, मेरी याद आ रही थी क्या?" मैंने मजाकिया मिजाज से कहा।

"बात जरूरी है पाशु, नहीं तो मैं कल सुबह कॉलेज ही में बात कर लेती।" वह बोली।

"हाँ बता।" मेरे माथे पर सिलवटें आ गई, जिनका आ जाना लाजिमी था।

"कुलदीप का फोन आया था यार, कह रहा था कि मार्कशीट आ गई है बनकर, जिस दिन भी टाइम मिले यूनिवर्सिटी आकर ले जाओ।" प्रीति बोली।

"अच्छा।" मैं सिर्फ इतना ही कह पाई और दिल में मानो एक इंद्रधनुष-सा बन गया था।

"ठीक है, कल सुबह इस पर बात करते हैं आकर।" मैंने कहा और फोन कट गया था।

मैं अब बैठकर हजार बातें सोच रही थी। कोल्वो से तो बात होती है, उसने बताया नहीं, पर क्यों! बहुत सोचने पर भी जब कोई जवाब न मिला, तो कुछ कटने लगा अंदर ही अंदर, मानो कोई नस फूल रही हो दिमाग में, कुछ फट रहा हो जैसे नसों के किसी एंड पर, किसी पार्टिकल के पॉइंट पर, जैसे कुछ छले जाने का कोई दर्द हो जो साल रहा हो अंदर मुझे। कुछ सड़ रहा हो

मस्तिस्क के प्राचीर में।

"ये साला फ्लर्ट तो 12 के भाव करता है हर तीसरे दिन, काम की बात बका नहीं ये बुड़बक।" मैं बैठे-बैठे बडबड़ा रही थी अंदर ही अंदर।

फिर उस रात न तो कोल्वो से बात हुई और न ही नींद ने अपने पहरे मुझ पर बनाए। कोल्वो को फोन करूँ या न करूँ, बात जैसे दिमाग से होते हुए गले के रास्ते अंदर कहीं जाकर चिपक गई थी, क्योंकि हजम नहीं हुई थी अब तक भी। फोन लगा ही दिया जाए, आखिर बहुत देर से चल रही जंग का फैसला यही हुआ। फोन किया तो बेल जाती रही पर फोन नहीं उठा।

1 बार… 2 बार… 3 बार…।

इसका क्या रीजन रहा होगा, दिमाग के गधों ने फिर से घोड़ापछाड़ रेस शुरू कर दी। काफी दिन से कॉल नहीं किया कहीं इस बात से तो नहीं चिढ़ा बैठा, पर उसको मुझे बताना तो चाहिए था न। मेरी जरूरत है इसलिए इस स्साले छोटी सोच के आदमी का दिमाग खराब हो रहा है। भला पैसों से ज्यादा भी इसे और कुछ लग रहा। वैसे हो सकता है अभी वो सो गया हो, टीवी देख रहा हो या फिर किसी काम में बिजी हो। कहीं मेरा कॉल जानबूझकर तो इग्नोर नहीं कर रहा अब ये, क्योंकि तीन दिन पहले इसने कहा था मुझे रिवर्स कॉल कर लेने को पर मैंने किया नहीं।

सुबह हुई थी पर गीली-गीली, अंदर भी और बाहर भी, क्योंकि मौसम भी कुछ नाराज ही लगा मुझे। सर्दी की बारिश थी, जाहिर है। ऐसे में गीली आँखें लिए हम और हमारे भीड़ वाले कमरे में भी अकेले-से पड़े हम। ऊपर के जाल जैसे बंद आशियाने से हॉस्टल ग्राउंड में ओस जैसी दिखती वो छोटी-छोटी बारिश की बारीक बूँदें बता रही थीं मौसम में नमी का हाल और साथ ही वक्त की वो कहानी भी, जो अर्ली मॉर्निंग पाँच बजे उठने पर ही हम देख पाते हैं। इसके साथ बेल की वो ट्रिंग-ट्रिंग भी, जिसे मैंने पाँच बजे उठते ही कोल्वो के फोन पर दे दिया था।

"हैलो।" उधर से इतनी सुस्त-सी आवाज आई, जितनी उस टाइम किसी को भी फोन करने पर आएगी ही।

"कोल्वो।" मैंने कहा।

"जी, कौन?" वह बोला।

हो सकता है कोल्वो मुझे न पहचानने का अभिनय कर रहा है या सच में नहीं पहचाना पर…

…पर अजीब बात है, तीन ही दिन में। मुझे हैरत के साथ साथ गुस्सा तो इतना आया कि मुँह तोड़ दूँ उसका अभी के अभी फोन में जाकर। अच्छा हुआ सुसरे को पहले पैसे न दिए हमने। पता नहीं पैसे लेकर न पहचानता तब क्या करते हम। नंबर 2 के काम के कहाँ जाकर शिकायत करते भला। आवाज तो कोल्वो की ही है, तब क्या मौत आ रही इसे।

मना ही लूँ इसे, अपनी मार्कशीट लेकर मुँह पर पैसे मारेंगे इसके और बात खत्म बस, सोचा मैंने।

उफ, कितनी झंझट है। लुगाई है क्या मेरी ये, जो ऐसे नखरे कर रहा। मैंने हिसाब लगाया।

"मैं बोल रही हूँ कोल्वो, पाशना, अभी कुछ टाइम पहले मिले थे हम यूनिवर्सिटी में और फोन पर बात करते हैं।" मैंने बहुत धीरे कहा। मैं बहुत हैरान थी कि वो ऐसा कैसे कह सकता है।

"जी, जी आप, पाशना जी, हाँ बोलिए, बोलिए।" वह अचानक बोला।

पैसे नहीं मिले अभी ये याद आ गया होगा स्साले को, हुँह, और दिखा ले नाटक स्साले,

नौटंकीबाज, जैसे पहले से न पहचाना होगा तूने। मैंने मुँह सिकोड़ा।

"कैसे हो आप?" मैंने अभिनय करते हुए कहा।

"ठीक हैं, तीन दिन से आपके फोन का इंतजार कर करके सूख गए हैं, आपने तो कॉल करती हूँ कहकर अब तक किया नहीं।" वह अपने उसी पुराने शिकायती लहजे में बोला।

"हाँ, आपने भी कहाँ बताया कि मार्कशीट बन गई है हमारी।" मैंने भी कह दिया।

"तो मतलब मैडम को याद हमारी नहीं, अपनी मार्कशीट की आई है।" वह बोला।

'कितना बड़ा वाला है ये साला।' मैंने सोचा।

"नहीं, आपको कौन याद नहीं करेगा भला, दिन में तीन टाइम आपको याद कर रही हूँ मैं।" मैंने कहा।

"शाम को तो बहुत ही किया, जब प्रीति ने बताया मार्कशीट आ गई है। तुमने मुझे नहीं बताया है, नाक कटा दी कोल्वो तुमने मेरी।" मैंने शिकायत की।

"अरे, था तो गलत ही, पर मैं भी क्या करूँ, न इतने दिन से न आपकी मीठी-सी आवाज थी और न दर्शन, न कुछ।" वह बोला।

"यूनिवर्सिटी आओ किसी दिन, साथ चलकर आपकी मार्कशीट भी ले लेंगे और थोड़ा घूमना-फिरना भी हो जाएगा।" वह बोला।

"एक बात और भी कन्फर्म करनी थी मुझे, मैंने वहाँ के बाद एक बार फिर से दूसरा रिचेकिंग जो नॉर्मल प्रॉसेस से जाता है वो भी डाला था, यहाँ मेरी रूममेट के साथ, उसका...।" मैंने कहा।

"तो आपको जरूरत ही क्या पड़ गई वो डालने की?" वह बोला।

"अरे, फिर ये सोचती कि मैं क्यों नहीं डाल रही। और फिर जब आप मेरा कम करते और बिना एग्जाम दिए मैं पास होती, तो इन सबको क्या बोलती फिर, इसलिए।" मैंने सारी बात क्लियर की उससे।

"ठीक है, मैं पता कर लूँगा। आप कल कॉल करना मुझे इसी टाइम मॉर्निंग में ही, फिर मैं जाऊँगा यूनिवर्सिटी 11 बजे, तो पता करके आऊँगा।" कोल्वो बोला।

"ठीक है, बाय।" फोन कट गया और दिन अपने रुटीन वाली ट्रेन की पटरी पर भागने लगा।

इस अगली शाम हम हिलकर खड़े हो गए, जब रचना ने पूछा क्या तुम तीनों में से कोई ड्रिंक करता है। हम सबने 24 इंची बड़ी मुस्कान दे मारी उसकी तरफ।

"हाँ, एक बार ट्राई तो मुझे भी करना है।" मैंने चहकते हुए कहा।

"अपनी देवी से भी तो हामी भरवा लो।" रचना ने गीतू की तरफ अँगूठा दिखाते हुए कहा, जो इस निर्णय से कोई खास खुश नजर नहीं आ रही थी।

"मेरे पास इसका एक लल्लन टॉप उपाय है।" मैंने कहा।

"क्या?" नंदा फुदकने लगी थी, ड्रिंक के नाम से ही।

"चल बे, मैं तो कभी नहीं करती ऐसे गंदे काम।" गीतू नाक सिकोड़कर बोली मेरी तरफ देखते हुए।

"इसके लिए मेरे पास प्लान है, ये नहीं होगी तो बता दूँगी, अभी इसके सामने नहीं।" मैंने कहा।

"मैं ऐसी गंदी चीज नहीं लेने वाली हूँ।" गीतू के गीत शुरू हुए एक बार फिर से।

“हो गया साला सेंटीयापा अगेन।” मैंने सिर पकड़कर कहा।

“ऐ माता, चुप कर बस, पका रही।” रचना बोली उससे भी तेज।

“हाय रे।” नंदा कान बंद करके बैठ गई दूसरी तरफ मुँह करके और शिखा ने अपने हाथ उसके आगे जोड़ लिए, जैसे वो कोई बड़ी देवी हो।

“बंद करो ये ड्रामा, इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा मुझ पर।” गीतू आक्रोश में बोली।

गीतू के आदेश उसके जितने ही सख्त थे, जिन्हें इस वक्त न मानना खतरा साबित हो सकता था। मुझे उस समय की फीलिंग आ रही थी, जब माँ कहीं जाने नहीं देती थीं और मुझे बहुत गुस्सा आता था। एक लड़की दोस्त दूसरी लड़की दोस्त की तब बहुत खास बन जाती है, जब वो रूमी और स्कूलमेट होने के साथ-साथ उसकी माँ बन जाए और उसका ख्याल उसी अबोध बच्चे की तरह रखने लगे, जैसे बचपन में माँ रखती थी। उस टाइम उस चल रहे पल का भगवान का दिया उससे खूबसूरत तोहफा किसी की जिंदगी में कोई दूसरा नहीं हो सकता। गीतू को आज के उसी तोहफे से तोलना सही होगा, क्योंकि ख्याल रखने में वो ऐसी ही थी- सेल्फिश होने के बावजूद।

“गीतू यार, गीतू बहन, यार, प्लीज...।” मैंने उससे मिन्नतें कीं।

“नो।” वह सख्ती से फिर बोली।

इसके बाद वो टॉपिक नंदा के इशारे पर वहीं बंद हो गया। फिर मुझे याद आया कि कल सुबह कोल्वो को कॉल करना है मुझे।

“ये कहेगा कि सुबह काम है तो सुबह ही कॉल किया, अभी नहीं।” मैंने सोचा।

बोझिल लगने वाली चीजें यूँ तो हम अक्सर टालते हैं और कोशिश करते हैं ज्यादा से ज्यादा कि उनको ज्यादा टाइम तक टाल पाएँ, पर हमें उनका सामना आज नहीं तो कल करना ही होता है। मैंने यकीन किया उस वक्त इसे जल्दी से जल्दी खत्म करने पर, ताकि उसके बाद हम अपना बाकी का हसीन वक्त बिना किसी बोझ के जी पाएँ, एक लंबे सुकून के साथ।

असल जिंदगी में आज तक जितना हसीन मुझे वो आरुष सर के ट्यूशन का एक घंटा लगता था, उसके ठीक विपरीत, मुझे कोल्वो से बोझिलताभरे एक घंटे बात करनी पड़ती। मिसकॉल से मुझे सख्त नफरत हुआ करती और कोल्वो हमेशा वही करता। अब तक की कॉल रेट का परसेंटेज तक कैलकुलेट कर लिया था मैंने, जिसके हिसाब से 95% तो उसका मिसकॉल ही हुआ करता और बाकी का 5% अगर वो कॉल कर भी ले तो उसमें एहसान ही दिखाता रहता। अब इसी में 100 का 100% सच ये भी तो था कि हम मेकअप, ड्रेसेस और एक्सेसरीज पर कितना भी क्यों न लगा लें, पर दूसरे को कॉल करने में बड़ी मौत आती है। लेकिन जिसकी सुलगे वो करे वाला पैटर्न चला आ रहा था और चलता ही जा रहा था।

वैसे तो ये हमारी खासियत में ही गिना जाता है कि अपनी ड्रेसेस और शौक पर कितना भी खर्च कर लेने वाली हम लड़कियाँ हमेशा फोन रिचार्ज कराने के लिए मुँह ही ताकती नजर आती हैं, खास तौर पर जब बात किसी ऐसे इंसान के लिए आए जिसे कोई खास पसंद भी नहीं करती हैं। मजबूरी क्या-क्या करा दे ये सुना था, पर लड़के के फोन में रिचार्ज तक करा दे, ये नहीं सुना था, जो करना पड़ा वहाँ।

आज के बाद कभी बैक आए तो भगवान मर ही जाऊँ उसके पहले मैं, जो ऐसे दिन देखने पड़ रहे हैं। बेमन से न जाने क्या-क्या झेलना पड़ रहा मुझे। खैर, कोल्वो को फोन ट्राई करना था

ही, सो न चाहकर भी मैंने किया ही। पर एक बार फिर उसने मेरा फोन रिसीव नहीं किया, जिसके बाद मुझे अपार खुशी मिली, जिसे मैं शब्दों में बयाँ नहीं कर सकती।

"हेल्लो शिखा।" नाश्ते की टेबल पर मैंने कहा, जब शिखा पास से होकर निकल रही थी।

"अजीब बात है।" मैं गीतू के कान में फुसफुसाने लगी।

"छोड़ न, सही तो है, दिमाग ही खा जाते थे वैसे भी।" नंदा ने मुँह सिकोड़ दिया।

"वैसे भी सेमेस्टर एग्जाम आ रहे हैं, इन्हीं को पड़ेगी हमारी जरूरत 100 दफा।" गीतू बोली।

"कब से हैं?" मैंने कहा।

"15 दिन बाद डफर।" नंदा बोली।

"बताया तो है कॉलेज में भी और कल ट्यूशन में भी, कहाँ खोई रहती हैं?" गीतू बोली।

"नहीं, कुछ नहीं।" मैं सोचने लगी इस पर अब।

हम कोई दिलचस्पी नहीं ले रहे थे इस मामले में और हमने इस बात का जिक्र भी कुछ ही देर में बंद कर दिया था कि दोपहर के वक्त वो दिखे मुझे और नंदा को ठेके के बाहर, तो मैं खुद को नहीं रोक पाई।

"यहाँ क्या कर रहे हो?" मैंने कहा।

"दारू ले रहे।" रचना बोली।

मैंने शिखा की तरफ देखा, पर उसने अब भी कोई जवाब नहीं दिया।

"तुम लोग कैसे?" रचना बोली।

"मेरी तबियत ठीक नहीं लग रही थी, तो एक बजते ही मुझे हॉस्टल आना था। अब गीतू तो कभी लेक्चर मिस करेगी नहीं, इसलिए इसको ले लिया साथ मैंने।" नंदा बोली।

"सब ठीक है न, ऐसे अचानक यहाँ तुम लोग?" मैंने पूछा रचना से।

"हाँ, मैंने तो तुम्हें देख भी नहीं पाती, अगर शिखा चिल्ला कर तुमको आवाज न लगाती।" रचना बोली।

"तुम दोनों कॉलेज की सड़क के एकदम सामने वाले ठेके से दारू ले क्यों रहे हो?" मैंने हैरानी से कहा।

"चल, ऑटो में बैठ... बताती हूँ," कहकर रचना ऑटो देखने लगी, जिसमें हम चारों बैठ गए।

हमारे बैठते ही मैंने सवालों के कनस्तर में से एक, एक करके चावल के दानों की तरह अपने सवाल निकलने शुरू कर दिए थे।

"मैं शिखा के लिए ले रही थी, ये दुखी है बहुत।" रचना बोली।

"पर क्यों, रात तक तो अच्छी-भली थी।" नंदा ने पूछा।

"रात तक सब ठीक था, पर सुबह सुबह इसका ब्रेकअप हो गया आज।" रचना ने बताया।

सुबह से मुझे याद आया, मैंने सुबह उस सूअर कोल्वो को फोन नहीं किया, मैं भूल गई थी।

"ओह, कैसे?" मैंने कहा, तो शिखा घूरने लगी मुझे।

"सवरा, मुझे तो पहले ही नहीं पसंद था वो इसके गाँव का।" रचना बोली।

"सवरा?" मैंने पूछा।

"हाँ, गाली है।" शिखा बहुत देर बाद बोली।

"ओहहह।" मैंने अंदर ही अंदर अपनी अनकंट्रोल हँसी को रोकते हुए कहा।

“इसके रामूप्रसाद से इसकी रोज लड़ाई हो रही थी किसी न किसी बात पर और सुबह उसने इसको कह दिया कि ये कोई और ढूँढ़ ले अपने लिए।” रचना ने बताया।

“गोली मार स्साले को, नया लाएँगे हम तेरे लिए।” नंदा बोली।

“वो सब तो ठीक है, पर उसका नाम रामूप्रसाद…?” मैंने सवाल किया।

“उसे रामूप्रसाद हम कहते थे।” शिखा बोली।

“हहहहहाहा।” नंदा और मेरी ऐसी हँसी छूटी कि रुकनी मुश्किल हो गई, मानो कैसेट फँस गया हो कोई अंदर।

“अबे तब ब्रेकअप न करे वो तो और क्या करे।” नंदा बोली।

“जब ऐसे ऐसे नामों से बुलाओगे।” हँसते हुए मैंने जोड़ा।

“चुप कर।” शिखा ने कहा। फिर बोली, “दुखी है आज तेरी बहन।”

“डायलॉग तो मत मार लड़कों जैसे, दुखी है तो रो न फिर।” नंदा ने कहा।

“तो क्या अब मेकअप भी खराब कर लूँ, रास्ते में जो कोई मिलता हो वो भी न मिले।” शिखा बोली।

“ईईईईहहहहहाह अबे मेकअप की पड़ रही इसे।” मैंने हैरान होकर दाँत चमकाकर कहा।

“दुखी तो हूँ यार मैं, आई रियली लव हिम, पर अब करें भी क्या, जाते हुए के लिए आता हुआ तो नहीं छोड़ देंगे न।” शिखा ने बताया।

“भगवान तेरे रिलेशन की आत्मा को शांति दे।” मैंने कहा, लेकिन उसके बाद हम चुप हो गए, क्योंकि ऑटो वाला भी जोरों से हँस पड़ा था, जिसके बाद हमें एहसास हुआ कि वो भी हमें सुन रहा है।

“अरे भैया, अपना ऑटो देखो, यहाँ क्यों कान लगा रहे।” नंदा बोली।

“आप बातें ही ऐसी कर रहे मैडम, मैं भी क्या करूँ।” वह तपाक से बोला।

इसके बाद हमने कोई बात उसके सामने नहीं की और हॉस्टल आ गए।

“चल, हम बनवा देंगे तेरा नया कोई।” नंदा बड़ी शान से उसको सांत्वना देते हुए बोली।

“तेरा अपना स्कोर तो इतना पनौती रहा है, मेरा क्या बनवाएगी। रहने दे, अपना कोई बना ले तू, मैं तो उससे भी खुश हो जाऊँगी।” शिखा ने कहा तो कूद गई नंदा।

“क्या है, ताना मत दे, मैं लगी हूँ कोशिश में।” नंदा बोली।

“मैंने तो इसलिए ही कही नहीं थी ये बात।” मैं आँख मारते हुए बोली।

“तो मतलब अब हम सब सिंगल हैं।” रचना चहकते हुए हम सबकी हॉस्टल एंट्री डालकर अंदर आ गई।

“अरे देखो, हम अपने कोडवर्ड में बॉयफ्रेंड को रामूप्रसाद कहते हैं।” शिखा थोड़ा नॉर्मल दिखने लगी थी।

“क्यों न तू अपने कंप्यूटर सेंटर वाले को यही बुलाया कर नंदा।” मेरे दिमाग की बत्ती जली।

“हाँ, वो समझ भी नहीं पाएगा और मजा भी आएगा कन्वर्सेशन में।” नंदा मुस्कराई।

इस गलियारे में ही हम दोनों के कमरा नंबर 22 और 23 थे जो साइड बाय साइड न होकर मुड़ी हुई गली में थे। थोड़ा टर्न पर आ जाता था उनका 23 नंबर, इसलिए दूर हो जाता था और 24 हमारे बगल में। यहाँ से इसी गलियारे से हम चारों अपने कमरों की तरफ चल पड़े थे, जिसके बाद शाम तक हमें शिखा नहीं दिखी। रचना के साथ ट्यूशन के लिए भी वो नहीं आई। पी लेने की

वजह से उसका ट्यूशन बंक हो जाने पर गीतू का आधे घंटे का भाषण हमने सुना।

"माता जी, आज्ञा हो तो अब चाय पी लें?" शिखा खीझकर बोली, जब आज फिर चाय के वक्त की चौपाल हमारे ही कमरे में जमी थी और गीतू, शिखा को समझाने के नाम पर दबाकर भाषण दे रही थी।

"हाँ पी ले, पीना तो तेरा काम ही है, भले ट्यूशन का ही नुकसान क्यों न हो।" गीतू ने कहा।

"बस कर गीतू, उसको अच्छा नहीं लग रहा है तेरा कहना, तो बार-बार क्यों कह रही उसे।" मैंने कहा।

तभी ट्रिन ट्रिन हुई और फोन देखते ही मैं बुरी तरह चिढ़ गई, क्योंकि ये कोल्वो का फोन था। उसके सिंगल बेल मिसकॉल ने पूरे मूड को चौपट कर दिया था।

"मैं थोड़ी देर में आती हूँ," कहकर मैं अपनी चाय लिए बाहर चली गई।

वहाँ से उठ जाने पर मैं अपने बारे में पिछले तीन-चार दिनों से हो रही गॉसिप को नजरंदाज नहीं कर पाई, जो मेरे कॉल्स को लेकर हो रही थी, क्योंकि कोल्वो के बारे में वे लोग जानना चाहते थे और मैं नहीं बता सकती थी।

"अपनी रूममेट का तो पता कर लेते कि किससे बातें करती है आजकल ये काफी देर देर तक।" शिखा कह रही थी।

"अरे होगा किसी का वैसे ही, अगर कुछ होता तो बता देती ये।" ये गीतू थी।

मैं बाहर आ गई थी और इसी सब में एक गुड न्यूज थी कि मेरा काम हो चुका है।

"मैं डैम श्योर हूँ आपकी मार्कशीट को लेकर, आप कल यूनिवर्सिटी आकर ले जाओ।" वह बोला।

"थैंक यू सो मच कोल्वो यार, प्रीति को बता दूँगी मैं, हम आ जाते हैं फिर कल सुबह ही।" मैंने खुश होकर कहा।

"उनको लाकर क्या करना, आप ही आ जाओ। मैं आप दोनों की दिला दूँगा कल आपको ही।" वह बोला।

"अपना पेमेंट तो वही करेगी न।" मैंने कहा।

"मैं आपसे मिलना चाहता हूँ पाशना। इसके बाद तो फिर आपके ऊपर है आप मिलो न मिलो, पर कल आप ही आ जाओ।" वह बोला।

"अकेले।" मैं बस इतना ही बोली।

फिर मैंने कहा, "अच्छा ठीक है, पर मुझे उसे बताना तो पड़ेगा ही, अगर मैं जाते हुए लेट हो गई तो उसी के यहाँ रुकूँगी न।"

"आप मेरे साथ रुक सकती हैं, मेरे यहाँ मैं ही हूँ अकेला, कोई और नहीं रहता है।" उसने थोड़ा हिचकते हुए कहा।

ये नाइट स्टे का खुला ऑफर था और अब तक उसे बर्दाश्त किए हुए हर एक पल से ज्यादा मुश्किल, ये मेरे बर्दाश्त की लिमिट के बाहर था। मैंने 440 वोल्ट के झटके अपने शरीर में महसूस किए, जिन्हें हम लैब लेवल पर अपने अमीटर में नहीं माप पाए थे आज तक। जब गुस्सा हद से ज्यादा बढ़ जाए और उस बात पर सडनली रियेक्ट न कर पाना एक जी का जंजाल बन जाए, तब इंसान खतरनाक हो जाता है। उसकी सोच की धार या तो मजबूरी तले दबकर खत्म हो जाती है

या खंजर जैसी नुकीली।

"रुकने का देखते हैं। अगर काम टाइम से हो गया तो मैं वापस आ जाऊँगी, नहीं तो मैं आपको बता दूँगी फोन करके जैसे होगा।" मैंने बस इतना कहा, अंदर ही अंदर दाँत पीसते हुए। फिर, "ठीक है, जैसा होगा सुबह बताती हूँ," कहकर फोन रख दिया।

अंदर कमरे में आकर फिर न तो मैंने किसी से बात की और न ही खाना खाया। दिमाग का करंट जैसे और तेज होकर मुझे पगलाए दे रहा था और तेजी से उसी सबको सोच रहा था, जिसको उसे सोचना चाहिए। इसी बैंक की कशमकश में कब मैं इतना थक गई कि चप्पल पहने-पहने सो गई, पता ही नहीं चला। आज की रुपरेखा ये थी कि कोई रुपरेखा ही नहीं थी। दिन निकलने के साथ-साथ अधखुली आँखों में नए-नए खतरनाक मोड़ मेरे मानसपटल पर अंकित करके मुझे वैसा करने के लिए उकसा रहे थे, जैसा करने में मैं सक्षम तो थी पर डर रही थी। मैंने सोच लिया था कि कोल्वो की इस बात के लिए उसे ऐसा सबक सिखाऊँगी कि कभी मुझे भूलना भी चाहेगा न, तो भी नहीं भूल पाएगा और याद करेगा तो दर्द होगा। कुछ भी ऐसा... पर क्या-क्या-क्या? इसी क्या ने अब मेरी अधखुली आँखों को पूरा खोल दिया था, सुबह के सात बज गए थे और जाली की खिड़की पार करके सूरज की पहली किरण का चेहरे पर आकर पड़ना किसी ऐसे तेज का संकेत था कि डर रूपी बादल अब छँटने को हैं।

2nd सेमेस्टर आज से शुरू हो रहे थे और काफी दिन बाद आज मैं कॉलेज में प्रीति से मिली थी।

"बैक पेपर की डेट आ गई है पाशु।" प्रीति ने बताया।

"ठीक पाँच दिन बाद पेपर है।" पूजा बोली।

"प्रीति, साइड में आ।" मैंने कहा।

"हाँ।" वह बोली।

कोल्वो का फोन आया था कि हम आकर मार्कशीट ले लें।" मैंने कहा।

पर अब तो हम पेपर ही दे रहे, अब क्या करेंगे उससे मार्कशीट लेकर?" वह बोली।

"देख, मेरी बात सुन। पाँच दिन बाद पेपर है। हमारी तैयारी 2nd सेमेस्टर की तो है ट्यूशन की वजह से, पर बैक पेपर की कौन-सी तैयारी की है हमने, हम फिर से फेल हो गए तो?" मैंने उसको समझाया।

"हाँ यार पाशु, ये भी है, रिजल्ट आएगा भी इसमें तो अगले सीजन तक और तब भी अगर रह गए, तो पूरे साल को बात जाएगी।" वह भी समझ गई।

"अब देख, अगर हम वहाँ से रिचेकिंग में क्लियर हो गए होंगे, तो मार्कशीट तो यूनिवर्सिटी हमें एक ही देगी, ये या वो।" मैंने कहा।

मैंने कोल्वो की सारी कहानी सुनाई उसे, तो मुँह फाड़े चेहरा देखती रही वो मेरा।

"अकेले मत जा पाशु।" वह बोली।

"मैं अकेले जा रही, पर शाम तक वापस जरूर आऊँगी ये बात पक्की है। इससे कैसे भी करके बस मार्कशीट ले लूँ एक बार हम दोनों की, तब बताऊँगी मैं इसे।" मैंने मानो आँखों में आग भरकर कहा।

"मुझे बता कब जा रही?" प्रीति बोली, "एक मंथ में 2nd सेमेस्टर के रिजल्ट्स आ रहे और पाँच दिन बाद बैक पेपर है हमारा।"

“इस बार इतनी जल्दी रिजल्ट्स?” मैंने कहा।

“हाँ, जल्दी कहाँ, ठीक तो है।” वह बोली।

“ठीक है, जैसे होगा।” वह बोली।

इन दिनों को लेकर ये सच ही तो है। मेरे और गीतू जैसे सैकड़ों विद्यार्थियों की लाइफ इस पल पर जरूर ही आती है, जब पूजा के नाम पर एक बड़ी टेबल बड़े जोर-शोर से सजाते हैं हम, जिसमें दियाबत्ती, धूपबत्ती और अगरबत्ती से लेकर भजन की किताबें तक होती हैं और जो पड़ी धूल चढ़ती हुई हमेशा एग्जाम्स का ही इंतजार करती है। तब उनकी धूल साफ करके अपने मतलब के लिए उनको भी इस्तेमाल में लिया जाता है भगवान को राजी करने के लिए। यहाँ पर भी महीनों बाद मंजे पूजा के बर्तन चिल्ला-चिल्ला कर आपस में हमारे एग्जाम की बातें कर रहे थे।

यूँ तो बैंक मेरे लिए एक ऐसे एक्सीडेंट जैसी थी, जिसमें मेरी दोनों किडनियाँ चली गई हों और लीवर को ही उनके हिस्से का भी काम करना पड़ रहा हो। इसका आशय उन तीन घंटों से है, जिनके भीतर मुझे ये अनुभूति हुई- वो बैंक पेपर के तीन घंटे। इसके पहले आधे घंटे में मैंने पेपर को ऐसे घूर-घूर कर देखा था ऊपर से नीचे तक, जैसे कोई राह चलता लफंगा लड़का किसी आती-जाती लड़की को रोज घूरे और नौबत यहाँ तक आए कि बस चप्पल ही खाना रह गया हो। बाकी के बचे ढाई घंटे में से आधा घंटा अंशिका से परेशान होने में, एक घंटा लिखने में और बचा-खुचा एक घंटा ये हिसाब लगते लगाने में बीता की इस सब पर कितने मार्क्स मिल पाएँगे। इस बाद वाले एक घंटे में कान ‘टाइम अप’ सुनने को ही तरसते रहे। इन तीन घंटो में शुरू से आखिरी तक एक बात जो कॉमन रही, वो थी अंशिका का आंसर बताने को लेकर मुझे पूरे टाइम परेशान करना। इस सब में अलग से भी कुछ थोड़ा-थोड़ा टाइम निकल गया अपने आप ही बीच-बीच में, जिसमें कुछएक रंग-बिरंगे कपड़ों वाली, आइटम क्वीन बनी बैठी लड़कियों को देखा मैंने। कुछ देर उन महरून रंग के, टाट के बड़े-बड़े पर्दों पर नजर निकाली और कुछ देर मैंने गौर फरमाया अपनी बेंच के बैंक साइड पर लिखे काले पेन से सुमोना लव्स अमित पर। ‘एग्जाम्स के टाइम भी इतना टाइम होता है कि अमित को रो दिया इस सुमोना ने, कमाल है,’ मैंने सोचा।

सोच ही रही थी मैं कि सोचते-सोचते उस काले पेन की निब के उस छोटे-से पॉइंट में खो चली और मन पंख लगाकर उड़ चला आज उसी स्कूल में, जहाँ से मैं आई थी यहाँ।

ऐसा नहीं था कि मुझे कभी अपना स्कूल, अपना वो पहला क्रश, स्कूल में क्लास 9th का पहला दिन और वो दोस्त जिनके साथ मैंने अनगिनत लम्हे बिताए, वो सब याद नहीं आते थे... आते थे, बहुत ज्यादा आते थे, पर इस सब में जानबूझकर बिजी होना या फिर बिजी होने की एक्टिंग करना... इस सब में मैं ये भूल जाती थी कि ये जो मेरे सामने है ये वो नहीं है, मैं खुद उसी एक्टिंग का एक कैरेक्टर बन जाती थी।

तभी हॉल की लाइट अचानक चले जाने से और चीटिंग होना शुरू हो गई थी।

टीचर बराबर वाले हॉल में जाकर लाइट के इंतजाम के बारे में दूसरी मैम से बात कर रही थी। सब किसी न किसी हलचल का हिस्सा थे वहाँ सिवाय मेरे। मैं वैसे ही शांत अपनी जगह पर बैठी रही, ख्यालों की दुनिया छोड़ पाना मेरे लिए वैसे ही मुश्किल रहा था, जैसे तपती गर्मी में किसी को ए.सी. से बाहर खींचकर मैदान में ले आना। और अब तो मैं थी भी अपने बेफिक्रे जोन में।

मुझे एक आवाज सुनाई दी। इतनी ऊहापोह, इतनी उलझन, इतनी बेचैनी, पर किसलिए,

क्यों, किसके कारण, कैसे, क्यों है इतनी परेशानी? यूँ ही, बेवजह? मैंने घबराकर इधर-उधर देखा, तो एहसास हुआ कि मैं तो पसीने में नहा गई थी। क्या मेरे मन के बंद कमरे में कोई आहट है क्या? मैंने मुड़कर यहाँ-वहाँ देखा, सब जगह चेक किया, कोई नहीं था और तब जाकर पता चला कि आवाज मेरे अंदर से ही आ रही थी। अब कैसी उलझन, जब सबकुछ शीशे की तरह साफ हो गया था।

मेरा एग्जाम हो गया था और मैं रास्ते से अकेले पैदल वापस आ रही थी। कहीं बैठना था अकेले कुछ देर। इस बार प्रीति से बात करने, उसके साथ टाइम स्पेंड करने भी नहीं रुकी मैं। कहाँ रुकूँ, किसी पार्क में या किसी रेस्तराँ में? अकेले बैठने पर सब सोचते हैं, जाने किसका वेट कर रही है। यह ख्याल आते ही कॉफी कैफे जाकर बैठी मैं। बहुत हुआ, मार्कशीट भी लाऊँगी और इस कोल्वो के बच्चे को ढंग से सही भी करके आऊँगी मैं। इसे इसकी औकात और इसका काम, दोनों याद कराना बहुत जरूरी हो गया है। इसने सोच भी कैसे लिया कि जिस काम के लिए मैं इसे पे कर रही, इसको मुँहमाँगे पैसे दे रही, उसके लिए मैं इसके साथ नाइट स्टे करूँगी... छिन्छिन्छि। मैं खुद से बातें करती रही। मन इस कदर जल रहा था कि शरीर के तापमान को भी बढ़कर 104° F दे रहा था, जिसमें खुद पर से विश्वास भी कहीं किसी कोने पर आगे पकड़ रहा था। बैक पेपर भी हुआ और सेकंड सेमेस्टर एग्जाम भी, ठीक वैसे ही जैसे हमें आता था। पलक झपकते ही टाइम निकलना किसे कहते हैं, ये अब जान गए थे हम।

शाम होने को आई थी और मैं हॉस्टल के छोर पर पहुँच चुकी थी। हॉस्टल पहुँची, तो देखा कि गीतू टल्ली है वो भी अकेले और वहाँ बाकी की चंडाल चौकड़ी जमी हुई है। मैं भागकर गीतू के पास पहुँची।

"इसे क्या हो गया?" मैंने हैरान होकर पूछा।

बाकी सब हँस रहे थे उसे देखकर और नंदा तो अपने कुछ दोस्तों को भी बुला लाई थी वहाँ।

"ऊऊऊओ पाशु, माह डार्लिंग, मेरी जान, कहाँ थीं तुम अब तक, हाँ?" गीतू बुरी तरह लड़खड़ा रही थी।

"किसने पिलाया इसे?" मैं गुस्से से गुर्राई, तो वहाँ चल रहे हँसी-ठहाके एकदम से चुप्पी में बदल गए।

"देख, ये हमें रोक रही थी न, अब देख अगर ये तुझे रोकेगी तो कह देंगे कि ये भी तो कर चुकी है। तेरे न होने पर इसको टल्ली कराना भी तो जरूरी है।" रचना बोली।

"नींबू पानी पिलाओ, आसपास पता करो कोई दे दे तो नींबू।" मैंने रचना से कहा।

सब इसी काम में लग गए और मैं गीतू के स्यापे संभालने में। मजा तो मुझे भी बहुत आ रहा था, पर इस टाइम मुझे दिखाना पड़ रहा था कि मैं गीतू को लेकर कितनी चिंतित हूँ।

"सबका ऐसा नहीं है, पर इसने पहली बार पी है तो शायद ये बताए, इसका तो हाल भी बहुत बुरा हो रहा है।" रचना ने आशंका जताई।

"गीतू, इधर आ जल्दी।" मैंने डाँटकर कहा।

"ऊन्न्न्नन्न।" वह रोने का सा अभिनय करते हुए आई।

"मम्मी की तरह डाँट क्यों रही है?" वह बोली।

"पाशना, सच में बहुत मजे आ रहे हैं, कसम से। ऐसा कर, इससे डांस करा यार।" रचना मानो आनंद के सागर में गोते लगा रही थी।

"तू भी न।" मैंने खुलकर हँसने की कोशिश की।

पर इतनी देर में कोल्वो का मिसकॉल आया तो दिमाग की बत्ती मानो बुझ गई।

दिमाग पूरा खराब हो जाने की वजह से मैंने गीतू को वो नींबू पानी पिला दिया, जो नंदा उसके लिए अरेंज करके लाई थी। बाहर आकर मैंने फोन लगाया ये सोचकर कि काश आज इसका आखिरी कॉल हो बस, भगवान! और इत्तेफाक कि आज तो फोन उठ भी एक ही बार में गया, मानो हाथ ही में लिए बैठा हो।

"हाय कोल्वो, तुम्हारे ही मिसकॉल का ही इंतजार कर रही थी मैं।" मैंने कहा तो कोल्वो काफी झेंप गया।

"वो आज बैलेंस नहीं था, इसलिए मैं मिसकॉल कर गया पाशु जी।" वह बोला।

"पाशना।" मैंने कहा।

"जी, मतलब वही।" वह बोला।

"पाशना नाम है मेरा।" मैंने सख्ती से कहा।

"जी, जानता हूँ।" वह हिचकते हुए बोला।

"यही कहिए फिर, एक्चुअली आपसे यही ज्यादा अच्छा लगता है, इसलिए कहा मैंने।" मैंने बात बदली।

"अच्छा, तब ठीक है।" वह कुछ हँसा तब।

"नहीं, कोई बात नहीं। अच्छा सुनो, इस हफ्ते फ्री हो? यूनिवर्सिटी आ रही मैं मार्कशीट लेने।" मैंने कहा।

"आज मंडे है मैडम, आप शनिवार आ जाओ। मैं पूरा दिन फ्री हूँ उस दिन। चल लेंगे अंदर यूनिवर्सिटी, बस रिसीव ही करनी है वैसे तो।" वह चहककर बोला।

"ठीक है फिर।" मैंने कहा।

"एक बार फिर से स्वागत है आपका।" वह बोला।

कमरे में वापस आने पर मैंने देखा कि गीतू का नशा काफी हद तक उतर गया था और नंदा उसे रचना के बारे में मिलाजुला कर बता रही थी कि कैसे रचना ने उसको धोखे से पिलाकर उसके मजे लिए हैं।

'ये बेपेंदी की लोटी अब गीतू की तरफ लुढ़क गई।' मैंने सोचा।

नंदा के दिल में "जो बातें कुछ अनकही-सी कुछ अनसुनी-सी होने लगीं" हो रहा था। उसके लिए उसने कंप्यूटर सेंटर वाले को अपने दिल में किराए का एक कमरा दे ही दिया था, पर मेरी और कोल्वो की कहानी... वेट, वेट... उसको कहानी नहीं कह सकती मैं, क्योंकि मैं समझ ही नहीं पाई कभी कि वो था क्या। उसकी हालत में तो जो कह दो, रामा ही रामा है बस। मानो किसी गोलगप्पे के खट्टे-मीठे प्रेमी को कड़वे करेले के फ्लेवर का गोलगप्पा खाने को जबरदस्ती दिया जाए। या फिर उसको च्यूज करना हो कि वो नीम खाना पसंद करेगा या त्रिफला चूर्ण को चूसना। ठीक वैसे ही कोल्वो मुझे न निगलते बनता था न उगलते।

इस सुबह नीतिका ने कॉल करके घर पर आने का इनविटेशन दिया, तो मानो दिन बन गया मेरा।

"मैं जरूर आऊँगी नीतिका।" मैंने खुश होकर कहा।

"रचना ट्यूशन किस टाइम है कल, सर का कोई मैसेज आया क्या?" मैंने फोन को होल्ड

पर करके कमरे में जाकर रचना से पूछा।

"मॉर्निंग 7 am।" रचना बोली।

"चल, मैं रखती हूँ। मुझे आधा घंटे में ट्यूशन जाना है, वहीं से तेरे घर आ जाऊँगी मैं।" मैंने कहकर फोन रखा और हम सब फटाफट जैसी हालत में थे, 'ड्राई क्लीन' करके ट्यूशन निकल गए।

ट्यूशन वैसे ही था, पर सर आज कुछ गुस्से में थे, पता नहीं क्यों। बिना किसी तरह की फालतू गॉसिप के हम पढ़कर वापस हो लिए थे। वहाँ से मैं नीतिका के घर की तरफ निकल गई। सुबह के 9:30 हुए थे और नीतिका के साथ मैं काफी अच्छा महसूस कर रही थी। प्रीति से बात हुई दोपहर दो बजे, जब उसकी बात सुनकर जैसे मुझे सब अविश्वसनीय-सा लगा। आरुष सर के विश्वास पर विश्वास करके आखिरकार आज वो वक्त आ गया था, जब हमारी आँखों के सामने हमारे 2nd सेमेस्टर का क्लियर रिजल्ट था, वो भी अच्छी परसेंटेज के साथ। मैथ्स में A1 मिला था और एक मीठी-सी मुस्कान व आँखों में पानी के साथ ये खबर मैंने फोन पर ही हॉस्टल पहुँचा दी थी। गुजरता वक्त खुशी से दिल को बेचैन कर रहा था।

आशाओं की फैक्ट्री

न जाने कितनी ही मन्नतें मानीं, न जाने कितनी ही रातें मैंने आँखों में काट दी थीं। ये मानो मेरी सुबह की वो पहली दुआ थी, जिसे हर उगते आफताब से माँगा था मैंने। ये वो पल था, जिसने पिछले न जाने कितने ही पलों के दर्द को समेटकर एक दामन से छू-सा कर दिया था। ये एहसास मैं अगले कई हफ्तों तक नहीं भूलने वाली थी। इसके बाद मेरी भावनाएँ जैसे बिलकुल मेरे काबू में नहीं रह गई थीं और मैंने जाकर आरुष सर के पैर सबके सामने छू लिए। इसकी वजह से सर को इतनी शर्म आई कि वो मुँह पर हाथ रख लेने को मजबूर हो गए थे। इसके बाद मैं जोर-जोर से रोने लगी थी और मेरे इन आँसुओं के पीछे मेरे क्लियर होने की खुशी कम और वो सारे दर्द ज्यादा थे, जो मैं कभी किसी से कह नहीं पाई थी।

मुझे बार-बार याद आता था वो फर्स्ट सेमेस्टर से लेकर अब तक का सफर, जो अब भी चल रहा था। वो मंजर, जब यूनिवर्सिटी में मार्कशीट्स का बड़ा-सा ढेर मैंने रद्दी की तरह पड़ा देखा था। वो कोल्वो का नाइट स्टे का ऑफर। वो बैंक की किताबें। वो क्लास में टीचर्स और क्लियर स्टूडेंट्स की हँसी का पात्र बनते हमारे चेहरे। सबकुछ। हमने हमेशा सबकुछ मजाक में लेकर टाल दिया था, पर हैं तो इंसान ही, लगती तो है न।

हर वो सेकंड जब दिखाना होता था कि कोई फर्क नहीं पड़ता, पर कब फर्क नहीं पड़ता और किसे नहीं पड़ता! फर्क सबको पड़ता है और जरूर पड़ता है। ऐसा हो ही नहीं सकता कि किसी को किसी बात से फर्क न पड़े। हर वो इंसान जो दुनिया में है, उसे हर छोटे-छोटे बदलाव से फर्क जरूर पड़ता है, यही सच है। क्योंकि,

"आई डोंट केयर" बस मन की तसल्ली के लिए बना एक प्रकार का मिथ्या शब्द विशेष है, जिससे देखा जाए तो किसी को ठीक-ठाक से भी कम मात्रा में तसल्ली हो पाती है, अमूनन तो होती ही नहीं।

मुझे भी फर्क हमेशा पड़ता था और अब भी पड़ता है। इसके लिए मैंने रचना और शिखा को भी दिल से थैंक्स किया, क्योंकि वही दोनों हमें यहाँ लेकर आए और हमारी लाइफ में आए इस सुकून का कारण बने थे।

"आज पाशु के इमोशन बह-बह कर बाहर आए इस कद्र किसी बड़ी बाढ़ की तरह, जिसमें हमारा कोचिंग सेंटर भी बहा जा रहा था।" ये प्रीति थी, जो हँस-हँस कर ट्यूशन के बाद पूरी तरह मेरी धूल उतार रही थी।

'वैसे बात हँसने की है भी। कम से कम सबके सामने तो मुझे ऐसे रोना नहीं चाहिए था, खुद पर काबू रखना था न।' सोचकर मैं चुप ही रही।

इस सब में मजे तो पूजा को भी बहुत आ रहे थे, पर मेरे घूरने के बाद उसने ज्यादा कुछ कहा

नहीं।

"अरे, अपना गोलगप्पा सेंटी बहुत जल्दी हो जाता है, कोई बात नहीं।" प्रीति बोली।

"हैन्ननन्न, गोलगप्पा?" शिखा की आँखें चमकीं और मेरी आँखें फटी की फटी रह गईं, क्योंकि ये प्रीति ने सबके सामने बोल दिया था।

"गोलगप्पा, गोलगप्पा, खट्टा-मीठा गोलगप्पा।" रचना जोर-जोर से चिल्लाने लगी।

"चुप, चुप।" मैं हाथ ही जोड़ती रही बस, पर कोई असर हो तब ना।

"ये क्या कर दिया तूने प्रीतो।" मैं माथे पर हाथ रखकर पीछे टिक गई।

"ये खट्टा-मीठा नहीं, ये तीखी मिर्च वाला गोलगप्पा है।" गीतू बोली हल्ला करके। यह सब अब मेरे झेलने की सीमा से बाहर हो रहा था। प्रीतो तो चली गई, पर आफत कर गई मेरी।

"दारू पिएँ आज?" मैंने सोच-समझ कर बात पलटने की कोशिश की।

वाकई इस आइडिया ने काम भी किया। सबका ध्यान गोलगप्पे वाली बात से हट गया, सिवाय रचना के।

"क्यों अभी तुझे और रोना है, ट्यूशन में कम रोई क्या?" रचना बोली।

"तेरे इमोशन उमड़-उमड़ कर हम पर बरसेंगे और हम भीग जाएँगे, फिर हमें बुखार भी तो हो सकता है।" गीतू बोली।

"चल रे, ज्ञानदायिनी माँ, चुप कर जा। मैं सेलिब्रेशन की बात कर रही हूँ आज के लिए, मौका भी है और दस्तूर भी।" मैंने कहा।

पर ये तो रचना दी ग्रेट थी। असल में जितनी इसकी सुलगती थी न, उतनी वहाँ किसी की भी नहीं, क्योंकि अब उसने अपना निशाना गीतू को बना लिया था।

"ज्ञानदायिनी माँ, ईईईहहहहा।" रचना ने रोड पर ही मुँह फाड़ना शुरू कर दिया।

"ठीक बोली तू, ये सच में ज्ञानदायिनी माँ ही तो है।" रचना और शिखा ने सड़क पर ही हाथ जोड़ लिए। "लो पहुँच गए ठेके।" रचना उछलकर बोली।

"हटा ड्रामा क्वीन, हम तो जानते ही थे कि तेरे नाटक रहेंगे ही।" रचना बोली।

मैंने मुँह पर दुपट्टा बाँधा और रचना के साथ चली गई आगे।

"दो मैंजिक मोमेंट निकाल दो भैया।" रचना ने कहा।

वाइट कलर की दो लम्बी पतली-सी ट्रांस्पैरेंट काँच की ब्लू ढक्कन वाली बोतलें थीं वो, जिन पर ब्लू कलर की छाप से लिखा था- 'मैंजिक मोमेंट'। बोतल गहरी थी, जिसकी आधी गहराई मोटे काँच से और बाकी की आधी किसी पानी जैसे दिखने वाले पदार्थ से भरी थी। बोतलें लेकर फटाफट बैग में रखीं और हॉस्टल की तरफ ऐसे भागे हम कि मुड़ें नहीं, वरना कोई रोक लेगा और बेग चेक कर लेगा।

हॉस्टल पहुँच गए थे हम और आज का रंग-बिरंगा प्लान तैयार था वोदका और चखने के साथ।

शाम होते ही दोस्तों की मंडली टाइम से भी पहले कुरकुरे और बाकी खाना-पीना लेकर शिखा के कमरे में जमी थी और हमने हल्के म्यूजिक का भी इंतजाम कर लिया था। वैसे, हम टाइम नौ बजे का रखना चाहते थे पर मजबूरन हमें सात बजे का करना पड़ा, ताकि फोन स्विच ऑफ के टाइम से पहले हम थोड़ी एक्स्ट्रा मस्ती कर पाएँ।

"आज तो पीकर सबके राज खुलने हैं, मजा आएगा।" गीतू बोली।

महफिल जमी-जमी सी ही थी। तब समय हुआ था शाम के 6 बजकर 50 मिनट। आसमान का खुला आशियाँ आज जाल के पीछे से खूबसूरती के मामले में नीलकमल हो रहा था। वह रात को खिलने वाले किसी खुशबूदार मनमोहक फूल जैसा हो रहा था। उसमें आज के रिकॉर्ड के हिसाब से यहीं कोई 45-50 तारे दिखाई दे रहे थे, कुछ अभी निकलने की फिराक में थे। चाँद के बारे में मुँह नहीं खोलूँगी। उससे नाराजगी चल रही थी मेरी, क्योंकि उसकी कहानियों में मुझे रखने वाला मेरी जिंदगी में अब तक कोई नहीं आया था। परंतु मुझे उम्मीद पूरी थी कि आज टल्ली हो जाने के बाद आसमान की खूबसूरती पहले से भी ज्यादा हो जाने वाली है। उम्र ने तलाशी ली तो जेबों से कुछ ऐसे लम्हे बरामद हुए, जो कहीं न कहीं पड़े थे फिर दोहराए जाने के इंतजार में। कभी जो सफर अधूरे छोड़ आई थी मैं स्कूल में, पार्टी करने की ख्वाहिश लिए, एक ऐसी पार्टी जिसे मैं ऑर्गनाइज करूँ, जिसमें सब आएँ, चिल्लाएँ, ऊधम काटें, जिसे मन करे गाली दें, जिसे मन करे दिल की बात बोलें, जैसे मन करे वैसे बैठें, कूदें, चीखें, शोर मचाएँ, कोई फिक्र न हो, कोई हेजीटेशन न हो और मस्ती हो बस... उसे आज इस टाइम पूरा करने का वक्त आ गया था।

"सब अपने-अपने माँ-बाप, भाइयों, बहनों और रिश्तेदारों को भुगता लेना बे।" मैंने कहा।

सबसे बात हो चुकी थी, पर अगर किसी का कॉल आ सकता था तो वो दुष्ट आत्मा थी कोल्वो, क्योंकि भलेमानस तो अब उसको मैं कहीं से कहीं तक समझती नहीं थी। बैलेंस मैंने ही उसके फोन में कराया था, तो कॉल आ भी सकता था, वरना शायद न भी आता।

"स्साला कमीना, मेरे ही बैलेंस से मुझे ही कॉल करता है। कमाती भी नहीं मैं, फिर भी मुझसे रिचार्ज कराया, कीड़े पड़ेंगे उसमें, थोड़ी तो शर्म बाकी होनी ही चाहिए, मिसकॉल करती हूँ, बैलेंस तो मेरा ही है।" बड़बड़ाई मैं अकेले ही अकेले।

ट्रिन ट्रिन... मैंने कॉल लगाया उसको पर कोई रिस्पॉन्स नहीं आया।

"हद है।" 10 मिनट तक वेट करने के बाद बुदबुदाई मैं और वापस कमरे में चली आई।

कुछ ही पल बाद मुझे ख्याल आया कि अभी पी नहीं तब तो उसे इतना कोस रही हूँ, पीकर क्या करूँगी। मुँह बंद रखना होगा मुझे, सोचकर मैं अपने गैंग में वापस मिल गई। आज उस चारदीवारी के अंदर होने वाली हजारों मस्तियाँ उन मस्तियों पर भारी थीं, जो लड़कों की इस खुली दुनिया में उनको सड़क तक पर मिल जाती हैं।

"क्या अकेले खड़ी वहाँ बड़बड़ा रही थी पाशु की बच्ची, दाल-दाल कच्ची?" नंदा बोली।

"पहले ही चढ़ गई हो तो मत ले, बच जाएगी यहाँ।" शिखा हँसते हुए भर्राए गले से बोली।

"कान पर दो धप्प लगा दूँगी, दुबारा कहा कि मत ले तो।" मैंने कहा।

"रचना तेरी ज्ञानदायिनी माँ को ढूँढ़ती फिर रही है सारे कॉरीडोर में, है कहाँ वो?" शिखा ने पूछा।

"मैं देखती हूँ।" मैंने कहा और बाहर उसको ढूँढ़ने निकल गई।

गीतू और मैं एक-दूसरे को ढूँढ़ने के लिए कभी फोन का इस्तेमाल नहीं करते थे। हमारी यही आदत थी। सुनने में ये थोड़ा अजीब है, पर मैं इसे अजीब नहीं अलग मानती हूँ कि हम एक-दूसरे को कभी फोन पर सुनना पसंद नहीं करते थे। मेरा मानना रहा कि हमारे दिल के तार भी जुड़े हैं, तो फोन की क्या जरूरत। आखिर मेरा काफी ख्याल रखा है उसने भी मेरी परेशानियों में। ये नौवाँ मिनट था, जब वो मुझे मिली थी मेस के बाहर। बर्तन माँजने की टंकियों के पास मजे से खड़ी फोन पर ठहाके लगा रही थी।

"क्यों माता, यही जगह मिली तुझे बतियाने को?" मैंने अचानक पहुँची, तो जैसे हिल गई गीतू।

"डरा दिया तूने तो पाशु।" गीतू ने हड़बड़ाकर फोन काट दिया। यह बात मुझे अलग लगी।

"पहले बता, तू किससे बात कर रही थी?" मैंने रोका उसे।

"एक दोस्त था, बस।" वह टालने लगी।

"कौन-सा दोस्त?" मैंने फिर पूछा।

"पाशु, है एक यार, तू सबको नहीं जानती है।" वह बोली।

"मैं किसे नहीं जानती गीतू?" मैंने उसको घूरकर कहा, तो चुप हो गई वो।

"हमारी स्कूलिंग साथ हुई है, अगर तू भूल गई हो तो मैं तुझे बता दूँ और यहाँ हम एक गर्ल्स कॉलेज में पढ़ते हैं, ट्यूशन साथ जाते हैं, तब ऐसा कौन है जिसे मैं नहीं जानती?" मैंने कहा।

"देख, अब तू ऐसे मुझे ब्लैकमेल करेगी क्या?" गीतू बोली, जब हम धीरे-धीरे चलते हुए रचना के कमरे के पास आ ही चुके थे।

"स्कूलमेट ही है।" वह फुसफुसाई।

"कौन?" मैंने उससे भी धीरे बोला।

कुछ सोचने के बाद मैं उसकी मुस्कान देखकर चिल्लाई, "लुग्गा।"

फिर हम दोनों हाँ में सिर हिलाकर जोर से एक साथ कूदे और जैसे खुशियों ने हम दोनों की आँखों में एक ही टाइम पर दस्तक दे दी। इसके बाद हमारे हाथ आसमान के नीले रंग को समेटकर नील काले मिक्सचर को और रंग में घोलने लगे।

"अबे चलो अंदर, जल्दी सवरो, कहाँ मर रहे थे, महूर्त 7 बजे का था, 15 मिनट लेट आ रहे कमीने।" शिखा ने हमारी आवाज सुनकर जल्दी से गेट खोलकर हमें अंदर किया।

अंदर के जश्न ने मन मोह ही लिया, लेकिन अगर पता होता कि जश्न इतना यादगार होगा तो सीसीटीवी भी चुरा लाते कहीं से। कश्ती जैसी थी हमारी प्रेजेंट जिंदगी भी, जो न जाने कहाँ-कहाँ ठोकर खाकर आज इस दिन तक पहुँची थी, इसलिए हमने जश्न को थीम दिया- कागज की कश्ती। सबके साथ एक-एक बोट थी, जो हमने वेस्ट पेपर से तभी बनाई और उसी में अपने चखने का आनंद लिया। तब ऐसा तो पता था कि ये गुजरती शाम समेटकर बिना किसी को बताए ऐसे रख लूँ कि इस पर सिर्फ मेरा हक रह जाए, पर ये नहीं पता था कि वो शाम आज इन पन्नों पर भी अपनी जगह इतनी खूबसूरत आँखों की नमी के साथ बनाएगी।

उस वक्त मैं नहीं जानती थी कि ये रचना जो पागलों की तरह नाच रही थी, नंदा जो हँसते हुए अजीब-अजीब आवाजें निकाल रही थी, गीतू जो डी.जे. बनकर हमारे गाने प्ले कर रही थी और शिखा जो हमारे और पार्टी में आए बाकी सब महमानों के लिए कोल्डड्रिंक में सोडा मिलाकर उसको बियर बताकर उल्लू बना सबको पिला रही थी, इन सबकी जगह मेरे हर गुजरते पल में इतनी खास हो जाएगी कि ताउम्र मैं इन्हें अपना पहला प्यार मानकर मिस करूँगी। ये लोग भी नहीं जानते थे कि हमारी दोस्ती के रंग आज उस पक्के रंग जैसे हो जाएँगे, जो दिल की दीवार पर पड़कर कभी नहीं हट पाते। हमारी दोस्ती उस तरफ बढ़ रही थी, जैसे चखने के साथ दारू का रंग।

हम सबने आज बहुत सारे राज खोले थे। बहुत सारी पुरानी शिकायतें साफ करके फिर गले लगे। प्यार की वो बहुत सारी बातें शेयर की थीं, जिनके कभी अधूरे छूट जाने का आज तक

अफसोस था हमें। बहुत सारी ऐसी बातें, जो हमेशा के लिए मन के कोने में संभाली रह गई थीं कभी... वो सब आज शेयर करके लगा जैसे बस रो दूँ। इतनी हँसी न संभाल पाने के कारण सोचा कि क्या रो दूँ, पर ख्याल आया कि रो देना क्या इस खुशी की तौहीन न होगा। बहुत सारे पन्ने नए खुले थे और कितनों पर आज मिलकर मरहम लगाया गया था। आज मैंने "कितनी यादें तेरी पर तू मेरे साथ ही नहीं" गाकर सुनाया था उस स्टेज पर, जो पुराना स्टूल लगाकर हमने बनाया था। किसी भी टाइम टूट सकता था यह स्टेज। महफिल में पानी की भरी बोतल को हाथ में लेकर दारू की फीलिंग लेते हुए हमने 10 बजे तक अपनी जिंदगी जी थी, 9 तक म्यूजिक प्लेयर से और उसके बाद खुद गाने गाकर।

अचानक नंदा को याद आया कि म्यूजिक बंद है, जिसके बाद वो अचानक ही भड़क गई।

"ये क्या, डी.जे. सांग क्यों बंद है?" नंदा चिल्लाई।

"हुर्रे, बज गए 12, ऑन करते हैं फोन।" मैं टाइम देखकर सबसे पहले भागी वहाँ से।

ऑन करते ही कोल्वो का फोन आया, तो मेरी आत्मा जल उठी।

"आज चल जाने दे पता इस मादरचोद को।" मैंने फोन देखकर गुर्राते हुए कहा।

"डी.जे.।" मैंने बेड पर चढ़कर लड़खड़ाते हुए कहा।

"जी सरकार।" नशे में चूर गीतू हाथ जोड़ते हुए बोली।

"गाना लगाओ।" नंदा बोली।

"जैसे कहो सरकार।" वह नंदा की तरफ मुड़ते हुए बोली।

"आज इसकी माँ-बहन एक करूँगी।" मैं पूरी धुत्त थी।

"ठीक, ठीक," कहकर सब मूकदर्शक-से बैठ गए।

"हेल्लो।" मैंने फोन उठाया।

"हाय पाशना जी, कैसी हो स्वीटहार्ट?" वह अपने फ्लो में बोला।

"तूने न साले, मुझे बेवकूफ बना-बना कर, बना-बना कर मुझे ऐसी जगह लाकर खड़ा कर दिया है, जहाँ से मेरी साँस भी आती है न, तो उसमें तेरे लिए गाली होती है।" मैंने गुस्सेभरा चेहरा बनाते हुए कहा।

"मैडम, आप थोड़ा तमीज से बात करेंगी।" वह घबरा-सा गया था।

"आप थोड़ा सब्र से बात कीजिए पहले, आपने पहले तो कभी ऐसे बात नहीं की है।" वह हैरान-सा बोला।

"सब्र गया तेल लेने, सारा सब्र आज ही तो खत्म हुआ है। बड़ा बोलता था कि एक हफ्ते में करा दूँ आपका काम तो मैं... और कराया अब तक नहीं, हरामी मेरी सुन बात।" मैंने कहा।

"पहले तो आप ये गाली मत दीजिए।" उसने बीच में टोका, पर मैंने बोलना नहीं बंद किया।

"मेरा 2nd सेमेस्टर इतना अच्छा हो गया क्लियर, पर इस जश्न में भी कमी लग रही, जस्ट बिकॉज ऑफ यू स्साले।" मैंने बात पूरी की।

जैसे ही मैं फोन से हटी, वहाँ तालियाँ बजने लगीं।

"वाट अ परफॉरमेंस पाशु।" शिखा लड़खडाते हुए उठी और मुझे गले लगा लिया।

"अच्छा सबक सिखाया।" कुछ और आवाजें आईं।

"थैंक यू, थैंक यू।" झुककर सबका नाटकीय ढंग से अभिवादन किया मैंने।

सब तालियाँ बजाकर खुश हो रहे थे और मेरी आँखों के आगे अब सब घूमने लगा था।

“नींद आ रही है रचना, थक गई हूँ।” मैंने लड़खड़ाते हुए कहा।

कुछ ज्यादा नहीं हुआ होगा उसके बाद जैसा कि याद है, पर उसने मेरी तरफ एक चादर उड़ेल दी। इसके बाद नींद सीधे सुबह 8 बजे खुली।

“गुड मॉर्निंग गोलगप्पे जी।” ये शिखा थी।

“रात मैं कब सो गई?” मैंने पूछा।

बाकी सब अभी तक उसी कमरे में एक के साइड में एक, गुड़मुड़-से पड़े थे और सोए हुए थे। मेरा सिर भी बहुत दर्द कर रहा था। मैंने फोन की तरफ देखा, तो उसकी बैटरी बोल चुकी थी और सेवाओं की पूर्ति के लिए चार्जिंग माँग रही थी।

“तू और गीतू यहीं सो गए कल।” शिखा ने बताया।

“पर क्या मस्त गालियाँ दीं तूने कल रात फोन पर उस लड़के को बेटे राम।” शिखा ने मजे से कहा तो मुझे याद आया कोल्वो।

“श्त्तत्त्त, कोल्वो,” मेरी आँखें फैलकर बड़ी हो गईं, “ये क्या कर दिया मैंने।” मैं रोनी-सी आवाज निकालकर बोली।

“ठीक है अब नाश्ते की टेबल पर मिलो नीचे, वहीं बात करते हैं।” रचना बोली जो उठ गई थी, जिसके बाद हम दोनों अपने 22 नंबर में चले आए।

सिरदर्द यूँ तो सबको हो रहा था, पर मैंने जो अपने ही हाथों किया था, उसके बाद तो ब्लड प्रेशर तक बढ़ जाना लाजिमी था। नहा-धोकर हम नाश्ते के लिए पहुँचे, तो वहाँ भंडारा लगभग खत्म ही होने पर था।

“एकदम ठंडा है पराठा, यार।” गीतू बोली।

“मिल गया ये कम बात है क्या।” नंदा ने कहा।

“10 बजे आते मैं न जगाती तो, फिर कुछ भी न मिलता।” मैंने अपना एहसान मानने के लिए कहा।

जैसे एक नया सवेरा आने वाला हो उस तरह मानो बदलाव की कोई आंधी-सी चल रही थी मन में, जो सबकुछ उड़ाकर ले जा रही थी यूनिवर्सिटी की तरफ।

“...फिर आज ट्यूशन जाकर क्या करेंगे। वैसे भी कल ही तो रिजल्ट आया है, सर कुछ नहीं कहेंगे एक दो दिन न भी गए तो।” मैंने कहा।

“हाँ, वैसे ही सरदर्द है।” गीतू बोली।

“लुग्गे का फोन कब आएगा अब?” मैंने आँख मारी, तो शर्मा गई गीतू।

“हहहाहा।” हम सब हँसने लगे।

दरअसल लुग्गे का असली नाम आकाश था, जो हमारा स्कूलमेट हुआ करता था और गीतू के नैनों में घर कर गया था। उसका चक्कर हम थोड़ा-थोड़ा समझते थे, पर अब पूरा कन्फर्म हुआ था कि गीतू की आदतों में शुमार है लुग्गा, जिसे वो भुला नहीं पाई कभी। गीतू मुझे कभी कोई खासा पसंद नहीं रही स्कूल में, मैं भी उसे ज्यादा पसंद नहीं थी, पर जब से यहाँ आकर हम एक-दूसरे के कॉन्टेक्ट में आए, तो मुझे पता चला कि वो इतनी भी सीरियस नहीं है जितनी मैं उसे समझती थी और उसको भी ये पता लगा कि मैं भी किसी को जानबूझकर परेशान कभी नहीं करती हूँ। वो अब ये भी जानती थी, जो मैं कभी नहीं चाहती थी कि वो जाने, कि मैं जरूरत से ज्यादा इमोशनल थी जो मुझे कभी सूट नहीं करता। अगर मैं इसे अपने चेहरे और आदतों के

आवरण के पीछे न ढँक लूँ, तो शायद मेरे इमोशंस मुझे ही फाड़कर बाहर आ जाएँ।

सोचते हुए व्यक्ति के सामने जैसे रास्तों की लाइन ही लग जाती है। तभी तो कहते हैं कि प्रॉब्लम को लेकर एक लिमिट तक ही सोचो, वरना कन्फ्यूजन की दुनिया इतना टाइट पकड़ लेती है कि ये करें या वो, समझ नहीं आता। इसके बाद जो सामने आए, बस हम कर जाते हैं। इसी मंजर के चलते मेरे हाथ फोन के कातिलाना बटन पर पहुँच गए थे और मैंने फोन लगा दिया, जो पहली ही बेल में रिसीव हो गया।

"हेल्लो।" उधर से आवाज आई।

"सॉरी कोल्वो।" मैंने हकलाते हुए कहा।

"प्लीज मुझे माफ कर दो, मैंने तुम्हें गालियाँ दीं, तुम्हारे साथ काफी मिसबिहेव किया। मुझे ऐसा बिलकुल भी नहीं करना चाहिए था। तुम तो मेरा ही काम कर रहे थे। आई एम एक्सट्रीमली सॉरी फॉर दैट।" मैं बिना रुके बोलती गई और कोल्वो चुपचाप सुनता गया।

"फिर भी मैडम ऐसे थोड़ी न होता है, आपको ऐसी गंदी हरकतें शोभा देती हैं क्या?" वह बोला।

"मैं तो आपको बहुत शरीफ समझता था।" उसने फिर कहा।

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। 'वाह बेटे, तुम लड़के चाहे जो कहो, जहाँ चाहे स्साले हगो, कोई बात नहीं, सब चलेगा, तुम्हारा स्टेटस सिंबल और हमारा...? हमारी शराफत पर बात?' मैंने सोचा।

"अब छोड़िए न, मुझे पता है कि मुझसे गलती हुई और आपको बुरा भी बहुत लगा होगा।" मैंने मनाने की कोशिश की उसे।

"पर आपने पी क्यों?" वह बोला।

"कल रिजल्ट आया न 2nd सेमेस्टर का, तो दोस्तों ने पिला दी, पर मैं वाकई शर्मिंदा हूँ।" मैंने कहा।

"...तो दावत दीजिए अब।" उसने कहा।

"कल आ रही हूँ यूनिवर्सिटी, तब ले लेना दावत अपनी।" मैंने कहा।

"ठीक है।" वह बोला।

"कोई बात नहीं जी, अब आपने बता दिया तो अच्छा किया, दोस्तों की कारस्तानी थी ये, वही मैं सोचूँ कि लगती तो नहीं लड़की ऐसी बिगड़ी हुई।" उसने कहा तो खून जैसे खौलकर 104° F पर पहुँच गया मेरा।

"हम्म्म।" मैंने दाँत पीसते हुए कहा।

"ऐसे दोस्त न पाला कीजिए आप मैडम।" वह बोला।

"जी जरूर, मैं याद रखूँगी ये सब।" मैंने आँखों में लाली भरते हुए कहा।

'मेरे दोस्तों को जो-जो कहा है न तूने, एक-एक करके सब बताऊँगी तुझे, बस एक बार अपनी और मेरी प्रीतो की मार्कशीट ले लूँ तुझसे।' मैंने सोचा।

"ठीक, फिर कल सुबह मिलते हैं," कहकर वो हँसा।

"ठीक है," कहकर मैंने भी फोन रख दिया।

वो सब एक फिल्म की तरह एक के बाद एक, आँखों के सामने आता गया। वो सब जब यूनिवर्सिटी जाने से पहले मैंने रो-रो कर पापा को कॉल किया था और माफी के साथ अपनी सारी

गलतियों का कच्चा-चिट्ठा उनके आगे रखा था, जिसके बाद डाँट की जगह हमेशा वाला उनका प्यार ही मुझे मिला था और हिम्मत रखने का भरोसा भी। आज बहुत याद आ रही थी पापा की। हर किसी की जिंदगी में उसके पिता उसके आदर्श होते हैं, उसके हीरो। पर मेरे लिए पापा हमेशा मेरे वो दोस्त रहे, जो कभी मेरी माँ नहीं बन पाई। मैं पापा से हर वो चीज शेयर कर पाई, जो कभी माँ से नहीं कह पाई। इसीलिए आज इन बरसती नजरों में प्यास थी तो उनकी सिर्फ एक झलक की, जो अगर मिले तो हिम्मत का पहाड़ ही खड़ा हो जाए। मेरे वो पापा जिन्होंने मेरी हर नाकामी को एक मौके की तरह लेकर हमेशा मुझे आगे जाने को कहा, क्योंकि पीछे सबकुछ तो वो संभाल लेते। आज उनको बताए बिना मैं कोल्वो से मिलने जा रही थी। मैं बताना चाहती थी कि मैं घुट रही हूँ यहाँ, इस सब में, पर शायद वो मुझे कभी ये फेस न करने देते, अगर मैं उन्हें बताती। इसलिए मैं ये आज उन्हें बताए बिना कर रही थी। मैं हर बात उनको बताना चाहती थी, क्योंकि मेरे लिए मेरी माँ भी एक तरह से वही तो रहे। माँ अपने कामों, अपनी देखभाल में ऐसी व्यस्त थीं या शायद वो कभी इजहार नहीं कर पाई अपनी केयर का, पता नहीं, पर मैं हमेशा पापा के करीब होती गई, क्योंकि मेरी हर गलत बात को उन्होंने सही ही साबित किया और उसको सही ही करके दिखाया, चाहे उसके लिए उन्हें कितनी ही परेशानी क्यों न झेलनी पड़ीं।

उनके हमेशा मेरी शक्ति बनने का ही नतीजा रहा था कि मैं जरूरत से ज्यादा हिम्मत भरे कामों को बिना किसी से कहे कर जाने लगी और किसी को खबर तक न होने देती। मुझ पर मुझसे भी ज्यादा भरोसा दिखाकर उन्होंने हमेशा दिखा दिया था कि वो मेरे सुपरडैड हैं। मेरे डैड आज भी मेरा आत्मविश्वास बन रहे थे, मेरी आत्मा के अंदर।

'क्या पापा को फोन करूँ और बात करूँ थोड़ी-बहुत इधर-उधर की?' मैं उधेड़बुन में थी।

"नहीं, अगर मैं रो पड़ी और मैंने कह दिया कि पापा डर लग रहा है, तब?" अगले ही पल दिल ने कहा और मैंने उनको कॉल करने का विचार त्याग दिया।

मेरे आँसू अंदर ही अंदर बहकर सूख चुके थे और मैं जैसे नींद के कतरों को काटकर जागी, तो देखा कि गीतू डिनर के लिए आवाज दे रही है।

डिनर एकदम शांतिपूर्ण ढंग से हुआ, जिसके बाद कुछ देर प्रीति से बात की मैंने। उससे इस वक्त बात करने का मेन मोटिव उसको ये बताना था कि कल मैं जा रही हूँ। इसके बाद मैं बेड पर लेट गई और निद्रा देवी ने अपना आशीर्वाद का हाथ मेरे सिर पर रख दिया और आँख सीधे सुबह सात बजे खुली।

"आज लेट उठी पाशु?" ये गीतू थी, जो सुबह नहा-धो कर फ्री थी अब।

"हाँ, प्रीतो के यहाँ जा रही हूँ आज।" मैंने कहा।

"अचानक? पहले उठ तो जा ठीक से।" वह बोली।

नहाकर वापस आई, तो देखा गीतू और नंदा आज फिर लड़ पड़े थे।

"जैसा बैक पेपर करके आए हो न, इस बार भी होगे फर्स्ट सेमेस्टर में तुम लोग।" नंदा गुर्रा रही थी, जिस पर गीतू भी तिलमिला उठी।

"तेरी तरह इस बार भी तो रह नहीं गए ना।" गीतू भयंकर हो गई।

"पनौती, तेरी ही नजर लगी मुझे तो।" नंदा पलटकर बोली।

"तेरी मम्मी से कहूँगी तेरी सारी कंप्यूटर सेंटर वाले की कहानी, नेस्ती कहीं की, पढ़ना न लिखना। दूसरा नंबर और ले रखा है। कॉलेज जाती नहीं, पास क्या खाक होगी तू, फिर कोसती

मुझे है।" गीतू को इतनी बुरी तरह तिलमिलाते मैंने नहीं देखा था कभी।

"हाँ-हाँ कह देना, मेरी मम्मी हैं तेरी नहीं, मेरा बिलीव करेंगी तेरा नहीं।" नंदा बोली।

मैं बिना कुछ कहे कमरे से निकल गई और नाश्ता कर आई। अब मुझे यूनिवर्सिटी निकलना था।

"मैं चलती हूँ गीतू, नंदा, बाय," कहकर बिना जवाब सुने मैं चल दी।

इरिटेट हो चुकी थी मैं इन दोनों की हमेशा की लड़ाई से। हमेशा लड़ना, कभी नहीं देखते कि सामने वाला परेशान हो रहा है। यह सोचते हुए मैंने मुँह सिकोड़ा।

काम होगा या नहीं होगा, मैं ऐसा सोचकर भी काँप जा रही थी, इसलिए काम करके पाँ बजे से पहले-पहले लौट ही आना है, कैसे भी। ऑटो में बैठकर देखा, हल्की हल्की हवा चल रही थी पर मौसम गर्म था। अब काफी हद तक गर्मी के आ जाने का संकेत मिल चुका था, जिसका सबूत सहित गवाह ये आफताब था। आज जहाँ हर चीज खुद से ज्यादा आसान लग रही थी। बस स्टैंड के 12 नंबर पर ही छोड़ा ऑटो वाले ने भी, जहाँ से यूनिवर्सिटी की बस सामने खड़ी नजर आ रही थी। ऑटो वाले को खुले शब्दों में धन्यवाद करते हुए मैं उतरकर बस में चढ़ गई। बस ने भी बिना किसी शोर-शराबे के मुझे मेरी मंजिल तक पहुँचा देने की आज ठान ली थी। सबकुछ कितना आसान और ठीक वैसा ही तो चल रहा था, जैसा मैंने सोचा था। बस, अलग थी तो आज वो एक छोटी-सी कन्हैया जी की पीतल की मूर्ति, जो मेरे साथ मेरी हिम्मत थी। मैं अकेले वहाँ जाने में डरी हुई थी और मूर्ति के होने से रब के हमेशा साथ होने का एहसास हो रहा था। लग रहा था मानो मैंने डर पर हावी होने के लिए इसी को चुना था और इसकी कुदरत ने मुझे।

रास्तों को मानो पंख लग गए। उस पहली जर्नी की तरह ही कंडक्टर के टिकट काटने के बाद मैं आँखें बंद करके सीट पर टिक गई थी। बस की रफ्तार के चलते रास्ते के मोड़ गुम होते चले जा रहे थे। बदले थे तो मेरे हालात, कोल्वो के साथ ये सफर का पंचनामा, बस का कंडक्टर, बस खुद, ऑटो, सभी कुछ जिसमें मेरे इमोशंस भी थे।

"वेलकम वंस अगेन पाशना।" बस से उतरते ही कोल्वो वहाँ तैयार मिला।

"आई एम सॉरी, आपको यहाँ आना पड़ा लेने। मैं आ जाती यूनिवर्सिटी में अंदर ही, अभी तो सिर्फ 10:30 ही बजे हैं।" मैंने कहा।

"आप पैदल आतीं तो 11 ही बज जाते, हम बातें कब करते फिर?" वह बोला।

"चलिए अब।" वह बोला और बाइक आगे कर दी।

"यूनिवर्सिटी वाली कैंटीन कितने बजे ओपन होती है?" मैंने पूछा।

"11 बजे ही हो जाती है वो भी मैडम, पर आप आज इतना सी.आई.डी. क्यों बन रही हैं?" वह अपनी ही बात पर खिलखिलाते हुए बोला।

"आपको ट्रीट देनी है, इसलिए।" मैंने कहा।

"ट्रीट, किस बात की?" उसने शायद भूलने का नाटक किया।

"कल बात हुई थी न, रिजल्ट की ट्रीट।" मैंने याद दिलाया।

"ओह हाँ, पर...।" उसने कहा।

"मना मत कीजिए प्लीज अब, मैं मानने वाली नहीं हूँ।" मैंने बोला और हम कैंटीन जाकर रुक गए। टाइम के नाम पर 11 ही बज गए थे।

"क्या लेंगे?" मैंने पूछा और हमने कैंटीन की हर एक चीज एक-एक ऑर्डर कर दी।

जमकर खाते हुए मैंने कोल्वो के चेहरे को देखा।

'खा ले सूअर, खा ले, टाइम आने दे मेरा, मेरे ही पैसों पर फोकट की ऐश कर रहा ना।' मेरे मन ने कहा।

"क्या सोचने लग गई आप?" अचानक कोल्वो ने मुझे देख लिया।

"खाते हुए अच्छे लगते हो आप।" मैंने कहा।

'काश, चाँटे भी खिला पाती तुझे कस-कस के।' मैंने सोचकर ही मन मसोस लिया अपना।

"हहहाहा, क्या बात है, आज कोई नीयत बिगाड़ रहा है मेरी।" वह घूरते हुए बोला।

मैं खाने में लग गई।

"पैदल चलें यहाँ से एग्जाम सेल?" मैंने इच्छा जताई।

"दूर पड़ेगा मैडम।" उसने कहा।

"फिर आपके साथ बाद के कुछ वक्त बैठकर बातें करनी हैं, आपको अपना फ्लैट दिखाना है। अभी काम निबटा लेते हैं, फिर चल लेंगे ना।" वह बोला।

'मैं तेरे साथ टाइम बिताना चाहती कब हूँ।' मैंने मन ही मन कहा जोर से, पर आवाज सिर्फ मुझे आई।

"यू नो कोल्वो, पैदल चलना कितना रोमांटिक होता है।" मैंने कहा।

"...पर इतनी गर्मी में और वो भी यूनिवर्सिटी में?" वह बोला।

"तुम चल रहे हो या नहीं?" मैंने सख्ती से कहा।

"ठीक है," कहकर वह चल दिया।

वैसे कहा तो मैंने सच ही था, लेकिन यहाँ पर मेरे पैदल चलने का मतलब उसकी बाइक पर न बैठने और टाइम के यूटिलाइजेशन से है, न कि किसी बुलशिट रोमांटिक वाक से। मैंने दाँत पीसे।

हम चल दिए। चीजें वही थीं, सब लगभग। रिपीट-रिपीट सी। सेकंड और मिनट बीतते जा रहे थे और खास न सही, पर यादगार बनते जा रहे थे। हमारी जिंदगी में कई बार यादें सिर्फ मीठे नहीं, बल्कि कुछ कभी न भुलाए जाने वाले ऐसे किस्से बनाती हैं, जिन्हें हम न तो भूलना चाहते और न याद कर पाते। हर वो पल जो आज, इस अभी में भी गुजर रहा था, वो ऐसी ही यादें तो बना रहा था, जिन्हें आगे चलकर वक्त को तय करना है कि वो कहाँ रहेंगी मन में। रास्ते में उड़ रही धूल तक का एक-एक कण इन्हीं यादों के बनने में अपना योगदान दिए जा रहा था।

एग्जाम सेल आने तक लगभग वही चीजें देखीं। लड़कियों के रंग-बिरंगे सूट के हवा में लहर बनाते दुपट्टों से लेकर वही आसमान के नीलेपन में सफेद स्याही से पुते कहीं-कहीं कला के कुछ अंश तक, आसमान दूर कहीं जमीन से मिलने को बेताब था।

"खुदा ने जब तुझे बनाया होगा, ख्याल उसके दिल में हमारा ही आया होगा!"

"क्या?" मैंने हैरान होकर कहा।

"कुछ नहीं, शायरी याद आ गई।" कोल्वो बोला।

"लो आ गए हम मैडम, आज तो मरवा दिया आपने, पैदल चलवाकर।" वह हाँफते हुए बोला।

थक तो मैं भी बहुत गई थी, पर ये मेरे लिए उसकी बाइक पर जाने से कहीं ज्यादा आसान था।

एक बार फिर हम उसी फ्लोर पर गए, जिस पर उस चश्मेवाली महिला से परिचय हुआ था

पिछली बार मेरा, लेकिन समय की कमी के चलते बिना इधर-उधर हुए कोल्वो सीधा आगे गलियारे की तरफ बढ़ रहा था और उसके पीछे मैं भी।

"हेल्लो सर, ये मिस पाशना है, जिसकी मार्कशीट के मार्क्स को लेकर मैंने आपसे बात की थी।" कोल्वो ने ये कहकर मेरा एक सज्जन से परिचय करवाया, जो लंबे-से, मोटी-सी नाक वाले साँवले-से व्यक्ति थे और गुटका चबा रहे थे।

"ओह, बड़ी प्यारी बच्ची है।" सज्जन ने चश्मे में से देखते हुए कहा और फिर अपने काम में लग गए।

"सर, वो मेरे मार्क्स..." मैंने कुछ देर बाद धीरे से कहा।

"हम्म, देखते हैं, टाइम लगता है प्रॉसेस में बेटा।" वह बोले।

"आई तो थीं मार्कशीट, चेक करो जरा फाइल्स में कुलदीप।" वह बोले तो कुलदीप मुझे बाहर वेट करने को कहकर फाइल्स का ढेर ढूँढ़ने में लग गया और मैं यंत्रवत बाहर आ गई।

सामने वाले कमरे में मैंने दो स्टाफ को जोर से बात करते सुना, तो अनायास ही उस ओर चली गई मैं।

"अरे एग्जाम भी देना पड़ा उस बच्चे को, जबकि हमने तो यहाँ से रिचेकिंग में पहले ही पास किया हुआ था उसको कब का, पर देखो कॉलेज की लापरवाही कि यहाँ से मार्कशीट ही कलेक्ट करके नहीं ले जाते।" ये व्यक्ति एक क्लर्क से बात कर रहे थे, जो शायद अभी-अभी किसी स्टूडेंट से लड़कर आए थे।

"क्या हुआ सर, क्या बात हुई?" मैंने उत्सुकतावश पूछ लिया, तो सर खुलकर बताने लगे सब।

"अरे बेटा, आलसी खुद हैं ये कॉलेज वाले और ब्लेम हमेशा यूनिवर्सिटी स्टाफ पर डालकर भड़का देते हैं बच्चों को, फिर बच्चे यहाँ हमसे लड़ने आ जाते हैं।" वह बोले।

"एकदम सही कह रहे हैं सर आप। लेकिन आप कुछ करते क्यों नहीं, आपकी तो पॉवर भी होगी, कंप्लेंट करिए न आप, नोटिस मिलेगा कॉलेज को तब समझ आएगी इनको अपनी नालायकी।" मैंने जोश में कहा, तो उन सर को बड़ा अच्छा लगा।

"काफी समझदार बच्ची है ये वैसे।" क्लर्क से बोले तो मुस्करा उठी मैं।

"थैंक यू सर।" मैंने कहा।

"अरे नहीं, बेटा। क्या बताएँ, बच्चे तो कुछ कहते नहीं, अब सब कहाँ तुम्हारी तरह समझदार बच्चे होते हैं, डर जाते हैं, उनकी मनमानी के आगे बोल नहीं पाते।" वह बोले।

"सर, ये रिचेकिंग की मार्कशीट कलेक्ट कहाँ से होती हैं? नॉर्मल, विदाउट सोर्स वाली, पास और फेल दोनों की?" मैंने पूछा।

"यहीं, साथ वाले रूम में खन्ना सर हैं, वो देते हैं।" वह बोले।

मैं फटाफट उठकर वहाँ गई ये सोचकर कि देख लेती हूँ मेरा क्या रहा उसमें एक बार।

"खन्ना सर?" जाकर मैंने पूछा।

"हाँ बेटा, मैं ही हूँ, कहो।" एक सज्जन बोले।

"सर रिकार्ड्स में मुझे अपनी मार्कशीट दिखवानी है, ये मेरा रोल नंबर है।" मैंने रोल नंबर उनकी तरफ बढ़ाया।

"अभी काम काफी है बेटा, आप तीन घंटे बाद आओ, मैं देख दूँगा।" वो बोले।

"प्लीज सर, मैं बाहर से आई हूँ, जल्दी जाना है, प्लीज एक बार देख लीजिए न।" मैंने विनती की।

"अच्छा लाओ।" उन्होंने मुझसे रोल नंबर ले लिया और देखना शुरू कर दिया।

इतने में कोल्वो वहाँ आ गया।

"अरे, मैंने तुम्हें बाहर रुकने को कहा था और तुम यहाँ हो।" वह बोला।

चुप रहने का इशारा किया मैंने उसे।

"अच्छा, कुलदीप को जानती हो तुम, पहले बताया होता।" वो बोले।

बदले में मुस्करा दी मैं।

"क्या है यहाँ, चलो यहाँ से।" कुलदीप बोला।

"कुछ देर रुको अभी, सर देख रहे हैं ना।" मैंने कहा और खड़ी रही वहीं।

"यहाँ कोई चांस नहीं है पाशना।" वह बोला।

अगर 0.1% भी चांस है तो भी ये एक अच्छा प्रतिशत है मेरे लिए।" मैंने दृढ़ता से कहा।

खन्ना सर ने पूरे साढ़े आठ मिनट लिए मेरी पोथी-पत्री ढूँढ़ने में, जिस पर मेरी किस्मत का फैसला लिखा था। वही पत्री जो कोल्वो के हिसाब से 100% मेरे खिलाफ होनी थी और मेरे हिसाब से शायद उसमें कोई चमत्कार भी हो सकता था। मेरी साँसें जो अटककर बार-बार मेरे गले को रुँधा रही थीं, उनकी एक-एक आहट अपनी उँगलियों पर गिनी थी मैंने उस बीत रहे वक्त में। और आखिर में जो मेरे सामने था, वह मेरे लिए किसी बड़े चमत्कार से कम नहीं था। मैं जैसे अपनी आँखों पर यकीन नहीं कर पा रही थी इस हकीकत के लिए के मैं नॉर्मल रिचेकिगं में भी पास हो गई थी। हालाँकि दो सच और भी थे और वो ये कि मार्क्स कम थे, सिर्फ पासिंग ही थे और दूसरा ये कि मैं दुबारा एग्जाम देने का लुत्फ भी उठा चुकी थी पूरी रात जागरण करके।

कभी-कभी वाकई वो सपना सच हो जाता है, जिसके हमने इतनी आसानी से साकार हो जाने की कल्पना तक न की हो। जब कोई अलौकिक शक्ति जैसे हमें किसी भँवर से खींचकर कही दूर सेफ जोन में ले जाए, तब हमारी आत्मा इस एहसास से तर हो जाती है कि वास्तव में कुछ है जो इस दुनिया से परे है। ऐसे में हमारी आस्था इतनी मीठी हो जाती है कि सामने आ रही हर चीज उसके सामने फीकी पड़ने लगती है। यादों की इस कद्र बरस रही खूबसूरती को कुछ पल वहीं ठहरकर मैंने ऐसे महसूस किया, जैसे वहाँ बस मैं हूँ और मेरे कन्हैया और कोई नहीं। इस पल को मन के दरवाजे पर ताला लगाकर हमेशा के लिए कैद कर लिया मैंने और खन्ना सर को प्रीति की मार्कशीट के बारे में कहा।

"ये लड़की विथ ग्रेस पास है, पर बिना एप्लीकेशन मैं ऐसे दे नहीं सकता बेटा कोई मार्कशीट।" वह बोले।

"सर, मैं अभी लिख देती हूँ एप्लीकेशन।" मैंने कहा।

"वैसे तो मैं देता नहीं, पर चलो, कुलदीप की जानने वाली हो तो दे दूँगा।" वो बोले।

"थैंक यू सर।" मैंने उनका आभार व्यक्त किया।

"अरे कोई बात नहीं बेटा। आप तो चाहे न भी आते, कुलदीप तो हर महीने रिकॉर्ड मेरे रजिस्टर में चढ़ाता है, उसने भी तो देखा होगा ये तुम्हारा, वही ले जाता।" वो बोले तो मुझे जैसे काटो तो खून नहीं था।

मेरी भावनाएँ जैसे छले जाने की वजह से फ्रीज़ी-सी हो गई थीं। मैंने कोल्वो की तरफ देखा,

उसका चेहरा सफेद पड़ गया था, मानो उसे कोई सदमा-सा लग गया था। एप्लीकेशन देकर प्रीति की मार्कशीट भी ली मैंने और खन्ना सर का बहुत-बहुत धन्यवाद करके बिना कोल्वो से कुछ कहे बाहर आकर खड़ी हो गई मैं। कोल्वो का इंतजार करना नहीं पड़ा, क्योंकि वो मेरे साथ-साथ ही बाहर निकल आया। उसका चेहरा सन्न था और कान शर्म से लाल।

"तुमने तो कहा था कि मेरा काम तुमने किया है।" मैंने धीमी, पर स्पष्ट आवाज में कहा।

कोल्वो कुछ नहीं बोला, मानो उसकी कोई चोरी पकड़ी गई हो।

"बोलो, कुलदीप।" मेरी आवाज तेज हो गई थी।

"तीन महीने से मेरी नॉर्मल रिचेकिंग की मार्कशीट यहाँ पड़ी थी, वहाँ हर रोज मैं इस दिन के लिए आँसू बहा रही थी, प्रीति भी परेशान थी... और तुम, तुम मुझे अपनी घटिया सोच के चलते नाइट स्टे के ऑफर दे रहे थे।" मैंने इतना धीरे पर स्पष्ट कहा कि पास जा रहे लोग नहीं सुन पाए और इतना तेज कहा कि कुलदीप के कानों तक आवाज साफ जा रही थी।

"खन्ना सर ने तो कहा कि हर महीने तुम इसे एड करते हो रिकार्ड्स में, ये तीन महीने का रिकॉर्ड है और हम तो एक-दूसरे को पिछले चार महीनों से जानते है न?" मैंने कहा, तो कुलदीप कुछ बोल नहीं पाया।

"मैंने तुम्हारे सामने बात कराई न सामने वाले सर से वो तो...।" इतना ही बोला कुलदीप ने कि झन्नाटेदार थप्पड़ जाकर सीधा कुलदीप के गाल पर रखा गया, जिसके बाद बुरी तरह बिदक गया वह।

"तेरी इतनी हिम्मत!" वह बोला आँखें लाल करते हुए।

"अबे ओ गँवार, कपड़ों में रह, वरना इतने बुरे फाड़ती हूँ न मैं कि तू जिंदगीभर मुँह नहीं दिखा पाएगा यहाँ अपनी ही यूनिवर्सिटी में।" मैंने कहा, तो चुप हो गया वह।

"...और एक बात, तूने चाहे जो किया लेकिन अंदर मेरी थोड़ी-बहुत मदद भी तेरी वजह से हुई है। चाहे अनजाने में ही सही, काम तो आया है तू मेरे। इसलिए तुझे माफ कर रही हूँ, वरना नाइट स्टे को कहा था न तूने मुझसे... तुझे तो सरेआम चौराहे पर टाँगकर जाती मैं।" कहकर मैंने 500 का नोट उसके मुँह पर दे मारा।

"ये रख अपने पिछली बार के कैंटीन और बाइक के आज के पेट्रोल का खर्च, प्लस तेरा उस दिन और आज का मेहनताना।" कहकर मैं तेजी से यूनिवर्सिटी की सीढ़ियाँ नाप रही थी और कुलदीप कहीं पीछे छूट रहा था हर बढ़ते पल के साथ।

"गीतू बेबी, एक खुशखबरी है, मैं रिचेकिंग में पास हो गई, मार्कशीट लेकर आ रही हूँ शाम तक।" मैंने पैदल एग्जाम सेल से गेट की तरफ बढ़ते हुए फोन किया, जो यहाँ से तीन किलोमीटर पर था।

"कब, कैसे और है कहाँ तू?" वह बहुत हैरानी से बोली।

"कॉलेज आई थी प्रीति के साथ, अभी पीजी में हूँ उसके, शाम तक आ जाऊँगी प्रेयर से पहले-पहले वापस," कहकर सुकून भरी साँस ली मैंने।

कदम थके होने के बावजूद अब भी गेट की ओर बढ़ रहे थे और मैंने अब प्रीति को कॉल किया।

"तेरी मार्कशीट लेकर आ रही हूँ प्रीतो, आज पिछले सारे हिसाब बराबर हुए दोस्ती के जानेमन।" मैंने कहा तो प्रीति को भी जैसे यकीन नहीं हुआ मेरी बात पर।

“पीजी आऊँगी दो घंटे में, दावत कर देना बस मेरी।” मैंने कहा, तो जैसे रो पड़ी प्रीति।

“कैसी बात कर दी तूने पाशु, तू आ तो सही।” वह भर्राई-सी आवाज से बोली, जिसके बाद मैं समझ चुकी थी उसकी हालत।

“ज्यादा बात नहीं करूँगी, क्योंकि तुझे रोते मैं भी नहीं देख सकती।” मैंने कहा तो उसे याद हो आई वो बात, जो बैंक के टाइम उसने मुझे कही थी।

“हाँ, क्योंकि मैं तुझे रोते नहीं देख पाई थी न उस दिन।” उसने कहा।

“बिलकुल।” मैं मुस्कराई।

“आ जा, फिर साथ मिलकर रोएँगे आज। अभी अकेले मत रोना, तेरा मेकअप खराब हो जाएगा।” वह बोली तो हँस पड़ी मैं।

सबकुछ अब साफ था और मोड़ खत्म हो चुके थे- मेरे इस दुखभरे बैंक ट्रैक के भी और यूनिवर्सिटी गेट के लिए गुजरने वाले रास्तों के भी। अब मेन गेट सामने था। वहाँ खड़े होकर आखिरी बार मैंने पलटकर देखा, तो कोल्वो कहूँ या कुलदीप कोई भी दूर तक नहीं दिखाई दिया। शायद मेरी जिंदगी से बहुत पीछे रह गया था। मैंने ध्यान से देखी गेट के पास की चित्रकारी, जहाँ लकड़ी का हल्का-सा काम था। उस पर ध्यान लगाकर देखने पर दिखाई दे रहा था दीमक से खाया हुआ वो भाग, जो दूर से धूप पड़कर उसे अलग दिखा रहा था। इस यूनिवर्सिटी ने आज तक जो भी छीना था, वो लौटा दिया था और अब इससे शिकायत नहीं रह गई थी। इसके आसपास की चहल-पहल अब कानों में चुभ नहीं रही थी। जब हम प्रसन्न होते हैं न, तो जीवन जैसे पूरी त्वरा के साथ हरएक पल का मजा उठाने का मौका हर वक्त देता है। तब हर जगह मधुर संगीत की लय बजती-सी सुनाई देती है और बस उसी में शरीर झूम उठता है।

बस में बैठकर मेरे मन-मस्तिष्क के साथ आज पेड़ के वो पत्ते भी झूम रहे थे, जिन्हें पानी ने खुद मेरी हँसी का राज बता दिया था। अब बारी थी मेरी उस प्रेरणा को ये खबर देने की, जिसे देने के बाद आज मेरी प्रेरणा, मेरे पापा आज बहुत दिनों बाद मुझसे भी अच्छी और गहरी नींद सो पाए थे, मानो बरसों बाद थकान उतरी हो। असल मायनों में आज वो न्यू ईयर था जिसने मेरे मन से हर दुख, हर कड़वी दर्दभरी चीज, यहाँ तक कि कोल्वो के नंबर को भी हमेशा के लिए डिलीट कर दिया था।

तफरीबाजी VS लव

कई बार हम अपनी सोची-समझी आदतों को भी प्यार का नाम दे देते हैं, पर शायद ऐसा असल में होता है नहीं। थोड़े दिन बाद मामले में ठंडक आने लग जाती है और हर वो चीज हमें नापसंद होने लगती है। लड़कों के केस में तो विशेषकर ऐसा पाया गया है कि उनको प्यार भी बड़ी जल्दी होता है और कमियाँ फिर उससे भी जल्दी दिखती हैं, मानो हर चीज इतनी क्विक फास्ट हो कि लड़की न हुई कोई शताब्दी हो गई, जो फिर कभी उनके स्टेशन पर आकर रुकेगी ही नहीं।

कई बार ये मन लगाने का एक तरीका बनकर सामने दिखाई दे जाता है, तो कभी गाड़ियों में स्टेटस सिंबल के लिए देखना पड़ता है। कभी किसी की रूखी जिंदगी में स्पार्क ले आता है और कभी जिंदगी उजाड़कर दो मिनट में आपको फकीर भी कर जाता है। मायने बहुत हैं, कायदे बहुत, फिर भी बेकायदा सबको दे रहा है ये कुछ न कुछ।

जैसा कि आज हुआ था। मैं कभी-कभी यूँ ही चलते किसी कपल को देखकर सोचती कि क्या मिलता है इन्हें। हँसी आती है किसी की ब्रेकअप स्टोरी अपने सामने होते देखकर। दोस्तों के ब्रेकअप कराने में एक अलग किस्म का आनंद मिलता। ये सोचकर कि वो रिलेशन में रहेंगे, तो हमसे दूर हो जाएँगे। वो हमारे साथ ज्यादा खुश रह सकते हैं, ऐसा एज्यूम करके। पर कहीं तो होना था मुझे उस मिट्टी की तरह, बस महक उठना था जब कोई बरसे तो सही बारिश की तरह।

आज जब पूजा ने टॉन्ट कसा, तो चिढ़ गई मैं। उसका कहना था कि वैसे तो अच्छी-खासी है तू, दिखती भी ठीक है और मेकअप भी लगाती है, कपड़े भी कितने टशन मारकर पहनती है, तब भी एक बॉयफ्रेंड नहीं बनाया है तूने।

"अब ये क्या बात हुई।" मैंने आँखें चढ़ाई।

"बात कुछ नहीं है, पर तू खुद देख न ये जमता नहीं तुझ पर।" वह बोली।

"ट्यूशन में सबको लगता है, इसका ऑलरेडी कोई है।" प्रीति बोली।

"क्या सच में?" मैंने कहा।

"हाँ रे, कल बातें करते सुना था मैंने और पूजा ने एक दूसरे कॉलेज वालों को तेरी तरफ इशारा करके।" प्रीति ने बताया।

"अरे श्त्तत, तभी शिव ने ध्यान नहीं दिया क्या मुझ पर?" मैंने कहा।

"अबे नहीं, उसका तो सीन है कॉलेज में सीरियस वाला इसलिए। तू छोड़ न उसे। और जगहों पर भी तो कितनी हरियाली है, वहाँ देख ना।" पूजा बोली तो ठहाकों ने हमे लैब से बाहर निकलवा दिया।

"अब बाहर पड़े रहेंगे हम यार पूजा।" मैंने कहा।

“छोड़ न, अंदर भी बोर हो रहे थे। लाइब्रेरी चल, फाइल बनाएँगे अपनी जो इन्कंप्लीट हैं।” वो बोली तो हम लाइब्रेरी चल दिए।

“तू वैसे कह ठीक रही है, कोई होना चाहिए यार, ऐसे स्टेटस कम-सा लगता है लोगों के बीच।” मैंने कहा।

“दुनिया मरी जा रही, बना ले कोई भी, किसी का तो भला कर,” कहकर पूजा मुस्कराते हुए काम में लग गई।

कई बार कुछ लोग हमारी जिंदगी में गलती से घुस जाते हैं और सबकुछ झंड करके ही मानते हैं। इस बात का पता भी हमें झंड होने के बाद ही चलता है। हालाँकि उस समय तो अपना कंट्रोल खोते हुए हम अपनी चाभी उनके हाथ में शौक से थमा देते हैं।

शाम की चाय नमक की मठरी के साथ लेने के बाद ही हमारे सामने यह बड़ा खुलासा हुआ कि नंदा हमेशा के लिए यहाँ से पैकअप करके जा रही है कल सुबह, क्योंकि उसके पैरेंट्स उसकी शादी करना चाहते हैं।

झन्नाटेदार खबर से शॉक-सा लगा, जिसके बाद भीगी पलकों के साथ नंदा की सुबह की विदाई देखी हमने। खैर, भगवान भला करे के साथ कमरे में दो नए प्राणियों की एंट्री हुई और देखते ही देखते हमारा 22 नंबर जान से प्यारा कमरा आधा किसी और का हो गया। अब ये चार सीटर हो चुका था, जिसमें मुश्किल से ही पैर रखने की जगह बचती थी। ये मेरा यहाँ दूसरे साल का शुरुवाती दौर था और नए रूममेट के साथ एडजस्ट होने की शुरुआती कोशिशें।

“ओह, तो सिम्मी तुम हो।” एक पतली-सी, साँवले रंगत की तीखी, खूबसूरत-सी आँखों वाली लड़की थी ये,

जिसकी मुस्कान भी उतनी ही मीठी थी जितनी उसकी आवाज।

“हाँ, पाशना।” वह मुस्कराकर बोली।

कुल मिलाकर डोरेमॉन जैसी दिखने वाली वो लड़की मुझे पहली ही मुलाकात में पसंद नहीं आई थी, हालाँकि उसने न पसंद आने जैसी कोई बात की भी नहीं थी तब। उसका नाम सुमेधा था, पर शायद कुदरत के किसी तत्व ने उल्टा किया उसके साथ, क्योंकि बुद्धि के नाम पर वह डंबो लगी मुझे। देखने में सादी शक्ल-सूरत वाली थी और कुछ हद तक बेकार सूरत भी कहा जा सकता है, जैसा मुझे उस टाइम लगा, पर उसके नखरे सातवें आसमान पर थे।

मुझसे किसी तरह का लड़ाई-झगड़ा नहीं हुआ था उनका, लेकिन बात-बात पर शर्मिंदा करना सामने वाले को और हर किसी का मजाक बनाना उन दोनों की खास आदतों में शुमार था। इसकी वजह से मैं उनसे उतना नहीं खुल पा रही थी, जितना खुलना चाहती थी। एवरेज शक्ल-सूरत होने पर भी उनकी पर्सनैलिटी अच्छी थी, इसलिए कुल मिलाकर वो स्मार्ट लगती थीं, पर सामने वाले को साफ टॉन्ट कर देना उनकी सबसे गंदी आदत थी, जो हर किसी को हर्ट करने के लिए काफी थी।

“श्हहह्ह पड़ोसी बेड वालो।” सुमेधा ने कहा, तो गीतू और मैं चौंक गए।

“हाँ।” गीतू सकुचाई-सी बोली।

“नॉन मेडिकल न?” उसने कहा।

“हाँ, तुम दोनों कंप्यूटर साइंस?” मैंने उनकी यूनिफॉर्म को सरसरी निगाह से देखते हुए पूछा।

“हाँ।” सुम्मी बोली।

“फेसबुक चलाते हो?” सुमेधा ने कुछ सोचकर पूछा।

“नहीं, हमे अकाउंट बनाना नहीं आता।” मैंने कहा।

“चलो तब, हॉस्टल कैफे ओपन होने का टाइम हो गया है, मैं बना दूँगी अकाउंट अगर तुम दोनों चाहो तो।” सुमेधा ने ऑफर देते हुए कहा।

“हॉस्टल में नेट कैफे का भी टाइम है क्या?” मैंने हैरानी से पूछा।

“हाँ और क्या, तुझे ये भी नहीं पता?” उसने शैतान-सी मुस्कान दी।

“नहीं, वो कभी गए नहीं ना।” गीतू मासूम-सी शक्ल बनाकर बोली।

“हमारा कंप्यूटर सब्जेक्ट है न इसलिए। लैपटॉप यहाँ अलाउड नहीं करेंगे, तो ये तो करना ही पड़ेगा इनको यार।” सुमेधा ने नाक चढ़ाकर कहा।

“अब तो हम तुम्हें भी फेसबुक एडिक्ट बना दे रहे हैं, अब क्या पता लगेगा।” सुम्मी बोली। बात में जान तो थी, ये मानना पड़ा मुझे।

सुम्मी मुस्करा रही थी और उसकी मुस्कान आकर्षक थी, मुझे ये कहने में अब भी कोई दोराय नहीं है।

कैफे पहुँचकर शुरू के 15 मिनट तो हम इंतजार करते रहे, पर सुमेधा जो फेसबुक में बिजी हुई तो जैसे बर्फ-सी जम गई वहीं और मैं ये देखने में बिजी थी कि कैसे मिनट-मिनट में उसके चेहरे के भाव हर पोस्ट के साथ बदल रहे थे। शुरुवात से ही नकचढ़ी किस्म की लड़की लगी वो, जो हर छोटी-छोटी बात पर किसी पर भी चिल्ला देती। इसलिए हमने उसका फेसबुक तसल्ली से चल जाने का इंतजार किया।

“हाँ भई अब बोलो, नाम?” वह बोली तो खुश हो गए हम।

“पाशना।” मैंने मुस्कराकर कहा।

“आगे क्या लगा दूँ, देवी या रानी?” उसने चुटकी ली।

“मित्तल।” मैंने कहा।

उसका मजाक करना मुझे जरा भी अच्छा नहीं लगा, क्योंकि उसकी छवि ही ऐसी बन चुकी थी कि वो ताना ही मारेगी। बहुत सोचने के बाद पासवर्ड NOT EXIST रखा था, जो हम सबको बड़ा पसंद आया था। इसके बाद नंबर आया फ्रेंड रिक्वेस्ट का। सिलसिले बने तो बस नंबर लगते गए क्रश1, क्रश2, क्रश3 को ढूँढ़ने के, जिसके बाद स्कूल और कॉलेज की दोस्त आई। सुमेधा ने काफी जल्दी में समझाया कि कैसे इसको ऑपरेट करना है। इसके बाद बाकी की डिटेल समझाने के लिए मुझे सुम्मी के पीसी पर रेफर कर दिया गया, जैसे जरूरी काम करके किसी कंपाउंडर के पास दवाई समझने भेजते हैं। बाद की डिटेल सुम्मी की मिश्री जैसी मीठी आवाज ने सब अच्छे से समझा दी थी।

“तुम लोग ट्यूशन जाते हो न?” सुम्मी बोली।

“हाँ, और इस बार तो हमारे मार्क्स भी बहुत अच्छे आए हैं।” मैंने बताया।

“हमारी तो बैक आई है यार, हम भी चलेंगे।” सुमेधा उदास-सी बोली।

“हाँ चलो।” गीतू ने कहा।

“वहाँ तो दूसरे कॉलेज के लड़के बड़े सही-सही आते हैं न?” सुम्मी ने आँख मारी।

“हहहाहा।” मैं हँसने लगी।

“सेम इशू?” गीतू बोली।

“क्या जिंदगी बस तेरी ही वीरान हो सकती है, हमारी नहीं?” सुमेधा ने कहा।

“पॉइंट टू बी नोटेड।” मैंने कहा।

“चल, हम हैं तो सही, कल से बन जाएगी हसीन तेरी जिंदगी भी।” मैंने कहा।

“काश, हमारे पास अच्छे फोन होते, हम फेसबुक चला पाते।” सुमेधा ने चिंता वाली मुद्रा बनाई।

“हाँ, पर कोई बात नहीं यार, कुछ सोचते हैं।” मैंने दिमाग के घोड़े दौड़ाए।

अब सुम्मी और सुमेधा भी ट्यूशन जाने लगे थे, जिसकी वजह से अब हम हमेशा साथ ही हो जाया करते थे। शाम की प्रेयर, रात का डिनर, उसके बाद की वाक, उसके बाद की बिस्किट पार्टी अब हम साथ ही करते थे। पर हमेशा की तरह ट्यूशन वर्क हम अब भी रचना और शिखा के साथ ही करते थे, जो सुम्मी और सुमेधा के ही क्लासमेट थे।

“हाँ क्या, बोल... चुप क्यों है, बोलती क्यों नहीं... बोल अब, बोलती क्यों नहीं?” सुमेधा बोली।

उसका बच्चों जैसा चेहरा बनाना देखकर हम सब देर तक खोए रहे एक अजीब-से चक्र में- समय चक्र जो घूम रहा था, जहाँ अब नंदा की जगह ये दोनों इतनी पर्फेक्ट्ली ले चुकी थीं मानो नंदा कभी थी ही नहीं।

हम अब देर रात तक फेसबुक के बारे में बातें करते, ट्यूशन को लेकर रोज नई-नई चीजें निकालकर लाते और पढ़ाई पूरी कर लेते। रचना और शिखा भी मेरे नए रूममेट के ही थाली के चट्टे-बट्टे थे। देखा जाए तो मानो एक ही मुर्गी के अंडे थे चारों। क्लास सेम, सोचना सेम, पर आदतें एकदम अलग। उन दोनों को फेसबुक में इतना इंटरेस्ट नहीं था, जितना सुम्मी और सुमेधा को। इन दोनों में भी सुमेधा को तो ओवरलोडेड ही था। जिंदगी का वो कैफे टाइम का आधा घंटा जैसे रोज जी लिया जाता था बस।

ट्यूशन के चलते सब चल रहा था कि एक दिन क्रश3 का मैसेज आया, तो पार्टी दे डाली मैंने सबको।

“काश तेरे बाकी क्रश भी ऐसे ही मिल जाएँ, तो तू हमें और पार्टी दे।” सुमेधा बोली देर रात को।

“अरे न रे, एक बार में एक काफी है।” मैंने कहा।

“लेट्स सी, कितने दिन काम में आ पाता है।” गीतू बोली।

“हेहेहेहहाहा।” सुम्मी के साथ हम सब खुश थे।

मेरे क्रश3 के साथ बात कराने के लिए मैं खासतौर पर सुमेधा की शुक्रगुजार थी, पर सुम्मी और सुमेधा की कुछ बातें थीं, जो मुझे शुरू दिन से आखिरी दिन तक कभी पसंद नहीं आई।

उसकी ही वजह से मेरे कॉलेज के दोस्त भी मुझसे कटने लग गए थे। वो था इन दोनों का ओवरस्मार्ट बनकर हर किसी की छेपटी लेना। उसका मजाक बनाना और उसे दुखी फील कराना। ट्यूशन क्या गए, वापस आकर घंटों-घंटों वहाँ के लड़कों के बारे में ऐसे बातें करते मानो बस वहीं से इनकी थ्योरी शुरू और वहीं पर खत्म हो जाती हो। वापस आकर घंटों उनकी एक्टिंग करके हमें भी डिस्टर्ब करते। न खुद पढ़ाई करते, न करने देते। अपने फेसबुक मैसेज के बारे में बताने जैसा शोषण हो रहा था वहाँ अब हमारा, जबरदस्ती। मन करता कि उनको बाहर निकाल दूँ या मैं

ही सिर फोड़ लूँ कहीं। हर अगली सुबह होमवर्क हमारी कॉपी से कॉपी कर लेते। एग्जाम में प्रेशर से बचने के लिए सर के दिए होमवर्क को मैं और गीतू करते रहते, जिसकी वजह से दिन पर दिन मेरा मैथ्स इंप्रूव हो रहा था और इन दोनों का मेकअप करने में हाथ साफ हो रहा था।

इस सबके बावजूद ये दोनों ही थे मेरे रूममेट ऑफ द टीनएज, क्योंकि इन्हीं के साथ मैंने अपने सबसे हसीन पल गुजारे। मैंने इनके साथ ही वो सब महसूस किया, जो मैं कभी घर या हॉस्टल में इसके पहले और इसके बाद कभी नहीं कर पाई। इसकी सबसे खास बात ये थी कि मैं तब भी जानती थी कि मुझे फिर कभी ऐसी लाइफ और ऐसी मस्ती नहीं मिल पाएगी। कई बार होता है कि हम इस बीत रहे वक्त को सिर्फ इसलिए खास नहीं बना पाते, क्योंकि हम समझ ही नहीं पाते कि ये कितना अलग है। मानो इसको बस सजा लेना है मिलकर, इसके ढल जाने पर पता चलता है कि यही तो था वो जिसे हम हर जगह ढूँढ़ रहे थे। ये साथ था पर हम कभी समझ ही नहीं पाए। मेरे साथ बस यही सबसे अच्छा रहा कि मैं हमेशा से जानती थी, यही हैं वो जिनके साथ मैं इस बीत रहे पल को आसमान छूता गैस का वो रंगीन गुब्बारा बना सकती हूँ, जो बस इसी पल वहाँ है, अगले पल ये दृश्य गुजर जाएगा और मैं बस बीते वक्त की मछली जैसे पकड़ती रह जाऊँगी।

"क्या हुआ तुझे लेडी देवदास?" सुम्मी ने कहा, तो मैं वापस आई। मैं तो मानो कहीं तैर रही थी इस गर्मी में किसी ठंडे पानी की झील में।

"हम्म्म्म।" मैंने हड़बड़ाकर कहा।

"कहाँ खोई है ये पूछ रही हूँ मैं।" सुम्मी ने मेरी आँखों में झाँकते हुए कहा।

मैंने देखा कि हम चारों वापस लौट रहे थे ट्यूशन से। उसके बाद हमें चाय पीनी थी।

"ऐसा ही है इसका, बैठे-बैठे खो जाती है।" गीतू ने उन दोनों को बताया चाय पीते हुए।

"चलते-चलते तो रुक नहीं जाती न और बैठे-बैठे तो नहीं खो जाती न, क्योंकि यही तो प्यार है।" सुमेधा ने सुर-ताल मिलाए।

"प्यार नहीं तफरीबाजी, डियर, हम तो तफरीबाजी करेंगे।" मैंने कहा।

"हहहाहा, तो शुरू करें।" सुम्मी बोली।

"कैसे?" गीतू ने कहा।

"सब अपने-अपने सुझाव तय कर लें, जिसका सबसे अच्छा होगा, मान लिया जाएगा।" मैंने चाय का गिलास टेबल से दो फुट ऊपर उठाया।

"किस पर देने हैं सुझाव?" सुमेधा बोली।

"तफरीबाजी कैसे करें।" मैंने बताया।

"इंटरेस्टिंग, आई लाइक इट।" सुम्मी बोली।

"कसम खाए हो क्या कि सोचने नहीं देंगे जरा भी।" सुम्मी ने कहा।

"तू क्यों गर्म हो रही, चिल बेबी चिल।" मैंने कहा।

"अच्छा, मुझे तो ये नहीं समझ आता कि तुम्हारी नंदा सारा दिन फोन पर बात कर कैसे लेती थी।" सुम्मी बोली। हम बातें करते-करते कमरे में आ गए थे अब, क्योंकि टॉपिक इंटरेस्टिंग था तो चलता जा रहा था।

"वो सब मेरा कमाल था।" मैंने कहा।

"कैसे?" सुमेधा ने मजे से पूछा।

“मैंने ही उसको नई सिम लाकर दी थी, उसी से करती थी दूसरे फोन में डालकर, उसके पास एक और फोन था।” मैंने कहा।

“सिम तूने लाकर दी थी उसको?” गीतू ने मुझे घूरा।

“हाँ।” मैंने जीभ निकाली, जैसे कोई चोरी पकड़ी गई हो।

“ऊऊऊऊ तो ये बात है, तभी वो नेस्ती-सी सारा दिन चार्जिंग पोर्ट पर सजी मिलती थी।” गीतू बोली।

“वैसे, सिम अब भी मेरे पास ही पड़ी है।” मैंने कहा।

“अरे, तब तो मिल गया आइडिया तफरीबाजी का।” सुमेधा अचानक बोली।

“एन आइडिया कैन चेंज योर लाइफ।” मैंने भी दिमाग की बत्ती जलाई।

“क्यों न इस नंबर से रांग कॉल लगाएँ।” सुमेधा बोली।

“मस्त रहेगा।” गीतू बोली, तो हमें विश्वास ही नहीं हुआ।

“हाय गीतू तू भी, ईईईईए, हहहहाहा, देखो तो।” सुमेधा ने फिर उसकीका मजाक बनाया।

“क्या है अब?” गीतू चिढ़कर बोली।

“हम सब में किसी का भी कोई ऐसा पर्टिकुलर कॉलर तो है नहीं, मतलब कोई बॉयफ्रेंड तो है नहीं, तो किसी के भी फोन में डाल लेते हैं सिम कोई फर्क नहीं पड़ता है। बात सब करेंगे उस पर, जब जिसका मन करेगा। एक-एक मंथ करके हम बारी-बारी से इसे अपने अपने फोन में डालेंगे... और सबसे मेन बात, जिससे भी हमारी बात होगी, वो किसी एक की पर्सनल प्रॉपर्टी नहीं होगा, उससे सब बात कर सकते हैं हम अकॉर्डिंग टू टाइम लेकिन...,” कहकर मैं रुकी।

“लेकिन क्या?” सुमेधा ने कहा।

“...लेकिन कुछ मैटर में रूल बदला जा सकता है, जैसे, ऐज हम चारों में से किसी को भी वो पर्सन अगर पर्सनली पसंद आ जाता है तो वो बता सकती है, बाकी तीन पीछे हट जाएँगे और ये सिम फिर उसी के फोन में डालकर उसे उसी के लिए फ्री कर दिया जाएगा और बाकी तीन उससे बात नहीं करेंगे।” मैंने कहा।

“कूल।” सुमेधा को सब एकदम ठीक लगा।

“उसको अपनी पर्सनल आइडेंटिटी भी नहीं देगा कोई।” सुम्मी बोली।

“हाँ, याद से।” हम सबने कहा।

“हम उससे मिलेंगे नहीं, याद रखना है कि ये हम सिर्फ थोड़े फन के लिए कर रहे हैं।” गीतू ने कहा।

कहाँ जानते थे हम उस रात सोने से पहले कि एक रोमांचक मोड़ अब हमारे लिए अपकमिंग जोन में है।

आज भी रोज की तरह हम चारों अपना होमवर्क करके निढाल-से अपने-अपने बिस्तरों पर पड़े थे और लाइट बंद करके सोने की तैयारी में ही थे। मैं तो अपने क्रश3 की यादों में खोई थी और सोच रही थी क्यों न उसे नंबर दे दूँ अपना, लेकिन हर कैफे टाइम की शाम एक झिझक में घुलकर रह जाती।

“गीतू...” मैंने कहा।

“नंबर दे दूँ क्या, क्रश3 को?” मैंने सोचते हुए कहा।

“देख ले, दिक्कत न पड़े बाद में।” वह बोली।

“इतनी बड़ी तोप न है वो, जो मुझे दिक्कत हो।” मैं हँसने लगी।

“हाँ, वैसे भी लगता है उसको तो पतलून बाँधने के लिए भी मम्मी की जरूरत होती होगी।” गीतू बोली और माहौल जैसे एक बार फिर भीगकर बरस पड़ा पानी से घुलकर।

“हहहाहा।” सुम्मी की आवाज आई।

“अबे, तू भी?” हम तीनों हैरान थे।

“हाँ रे, नहीं आ रही नींद।” वह बोली।

“मन हो रहा है क्या कहीं किसी को कॉल लगाने का?” मैंने आँखें चढ़ाकर हँसते हुए कहा।

“हाँ, इमरजेंसी लोन लेंगे, ला सिम दे।” सुम्मी बोली।

मैंने फोन सिम सहित उसके हाथ में पकड़ा दिया और कई नंबर पर मिसकॉल करने के बावजूद जब कोई कॉल नहीं आया, तो बड़े निराश हुए हम सब, मानो कोई गम का पहाड़ निराशा की चादर ओढ़े हमारा दरवाजा पीट गया हो।

“एक बात तो यो बता पहले कि ये क्रश1, क्रश2 और क्रश3 है क्या?” सुम्मी ने पूछा।

“अवव्व्व, तुझे अभी तक यही नहीं पता?” मैंने कहा।

“कहाँ...।” वह दीनहीन-सा चेहरा बनाकर बोली, तो हँसी आ गई मुझे।

“देख, क्रश 1 है एट्थ और नाइंथ वाला, क्रश2 है टेंथ वाला और क्रश3 है प्लस-2 वाला।” मैंने कहा।

“ओह्हह, हैं सब क्रश ही, बात एक से भी नहीं।” वह बोली।

“गर्ल्स कभी प्रपोज करती देखी है क्या?” मैंने कहा।

“हाँ, कभी-कभी तो देखी है।” वह ध्यान से सोचकर बोली।

“हुँह, हाँ नहीं कह सकती मेरी बात पर?” मैंने मुँह बनाया।

“अरे, पर देखी है तो क्यों हाँ करूँ!” वह बोली।

“फाइन, मैंने नहीं किया इसलिए मेरी लव स्टोरी आधे में दम तोड़कर रह गई।” मैंने अफसोस जताया।

“जी हुजूर।” गीतू ने सिर झुकाने का अभिनय किया।

“मैंने फर्जी सिम में रिचार्ज करा लिया है, सब मुझे काउंट्री के पैसे दे देना।” गीतू ने बताया।

अगले दिन फिर वही मुद्दा था।

“नंबर था तेरे पास?” मैंने पूछा।

“किसका?” गीतू बोली।

“अबे, फर्जी वाले सिम का।” मैंने कहा।

“हाँ, कल ले लिया था इमरजेंसी लोन के बाद।” वह बोली।

“कॉलेज तो मैं लेकर नहीं गई थी फोन, अभी देखती हूँ,” कहकर मैंने अलमारी से निकाला। चेक किया, तो जैसे उछल पड़ी सुमेधा मेरे फोन में झाँककर।

“क्या हुआ?” सुम्मी बोली।

“दो मिसकॉल पड़े हैं किसी के।” वह बोली।

“कर-कर, इसे मिसकॉल दे।” सुमेधा बोली।

“मिसकॉल न कर, ये आजकल के रांग नंबर वाले उस्ताद हैं बहुत, कंधे पर हाथ मारकर बब्बा का नाम बताना जानते है, कॉल कर।” मैंने कहा।

"मैं बाहर हूँ," कहकर मैं चली गई बाहर और बैठ गई सीढ़ियों पर, जो मेरी सबसे पसंदीदा जगह थी।

यहाँ सबसे खास था कि न कभी धूप आती थी और न कभी ठंड, मतलब 12 महीने एक जैसा लगता था। हल्का गर्म हल्का ठंडा-सा। इसलिए एक बार को तो हर गुजरने वाला यहीं कुछ देर के लिए ठहर जाया करता। मेरी जिंदगी का तो ये परमानेंट ठहराव भी बन जाए न, तो मैं इसे खुशी-खुशी स्वीकार कर लूँ। जाने कब इतना टाइम बीत गया कि तीन बज गए।

बिजली जैसी मुस्कान के साथ हँस पड़ी वो, जिसके बाद वही हुआ जो होना था। उसका आधा-अधूरा होमवर्क सर ने चेक कर लिया और उसे सजा के तौर पर बाहर निकाल दिया गया। पूरे एक घंटे वेट करना पड़ा उसे बाहर, जबकि सुमेधा बच गई। जितनी बेइज्जती आज सुम्मी को महसूस हुई वहाँ, उसके बाद सारे रास्ते सुम्मी नॉनस्टॉप लाउडस्पीकर-सी बजती रही।

"ये आरुष का बच्चा खुद को समझता क्या है। मुझे तो अब जाना नहीं कल से वहाँ, ये... वो... सो...।" वह एक बार शुरू हुई तो तब तक बजती रही जब तक कि एक स्पीड ब्रेकर ने आकर हम चारों को रोक नहीं दिया।

"ट्रिन-ट्रिन।" ये मेरे फोन की वो घंटी थी, जो आजकल हम सभी के कदम रोक देती थी।

"अबे उसी नंबर से कॉल है।" मैं चिल्लाई।

इसके बाद सुम्मी भी अपने गम-गुस्से को छोड़कर भाग आई मेरे ही पास बेड पर, जहाँ ट्यूशन से आकर हम लोग होमवर्क में लगे थे।

"हेल्लो।" मैंने कहा।

"हेल्लो, कौन?" उधर से आवाज आई।

"फोन स्पीकर पर कर जल्दी।" सुमेधा मेरे कान के पास फुसफुसाई और हम चारों घेरा बनाकर बैठ गए।

"फोन आपने किया है, आप कौन?" सुमेधा दाँत दिखाकर बोली।

"जी मैडम, मिसकॉल आया था आपका, तब किया मैंने।" वह सकुचाया-सा बोला।

"कैसी बातें कर रहे हैं आप।" मैंने मजे लेते हुए कहा, "हम क्यों करेंगे भला आपको।"

"चलो हमने ही कर लिया, बस, आप खुश रहिए मैडम।" वह बोला।

"हेहेहेहे।" सुम्मी की हँसी छूट पड़ी, जिसके बाद सुमेधा और मैंने भी चटखारे लेने शुरू कर दिए।

"चलो अब रखो फोन आप।" गीतू बोली।

"मैं क्यों रखूँ, आप रखो।" वह बोला।

"मैंने तो किया नहीं जो मैं रखूँ।" गीतू बोली।

"वाह, करूँ भी मैं रखूँ भी मैं, ये तो गलत है न मैडम, एक काम तो आप करो।" वह भी बराबर मजे ले रहा था।

"अच्छा, क्या करती हैं आप?" वह पूछने लगा।

"हम क्यों बताएँ।" सुमेधा क्वेश्चन मार्क अंदाज में बोली।

"तो मैं बता देता हूँ।" वह बराबर लगा हुआ था बोलने में।

"बताओ।" गीतू ने कहा।

"आइडिया ऑफिस में हूँ।" उसने बताया।

“ओह, हमें लगा आप कोई बावर्ची होंगे।” मैंने कहा।

“जी क्यों?” वह बोला।

“हमें भूख लगी है इसलिए।” मैंने कहा।

“ओह, शिट, काश मैं होता बावर्ची ही।” वह नाटक करते हुए बोला।

“हमें क्या पता था हमारी किस्मत ही फूटी है इस मामले में कि फोन आएगा भी तो कस्टमर केयर वाले का अब भी, वैसे ही दिनभर आप ही लोग बजते हो फोन पर, और अब भी...।” सुम्मी बोली।

“क्या बात है।” वह हँसता रहा।

“चलो, फिर आपकी टोली के लिए आज बावर्ची ही बन जाते हैं।” वह बोला।

“चलो, फिर हम हैं 1...2...3...4 लोग, मैग्गी ले आइए हमारे लिए।” मैंने कहा।

“एड्रेस।” वह बोला।

“के.डी. हॉस्टल 1st फ्लोर।” मैंने कह तो दिया, लेकिन उसके बाद जाने कितने मुक्के पड़े मुझे खुद याद नहीं।

“ये क्या बोल दिया।” सुम्मी ने घूँसा मारा मेरे पेट में।

“रूम नंबर भी बताइए।” वह बोला।

“जल्दी वाइंड अप करो नौ बजने वाले हैं, कब से बातें कर रहे, पता ही नहीं चला घंटों हो गए।” मैंने याद दिलाया कि फोन ऑफ करना है।

“ठीक है, अब बाद में बात करते हैं।” सुम्मी बोली।

“मैं इंतजार करूँगा आपके मिसकॉल का।” उसने बाय कर दिया।

क्रश3 का क्रेज मन से धीरे-धीरे कम होने लगा था, जिसकी वजह शायद उसका नेचर रही या उसका उस तरह बात न कर पाना जैसे मैं चाहती थी। अब तो जहाँ इंटरेस्टिंग लग रहा था वो था मेरे क्रश2 का डुप्लीकेट। न-न कन्फ्यूजन कोई नहीं रखना, क्योंकि कन्फ्यूज तो मैं हो गई थी उसको पहली बार फोटो में देखकर। नाम वही, होमटाउन वही, सरनेम वही और यहाँ तक कि शक्लें भी काफी ज्यादा वाले हद तक मिलती-जुलती। ये क्रश2 का जेरोक्स कॉपी जब मेरी फ्रेंडलिस्ट में आकर लुढ़का, तो मैंने बिना एक सेकंड की देरी किए उसको उठाकर अंदर झोली में डाल लिया। कुछ दिन इससे हालचाल मालामाल पूछते-पूछते पता चला कि ये क्रश2 नहीं उसका डुप्लीकेट है, तो बताए बिना न रह सकी मैं अपने रूममेट्स को। भला न बताने जैसा था ही कहाँ मैटर। इतना गंभीर जो होती जा रही थी बात, बिना किसी वजह के मेरे अंदर ही अंदर। क्या बबूल के पेड़ से रेशम बनती जा रही थी, जो वैसे तो हो सकता नहीं, पर मेरे दिल की कहानी में तो पीपल पर भी गुलाब आते थे, वो भी काले वाले। आज तक भावनाओं का जितना पुलिंदा समेटकर रखा था, वो वैसे बिखर ही जाना था, बस कहीं अटका हुआ था किसी मिस्टर राइट के इंतजार में।

कौन जानता था कि ये गलती से हुई एंट्री मेरे लिए एक रेनबो बन जाएगी, जिसके रंगों से मैं चाहूँ भी तो नहीं निकल पाऊँगी। ये आया तो सिंगल वाइट लाइट से था, पर बिखेरने लगा था सेवेन कांस्टीटुएंट कलर, द रेनबो।

हुआ कुछ यूँ कि उस दिन धूप कुछ छिपी-छिपी जा रही थी बादलो के पीछे, जैसे शर्मा रही हो आज किसी से उस दुल्हन की तरह, जो पहली-पहली बार ससुराल आती है और चारों तरफ देखकर समझ नहीं पाती कि वो कैसे रियेक्ट करे। सुबह के नौ बजे का वक्त और मैं भागते हुए

रिसेप्शन की तरफ जा रही थी, क्योंकि आज मैं वाकई लेट थी हमारी बस की वजह से। सीढ़ियाँ चढ़ते हुए सामने की फर्स्ट फ्लोर वाली लाइब्रेरी से गुजरकर मैं अपने सामने से दूसरे नंबर पर पड़ रहे क्लासरूम में घुसी आनन फानन में। फिर ये देखकर कि कोई टीचर नहीं है अभी तक क्लास में जिससे मुझे लेट आने के लिए माफी माँगनी पड़े, तेजी से बढ़कर बाहर दिल से निकल रहीं धड़कनें शांत होने लगी थीं अब। वही रोज की तरह बिना देखे आगे से पाँचवीं बेंच पर बैठकर मैंने नीतिका को हेल्लो किया और फेसबुक ओपन करते हुए टीचर के अभी तक न आने के बारे में पूछा नीतू से।

"आज लेक्चर फ्री है।" प्रीति ने जस्ट मेरे पीछे से कहा, तो जैसे शांत पड़ गई एकदम से मैं।

"क्या सच में?" मैंने नीतिका से कहा।

"हाँ।" वह अपने नोट्स बनाते हुए बोली।

"तुम लोग मुझे ये पहले नहीं बता सकते थे?" मैंने झल्लाकर कहा।

"क्यों बताएँ?" नीतिका ने आँख मारी।

"अरे यार...।" मैंने किलककर कहा।

"क्या हम तुझसे हेल्प नहीं माँग सकते?" नीतू बोली।

"कैसी बातें कर रही है, क्यों नहीं ले सकते मुझसे हेल्प, दोबारा न कहियो, थप्पड़ खाएगी।" मैंने कहा।

"लाइब्रेरी चलते हैं, वहाँ ऊपर वाले फ्लोर पे बैठें तो कोई चेक भी नहीं करने आता, मैं फेसबुक चलाऊँगी।" मैंने कहा।

"चल न पाशु, कैंटीन चलते हैं।" प्रीति ने मुझे रोका।

"नहीं, मेरा मन नहीं है, तू पूजा को ले जा।" मैंने अपना बैग उठाते हुए कहा।

"हाँ, इसकी संगत में तू आजकल बहुत फोन यूज कर रही है।" उसने नीतिका की तरफ इशारा किया।

"तुझे क्या है?" नीतिका उससे बोली।

"तेरे लिए जीजा ढूँढ़ रही हूँ।" मैंने चिल्लाकर कहा, पर प्रीति बिना सुने चली गई एकदम।

हालाँकि मैं जानती थी कि वो नाराज होकर गई है, पर मैंने उसे नहीं रोका।

"ये देख नीतिका, लड़का हैंडसम है न?" मैंने लाइब्रेरी में बैठकर नीतिका को दिखाया।

"पर संजू जैसा नहीं।" वह मुस्कराकर बोली।

बाकी सबकी तरह जैसे ही झोली में आकर गिरा वो, तुरंत ही मैसेज भी आ गया।

"थैंक यू सो मच फॉर एडिंग मी।" उसका मैसेज था।

"बड़ी स्पीड है।" नीतिका बोली।

"हहहाहा।" मैंने हँसकर आँख मारी।

"चल, कर मजे जिंदगी के।" नीतू ने कहा।

"योर वेलकम।" मैंने लड़के को रिप्लाई किया।

कुछ फॉर्मल बातों और फ्री क्लास के एक घंटे में ही मुझे ये पता चल गया कि ये कहीं से कहीं तक भी मेरे क्रश 2 जैसा उस तरह से तो नहीं है, पर देखने में एकदम वैसा ही है। नाम भी सेम है और सरनेम भी, यहाँ तक कि होमटाउन भी। सोचकर लगा कि चलो पड़ा रहने दो, वक्त-बेवक्त मन लगा रहेगा इसकी चिकनी शक्ल देखकर। क्लास चलने लगी और शेड्यूल जहाँ छोड़ा

था, वहीं से शुरू हो गया।

लोगों की जिंदगी में दूसरे लोगों का आना-जाना ऐसे रहता है, जैसे पानी में मिनरल्स। मेरे अंदर की तपन में भी कुछ लोग वक्त की धुंध में बहते जा रहे थे और कुछ वक्त के साथ नए आते जा रहे थे, पर एक चीज हमेशा से वही की वही थी। मेरी वो तलाश! मेरी वो मिस्टर परफेक्ट की तलाश, जिसने अभी तक मुझे सिंगल रखा था। ऐसा नहीं था कि कभी कोई पसंद नहीं आया, कभी प्रपोजल नहीं मिले या कभी किसी को कहने की हिम्मत नहीं हुई, नेवर। लेकिन वो कोई जिसको मुझसे ज्यादा मैं समझ आती, जो मुझे मुझसे ज्यादा मुझमें पहचान सके, जो मुझसे नहीं मेरी रुडनेस के साथ कुछ दिन, कुछ महीने नहीं बल्कि पूरी जिंदगी निभा सके। जिसमें हिम्मत हो मेरे हरएक कारनामे, हरएक एडवेंचर को सही साबित करने की। जो मेरे साथ-साथ मेरी हर शैतानी को मुझसे ज्यादा पसंद करे। जिसमें ताकत हो मुझे खुद से ऊपर जाता देखने की, जो मेरी कामयाबी को, मुझे मेरी तरह हजम कर पाए...। बस ऐसा कोई। जिसे कहते हैं लव-शव वाली फीलिंग, वो नहीं आई कभी किसी के लिए। कभी ऐसा नहीं लगा किसी को देखकर। वो इसलिए कि कभी वो संगम मुझसे टकराया ही नहीं, जिसमें जाकर मेरे मन की गंगा मिल जाए और कोई आहट न हो। बस एक एहसास हो, वो एहसास जिसमें बस दो लोग सुनें- वो और मैं। कोई गवाह न हो, कोई सुबूत न हो, कोई जज न हो और कोई मुजरिम न हो, बस हो तो सजा, वो भी ताउम्र।

क्लास खत्म होने के बाद बस से होते हुए हॉस्टल और फिर ट्यूशन जाना आज वैसे ही रहा, जैसे बरसों बाद किसी का अपने मुल्क वापस कदम रखना। जाहिर है, ये भी अच्छा ही लग रहा था कि शाम होने को आई थी पर मन अभी तक नहीं ऊबा था। वैसे ही जैसे बदलाव जिंदगी में आए या फिर चीजों की पसंद में। हम उन पर यकीनन ध्यान तो देते हैं, पर स्वीकार नहीं कर पाते। चाय लिए अकेले घूम रही थी मैं ग्राउंड में कि अचानक एक नए नंबर से कॉल देखकर मैं उठाए बिना न रह सकी।

खैर, मैंने फोन उठाया तो सुनकर विचित्र लगा मुझे कि मेरे हेल्लो बोलने से पहले ही सामने वाले ने हेल्लो बोल दिया।

"अरे! अब तक मैंने तो हेल्लो बोला ही नहीं, पहले ही...?" मैंने कहा।

"क्या आपका पहले हेल्लो बोलना किसी किताब का नियम है?" उसने बड़ा ही रोचक सवाल किया।

"हाँ, द रूल इज रूल। जो फोन रिसीव करता है, पहले हेल्लो वही तो करेगा।" मैंने कहा।

"जी, फिर तो तहे दिल से माफी चाहेंगे आपसे।" वह फरियादी लहजे में बोला, तो हँसी आ गई मुझे।

"वैसे, ये रूल तो गूगल पर भी मिलेगा न?" उसने पूछा।

"वो सब बाद में, पहले आप ये बताइए कि आप हैं कौन?" मैंने पूछा।

"मैडम, सवाल के बदले सवाल, गलत है ये तो।" वह बोला।

"बता रहे हो तो ठीक, नहीं तो रखें हम फोन फिर।" मैंने कहा।

"अरे, आप तो नाराज ही होने लग गई, हम कैसे रहेंगे अगर आप नाराज हो जाएँगी तो।" वह बोला।

"वैसे, बात आपकी सही है। नाम तो मुझे बताना ही चाहिए, मैं हूँ तोरण शुक्ला और मैं ये बता दूँ कि मैं आपको नाम बताना भूल गया पहले जल्दबाजी में।" वह बोला।

“कितना ज्यादा बोलते हैं आप।” मैंने कहा।

दिमाग के घोड़े बहुत दौड़ाने पर भी जब ये याद नहीं आया मुझे कि कौन तोरण शुक्ला, तो बस जैसे और सब्र नहीं हुआ मुझसे।

“यहाँ कैसे फोन किया?” मैंने कहा।

“आपसे बात करनी थी बस।” वह बोला।

“क्या मुझे जानते हो?” मैंने कहा।

“आप शायद भूल रही हैं, हम फेसबुक फ्रेंड्स हैं।” वह बोला।

ओह, अचानक मेरे दिमाग की बत्ती जली। ये तो क्रश2 का डुप्लीकेट बोल रहा है, पर मैंने इसलिए ये नहीं सोचा था कि इसके पास नंबर कहाँ से आएगा, मैंने तो दिया ही नहीं। मैं सोचती रही।

“तुम्म्मम्म।” मैंने चौंककर कहा, जैसे मैंने किसी भूत से बात कर ली हो।

“क्या हुआ?” वह बोला।

“तुम्हें मेरा नंबर कहाँ से मिला, मैंने तो नहीं दिया।” मैं बोली।

“अरे, अरे पाशना जी, सवाल पे सवाल, सवाल के बदले में सवाल और जवाब के बदले में भी सवाल।” वह बोला तो जोरों से हँस पड़ी मैं।

“अच्छा।” मैंने कहा।

“एक, एक करके पूछिए, ऐसे तो मैं डर जाऊँगा।” वह बोला।

“इतने डरपोक हैं आप?” मैंने कहा।

“और नहीं तो क्या। ऐसा करते हैं, एक सवाल आप, एक मैं – वरना ये कन्वर्सेशन कम इंटरव्यू ज्यादा लगेगा।” वह बोला तो हाजिरजवाबी काबिले-तारीफ लगी मुझे उसकी।

‘काफी इंटरेस्टिंग बंदा है।’ मैंने सोचा।

“खाना खाने का टाइम हो गया है, कहाँ मर गए मेरे रूममेट्स।” मैंने कहा।

“आप भूखे मत रहो, जाओ खाना खा लो, कॉल होल्ड पर डाल दो।” वह बोला।

“हम लोग साथ ही खाते हैं, पर ये लोग आए नहीं अब तक बुलाने।” मैंने कहा।

“फटाफट जाकर खा लो, अगर भूख लगी है तो, कौन-सा उनको पता चल रहा।” वह बोला।

“देख लिया तो…?” मैंने कहा।

“बहाना बना देना यार कि तुम लोग नहीं मिले एंड आल।” वह बोला तो हँस पड़ी मैं।

“बाद में पूछें तो कह देना कि आपको भूख नहीं है।” उसने टशन से बताया।

“अब ये भी रूल है क्या?” मैंने कहा।

“हाँ।” वह बोला।

“मैं नहीं मानती।” वह बोला।

“गूगल कर लीजिए।” वह बोला।

“नहीं मिला तो?” मैंने कहा।

“आपके वाले रूल के जस्ट नीचे ही तो लिखा है, देख लीजिए, मिलेगा कैसे नहीं।” वह बोला।

“हहहहाहा, बाप रे,” मैंने कहा, “कितने एक्सपर्ट हो तुम बातें बनाने में।”

“जी मिस, अपने मोहल्ले में मशहूर हूँ मैं इस काम के लिए, यकीन न आए तो पप्पू-सोनू

सबसे पुछवा दूँगा।" वह बोला, तो फिर से हँस पड़ी।

मैं सचमुच आज अकेले खाना खाने आ गई थी उसके कहने के बाद, क्योंकि अब मैं भूख बर्दाश्त नहीं कर पा रही थी। इसके बाद मैंने वापस जाकर उन्हीं सीढ़ियों को अपना ठिकाना बना लिया था, मानो चिड़िया घूम-फिर कर अपने घोंसले में चली आई हो।

"बड़ी एक्टिव हो यार आप तो।" वह बोला।

"थैंक्स।" मैंने कहा।

"मैं तो कभी न टिक पाऊँ इतने टाइम तक।" वह बोला।

"मजा आता है। ऐसा नहीं है, सब टिक जाते हैं।" मैंने कहा।

"इतना शोर कहाँ से आ रहा ये?" उसने पूछा।

"हॉस्टल में ऐसे ही होता है।" मैंने कहा।

"ओह, अच्छा।" वह बोला।

मुझे अच्छा लगा कि किसी ने मुझे इतना चुपचाप सुना, मैं कह पाई वो सब जो मुझे कहना था। वरना अमूनन बातें तो सिमटकर अंदर ही पलती रहतीं, न अपने किनारे ढूँढ़ पाती थी और न शब्दों को माला में पिरोकर रख पाती थी। हर किसी को जरूरत होती है इसी की तो, जिंदगी में किसी ऐसे की जो उसकी हर उस बात को सुने जो कोई और नहीं सुन रहा, उसका उस सब पर साथ दे जिस पर दूसरे नहीं देते हैं, कोई ऐसा जो बार-बार उसको गलत न ठहराए, बस उस पर हैरान हो, हँसे, गुदगुदाए और हल्के में न लेकर उसे उतना ही जरूरी ले जितना सामने वाला उससे उम्मीद करता है। हमें हर उस काम के लिए प्रेरित करे, जो हमें करना अच्छा लगता है, न कि अपनी एक आदर्श छवि थोपे। जब हमें कोई ऐसा मिल जाता है न, तो बस उसे कहीं समेटकर रख लेने को दिल चाहता है। लगता है, बस इसकी ये आज वाली जो अटैंशन है हमारे लिए, बस यही बनी रहे, लाइफ लॉन्ग चले बस यूँ ही।

"मैं काफी थक गई हूँ, जाना है, तो मैं रखती हूँ।" मैंने तोरण से कहा।

"ठीक है मैं कल कॉल करूँगा इसी टाइम," कहकर उसने विदा ली।

मैंने हाँ, न कुछ नहीं किया, पर कहीं न कहीं मैं नहीं कह पाई कि वो फोन न करे।

नहीं कहा जा सकता कि मेरे दिमाग में क्या खुजलाया और क्या नहीं। कुछ तो था जो मेरे और उसके बीच की खुजली को वहाँ ले जा रहा था, जहाँ टॉनिक बड़ा जरूरी हो जाता है, नहीं तो चांसेस बीमारी बढ़ने के हो सकते हैं। टॉनिक के नाम पर आरुष सर की घुट्टी थी, जो बेमौसम बरसात-सी बरस पड़ती थी यदा-कदा चलते-चलते। कमरे में वापस आ गई थी, क्योंकि होमवर्क करना था अब। लेकिन देखा तो पता चला कि ताला कसा है कुंडी पर मेरा मुँह चिढ़ाने को।

'अब कहाँ मर गए ये तीनों।' मैंने मन ही मन कोसा उन्हें।

"अरे यार, अब...।" ताला देखकर फोन करने लगी मैं सुम्मी को।

सर टिकाकर बैठी ही थी कि तीनों आ गए और बिना कुछ कहे औंधे बेड पर पड़ गए लॉक हटाकर।

"खाना?" मैंने पूछा।

"भूख नहीं है।" गीतू बोली।

"और तुम दोनों?" मैंने उनके चेहरे झाँकते हुए पूछा।

"नहीं।" सुम्मी सुस्त-सी बोली।

"क्यों?" मैंने कहा।

"कोल्डड्रिंक से भर लिया पेट।" सुमेधा ने बड़ी हिम्मत करके बोला, जैसे बड़े बल पड़ रहे हों।

"मुझे नहीं बता सकते थे, भूखी रह गई मैं।" मैंने ऊपर से दिखाते हुए कहा।

"सॉरी।" गीतू इतना शॉर्ट में बोली, जैसे एहसान कर रही हो।

"अरे पर...।" मैं कुछ बोल नहीं पाई और वो दोनों सो चुके थे।

"कल तोरण को बताऊँगी कि कितने बुरे हैं ये लोग, मुझे बताया भी नहीं हुँह।" मैंने बड़बड़ाई।

खुद भी सो जाने का जी चाहा, पर लेटकर सोचने लगी तोरण के बारे में। आज तक मैंने तोरण का मतलब एक रंग-बिरंगा सजावटी सामान ही जाना था, जिसे त्योहारों पर शुभ के लिए लगाया जाता है।

सच ही है, जिंदगी ही रंगीन लग रही इसके आकर सज जाने से तो। मैं लेटे-लेटे मुस्कराई।

मैं भी चादर में मुँह लपेटकर कोपभवन में पड़ गई, जिसके बाद सुबह जिसकी उम्मीद नहीं थी वो हुआ।

"मुझे नहीं पता था पाशु कि तूने कुछ नहीं खाया होगा।" ये गीतू थी।

"बता तो सकती थी न?" मैंने कहा।

"हाँ, अब छोड़ ना।" गीतू बोली।

"इन दोनों का?" मैंने कहा।

"ये नहीं आएँगे तुझे तो पता ही है इनका, तू ही बात कर ले। जो जैसा है अपने लिए है। मुँहसड़े हैं ये तो वही रहेंगे।" वह बोली।

'इनके बिना मन भी कहाँ लगता है, बोरिंग हो जाएगा सब।' मैंने सोचा।

'क्या इनको तोरण के बारे में बताना चाहिए...।' सुबह के नाश्ते पर मैं सोच रही थी।

पहली ही कन्वर्सेशन में तोरण दिमाग से होते हुए सीधा पेरिफेरल नर्वस सिस्टम में उतर गया था और हार्ट के एकदम पास जाकर अपना भोंपू बजाने लगा था। जैसा नाम वैसी बातें, रंगीन-सी, ये सब सोचते हुए मैं वो पराठे खाए जा रही थी, जिनको दूर से ही देखकर तौबा कर लेती थी।

"का घूरत हो टुकुर-टुकुर?" सुमेधा ने अदा के साथ पूछा, तो हँस पड़े हमारे मौजूद सहायकगण।

"कुछ नहीं।" मैंने कहा।

'अभी नहीं बताऊँगी इन्हें।' मैंने सोचा।

"कल किसका फोन था इतनी देर तक?" सुम्मी ने पूछा।

"रांग नंबर का।" मैंने साफ झूठ बोला, जबकि मैं जानती थी उसका फोन तो कल मैंने उठाया ही नहीं।

"अरे हमें बात करनी थी यार।" सुमेधा ने कहा।

"अपने पास रख लो चाहे सिम।" मैंने एकदम कहा।

"तेरे से ही कर लेंगे ना।" वह घूरते हुए बोली।

"ओके।" मैंने मन ही मन उसे गाली देते हुए कहा।

मन में तमाम पहेलियाँ चलती रहीं, जिनका जवाब ढूँढ़ते हुए मैं कॉलेज बस यानी कि मेरे ख्यालों के विमान में चढ़कर कब कॉलेज पहुँच गई, कोई गवाह नहीं।

एक बार कॉलेज में घुसने से पहले चेक किया मैंने, कोई कॉल या मैसेज नहीं था तोरण का।

"अरे पर होगा क्यों, वो तो शाम को करने वाला था न।" मैंने खुद को जवाब दिया।

"...पर हो भी तो सकता था न।" मैंने फिर खुद ही से सवाल किया और फोन ऑफ न करके साइलेंट पर रखकर निकल पड़ी क्लास की तरफ।

मैं बधाई देना चाहती थी खुद को इसके लिए, तोरण के साथ या फिर अकेले में जिसके आने से सालों के अधूरेपन को अब पूरक मिलने लगे थे। मानो अब हवा एकदम कान पर आकर वायलिन बजाती थी, रात के तारे दिन में भी आकर मुझसे घंटों उसके बारे में बात करने लगते। जिन फूलों के पास रोज गुजरने पर भी वो मुझसे बात न करके बस अपने काम, अपने फोटोसिंथेसिस में लगे रहते थे, वो मुझे सबसे पहले मुस्कराकर हेल्लो कर रहे थे।

"कहाँ खोई है, अंदर नहीं चलेगी क्या आज?" गीतू ने मानो मेरे ख्यालों पर खौलती चाय डाल दी थी और मैं बिलबिला उठी।

"क्या है, चल तो रही हूँ," कहकर बड़बड़ाते हुए चल दी और गीतू भी आने लगी।

आज पूरे टाइम आ रहे रांग नंबर के मैसेज पर रिप्लाई देने का मन नहीं कर रहा था। इसके उपाय के लिए मैंने खीझकर बहुत देर बाद एक रिप्लाई किया कि पैक नहीं है, मैसेज मत करो।

"अरे यार।" त्यौरियाँ चढ़ाते हुए मैंने फोन पटका, तो प्रीति ने देख लिया कि मैं किसी पर झल्ला रही हूँ।

"क्या हुआ, क्यों पटक रही है फोन?" प्रीति ने पूछा।

"वही, बावर्ची।" मैंने कहा।

"तो कर दे न रिप्लाई, क्यों नहीं कर रही, कोई बात हुई क्या इससे?" वह बोली।

"नहीं, मन नहीं कर रहा।" मैंने कहा।

"वैसे तू कहती है कि तू बोर हो जाती है, तुझे टाइम देने वाला कोई नहीं, अब है तो फिर...?" वह बोली।

"तो एक बात बताओ..." मैंने कुछ सोचकर बावर्ची से मैसेज करके कहा।

"जी, पूछिए तो सही।" रिप्लाई आया।

"मैं तुम्हें अभी तक बावर्ची ही कहती हूँ, नाम क्या है तुम्हारा?" मैंने पूछा।

"हहहहाहा, बावर्ची भी क्या बुरा है?" उसने कहा।

"फिर भी।" मैंने कहा।

"साहिल।" उसने बताया।

"ओह शिट, क्लास है पाशना।" प्रीति ने हाथ मारा तो मुझे याद आया, आगे प्रोफेसर हैं।

फिजिक्स की क्लास चल रही थी। कैथोड की स्टडी पर डीप सर्च करने में जहाँ सारी क्लास घुली पड़ी थी जैसे किसी सोल्यूशन में, वहीं मैं बावर्ची से मैसेज-मैसेज खेल रही थी।

"वैसे, नाम तो आपने भी कहाँ बताया कभी।" उसने कहा।

"हहहाहा, अच्छा सुनिए, मैं थोड़ी देर में बात करती हूँ।" मैंने कहा।

"कॉल जरूर कर लीजिए आज, आपने कब से नहीं किया कोई मिसकॉल भी।" वह बोला।

"ठीक है।" मैंने रिप्लाई करके फोन एक तरफ रख दिया।

‘वैसे भी मेरे रूममेट बोर हो रहे, कर लेंगे बात तो सब्र आ जाएगा उनको भी।’ यह सोचकर मैं सिमटी अपनी सीट पर और प्रोफेसर को धन्य कर देने को उनकी बातें ध्यान से सुनने लगी।

सीजनल टेस्ट इसी हफ्ते से शुरू हो रहे थे 3rd सेमेस्टर के और मैथ्स तो हो ही रहा था, लेकिन मुझे अब कैमिस्ट्री और मैथ्स के लिए टाइम टेबल बनाना था। इस वक्त साहिल और तोरण उस कॉफी के जैसे थे, जो बस ऑर्डर ही करके बैठी थी मैं, न टेस्ट पता था न कलर। साहिल तो एक ऐसी अनजान शख्सियत था, जिसके बारे में कुछ भी तो नहीं पता था। फिर, साहिल के मायने हम चारों की जिंदगी में एक जैसे बँटे हुए थे या शायद कहें कि कोई मायने असल में थे ही नहीं। …और तोरण! उसको लेकर कहीं न कहीं मेरी फीलिंग्स अलग दरिया ही बहाने लगती थीं।

यूँ तो साहिल को भी टर्म एंड कंडीशन अप्लाई मेरे पाले में लुढ़का देने में कोई मुश्किल नहीं आनी थी। सिम मेरा था, मेरे पास था, फिर भी बस उसको लेकर हमेशा ही एक साझा फीलिंग आई। इसे ईमानदारी कहूँगी मैं अपनी, क्योंकि मैंने उनको थोड़े ही कभी कहा कि बस मैं करूँगी चैट।

हॉस्टल पहुँची, तो अचानक साहिल का फोन आ गया। गीतू को उत्साहित देखकर मैंने उसको फोन थमा दिया। मैं सोच रही थी, साहिल तो उस बहते पानी जैसा है, जिसे कोई मतलब नहीं कि दूसरी साइड पर कौन है, बस जहाँ रास्ता ले जाए बहकर उसी नदी में मिल जाता है। ये हमारी ताश की गड्डी का वो इक्का था, जिसे बस बेगम से मतलब था, इस बात से नहीं कि बेगम है किस बिसात की। सभी से काम चला लेना होता था इसे। अब हॉस्टल आकर फोन सुमेधा ने ले लिया। जब हम चाय पीने तसल्ली से बैठे और पीने लगे, तो फोन कट चुका था।

इसके तुरंत बाद पापा का फोन आ गया, तो मैं बाहर आ गई। 10 मिनट बाद फोन कटने पर लगा अरे! बताओ कितनी शाम हो गई है। मस्जिदों की अजान की आवाज ने टाइम का भी संकेत बिना फोन में देखे दे दिया और दिन के छिप जाने का मंजर पूरा हो गया। आसमान के पंछी घर लौटने लगे और मेरा मन घोंसलों की तरफ तेजी से बढ़ती उड़ान की ओर।

“अरे।” अचानक मुँह से निकला, जब देखा कि खोए-खोए न जाने कहाँ से मैं ब्रिज पर आ गई थी।

मेरे दो दिन के सुखाए कपड़े जो मैं उठाना भूल गई थी, यहाँ पोंछा बने धूल में लिपटे जमीन छू रहे थे।

ओह, मैं तो इन्हें ले जाना ही भूल गई थी।

मैंने चेहरे की चौड़ी मुस्कान को समेटकर ध्यान अपने कपड़े गिनने में लगाया। गिनती कम होती, तो भी कोई अचरज वाली बात नहीं थी, क्योंकि दो दिन से उनका होश मुझे नहीं था और हॉस्टल में कपड़े गायब हो जाना एक आम किस्सा था।

‘थैंक गॉड! पूरे हैं कपड़े, स्पेशली मेरी ब्रे जींस।’ मैंने कपड़े गिनकर मन ही मन भगवान का धन्यवाद किया, जिसके बाद टाइम देखा तो सात बजे थे।

“तोरण का फोन भी आने वाला होगा।” मैंने खुद से कहा।

कमरे में इसलिए ही वापस जाने का मन नहीं था, तो वहीं वेट करने लगी मैं। इस बीच फोन की रिंग ने शरीर में बिजली-सी दौड़ा दी।

“जी बस आज तो पूरा दिन सात बजने के इंतजार में काट गए हम।” वही चिर-परिचित-सी खनक सुनकर जैसे बरसों से खोया कोई झुनझुना बज उठा मेरे दिल में।

“कितने झूठे हो तुम।” मैंने मुस्कराते हुए कहा।

“सौ फीसदी सच है ये, गुगल कर लो चाहे।” वह बोला।

“ये तुम बार-बार गूगल के पीछे इतने कॉन्फिडेंस के साथ क्यों पड़े रहते हो?” मैंने पूछा।

“पुरानी कहानी है मैडम।” वह बोला।

“पैसे-वैसे खिलाते हो क्या गूगल को?” मैंने कहा।

“अजी हम कहाँ इस काबिल, वो तो आप जैसी क्यूटी होती हैं, बिना पैसे दिए जाने किस-किस को खरीदे रहती हैं।” वह नजाकत से बोला।

“फ्लर्ट अगेन।” मैंने इतराकर कहा।

“कभी तो फ्लर्ट करने दिया करो आप।” वह बोला तो हँस पड़ी मैं।

“वैसे भी, आप तो सच को भी फ्लर्ट की कैटेगिरी में रखते हो, कुछ तो भगवान से डरो।” वह बोला।

“आप झूठ पे झूठ कहे जाएँ और मैं थोड़ा भी कुछ कहूँ तो भगवान का डर, घोर कलियुग है भई, घोर।” मैंने मुस्कराकर कहा।

“गोलगप्पे खाओगी?” वह अचानक से बोला तो मेरा मुँह जैसे खुला का खुला रह गया।

“क्या, गोलगप्पे?” मैंने बड़ी बड़ी आँखें करते हुए कहा।

“पहले मुँह बंद कर लो।” वह बोला, तो मुझे एहसास हुआ कि मुँह तो वाकई में खुला है।

“नरक में भी जगह न मिलेगी तुम्हें।” मैंने रोने का अभिनय करते हुए कहा।

“पर क्यों?” वह हैरान होने का नाटक करते हुए बोला।

“रात के टाइम ऐसी चीज का नाम लेने की सजा भगवान तुम्हें जरूर देगा एक दिन।” मैंने कहा, तो जोर-जोर से, बहुत देर तक हँसता रहा वो।

“इतना प्यार गोलगप्पों से?” वह खुद को संभालते हुए बोला।

“अच्छा चलती हूँ डिनर का टाइम हो रहा है।” मैंने देखा फोन में आठ बजने वाले थे, पढ़ना भी था।

“अभी न जाओ छोड़कर, म्मम्म हहहम्म्म हहम्म्म मम्म हम्महम्म्मम्म।” वह गुनगुनाने लगा।

“जो भी है।” हँसते हुए फोन रख दिया मैंने।

बात तो सिर्फ यहीं तक हुई। चलते-चलते “अभी न जाओ छोड़कर कि दिल अभी भरा नहीं”, मेरे कानों में वायलिन बजा रहा था। मैं चाहती थी कि वक्त बस यहीं थम जाए और उसके फोन के अंदर घुसकर मैं उसको छू आऊँ। बस वो वक्त इसी तरह हमेशा आसपास फिर-फिर आता रहे और मैं यूँ ही सारी जिंदगी तोरण को रोज नई बातों के पैगाम देती रहूँ। तोरण के तौर-तरीके मैं अब रोज उस सात से आठ बजे के वक्त में जान रही थी और देखती जा रही थी कि खुद में मैं खाली हो रही हूँ और वही भरता जा रहा है। उस पक्के स्ट्रांग कोवालेंट बॉन्ड की तरह, जो लगा था किसी स्ट्रांग रेअक्टेंट ग्रुप के साथ और मजबूती दे रहा था शायद कभी न टूट सकने वाली। वो बॉन्डिंग जिस पर कोई टेंप्रेचर, कोई प्रेशर, कोई एसिड, कोई बेस रियेक्ट ही न कर पाए।

वोल्टेज 440

टेस्ट कल से शुरू हो चुके थे और टाइम टेबल को पूरे मन से फॉलो कर रही थी मैं। उसमें तो कमी नहीं रखी थी, पर न जाने कितने कॉल उस सात से आठ के टाइम से अलग मैंने उसे डायल किए और कट कर दिए, ये सोचकर कि वो क्या सोचेगा। न जाने कितने ही मैसेज उसके लिए टाइप करके भी उसको नहीं भेजे। न जाने कितनी गजलें, कितनी नज्में उन डायरीज में चिपकाकर हमेशा के लिए अलमारी में सबसे नीचे रद्दी के साथ दफना दीं, इसका अंदाजा लगाना उतना ही नामुमकिन रहा है मेरे लिए, जितना जुगनुओं की रोशनी में किसी छोटे-से कीमती जेवर को घास में तलाशना। मेरा सबकुछ उसके आने से इस कद्र हसीन होता जा रहा था कि उसे अपना गुडलक बना लेना मैंने अपनी खुशनसीबी माना था।

कुछ झटके जिंदगी के अहम थपेड़ों जैसे न होते हुए भी अपनी जगह दिल की डायरी में इस तरह बना जाते हैं कि फिर कोई महक उनसे हमारा पीछा नहीं छुड़वा सकती।

"उफ, कल सुबह टेस्ट है और मुझे कुछ नहीं आता।" गीतू ने कहा मुझसे, जैसे ही मैंने कमरे में आकर पाँव पसारे।

"मेरी भी नहीं हुई कोई तैयारी।" मैंने झूठ बोला।

"अरे रहने दे, मार्क्स तो तेरे मस्त आते हैं।" सुम्मी ने ताना दिया।

"हाँ, पर वो चीटिंग करके आते हैं।" मैंने फिर से झूठ कहा।

"आजकल शाम को सात से आठ बजे किससे गुटरगूँ चलती है?" वह बोली, तो कान और चेहरा लाल पड़ गया मेरा।

"मे.....री?" मैंने हकलाते हुए कहा।

"साहिल तो नहीं है वो?" सुमेधा ने विश्वास के साथ फिर कहा।

"कोई है क्या, जो तूने हमें नहीं बताया... हूँ?" गीतू ने पूछा।

"नहीं तो, कोई नहीं है।" मैंने जैसे सकपकाते हुआ कहा।

सुम्मी ने अचानक मेरे हाथ से फोन ले लिया और चेक करने लगी और इससे पहले कि मैं उससे वापस छीन पाती, गीतू और सुमेधा ने मेरे दोनों हाथ पकड़कर मुझे बेड पर धकेल दिया और मुझ पर गद्दा डालकर चढ़ बैठे।

"नंबर नाम से सेव है सात से आठ वाले कॉल का, देख जरा।" सुमेधा ने मेरे ऊपर बैठकर अंगड़ाई ली।

"तुम तीनों को मजे सूझ रहे, यहाँ मर जाऊँगी मैं। शहीद होने वाली हूँ।" मैंने बड़ी मुश्किल से दबे-दबे ही मरी-सी आवाज निकाली।

"तोरण है कोई।" सुम्मी ने गला फाड़कर एलान किया, तो मेरे ऊपर पड़ा भार कुछ कम

हुआ, जिसके बाद मुझे साँस लेने दिया गया।

"तो जीजा का नाम तोरण है, बताया क्यों नहीं बे... बोल?" सुम्मी ने आकर तकिया दे मारा मेरे मुँह पर।

"बता देती, पर ऐसे गद्दा डालकर कौन बैठता है भला, दम निकल रहा था मेरा।" मैंने कहा।

"डोंट चेंज द टॉपिक।" गीतू बोली।

"तो जीजा है तोरण, दीवारों पर टँगा तोरण हहहहाहा।" सुमेधा हँसने लगी जोर-जोर से।

"चुप कर।" मैंने गुस्सा किया उस पर।

"ऊऊऊऊ गुस्सा आ रहा है... वैसे है कौन वैसे ये।" सुम्मी बोली।

"ट्रीट देगी अब तू पाशना।" सुमेधा बोली।

"किस खुशी में?" मैंने कहा।

"जीजा मिल गया हमारा, इसलिए।" वह बोली।

"तुम लोग तो ऐसे कह रहे जैसे फेरे हो गए हों मेरे।" मैंने कहा।

"वो भी हो जाएँगे जानू, तू हाँ कर बस, घर से मँगवा लेंगे लड़के को।" गीतू बोली।

"उठा लेंगे नहीं कह रही क्या?" मैंने दाँत दिखाए, "वो मेरा जानू2 है, जानू1 तो तुम्हारा-मेरा कॉमन प्यारा-दुलारा साहिल ही है न।"

रात को मैंने पढ़ने के लिए सख्ती से रिजर्व कर दिया, इसके लिए मैं अपने दिल को भी तहे-दिमाग से धन्यवाद करना चाहूँगी कि उसने मुझे पढ़ने दिया। रात के 2 बजकर 15 मिनट हुए थे और मैं किताबों पर एहसान करके उनको अब एक तरफ रखकर सोने की तैयारी में थी।

काजल के अँधेरे-सी सुरमई रात ने फिर नीले आसमान को चारों तरफ से घेरा हुआ था, जिसकी उधारी चुकाने आज की शमा फिर जल्दी ढल जाने की पुख्ता कोशिश में थी और मैं रात की पनीली आँखों के नीचे अपना छोटा-सा बिस्तर लगाकर सो गई।

मेरे मन-मस्तिष्क को जैसे लकवा मार गया था और पूरे शरीर का बस एक ही हिस्सा काम कर रहा था- दिल। जब भी तोरण का ख्याल आए, ये उस ओवर स्मार्ट बच्चे की तरह फुदकने लगता, जिसकी फेवरेट मैडम क्लास में आ गई हों और वो बेखौफ अपनी ही चलाना अपना परम अधिकार समझता हो। टेस्ट के मार्क्स डिस्प्ले पर साथ के साथ आ गए थे और अब इसके लिए मैं अपने दिल के साथ-साथ अपनी किडनी, लिवर, इंटेस्टाइन, WBCs, RBCs और अपनी बॉडी को चलाने वाले हर पार्ट को थैंक्स करना चाहूँगी, क्योंकि उन्होंने तोरण को इसके बीच नहीं आने दिया था, नहीं तो त्रिदेव खुद मुझे फेल होने या किसी दिन कैमिस्ट्री लैब में शहीद हो जाने से न रोक पाते।

मुझे याद हो आया कि सिम जाने कब से मेरे पास पड़ी है, उसको शिफ्ट कर दूँगी इनमें से किसी के फोन में। साहिल से बात हो रही थी, जिस सब में मैं सिम को अपने फोन से शिफ्ट करना भूल गई थी। तोरण के साथ वक्त खूबसूरत होता जा रहा था और 3हम्स्त्र सेमेस्टर के एग्जाम आने में बस कुछ ही वक्त बाकी था।

"ओह, कल संडे है।" मैंने अंगड़ाई लेते हुए कहा।

"अरे हाँ, पाशु, कल हम तीनों मूवी जा रहे हैं, चलेगी क्या?" सुमेधा ने कहा।

"ये कब बना तुम लोगों का, मुझे बताया भी नहीं।" मैंने हैरान होकर कहा।

“दो-तीन दिन पहले बना था, अब बता तो रहे हैं।” सुम्मी बोली।

“नहीं, मुझे असाइनमेंट बनाना है, जरूरी है।” मैंने मुँह सिकोड़कर कहा।

“रात को पार्टी भी कर रहे, उसमे शामिल हो लेना पर… मन हो तो।” कहकर तीनों बाहर चलते बने।

“कमाल है स्सालों के दोगलेपने में।” मैं बुदबुदाई।

ये मेरी उम्मीद से परे था, लेकिन उन तीनों पर मेरे साथ आने, न आने से कभी कोई फर्क नहीं पड़ा था, सो आज भी नहीं पड़ रहा था। अजीब है न, एक तरफ हम मानते हैं कि उम्मीदें मत रखो, एक्सपेक्टेशन ऑलवेज हर्ट्स, और दूसरी तरफ हम दुखी हो जाते हैं अटैंशन न मिलने से। वो तीनों अपनी मूवी की प्लानिंग में लगे थे और मैं साहिल से चैटिंग में।

“तो मिस्टर बावर्ची…।” मैंने कहा।

“बड़े दिनों बाद आज बावर्ची कहा आपने मुझे।” उसने कहा।

“ऐसे ही बस।” मैंने कहा।

“वैसे क्यों, तुम अपना निकनेम मिस कर रहे थे क्या?” मैंने पूछा।

“बिलकुल मैडम, मुझे तो अच्छा लगता है जब आप मुझे बावर्ची बुलाती हैं।” वह बोला।

“आपने चिंता क्या की, मैं तो अब आपको यही बुलाऊँगी।” मैंने ताल ठोंककर कहा।

“छोड़ रहा मैं।” वह अचानक बोला।

“अरे, क्यों?” मैंने कहा।

“कहीं और करूंगा अब।” उसने कहा।

“सुबह से रात हो जाती है यहाँ, मिलता कुछ है नहीं। एक दोस्त से बात हुई है, देखो, उसकी वाली जगह ही कर लूँ सोच रहा।” वह बोला।

“ओह, कोई कंपनी है क्या?” मैंने पूछा।

“छोड़ो, आप अपना बताओ कुछ।” वह बात बदलते हुए बोला।

“अरे पाशना, चल, जल्दी खाना खाने।” गीतू की आवाज आई तो मैं फोन छोड़कर डिनर के लिए चली गई।

तोरण का मुहूर्त हमेशा सात ही बजे होता था, जिसके बाद अगले 23 घंटे उसकी बातें सोच-सोच कर ही निकल जाते थे। पर आज उसका कोई कॉल नहीं आया था और मैं असमंजस में थी कि करूँ या न करूँ। यूँ तो उसका कॉल न आना मेरे लिए बिना ऑक्सीजन लिए पहाड़ चढ़ने के जैसा था, फिर भी मैंने उसको कॉल नहीं किया था यह सोचकर कि शायद किसी काम में बिजी होगा।

वैसे तो मेरे शेड्यूल के चलते ये कुछ ज्यादा ही हो गया, पर फिर भी बीच में मिला एक पल का टाइम भी उसी के नाम लिख दिया जाता था, क्योंकि मेरी जिंदगी के इंद्रधनुष का लाल रंग जो था वो। सुइयों के क्लॉकवाइज डायरेक्शन ने अब टाइम को 9 बजकर 5 मिनट तक आने पर मजबूर कर दिया था और फोन ऑफ करके मैंने अपने असाइनमेंट बनाना शुरू कर दिया था। आज ही हो जाए ये 12 तक तो कल फ्री रहूँगी मैं, पर मूवी नहीं जाऊँगी ये पक्का है। आखिर ये मेरे बिना प्लान बना कैसे सकते हैं, सोचते-सोचते मैं काम कर रही थी, फिर नींद के झोंके आने लगे।

सुबह जिस एंगल में हुई देखकर हैरान थी मैं भी, क्योंकि तोरण का रात दो बजे का

मिसकॉल पड़ा था।

"अरे।" देखकर कहा मैंने और उसे कॉल लगाया।

"हेल्लो।" वह उनींदा-सा बोला।

"रात के दो बजे?" मैंने कहा।

"अच्छा वो, मुझे तो बस एक जरूरी बात पूछनी थी।"

"बॉयफ्रेंड नहीं है मेरा।" मैंने उसके कुछ पूछे बिना ही जवाब दिया।

"ओह त्तेरी।" वह जोर-जोर से हँसने लगा।

"क्या हुआ?" मैंने पूछा।

"आप तो अंतर्यामी निकलीं।" वह बोला।

"सिंगल तो आप अच्छी नहीं लगतीं, यहाँ हमारे जैसों के बारे में भी कुछ सोचिए।" उसका कहने का अंदाज इतना फनी था, मानो मिस्टर बीन का कोई एपिसोड।

मेरे दिल की खिड़की से हाथ डालकर कोई कुछ चुरा रहा था और अब मैं बिना किसी कन्फ्यूजन के कह सकती थी कि उसने मेरे दिल के सॉन्ग को रिवर्स मोड पर लगाकर उसका रिमोट ले लिया था।

"प्रपोज कर रहे हो?" मैंने साफ कहा।

"हाँ।" वो हिचकते हुए बोला।

"मंजूर है," कहकर मैंने हँसते हुए फोन काट दिया।

शायद मैं अपनी ही हिम्मत पर डर गई थी। किसी को भी ये सब बताए बिना मैं नहाई और नाश्ता किया। वापस आकर देखा, तो बावर्ची का मैसेज पड़ा था।

"नहाकर अदाओं को यूँ न छेड़ो, फटें होंठ तो बोरोप्लस ले लो!"

"अबे, नहाने के जस्ट बाद ये मैसेज, परफेक्ट टाइमिंग।" मैंने पढ़कर सुनाया तो मेरे रूममेट्स गला फाड़कर चिल्लाने लगे, मानो मक्खियाँ भिनभिना रही हों चारों तरफ।

"तू लगा अपने इस प्यारे-दुलारे, नहीं-नहीं हमारे इस प्यारे-दुलारे बावर्ची के साथ अपना मन, हम मूवी होकर आते हैं।" सुमेधा बोली।

"चारों तरफ देखकर जाना, वार्डन बहुत टकराती है तुमसे।" मैंने अलर्ट किया।

"देख लेगी तो एक टिकट तेरा वाला इसको दिलाकर अपने साथ ही बैठा लेंगे।" गीतू बोली और हँसते हुए चले गए तीनों। इसके बाद मैं भी अपना बचा-खुचा असाइनमेंट लेकर बैठ गई।

खुली खिड़की के पास चेयर डालकर बैठो, तो हल्की हवा के झोंके आकर लगते रहते हैं, जिनका अपना अलग ही आनंद होता है। जहाँ से ये हॉस्टल शुरू होता था, उसकी बाहरी सतह पर सामने की तरफ देखा जाए तो भी बस मुश्किल से एक पीजी, जिसमें कुछ लड़के रहते थे। कुछ दूरी पर एक रिचार्ज और जनरल सामानों की दुकान के अलावा एक गली दिखती थी, वो भी आधी। अगर पूरा दिन उसमें झाँका जाए, तो कभी-कभार इक्का-दुक्का कोई आता-जाता दिख जाता था, नहीं तो वो भी नहीं। बराबर ही हाल रिचार्ज की दुकान से हॉस्टल की तरफ देखने पर था। पाँच-दस मिनट कोई टकटकी लगाकर देखे, तभी इतनी दूर से हॉस्टल में होने वाली कोई हरकत दिखाई दे, वरना तो चलती-फिरती कोई बड़ी लड़की तक नहीं। मैं पिछले 25 मिनट से अपना असाइनमेंट बना रही थी और फोन को हाथ लगाए भी मुझे लगभग उतना ही वक्त हो गया था कि अचानक साहिल का मैसेज आया।

"मैं आपके हॉस्टल की तरफ ही आया हूँ, मिलेंगी आप मुझसे?" मैं चौंक गई पढ़कर।

क्या करूँ, क्या करूँ, सोचते-सोचते असाइनमेंट छोड़कर यहाँ-वहाँ घूमने लगी मैं।

"मेरे फ्रेंड्स यहाँ नहीं हैं, हम सब साथ ही में मिल लेते आपसे।" मैंने हड़बड़ाहट में रिप्लाई किया।

"उनके साथ फिर कभी मिल लेंगे।" वह बोला।

"मेरा दोस्त जानना चाहता है कि आप कौन हो, बस।" वह फिर बोला।

"ठीक है, आप आ जाओ।" मैंने कह दिया।

दिमाग की बारह बट हो चुकी थी इसी चक्कर में और असाइनमेंट का ख्याल अब काफूर हो चुका था मेरे मन मंदिर से। 'क्यों न इन तीनों के बिना ही आज साहिल से मिल लिया जाए,' मैंने सोचा, 'हुँह, मेरे बिना मूवी चले गए न, एक बार भी नहीं सोचा कि मुझे कितना बुरा लगेगा। बस, तो फिर मैं क्यों इनके लिए वेट करूँ, सिम मेरा, फोन मेरा। मैं भी आज इन्हें एक सरप्राइज दूँगी।' यह सब सोचते हुए मैं बाहर जाने के लिए रेडी होने लगी। मैं खुश थी, एक्साइटेड थी और चहक रही थी, क्योंकि पहली बार मैं अकेले ऐसे किसी अनजान लड़के से मिलने जा रही थी।

"जाने वो कैसा होगा रे" म्यूजिकल साउंड-सा मेरे कानों में गाना बजने लगा था। वैसे भी कहानी कोई भी रही हो, म्यूजिकल साउंड अपनी ही एक खासियत रखता है। कुछ भी हो रहा हो, होने वाला हो, हो चुका हो, म्यूजिक के बिना कभी पूरा नहीं होता। कहते भी हैं न कि डरे हुए हैं तो गुनगुनाइए, खुश हैं तो गाइए, परेशान हैं तो नाचिए, पर शर्त सिर्फ एक है कि सबकुछ भूल जाइए। नाचकर अपनी खुशी का इजहार कीजिए और नाचकर ही अपने दुख को कुछ देर के लिए धुनों के साथ बस बह जाने दीजिए। म्यूजिक ने अपनी जगह ही कुछ ऐसी बनाई है। हर मौसम, हर मूड, हर स्वभाव के लिए, हर जगह अपने तार दिलों तक छेड़ जाने की जो शक्ति म्यूजिक में है, वो और किसी में भला कहाँ। रह गया है कहीं बस म्यूजिक की तरफ से एक नया स्लोगन- "मुस्कराइए आप उ.प्र. में हैं, पर म्यूजिक के साथ"।

पता नहीं मैं उसको कैसी लगूँगी, न जाने वो मुझे देखकर कैसे रियेक्ट करेगा।...

पता नहीं कौन होगा... मेरा ड्रेस मुझ पर सूट कर रहा है या नहीं... इस तरह के सैकड़ो सवाल थे, जिनके जवाब ये आने वाली मुलाकात ही दे सकती थी। तैयार होकर जितने सेकंड बीते, उतनी ही बार मैंने खुद को आईने में देखा था, महसूस किया था किसी नये एडवेंचर को। 'बुरा तो मानेंगे ये लोग भी जरूर, कहेंगे कि मैं अकेले मिल आई उससे, पर मुझे छोड़कर मूवी जाना भी तो गलत था न,' मैंने अगले ही पल खुद को समझाया।

रेडी होकर अब मैं मैसेज के इंतजार में खिड़की पर वापस आ गई थी। लगातार देखते मेरी नजर गई रिचार्ज शॉप पर और तभी दिमाग में आया कि क्यों न आज इसको बुद्धू बनाया जाए। दो-तीन लड़के खड़े वहाँ से ताक रहे थे हॉस्टल की तरफ, उन्हें देखकर दिमाग में आने वाले ख्याल को ही दिमाग की हरी बत्ती जलना कहते हैं।

"कहाँ हो आप, आ गए क्या?" मैंने मैसेज किया उसको।

"हाँ, बस आ ही गया समझो, बाहर आओ आप।" वह बोला।

"आती हूँ मैं। रिचार्ज शॉप पर आ जाना आप, मैं वही आऊँगी," कहकर मैं खिड़की के पीछे से पर्दा डालकर दीवार से सटकर खड़ी हो गई।

"मैं आ गया हूँ, कहाँ हो आप?" उसका मैसेज आया, तो मैंने झाँककर देखा।

"वार्डन आने नहीं दे रही यार, कैसे आऊँ?" मैंने मजे लेते हुए कहा।

"इतनी लड़कियाँ तो आ रही हैं।" वह बोला।

तभी उसका कॉल आ गया।

"क्या हुआ, अब मैं आ गया हूँ, आप कैसे भी करके आ जाओ न।" वह बोला।

"ऐसा करो, सबसे पहले आप रिचार्ज वाले की शॉप पर आओ, मैं वहीं आऊँगी।" मैंने उसकी शक्ल देखने के लिए प्रयास करते हुए कहा।

मन के अहाते में मानो वो लम्हा उतर रहा था, जिसमें धड़कन मेरे दिल के पीछे सिरहाने लगाकर कहीं छुप रही थी, ठीक उसी तरह जैसे मैं पर्दे के पीछे से एकटक निहार रही थी दुकान पर टहलने वाले हर शख्स को।

"ओके" कहकर वो आया रिचार्ज शॉप पर, जिसे देखने को मैं मानो किसी चाँद के खिड़की पर उतरने का इंतजार कर रही थी। मैंने देखा कि वो एक लंबे कान वाला, लम्बा, पतला-सा गंदी-सी शक्ल वाला नौजवान था, जो डसे हुए काले चेहरे के साथ-साथ हमारी चारों की और सबसे ज्यादा मेरी किस्मत को जमीन में धँसा गया था।

"हाय रे फूटी किस्मत।" मेरे मुँह से अकस्मात निकल पड़ा।

उसको देखकर ही जैसे कुछ गिरकर चूरा हुआ था मेरे अंदर। इसके बाद मैं उससे मिलने वहाँ जाने का विचार पूरी तरह त्याग चुकी थी कि मैंने कुछ और देखा।

हॉस्टल का मेन स्वीपर उससे आकर हाथ मिलाने लगा और बातें शुरू हो गई जैसे पहले से काफी अच्छी जान-पहचान हो दोनों में। कुछ पल जैसे आशियाना ठहर गया वक्त का। एक मिनट, एक मिनट! ये इस स्वीपर का दोस्त है! इसका दोस्त इसे अपने यहाँ जॉब दिलाने वाला था, मतलब कल रात हमने जो किसी नए स्वीपर की जॉइनिंग की बात असिस्टेंट वार्डन के मुँह से सुनी थी, वो तो सच थी ही, वो नया आने वाला स्वीपर साहिल है। दिमाग ने जैसे आज टैलेंट का असली उपयोग कर लिया था।

चाँदनी फैली तो थी, पर अरमानों की होली जलकर राख हो गई मानो। इस चाँद के उतरने से तो न उतरना ठीक। क्या मुँह दिखाऊँगी मैं इन सबको और क्या दिखाएँगे हम सब बाकी सब को। किसी ने बिना हाथ हिलाए मुँह पर कसकर तमाचा मार दिया हो, ऐसा एहसास हुआ मुझे और बिच्छू काटे जैसा शरीर में करंट दौड़ गया।

इतने में फोन फिर आया।

"मेरा फ्रेंड भी आ गया है, अब तो आ जाओ आप।" वह बोला।

"अब शॉप पर जो दो लड़कियाँ आएँगी, उनमें से छोटी वाली मैं ही हूँ," कहकर मैंने फोन कट कर दिया।

फोन बजता रहा और मेरा दिमाग जैसे शून्य में जाता रहा। तिलमिलाहट, गुस्सा, खीझ, हँसी का मिलाजुला जूस-सा गटक रही थी मानो मैं।

"कपड़े चेंज कर लूँ।" मैंने सोचा, जब काफी देर हो गई बैठे बैठे।

"उठकर देखा तो फोन में आठ मिसकॉल और एक मैसेज था। मैसेज ओपन किया मैंने।

"आप तो बहुत स्मार्ट हो यार, मैं बहुत लकी हूँ कि मेरी बात आपसे हुई।" मैसेज पढ़कर मानो एक लहर-सी आई मन में खीझ की और मैंने फोन लगा दिया उसे।

"यू आर डैम स्मार्ट यार।" फोन उठाते ही वो बोला।

'जाने किसे देखकर कह रहा ये बेवकूफ, पर चलो, जाने कितनी लड़कियाँ जाती हैं हॉस्टल की वहाँ, देखा होगा किसी को।' मैंने सोचा।

"थैंक्स।" मैंने कहा।

"पहले तो मैंने सोचा मैं कैसे पहचान पाऊँगा आपको, पर जब आपने आकर मेरे फ्रेंड को टॉफी दी और फिर मुझे भी, तो मैं समझ गया कि वो आप ही हो।" वह खुश होकर बोला।

"अच्छा।" मैंने हँसते हुए कहा।

'अब इस गधे को कौन स्माइल करके टॉफी दे आया? हद है मेरे हॉस्टल की लड़कियों की भी, मैं तो इसे चप्पल मारकर अपनी चप्पल तक न वेस्ट करूँ।' मैंने दाँत पीसे।

"मुझे तो उम्मीद ही नहीं थी कि मुझे आप जैसी खूबसुरत और हॉट लड़की से बात करने का मौका मिलेगा।" वह बोला।

हॉट वर्ड से मुझे सख्त नफरत थी, ऊपर से उससे होने वाली खीझ मुझे ज्वालामुखी बनाए दे रही थी।

"उम्मीद तो मुझे भी नहीं थी कि तुम हॉस्टल के स्वीपर के ही दोस्त निकलोगे।" मैंने जवाब में कहा।

"अच्छा हाँ, एक गुड न्यूज है।" वह चहकता हुआ बोला।

"अब और क्या है?" मैंने खिसियाकर कहा।

"मैं अब आपके ही हॉस्टल में काम करूँगा।" वह बोला, जैसे कोई बड़ा खुलासा किया हो।

अब मेरे दिमाग की गर्मी वाकई 104° फारेनहाइट तक पहुँच गई थी, जिसके बाद अगला उबाल बस आकर उसको जलाने ही वाला था। एक ज्वालामुखी जो सुलग रहा था धीरे-धीरे, वो मानो फटता-सा महसूस हुआ मुझे और मैंने बिना और देर किए उसे अपने दोस्त को फोन देने को कहा।

"...पर आप उससे क्या बात करेंगी, वैसे वो भी काफी देर से कह रहा है आपसे बात करने को।" वह बोला।

"दो जरा उसे फोन।" मैंने कहा।

"हल्लो।" स्वीपर रवि जो हमारे हॉस्टल के स्वीपर का हेड होता था, उसने बड़े स्टाइल में कहा।

"तुझे शर्म नहीं आती जिस थाली में खाता है उसी में छेद करते?" मेरे अंदर का गुबार अब फूट पड़ा था।

"जी।" वह सन्न रह गया।

"मुझे तो नहीं पता था कि ये तेरा दोस्त है और यहाँ सफाई करने आने वाला है, पर तुझे और इसे तो पता था न? अपने ही हॉस्टल की लड़कियों से चैट करके उन्हें फँसाते हो... अपने दो कौड़ी के दोस्तों से उनकी सेटिंग कराते हो। भोली-भाली लड़कियाँ फँसाने का ये प्रोग्राम कब से चला रखा है? लड़कियों को अटकाते हो काम करने के नाम पर?" मैंने चिल्लाकर कहा उससे, तो सकपका गया वह।

वह बोला, "बहन मैं तो इसको पहले ही मना कर रहा था, पर इसने सुना ही नहीं।" फिर वह कुछ सोचकर बोला, "तुम मत करतीं, तुमने भी तो मजे से चैट किया न इतने दिनों।"

"अच्छा, मुझे तो जैसे सपने आ रहे थे कि ये स्साला स्वीपर है। आइडिया में जॉब करता हूँ

बोला इसने हमसे, देख, वार्डन को बताऊँगी आज सब, तू निकलेगा जब नौकरी से तब तुझे पता लगेगा। फोन दे अपने उस हरामखोर दोस्त को जरा। इसकी नौकरी लगने से पहले ही गई समझ और तेरी तो छूटेगी ही।" मैंने इतने फ्लो में चिल्लाकर बोला कि खुद मैं नहीं समझ पा रही थी अपनी आधी बात।

हालाँकि नौकरी जाने के नाम से रवि इतना डर जाएगा, ये नहीं सोचा था मैंने।

"प्लीज बहन, तू तो मेरी छोटी बहन जैसी है। देख, वार्डन से कुछ मत कहना। हम तो खुद ये नंबर तोड़कर फेंक देंगे। तुझे अब कभी शिकायत का मौका नहीं मिलेगा।" वह बोला।

वह मक्खन लगाने लगा बुरी तरह, "प्लीज, कहना मत वार्डन से। यहाँ कैसे रूल्स हैं लड़कियों की सुरक्षा को लेकर ये पागल नहीं जानता, पर तू और मैं तो जानते हैं न। छोड़ेंगे नहीं ये मुझे अपनी रेपुटेशन के नाम पर। बहन प्लीज, मैं इसे समझाऊँगा। आज के बाद तुझे कोई भी, कभी भी परेशान करे तो तू मुझसे कहना।" उसकी गिड़गिड़ाहट से मुझे मजा आ गया।

"ठीक है, कभी मुड़कर अगर फोन आया तो तू देख लेना।" मैंने कहा।

"हाँ पक्का।" वह बोला।

"भाई समझकर इस बात को यहीं खत्म किए दे रही, पर कभी भी फ्यूचर में मुझे या मेरी दोस्तों को तुझसे या तेरे इस दोस्त से परेशानी हुई या हॉस्टल में आज के बाद कभी किसी भी लड़की को तूने ऐसे फँसवाने की कोशिश की...।" मैंने अधूरा ही कहा था तब तक।

"हम तो कभी तुम्हारे सामने तक से नहीं निकलेंगे बहन," कहकर उसने फोन कट कर दिया और एक तरफ को बदहवास-सी निढाल पड़ गई मैं।

न जाने कितने घंटे मैं यूँ ही बैठी रही। ठहरते वक्त के सूरज ने किरणें डालकर हटा भी लीं मेरे चेहरे से। लालिमा धीरे-धीरे कम होने लगी और गर्म हवा के झोंके अब हल्के-हल्के शीतल होने लगे। मैंने देखा कि मैं खिड़की के पास जमीन पर यूँ ही सोई पड़ी थी, न जाने कब आँख लग गई मेरी।

हड़बड़ाकर उठी, तो देखा चार बजने वाले थे। रूममेट अभी तक नहीं आए थे मेरे और खाने का टाइम निकल चुका था। खुद को जोर से पिंच किया मैंने, सिर्फ इस बात पर यकीन करने के लिए कि आज जो कुछ घंटों पहले घटा क्या वो सच था या कोई हास्यापद सपना। उस पर यकीन करना उसके लिए बहुत मुश्किल होता, जिसे मूर्ख बनाया गया हो जैसे कि इस मामले में मैं और मेरे तीनों रूममेट, जो इस बात से अनजान थे अभी तक। मैं साहिल से मिलकर उन्हें सरप्राइज देना चाहती थी, पर जो मुझे मिला, वो वाला सरप्राइज तो इससे भी बड़ा था।

"आओ आज तुम लोग।" मैं हल्के-हल्के होंठों से बुदबुदाई और अपना असाइनमेंट पूरा करने लग गई, जो अब थोड़ा ही बचा था।

सामने से भी नहीं निकलेगा का क्या मतलब हो सकता है, सोचती रही मैं काम करते-करते। मुझे तो ये जानता ही नहीं फिर...? ओह, जिनसे रिचार्ज शॉप पर मिला, उनको कह रहा होगा, शिट, सोचकर खुद ही हँस पड़ी मैं अकेले ही।

दिमाग के घोड़े दौड़े मेरे। कितना बेवकूफ है ये। पर मैं और मेरे दोस्तों का क्या, इससे भी बड़े बेवकूफ तो आज हम बने हैं। जब मैंने वार्डन की धमकी दी तो कैसे डर गया। ये भी तो कह सकता था कि जिसे कहना है कह दे, मैसेज के रिप्लाई तो इसके पास भी होंगे, नहीं भी होंगे तब भी। नौकरी का नाम लेते ही उधड़ गई बस इसकी। ये भी तो सोचता कि वार्डन हमें कितना डाँटेगी

इस बात पर। हमारे पैरेंट्स को बता दिया तो कितने परेशान हो जाएँगे हम। पर नहीं, अक्ल है ही नहीं। यही सब सोचकर अपनी उस झेंप को मिटाने की कोशिश करती रही, जो उस वक्त तक चढ़ी रही मुझ पर, जब तक कि घड़ी ने शाम के पाँच नहीं बजा दिए और मेरे तीनों रूममेट्स मुँह लटकाए वापस नहीं आ गए।

मैं इतना खोई थी खुद की बात में कि मैंने नहीं देखा वो कुछ परेशान हैं।

"हाउज योर मूवी?" मैंने अपने काम में लगे-लगे पूछा, क्योंकि मैं सर का होमवर्क भी रात के बजाय आज, अभी खत्म कर रही थी अकेले ही।

"बस हो गई मूवी।" सुम्मी बोली कुछ देर रुककर और बाकी दोनों की तो जैसे आवाज ही मर चुकी थी।

मैं उन्हें बताना चाहती थी आते ही सबकुछ। मुझे वो सब उगल देना था, जो आज साहिल को लेकर हुआ था। वो सब एक ही उल्टी में बाहर ले आना था, जो कब से अंदर मचल रहा था मुझमें। मुझे बताना था कि साहिल दरअसल कौन है। मैं ये भी बताना चाहती थी कि साहिल नाम का चैप्टर अब हमेशा के लिए क्लोज हो चुका है और ये भी कि अब बावर्ची का कॉल हमारे पास कभी नहीं आएगा। उनसे शेयर करना था मुझे कि अब हम उससे रोज मिल सकते हैं, वो भी उसे बिना बताए, क्योंकि न वो हमें जानता है और न अब कभी जानेगा।

पर कहाँ, इनके लटके मुँह बता रहे थे इनके आज के दिन की दुखभरी दास्ताँ।

"हुआ क्या?" मैंने पूछा।

"मूवी अच्छी थी, देखकर निकले, तो वार्डन टकरा गई बाहर। किसी काम से सिनेमाहॉल के बाहर थी। डाल लिया हमें अपने छोटे हाथी में और कब से उसी में तो घूम रहे थे हम। उसे और भी काम था तो बैठाए रखा उसमें हमें। फाइन देकर आना है अब इसका, वरना पापा को कहेगी।" बड़बड़ा पड़ी इतना बताने के बाद सुम्मी और ये तीनों मिलकर उसका फाइन देने चले गए। मैं भी चली पीछे-पीछे।

जब ये तीनों केबिन में गए, तो मैं बाहर ही रुक गई।

"आओ बेटा तुम भी।" वार्डन ने मुझे बुला लिया।

"कितने का टिकट था।" वार्डन ने बड़े आराम से गीतू से पूछा।

"250 रुपीज मैडम।" वह मुस्कराकर बोली।

"इतने के सेब खाए होते, तो तुम्हारे चेहरे पर ग्लो आता। अनपढ़ हो क्या जो ये सब भी मैं कहूँगी।" वार्डन गुर्रा, पड़ी तो डर गए ये तीनों।

"सॉरी मैडम।" सुमेधा ने कहा।

"तुम्हारे पैरेंट्स को इन्वॉल्व नहीं कर रही हूँ, पर आगे से ऐसा न हो।" वार्डन ने धमकी दी।

"जी मैडम।" गीतू बोली।

फाइन सबमिट करके वापस निकले हम केबिन से, तो वार्डन को कहते सुना मैंने कि ये चौथी वाली काफी शरीफ बच्ची है, पढ़ाई में बिजी रहती है, इनकी तरह नहीं है। यह सुनकर मेरा रोम रोम खिल उठा गुलाब जैसा।

"हाँ-हाँ, इससे बड़ी वाली न है हम चारों में कोई भी।" सुमेधा हमेशा की तरह अपनी चिढ़ छुड़ाने लगी, तो मुझे और मजा आ गया। मैं इतनी खुश हुई इस सीधी वाले कॉम्प्लीमेंट से, मानो भीषण गर्मी के बाद ये पहली बारिश हो और हाथ-पैर तक गला देने वाली तेज सर्दी के हफ्तों बाद

आज धूप ने दर्शन दिए हों।

"कुछ बताना है तुम तीनों को…।" मैंने कहा।

"बाद में यार, अभी मूड बहुत खराब है।" सुम्मी ने कहा।

"इस खबर से ज्यादा खराब नहीं होगा, लिखकर ले ले चाहे।" मैंने कहा।

"क्या?" गीतू उबासी लेते हुए बोली।

"ऐसी बात है जिससे तुम तीनों के दिमाग के सब पेच खुल-खुल कर गिर जाएँगे नीचे।" मैंने कहा।

सुमेधा मुँह धोने जा रही थी, पर रुक गई।

"…पर एक बात सुन लो, कोई भी बीच में सवाल नहीं करेगा। पहले पूरी बात खत्म होने दोगे मेरी, तब बोलोगे।" मैंने कहा।

"अबे चल, रहने दे।" कहकर सुमेधा मुँह सिकोड़कर फिर से चल दी।

"बात साहिल को लेकर है।" मैंने कहा, तो रुककर बैठ गई वहीं।

"मैंने बोलना शुरू किया और पूरे 28 मिनट में अपनी बात पूरी की जो सुबह से लेकर साहिल का कॉल कटने तक का वाकया था। इस बीच शांति ऐसे पसरी रही मानो उन तीनों को CIPA (congenital insenstivity to pain with anhidrosis) नाम की बीमारी हुई हो (एक ऐसी बीमारी जिसमे गर्ल्स वैसे तो नॉर्मल रहती हैं, बाकी सब नॉर्मल गर्ल्स की ही तरह चलती-फिरती हैं। यानी उठना, बैठना, सोना, जागना, खेलना, नाचना और हर वो काम जो कोई नॉर्मल लड़की करेगी अपनी पूरी जिंदगी में, लेकिन बस उन्हें सेंसेशन नहीं होता है। उन्हें ठंडा-गर्म, यहाँ तक कि कोई दर्द महसूस नहीं होता है)। अचानक से मानो वो तीनों कुछ देर के लिए इसी CIPA की शिकार मालूम दे रही थीं।

"अब बोलो कुछ?" मैंने कुछ देर रुककर कहा।

"छीईईईई।" सुमेधा बहुत ही बुरा मुँह बनाकर बोली।

"स्वीपर!!!!" सुम्मी ने अविश्वास से कहा।

"अबे ये हुआ क्या।" गीतू अभी तक आँखें फाड़े मुझे देख रही थी।

"हाँ, यही है, दिन-रात मुँह फाड़े एक स्वीपर से गुटरगूँ कर रहे थे हम।" मैंने उबकाई लेते हुए कहा।

"अब तो वो हमारे यहाँ के बाथरूम, वॉशरूम साफ करेगा।" सुम्मी बोली माथे पर हाथ मारकर।

मुझे मानो हँसी के पैनिक अटैक आ रहे थे। अब रोज उसको कैसे फेस कर पाएँगे हम। वो तो हमें नहीं जानता, पर हम तो सब जानते हैं न। सुमेधा पागलों की तरह हँसने लगी और उसके बाद हम सब भी अपने-अपने बेड के नीचे पड़े लोटपोट हो रहे थे। बस मैंने इन्हें ये नहीं बताया कि मैं तैयार भी हो गई थी और पूरा एक घंटा मेकअप किया था उससे मिलने जाने के लिए।

'थैंक गॉड, नहीं बताया, वरना मेरे इतने मजे लेते आज, जितनी कभी न मजाक बना होगा मेरा।' मैंने सोचकर भगवान का शुक्रिया अदा किया।

"वो रोज निकलेगा सामने से। अभी तो हमें नहीं जानता है पर अगर तुम गधे उसके सामने ऐसे हँस पड़े न, तब वो जरूर समझ जाएगा।" मैंने कहा।

"मतलब बेकार ही तोरण को जीजा बना रहे थे, असली जीजा साहिल निकला।" गीतू ने

कहा और सब ठहाके लगाने लगे।

"और तूने जो उसको मिलने बुला लिया, उसका क्या...?" गीतू अचानक बोली।

"सबका कॉमन था वो। रोज सुबह सुम्मी उसे गुड मॉर्निंग विश करती थी सबसे पहले और गुड इवनिंग गीतू, उसका क्या?" मैंने कहा।

"चलो कॉमन था न, कॉमन जीजा कहेंगे उसको आज से सब।" सुम्मी पर बात आते ही वो पल्टी मार गई, पर ये भी अच्छा ही रहा।

"वार्डन हमें ले आई, इसलिए पार्टी का सामान नहीं ला पाए यार हम।" सुमेधा ने कहा।

लेकिन आज के लिए हमारे पास इतना मसाला था कि हम बिना पार्टी मटेरियल के भी पार्टी कर सकते थे। गॉसिप मसाला चीज ही ऐसी है। ये उस छोले मसाला जैसा है, जिसके होने से ही छोले के बनने या न बनने की रस्म पूरी होती है। मैंने तोरण को साहिल के बारे में कुछ न बताने का सोचा था और मैंने उसे अपने इस सच के साथ-साथ अपने रूममेट्स से भी दूर... हर उस चीज से दूर रखा था, जो मेरी जिंदगी से जुड़ी थी। दिन बीतने के साथ मेरी खुमारी बढ़ने पर थी, क्योंकि अब शामें ट्यूशन के किसी फोन से नहीं, तोरण के कॉल से होती थीं। अब कॉलेज में आँखें किसी दोस्त का साथ नहीं ढूँढ़ती थीं और घंटों तोरण के ख्यालों में खोए रहना मेरी हॉबी बनती जा रही थी। उसका मेरी जिंदगी में आना किसी बूढ़े को कँपकँपाने वाली ठंड में गर्म शाल का मिल जाना था। मैं एक तारा होती जा रही थी, जो उसी के आसमान में टिमटिमाना चाहता था। अंदर से आने वाली मुस्कान मुझे उसकी ओस से भिगो रही थी। लॉन की घास अब पहले से ज्यादा हरी लगती थी, मेस का खाना अब स्वादिष्ट लगता था। कॉलेज की प्रेयर में अब मैं मन से सिर झुकाती थी और फ्री लेक्चर में लाइब्रेरी से आने वाली हवा अब मुझे बिना छुए नहीं गुजरती थी। हाँ, मुझे तोरण से जोरों वाला प्यार हो गया था। जाहिर है, मेरी हालत अब आसमान में होने वाले उस झूले जैसी थी, जिस पर मैं हवा में सवार तैर रही थी, कभी नीचे वापस नहीं आने के ख्याल के साथ, क्योंकि मैंने सारी जिंदगी का पे कर दिया है उसे।

आज ट्यूशन नहीं था और अभी सात बजने में काफी टाइम बाकी था। दिल तोरण के कॉल के इंतजार में इंडियन करेंसी जैसे गोल-गोल पल्टी मार रहा था। अचानक बेल ने दिल के सही जगह वाले तार छेड़ दिए। जैसे-तैसे बजने तो थे ही सात, बज ही गए।

"हेल्लो।" उसने कहा।

"फोन करके हेल्लो हमेशा तुम ही पहले बोलते हो।" हँस पड़ी मैं।

"हा-हा, तो क्या हुआ, तुमसे बात करने की जल्दी होती है न, इसलिए।" वह बोला।

कुछ नहीं बोल पाई इसके आगे कुछ देर मैं। बातों का परफेक्शन तो था ही उसमें। मैं अक्सर बात करते-करते चुप हो जाया करती और वो बोलता रहता, फिर रुककर कहता, 'तुम क्या चुपचाप-सी रहने लगती हो फोन पर', तो मैं मुस्करा देती, मानो वो फोन में देख भी सकता हो।

ऐसी कोई गजल नहीं थी जो मैंने उस पर सोची न हो। ऐसी कोई उम्मीद नहीं रही थी, जो मैंने उसके दीदार के लिए न संभाली हो और ऐसा कोई हुक्म नहीं रहा था, जो मैंने उसके सजदे में न मान लिया हो। हर शाम कितने ही पन्ने उसके लिए मेरी भावनाओं की भेंट चढ़ते और कितने मुझमें सिमट जाते। हर रात सारे के सारे ख्वाब उसके नाम होते, जो हर सुबह मेरे चेहरे पर मुस्कान बनकर चमकते। मुझे तो इसके पहले कभी पता ही नहीं चला कि मेरे अंदर इतना प्यार भरा था, जो अब उमड़ आता है। हर टीचर अब किताब में जाने कहाँ से उसी को पढ़ाकर निकल

जाती, हर कलम अब स्याही में चाशनीभरे घोल से सनकर पेपर पर बिखर जाती और हर तरफ एक जानी-पहचानी मिठास महफिल में फैल जाती थी। "हेल्लो, हेल्लो" करके फोन कट गया और मैं कुछ नहीं बोल पाई।

पता नहीं क्यों, मेरे मुँह से कोशिश करने पर भी कोई आवाज नहीं निकली। ये मेरे प्यार की इंतहा थी, जिसमें मेरे दिमाग ने मेरे दिल से पूछे बिना आवाज निकलना भी जरूरी नहीं समझा था, जैसे ब्रेन सिग्नल्स ही कट हो गए हों। मैं हैरान थी अपनी हरकत पर। तीन मिनट बाद फोन दुबारा आया। पहले वाले अधूरे फोन को उसने खुद ही नेटवर्क प्रॉब्लम का नाम दे दिया, तो कुछ कहना नहीं पड़ा। लड़कियों का अपनी फीलिंग्स को छुपाना पहली बार तो था नहीं। समाज के खोखले नियम-कायदे जो बचपन से देखते आती हैं वो और सामने तब भी देख रही होती हैं, वही बेड़ियाँ बनकर अटक गई यहाँ भी। कोई नई बात नहीं थी।

"ये कमबख्त नेटवर्क हमेशा आ जाता है हमारे बीच।" वह बोला।

"हम्म, कोई बात नहीं।" मैंने हल्के से कहा।

"तुमसे एक बात पूछूँ?" वह बोला।

"हाँ।" मैंने कहा तो, पर मेरे दिल की धड़कनें किसी कॉमन हार्ट बीट से ज्यादा हो जाती हैं उस वक्त, जब कोई भी कहे मुझसे कि एक बात पूछनी है।

"मैं इस हफ्ते आऊँगा पापा के काम से वहाँ। अगर तुम फ्री हो तो हम मिल सकते हैं क्या?" वह बोला।

"संडे आओ तो बताना। हॉस्टल से सिर्फ संडे ही आउटिंग है, वो भी तीन-चार घंटे की ही, बस।" मैंने अफसोस जताया, जो मेरे मन में भी था।

यूँ तो मैं उससे ज्यादा बेचैन थी, पर संभव ही सिर्फ ये था। इसके पहले मैंने हॉस्टल के सिस्टम को लेकर इतनी उथल-पुथल कभी महसूस नहीं की थी।

"ठीक है, मैं कल बताऊँगा। अभी तो चार दिन हैं संडे में।" वह बोला।

"ठीक है," कहकर मैं वापस कमरे में चली आई। मुझे नहीं पता उसने इस मुलाकात की बात को कितना सीरियस लिया था, पर ये सच है कि मैंने कभी इतना सीरियस किसी और मुलाकात को नहीं लिया था। न जाने कितने टिप्स मैंने नीतिका से ले डाले थे और सुम्मी की हजारों बातें बिना उसे बताए फॉलो कर ली थीं, क्योंकि बस उन्हीं दोनों से आज तक इस मामले में इंस्पायर हुई थी मैं। बाकी सब तो मुझसे भी गए-गुजरे थे इस मामले में। वैसे ही डेटशीट आने की खबर, जिसके अनुसार अगले महीने 3rd सेमेस्टर के एग्जाम शुरू हो रहे थे, ने हमें पागल कर रखा था, ऊपर से तोरण का सस्पेंस जान ले रहा था अब।

"तुम आ रहे हो इसी संडे?" मैं अगले दिन ट्यूशन से आने के बाद कॉरिडोर में जोर से चिल्लाई, तो वहाँ टहल रही हर लड़की ने मुझे घूरकर देखा, मानो वो हिल गई हो मेरे इस बर्ताव से।

"कोई बहुत खुश लग रहा है मेरे आने से।" वो बहुत शायराना अंदाज में बोला, तो मैं थोड़ा झेंप गई।

"नहीं, ऐसा तो कुछ भी नहीं है।" मैंने कहा।

हँसने लगा वो जैसे पहले से सब जानता हो और मेरे कान शर्म से लाल हो गए, मानो चोरी करते सामने से पकड़ी गई हूँ मैं। कोई भी बात जब मैं झूठ बोल रही होती, तो अक्सर सबसे पहले

मेरे कान लाल हो जाया करते। पर थैंक गॉड, ये देखने के लिए आज वो अभी यहाँ सामने नहीं था।

"तो कौन-सी कार पसंद है आपको?" वह बोला।

"गिफ्ट करोगे क्या?" मैंने पूछा।

"अगर वो मेले में हर माल 10 रुपए वाले स्टॉल पर न मिली तो कैसे करूंगा गिफ्ट?" वह बोला।

"हहहाहा, शर्म तो आई नहीं कहते हुए।" हँस पड़ी मैं उसकी हाजिरजवाबी पर।

"शर्म कैसी, सच है ये।" वह बोला।

"वैसे एक बात बताओ..." उसने उसके बाद कहा।

"हाँ, क्यों नहीं।" मैंने कहा।

"मेरे एक दोस्त की गर्लफ्रेंड है। आजकल बहुत लड़ती है उससे। दोनों ही दरअसल आपस में बहुत लड़ते हैं। शुरू में तो बड़ा कूल रहकर बातें होती थीं उनमें, ऐसा क्यों...?" वह बोला।

"अब वो सब जान गई होगी तुम्हारे फ्रेंड के बारे में।" मैंने चुटकी लेते हुए कहा।

"नहीं, देखो, मुझे लगता है कि ये बिरयानी वर्सेस दाल-चावल का कॉन्सेप्ट है।" वह बोला।

"क्या!" बड़ा शॉकिंग-सा कॉन्सेप्ट लगा मुझे।

"देखो, पहले-पहल लड़कियाँ जब तक मिलती नहीं तब तक बिरयानी ही लगती हैं और एक बार मिल जाएँ न, तो रुटीन दाल चावल-सी हो जाती हैं, फिर हर बात में चिक-चिक, वही पुराना घिसा-पिटा राग चलने लगता है उनका।" वह बोला।

हैरानी हुई मुझे उसके इस शॉकिंग एक्सप्लेनेशन पर, जिसके बारे में मैं फोन कटने के बाद भी काफी देर तक सोचती रही। ऐसा क्या करें कि वही चरम बना रहे हमेशा। लाइट जा चुकी थी और हम सब चादरें लेकर बाहर ग्राउंड में आ गए थे। इन सबको बता दूँ कि तोरण से मिल रही हूँ तीन दिन बाद या न बताऊँ...?

"अरे पाशु की बच्ची, क्या सोच रही है?" सुमेधा ने पूछा।

"यही कि ये सुम्मी शाम को किसका फोन आते ही अलग साइड में खड़ी हो जाती है।" मैंने बात बदली।

"हाँ, यो तो है।" सुमेधा बोली।

"तू बता हमें, तू तो जिगरी है इसकी।" गीतू ने व्यंग्य कसा।

"अरे बहन, मुझे पता हो तब बताऊँ न।" सुमेधा दुखी-सी बोली।

"वैसे तो तुम दोनों बड़े मेड फॉर इच अदर बने घूमते हो।" मैंने बड़ा जोर देकर पूछा।

"अरे, कभी-कभी पूछती हूँ तो बताती है कि भैया है कोई इसका।" वह बेचारा-सा मुँह बनाकर बोली।

"भैया से दो घंटे कौन बात करता है?" गीतू ने सवाल किया जिसका जवाब पता नहीं सुमेधा के पास सच में नहीं था या देना नहीं चाहा उसने।

पर जैसे ही लाइट आई, इस वाकए पर पूर्णविराम लग गया। कमरे में आ ही रहे थे हम कि सामने से साहिल झाड़ू लेकर गुजरा, तो पागलों की तरह चादर में मुँह देकर हँसते हुए कमरे में आ गए हम।

"किसी दिन जरूर उसको शक हो जाएगा, देख लेना।" मैंने गाली दी उन दोनों को।

“मैं तो ये सोचती हूँ कि जिसे वो हम समझता है, उसके सामने से कैसे निकलता होगा।” गीतू बोली।

सुम्मी भी वापस आ गई थी और टाइम हुआ था 12 बजकर 20 मिनट। यूँ ही हँसते-हँसते तोरण के बारे में बताऊँ, न बताऊँ के कन्फ्यूजन ने मुझे मार लिया था और कल फाइनली वो आ रहा था।

“सुम्मी।” मैंने कहा, जब हम ट्यूशन के लिए तैयार हो रहे थे।

“हाँ।” वो आँखों में काजल लगाते-लगाते बोली।

“तेरी एक्सपर्ट एडवाइज चाहिए कल के लिए।” मैंने सकुचाते हुए कहा।

“क्यों?” उसने मेरी तरफ देखा।

“तोरण आ रहा है कल।” मैंने शर्माकर कहा, तो जैसे टिप्स का अंबार लग गया मेरे पास।

“ओह्हह, तभी।” गीतू बोली।

“इसे पार्लर ले चलें आज। ट्यूशन नहीं जाते। मुझे जाना ही था पार्लर, ये भी चल लेगी।” सुमेधा बोली।

“क्या पहन रही तू?” गीतू ने पूछा।

“बंदर मत बनवा देना तुम लोग मेरा,” मैंने कहा, “सगाई नहीं है मेरी, मैं नहीं जाऊँगी पार्लर।”

“मत जा फिर।” सुमेधा ने मुँह बनाया।

“ड्रेस तो बताओ पर...।” मैंने कहा, तो हम ड्रेस पसंद करने में लग गए। उसके साथ की एक्सेसरीज छाँटना ट्यूशन से लौटने के बाद का रखकर हम ट्यूशन चले गए।

सबकुछ नियत समय से हो रहा था, फिर भी जाने क्यों टाइम काटे नहीं कट रहा था। अब से आने वाला हरएक सेकंड जैसे बच्चे की छोड़ी हुई उस कागज की कश्ती जैसा था, जिसे पानी में उतार दिया गया हो और पार लग जाना ही खेल का अहम हिस्सा हो। मानो इसी पर जीत और हार टिकी हो। मेरे पोच-से दिल की मासूमियत ठीक उसी तरह थी, जैसे हर सुबह दाना चुगने जाती चिड़िया की उम्मीद, शाम को लौट रही दूधवाली की बाल्टी में जैसे कोई मिलावट नहीं बचती न, ठीक वैसे ही ये थी। तोरण को लेकर मेरी आती-जाती रंगीनियाँ इस सौरमंडल में घूमती उन पराबैंगनी किरणों की तरह थीं, जो बेबूझ कहीं से भी निकल रही थीं, कहीं को भी जा रही थीं, बिना ये देखे कि किसे फर्क पड़ता है और किसे नहीं, मानो उनके साम्राज्य को कोई नहीं हिला सकता हो।

ठीक उसी तरह तोरण को अपने दिल पर कब्जा करने से मैं डिगा नहीं पाई थी। आरुष सर को झूठ बोलकर ऑफ भी ले लिया था, पर मैथ्स के इस जोड़-घटान का मसाला भी तभी फिट बैठना था, जब डेट सही से हो जाए। ओह, आज का दिन मैं कैसे भूल सकती थी। वो हर एक सेकंड के मेरे रस में डूबे प्यारभरे जज्बात, कोई ऐसा अक्स जो हजारों बार मेरे मन ने बनाया और रबर से मिटाकर फिर मेरे ख्वाबों की पेंसिल से दिल की दीवार पर गड़ गया। हर उस छुपी रात की मुस्कान का जवाब आज मेरे सामने खड़ा था, जो अनजाने में हर शाम उठकर मुझे झझकोर देती थी। पूरे शरीर में सरसराहट जैसा कोई कंपन था, जिसे देखकर जैसे हट्टे-कट्टे किसी पहलवान को आया अचानक फीवर 104° F वाला, जो बिन बताए कब उसकी बॉडी को इन्फेक्ट कर दे, पहली ही पल्टी उस पर मानो भारी पड़ जाए, जैसे जुगनू टिमटिम से नहीं किसी दूसरे सूरज जैसे

आगे झुका दे रहे हों खुद को। जैसे आज के दिन और रात मिलकर किसी कभी खत्म न होने वाली शाम को जन्म दे रहे हों, वो कुछ ऐसे सामने आया मानो मंदिर में दीये खुद जल उठे हों, सबकुछ वहीं पर ठहर गया हो, बस वो मूव कर रहा हो।

"क्या हुआ?" कहकर उसने मेरे चेहरे के आगे चुटकी बजाई, मानो पहचान ही गया हो अपनी जोगन जैसी सामने खड़ी किसी मीरा को।

और मैं!

एक बुत-सी खड़ी रह गई, मानो किसी की मौत का सदमा लगा हो, पर वास्तव में कहूँ तो ये मेरे लिए उस ख्वाब जैसा था, मानो कोई आकर जोर से मुँह पर बाल्टीभर पानी दे मारे, उसके बाद पिंच भी कर ले, तब भी पता नहीं एहसास हो या न हो, मानो मैं जानबूझकर कभी इससे बाहर आना ही नहीं चाहती थी। मैं हिली तक नहीं ये सोचकर कि कहीं ये खुबसूरत ख्वाब मेरे हिलने से दूर न चला जाए, कहीं मैं इससे बाहर न आ जाऊँ।

"कुछ बोलोगी भी, क्या हुआ?" कहकर उसने मुझे झिंझोड़ा।

मैं सच में काँप रही थी। इसका पता मुझे तब चला, जब उसने बताया कि मैं काँप रही हूँ।

"हाँ, वो थोड़ी गर्मी है, बस इसलिए।" मैंने उससे ये छुपाने के लिए कहा।

मैं उससे कहना तो चाहती थी कि वो सर्दियों की धूप का आराम है मेरे लिए, जो गर्मियों में कहा मयस्सर। मैं सुनाना चाहती थी वो गीत जो मैंने अकेले में सिर्फ उसके लिए लिखे। मैं उसे बताना चाहती थी कि वो कितना जरूरी है मेरे लिए। वो मेरे गाजर के हलवे की चीनी था, जिसके बिना मेरी मिठाई जैसी जिंदगी मुमकिन ही नहीं। पर उसके पहले ही अच्छा हुआ उसने बता दिया कि उसको ये गजल, गीत, शायरियों जैसी फिजूल चीजें कतई पसंद नहीं। लोग इनको कैसे और क्यों लिख देते हैं।

'अच्छा ही हुआ, मैंने अपनी गजलें शुरू नहीं कर दीं इसके सामने।' सोचा मैंने। डायरी बस बैग ही में रखी रह गई।

हमारी पसंद अलग थीं। उसको बड़ी-बड़ी चीजों में जाना, उनको लेकर शो करना, ये सब घर में ट्रॉफी सजाने जैसा था। उसको बड़े-बड़े, खाली लग्जरी कमरे पसंद थे और लग्जरी कारें, जबकि मुझे छोटे-से घर में एक भरा हुआ-सा आशियाना, जहाँ बस नींद ही नींद हो। एक पैदल रोमांटिक वाक, जिसके बीच गोलगप्पे वाले की वो दुकान भी आए, जिस पर हम हमेशा जाया करते थे कॉलेज फ्रेंड्स के साथ।

मैं पैदल चलते-चलते उसे वो गोलगप्पे का ठेला दिखाना चाहती थी, जहाँ आकर चटपटे गोलगप्पों के लिए जन्मों से तरसती मेरी आत्मा को सुकून हासिल होता था। उस गली का वो जूस कार्नर, जहाँ पर हम रोड क्रॉस करके इतनी दूर सिर्फ उसके जूस के टेस्ट के पीछे मंत्रमुग्ध-से दौड़े चले आते थे। क्लास बंक करके उसके फ्लेवर्स के मजे लेना जहाँ हमारे लिए वैसे तो आम था, पर मेरी यादों में था बहुत खास। लेकिन उसकी बड़ी गाड़ी उन गलियों में जा ही नहीं पाई। गाड़ी कहाँ छोड़ेंगे, पार्किंग तक नहीं दिख रही थी कहीं। सपनों ने दम तो वहीं तोड़ना शुरू कर दिया, पर वो साथ है तो जगहें सब अच्छी ही लगेंगी, मॉल भी सही।

हम गए थे मॉल, मेरी पसंद की मूवी भी देखी हमने, पर मेरे अंदर की खुशी उस गन्ने के टुकड़े जैसी थी, जिसे बंदर अभी-अभी किसी बच्चे से छीनकर भागा हो और दूर जाकर चिढ़ा रहा हो उसे। धीरे-धीरे ये मुझे अच्छा लगने लगेगा, मूवी का प्लान भी, जिसके बाद बस मूवी ही फेवरेट

प्लान बनती चली गई। आज मैं बहुत स्पेशल महसूस कर रही थी, क्योंकि पहली बार किसी ने मुझे जी भरकर मेरी फेवरेट चॉकलेट्स दी थीं। मुझे जन्नत की सैर लग रहा था यह सब। आज मैंने दोस्तों और फैमिली से अलग, किसी के साथ मूवी देखी थी। सब लग रहा था मानो हमेशा के लिए है, ये कोई गेम है जिसमें मैं अब जीत चुकी हूँ और ये हमेशा चलेगा, अब मैं रोज ऐसे ही बुके लेकर सुबह उठूँगी और इसी तरह मेरी शामें चॉकलेट्स लेकर आएँगी। मानो ये किसी अप्सरा का ख्वाब हो, इसके बाद बस अब कोई ख्वाहिश नहीं, कोई चाह नहीं, सब तो है मेरे एक कहने पर या यूँ कहूँ कहने से भी पहले। आज मैं दुनिया की सबसे खुशकिस्मत राजकुमारी बन गई थी, जिसके सपने ही सच थे और सच ही आने वाले हर सपने जैसा।

कहते हैं कि जब कोई अनजान आकर आपको इतना अपना लगने लगे कि उसके बिना आपकी कल्पनाएँ न चल पाएँ तो थोड़ा संभल जाना चाहिए। पर यहाँ कंबख्त संभलना चाहता ही कौन था, मैं तो डूब जाना ही इतना हसीन मानती थी। जहाँ सामने किनारे पर तोरण, वहाँ डूबना कौन नहीं चाहेगा।

...पर हूँ तो मैं भी उसी मध्यमवर्गीय समाज का हिस्सा, जहाँ हर लड़की अपने मौसा, मामा, फूफा के घर जाकर शान से सिर्फ बारहवीं के रिजल्ट में अपनी अच्छी परसेंटेज का ढिंढोरा ही पीट सकती है, प्यार जैसी चीज का नहीं। क्योंकि प्यार तो डेमोक्रेसी के चलते होता ही इतना वाहियात है। उसके लिए नियम-कायदे यहाँ तक हैं कि वो पहले टॉप करके घर वापस आए, फिर घर का हर काम एक कुशल गृहिणी की भाँति सँभाले और फिर चुपचाप गूंगी-बहरी-अंधी होकर अपनी प्रदर्शनी लगवाकर किसी बारहवीं फेल बैक बेंचर से गाय की तरह शादी कर ले। ये एक परफेक्ट लड़की की खासियत होनी चाहिए। वो ओलंपिक में लहँगा-चोली पहनकर भागे और वापस आकर अपनी पति, सास-ससुर के पाँव छूकर सबसे पहले घर का वो काम समेटे, जो वो छोड़कर गई थी, वो भी तानों के साथ। अगर वो ऐसा नहीं कर पाती है तो वो खराब है, उसकी आदत, चाल-चलन अच्छा नहीं, वो पतिव्रता नहीं। और अगर गलती से कुँवारी है, तो पिताव्रता और भाईव्रता नहीं, एक छोटी सोच की, नेगेटिव सोच वाली लड़की है, जिसे कोई हक नहीं अपनी मर्जी से जीने का। डेमोक्रेटिक है भई, संविधान में शायद यही लिखा होगा हमारे। चलो कोई नहीं, संविधान की बात है, मानी ही जानी चाहिए।

ओह, इमोशनल ही हो गई मैं तो! आगे चलते हैं, यहाँ बुरा लग सकता है मेरी बात का।

मूवी के बाद खाना खाने हम मेरे फेवरेट रेस्तराँ गए। वहाँ पर बैठने के बजाय हम एक पार्क में जाकर आँखों में आँखें डालकर खाना खा रहे थे और जैसे हमेशा की तरह जैसे वो फोन पे समझ जाता था, यहाँ भी वो मेरे मन को पढ़ चुका था। लेकिन वहाँ और रुकने की इजाजत न तो हमारी घड़ी दे रही थी और न पार्क के दरवाजे पर तैनात वो पतला-सा, छोटी-छोटी मूँछों वाला वो गार्ड, जिसकी शर्ट पर लगे नेमप्लेट को हमने तोरण की शर्ट के कलर से मैच कर दिया था। इसके बाद गाड़ी मेरे हॉस्टल की तरफ घूम गई थी। परेशान करने के लिए सुम्मी, सुमेधा और गीतू बारी-बारी से ट्यूशन में बैठे मुझे मिसकॉल दे रहे थे, जिसे समझकर तोरण जोरों से ठहाका लगाकर हँस पड़ा था। मैंने ध्यान से देखा, उसकी हँसी वो लिपटिस का पेड़ थी, जिस तक पहुँच पाना कठिन से भी कठिन था।

एफएम पर डीजे सुहास की आवाज में "आए जाए दिल तेरी जानिब" बज रहा था। आज की "लकी गर्ल ऑफ द डे" मैं थी और आज का वर्ल्ड्स हैंडसम ऑफ द डे था तोरण। बस, उसी वक्त से

वो नीली-हरी चूड़ियाँ मेरा फेवरेट शृँगार हो चुकी थीं, जो तोरण ने पहली बार मुझे गिफ्ट में दीं।

दुनिया का दिखने वाला हर रंग उन चूड़ियों में आकर सिमट गया था और इससे खूबसूरत दिन मैंने अपने ख्वाबगाह के नशेमन में पहले नहीं रखा था।

“ठीक है, अब मैं चलता हूँ। अपना ख्याल रखना तुम और मेरे उस दिल का भी, जो अब से तुम्हारे पास छोड़े जा रहा हूँ।” जाते-जाते कही उसकी यह बात मैंने इतनी बार दोहराई थी अपने अंदर, जितनी बार साँस भी नहीं

लिया होगा जीते हुए। उससे इस पहली मुलाकात ने उन पिछली सारी कहानियों को जैसे एक झटके में

मन से निकलकर बाहर खड़ा कर दिया था, जिन्हें पिछले वक्तों में मैंने गुजार दिया था।

सामने से मेरे लिए कह पाना बहुत मुश्किल रहा कि मेरा दिल न जाने कब से उसी के पास गिरवी पड़ा

है, जिसका कंपाउंड इंटरेस्ट मैं माँगने लग जाऊँ, तो सात जन्म के लिए बुक हो जाए वो मेरे ही लिए।

इस सीन को बार-बार दिमाग के डीवीडी प्लेयर में लगाकर छोड़ दिया था रिपीट मोड पर। डिनर का अब

मन नहीं था, यादें ही पेट भर दे रही थीं। अब हर जगह दो ही रंग थे- वो और मैं। हर लव सॉन्ग में दो

ही चीजें बज रही थीं- वो और मैं। हर शेड में दो बराबर हिस्से थे- आधा वो और आधी मैं। और आज

रात यादों के बिस्तर पर एक ही कहानी बन गई थी, जिसमें थे- सिर्फ वो और मैं।

मिल्की मिस्ट्री

जश्न की शामें हर लिहाज से यूँ ही यादगार नहीं बन जातीं। जश्न होते ही इसलिए खास हैं, क्योंकि वो हमारे उन पलों को खास बना देते हैं जिन्हें हम कैद करना चाहते हैं, चाहे खुशी से बीत जाएँ या रंग में भंग से, यादगार दोनों ही रूपों में रह जाते हैं वे।

कोई ऐसा जश्न जिसमें हमें कुछ खास मिला हो, कुछ न भूलने वाला, जैसे कोई कॉम्लिमेंट ही सही। कोई ऐसा पल जो सदा के लिए मन में घर कर गया हो, जैसे किसी रिश्तेदार के यहाँ हुआ बरसों बाद कोई फैमिली फंक्शन, जिसमें हम इतने खूबसूरत लगे थे कि कॉम्प्लिमेंट्स ने घेर लिया था हमें। किसी नए मेहमान के आने पर घर में हुई छोटी-सी पार्टी जिसमे हम डी.जे. चलाकर इतना नाचे थे कि अगले दो दिन सारा शरीर दुख रहा था। मिसेज शर्मा या मिसेज वर्मा के यहाँ की वो किटी पार्टी, जिसमें आप स्टार ऑफ द पार्टी रही थीं। कोई बैचलर पार्टी जिसमें आपने पीकर इतने बवाल खड़े किए थे कि सारी सोसाइटी को पता चल गया था या फिर बरसों बाद हुए गेट-टु-गेदर में मिले वो सब दोस्त, जो गुजरते वक्त में कहीं धूल चढ़ी तस्वीरें बन गए थे।

फिलहाल ऐसी ही एक दिवाली पार्टी में देखा था मैंने उसको नशे में धुत नाचते हुए। नशे में धुत असल में थी या होने का नाटक कर रही थी, कह नहीं सकते, क्योंकि हमारे अलावा पार्टी में और भी ऐसे शरारती तत्व हो सकते थे, जो पार्टी के लिए कपड़ों पर ऑलरेडी हो चुके खर्च और लिमिटेड बजट होने की वजह से ड्रिंक न ला पाने के कारण सिर्फ ड्रिंक करने की एक्टिंग करके ही पूरी रात नाच लेते थे। रात के चमकते तारे और लॉन में लगे डी.जे. के बड़े-से बैंड सोर्स की निकलती वाइट लाइट उसके बदन पर पड़कर सफेदी को शर्मसार कर रही थी। दूध-सी सफेद वो लड़की सफेद रंग की ही मिनी ड्रेस पहने थी। जब वह आकर मुझसे टकराई और सॉरी बोले बिना वहाँ से चली गई, तो आश्चर्य से देखती रह गई मैं उसे। बिना ये देखे वो चली गई थी स्टेज पर कि वो टकराई किससे है।

'अजीब मूडी है,' मैंने सोचा। इसके बाद मैं काफी देर तक देखती रही उसे।

5 फुट 7 इंच की जीरो फिगर, गोरी चिट्टी, बड़े-बड़े नैन और ग्लॉसी स्माइल की वो मॉडल जैसी दिखने वाली लड़की मिल्की बजाज थी, जिसके दर्शन इस हॉस्टल में मुझे पहली बार इस पार्टी में हुए थे।

'क्या लगती है यार ये।' मैंने मन ही मन कॉम्प्लीमेंट दे डाला था आज, वो भी किसी लड़की को।

पार्टी 12 बजे उजड़ने लगी और मैं कंबख्त इस उस लड़की मिल्की को ताड़ने के चक्कर में अपने फेवरेट सॉन्ग "चिकने मुझ पर फिसल गए" पर नाचने से रह गई। कमरे में वापस आकर अपना लास्ट के 15 मिनट पाजामा पहनकर नाचने का रिवाज मैंने पूरा किया। इसके बाद डमरू-

सी सो गई मैं। ये सुबह भी पार्टीज की तरह थकी हुई और नॉर्मल होती, अगर गीतू सुबह उठते ही चिल्लाई न होती यूँ जोरों से।

"क्या है बे, कौन मर गया सुबह-सुबह?" सुमेधा, मैं और सुम्मी तेजी से बेड से कूदे।

आँखें मलते हुए बाहर आकर देखा, तो हम भी डर गए इस मंजर से।

गेट पर मिल्की बुरी हालत में बदहवास-सी पड़ी थी। चारों तरफ वोमिट कर रखा था और दारू की तेज बदबू से वहाँ खड़े रहना मुश्किल हो रहा था।

"अबे, ये तो वही कल रात वाली मिल्की है।" सहसा मेरे मुँह से निकल पड़ा।

"अब ये कल वाली, परसों वाली का क्या चक्कर है?" सुमेधा खीझकर बोली।

"कुछ नहीं, इसे उठाना पड़ेगा।" मैंने कहा।

"मैं हाथ भी नहीं लगाने वाली इसे।" सुमेधा ने कहा।

"इतनी स्मेल आ रही इसके पास से, न जाने कितनी पी है इसने। अंदर ले गए तो वहाँ भी सफाई करनी पड़ेगी बाद में, ऊपर से वोमिट तक कर रखा इसने।" सुम्मी नाक सिकोड़ते हुए बोली।

"साहिल को कहलवा दो भई।" गीतू बोली, तो हँस पड़े हम।

"मजाक का टाइम नहीं है, बदबू आ रही है, जल्दी करो।" सुमेधा ने सड़ा-सा मुँह बनाकर कहा।

"दी, आपका रूम नंबर कौन-सा है?" मैंने घुटने टेक कर पूछा।

"101।" वह उनींदी-सी सिर पर हाथ-रखे रखे बोली।

"चलो।" मैंने और गीतू ने हाथ पकड़कर सहारा दिया, तो धीरे-धीरे उठ गई वो।

जहाँ तक मैंने अंदाजा लगाया था वो सही था, मिल्की 101 नंबर कमरे में अकेले रहती थी। लेकिन तब भी मुझे ये जानकर हैरानी हुई, क्योंकि वार्डन का तो कहना है कि वो इस हॉस्टल में कभी किसी को अकेले रूम नहीं देती।

'शायद टर्म्स एंड कंडीशंस अप्लाई होता होगा यहाँ भी।' मैंने सोचा। इस बारे में मुझे गीतू से डिस्कस करने पर पता चला कि कैसे वह इस कमरे का ट्रिपल अमाउंट पे करती है। पैरेंट्स, प्रिंसिपल और अथॉरिटी की सहमति से उसके लिए बिना आउटिंग पास, बिना किसी एंट्री और बिना किसी क्लेरिफिकेशन के हर जगह आने-जाने की अनुमति थी, क्योंकि वो कॉलेज के प्ले और मॉडलिंग रेपो को एक ऊँचाई तक ले जाती थी, जिससे कॉलेज को ट्रॉफी और सम्मान, दोनों मिलते रहते थे। उसके कमरे में हम पहुँच चुके थे और अंदर का नजारा मेरे और गीतू के लिए दिल दहला देने वाला था।

अगर हम किसी गर्ल के सिंगल रूम की बात करें, तो हम इमेजिन करेंगे एक साफ-सुथरा, वेल मेंटेन कमरा, जिसे जितना बस में हो सजा-धजा कर रखा गया होगा। सजावट के नाम पर कुछ चीजें जरूर होती हैं। जैसे- हाथ की बनी न सही पर बाहर से खरीदी हुई चित्रकारी या पोस्टर्स जिनमें गर्ल, बार्बी, एटीट्यूड या फिर उसके नेचर से रिलेटेड कोई भी अच्छा-सा स्लोगन हो, कुछ उसकी अपनी छोटी-बड़ी तस्वीरें जिनमें फैमिली या फ्रेंड्स इन्वॉल्व हों, कुछ उसके अचीवमेंट अगर हैं तो, वो जिनकी मैं भी भयंकर तौर पर शौकीन हूँ। इनके अलावा पिंक या रेड कलर का एक बड़ा-सा टेडी बीयर, जिसके साथ दो या तीन छोटे-छोटे टेडी बीयर भी, जिन्हें बेड या कुर्सी पर कायदे से लगाकर रखा गया हो या चलो, पड़े भी हो सकते हैं। ब्यूटीफुल कलर की कोई प्रिंटेड

बेडशीट, पिलो कवर पर परफ्यूम की महक जो कबर्ड से उससे भी तेज आ रही हो। नीचे रखे सैंडिल रैक में पड़े जूते-चप्पल और हील्स जो लपेटकर फीते पर डाले गए हों, कुछ मेकअप और एक्सेसरीज जैसे लिपस्टिक, क्लिप, हेयरबैंड, आई लाइनर और डीओ जैसी चीजें एक स्टैंड में बिखरी या रखी हों। इसके अलावा कुछ अगर रह गया हो, तो इस फलाना-ढिंमकाना में आ जाएगा वो सब भी। पर वहाँ का नजारा देखकर हमारा हाल ऐसा हुआ, जैसे कोई प्यादा सेफ जोन में अपनी बिसात पर तैनात हो, पर अचानक ही कोई वजीर आकर सब गुड़-गोबर कर दे। गुड़-गोबर तो उस कमरे का हाल था, जिसमें समझ नहीं आ रहा था मिल्की को धकियाएँ कहाँ हम।

उसके पूरे बेड पर एक चींटी बराबर भी जगह सामानों से खाली नहीं थी, जिन्हें हटाने में हमे अगले दिन के सूर्य देवता तक नजर आ जाने थे और उदासीन शाम शायद हमारी थकान को देखकर रो पड़नी थी। डस्टबिन एकदम कायदे से पैक होकर ऊपर अटारी पर पड़ा था। बेड पर बुरी तरह उलझे कपड़ों का ढेर था, जिसके चारों तरफ बियर की केन बिखरी पड़ी थीं जिनमें कुछ में छेद हुए थे। जूतों में मेकअप का सामान भरके ठूँस-ठूँस कर उन्हें टेबल पर चिना हुआ था और अलमारी आधी खुली थी, जिसे छूने की हम कोशिश भी नहीं कर सकते थे, वरना सारा सामान हम ही पर आ धमकना था। बेडिंग बेड पर नहीं बेड के नीचे लगा हुआ था, जिस वजह से झाड़ू-पोंछे का चक्कर ही खत्म था वहाँ। रूम में एक छोटा ए.सी. था जिसका बिल वो शायद अलग से पे करती होगी (ऐसा मैंने अनुमान लगाया), किताबें थीं कुछ जो ऊपर अटारी पर डस्टबिन की बगल में शोभायमान थीं, जिन पर कम से कम ढाई इंच धूल चढ़ी थी। ऐसा नहीं है कि टेडी बीयर नहीं थे, वो भी थे पर चेयर या बेड पर नहीं बल्कि अलमारी के नीचे बुरी तरह फँसे हुए, जो बाहर निकलने की कोशिश में दम तोड़ सकते थे। वो मानो चिल्ला-चिल्ला कर कह रहे थे कि अपने साथ ले चलो हमें, वरना यहाँ तो मर ही रहे हम। स्मेल परफ्यूम नहीं सिर्फ दारू की फैली हुई थी, परफ्यूम तो एक बड़े-से ब्रांडेड बैग में भरकर किसी कोने में टँगे हुए थे।

सबसे पहले गीतू और मैंने इसी पर हाथ रखा था और बैग से एक-एक बोतल परफ्यूम की लेकर इस बुरी तरह उड़ेला था कमरे पर, मानो मच्छर मारने का स्प्रे गली में आया हो।

"अब कहाँ डालें इसे, इसके बूचड़खाने जैसे कमरे में तो पैर तक नहीं रखा जा सकता है।" गीतू बड़बड़ाई।

"बेड का सामान नीचे फेंक देते हैं और इसे बेड पर।" मैंने कहा।

"फालतू में हमारी सुबह मनहूस कर दी इसने। नहाने जा रही थी मैं अच्छा-खासा।" गीतू नाराज-सी थी और आज के इस संडे जल्दी नहाकर जल चढ़ाने वाला उसका ख्याल अब छू हो गया था।

हमें न तो आज ट्यूशन जाना था और न आज कॉलेज था, फिर भी गीतू काम टाइम से करने की बड़ी आदती थी। भले ही उसके बाद पूरा दिन बोर होकर टक्कर मारना मंजूर था, पर सुबह नहाना, नाश्ता और सफाई जैसे काम घड़ी की सुई बिना इधर से उधर हुए निबटा देने में विश्वास रखती।

मिल्की को उसके बेड पर डालकर हम अपने रुटीन में लग गए, लेकिन नाश्ते पर खुद को रोक नहीं पाई, जब मिल्की के बारे में चर्चा शुरू हुई। आज गॉसिप क्वीन रचना और शिखा भी हमारी इस खबर को सुनकर आ बैठे थे अपने कुछ और दोस्तों के साथ हमारी ही टेबल पर और आज 2nd ईयर (नॉन मेडिकल + कंप्यूटर साइंस) की चर्चा का विषय थी मिल्की बजाज।

मिल्की हमारी सीनियर थी, जो बैचलर ऑफ आर्ट्स 3rd ईयर की स्टूडेंट कम मॉडल थी। उसे सारा हॉस्टल आइटम कहकर बुलाता था। इसके अलावा उसकी एक और पहचान भी थी, वो एक स्टेट लेवल फैशन शो और प्ले की टॉप मॉडल थी और तीन लोकल पंजाब ब्रांड्स की ब्रांड एंबेसडर भी। इसलिए कॉलेज को रिप्रेजेंट वही करती थी। पिछले लगातार तीन साल से K.D कॉलेज ऑफ इंस्टीट्यूट एंड टेक्नोलॉजी की 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर' बनती आ रही थी। पंजाब के अलावा भी कुछ शहरों, जैसे- दिल्ली, मुंबई में भी मॉडलिंग कर चुकी थी और खूबसूरती व ग्लैमर के मामले में जितना यूनिक और एक्सपेंसिव कलेक्शन उसके पास था, वो पूरे कॉलेज और हॉस्टल में किसी के पास नहीं रहा था।

ये सब गुपचुप सूत्रों से पता वार्डन को भी था, पर वार्डन उसको निकाल नहीं सकती थी, बस अंदर ही अंदर कुढ़ती रहती थी इस बात से। वजह- प्रिंसी को उससे होने वाला कॉलेज के लिए प्रॉफिट था। ये भी सब ही जानते थे, इसलिए कोई खुले तौर पर उसे कुछ नहीं कहता था।

"इतना कुछ यहाँ आसपास घट गया और बताओ मुझे abcd नहीं पता चली इसकी।" मैंने कहा, तो सारी टेबल हँस पड़ी।

दिमाग की फसल में वहीं बैठे-बैठे गन्ना तो बो दिया था मैंने, पर बाकी चीजों और फसल आने में टाइम अभी लगना था। ब्रेकफास्ट के बाद कमरे में वापस आकर बस मैथ्स पढ़ने लग गई थी मैं, क्योंकि आज तो आउटिंग भी नहीं थी कल ही पार्टी होने की वजह से।

"बड़ा खाली दिन है भईये।" सुम्मी ने अंगड़ाई लेते हुए कहा।

"आज तो मजे हो गयो।" सुमेधा ने भी एक्ट किया मस्ती से।

"सब अपने-अपने उन पालतुओं को भुगता लो, आज शाम को पढ़ाई करनी है फिर।" गीतू ने बड़े सटीक तरीके से कहा, तो अचरज हुआ हमें।

"पालतू।" मैंने चौंककर कहा।

"बॉयफ्रेंड तुम्हारे।" गीतू बोली।

"हाहाहा।" हमारे दाँत दिखने आज सुबह से अब चालू हुए थे।

"ये भी सीजन के वो कपड़े होते हैं, जिन्हें हर सीजन धूप न लगाओ तो खराब हो जाते हैं। खराब हो जाएँ तो नए लाओ।" सुम्मी ने कहा, तो मजा आ गया महफिले-हॉस्टल में।

सारी बातें सुनकर भी मैं कहीं और अटकी हुई थी। मैं अटक गई थी मिल्की पर। मैंने तोरण को फोन करने के लिए अपने कदम कमरे से बाहर तो रखे, पर जब मन अटका हो भोजन में तो कैसे जाएँ मंदिर, बोलो राधे-राधे। मेरे कदम मिल्की के कमरे की तरफ बढ़ गए।

मेरे कमरे से ऊपर की सीढ़ियाँ चढ़कर दूसरे फ्लोर पर पहुँचना होता था, जहाँ से सामने जाने वाले गलियारे को पार करके बाई तरफ छठे नंबर पर मिल्की का कमरा था। लाइट अब भी बंद ही थी। मैंने सोचा सो रही है शायद, इसलिए मैं बिना कोई आहट किए दरवाजा वापस उढ़काकर आने लगी थी कि किसी ने पीछे से आवाज लगाई। जाहिर है, मिल्की ने ही।

"हे, तुम वही न जो सुबह छोड़ने आई थीं मुझे रूम में?" वह बैठते हुए बोली।

"हाँ, दी।" मैंने मुस्कराकर जवाब दिया।

"आओ, बैठो।" उसने कहा, तो मैं चारों तरफ बैठने की जगह देखने लगी।

उसके कमरे में कोई ऐसी जगह नहीं थी, जहाँ मैं बैठ पाती। शायद वो इतनी-सी बात भी समझ नहीं पाई या उसने जानबूझकर जगह नहीं खाली की, ये कहा नहीं जा सकता। मुझे ये

थोड़ा अजीब लगा।

"नहीं, कोई बात नहीं, मैं बस हालचाल पूछने आई थी।" मैंने जगह का न होना देखकर कहा।

"नाम क्या है तुम्हारा? पहले तो कभी नहीं देखा हॉस्टल में तुम्हें।" उसने पूछा।

"पाशना।" मैंने बताया।

फिर बेड पर बैठने के लिए जगह बनाने लगी वह। बहुत ज्यादा बियर की बोतलें बाहर फेंकनी पड़ी खिड़की से और जगह तैयार हो गई।

"बैठो।" उसने कहा जैसे मानो अहसान कर रही हो मुझपर।

"2nd ईयर में हूँ नॉन मेडिकल।" मैंने बताया।

"ओह ठीक, बैठ जाओ।" उसने फिर कहा।

"नहीं, ठीक है दी, मैं चलती हूँ।" मैंने कहा और बाहर आ गई कमरे से।

बिजी थी वो अपनी अकेली लाइफ में, फिर भी मुझे तो पसंद आई वो। कम से कम उन शुगर कोटेड लोगों से लाख गुना सही है, जो पीठ पीछे कुछ और सोचें। उसका भी कोई कॉल आ गया था और मैं भी वापस अपने कमरे में आ गई थी। कितनी आजाद पंछी जैसी है ये, एक हमें देखो, पढ़ते-पढ़ते साँस नहीं आती। तोरण और ट्यूशन न हों तो क्या है हमारी लाइफ में। सिंपल-से तो हैं हम। जहाँ दो दिन पहले तक अपनी लाइफ को परफेक्ट लाइफ का उदाहरण मानती थी मैं, अब अचानक ही ऐसा लगने लगा था। सच ये है कि हवस की खोपड़ी कभी भरती नहीं है, मैंने मन में बड़बड़ाया।

तोरण को बताया मैंने शाम को इस बारे में, क्योंकि मैं मिल्की से बहुत इंप्रेस थी, पर मेरी रूममेटस की तरह ही उसने भी इस बात को कोई खास तवज्जो नहीं दी। समय बीतने के साथ मैं हफ्तेभर में ही कहानी को भूलने लगी। 4th सेमेस्टर चल रहा था और हमें लैब में ज्यादा से ज्यादा टाइम बिताना होता था।

ये सुबह एकदम नॉर्मल हुई थी। आज सूरज की तेज लालिमा ने सबको चकित किया। दिनभर की भाग-दौड़ ने काफी थका दिया था मुझे, पर मुझे अभी टाइम कहाँ था। आज मार्केट से कुछ जरूरी सामान लेते हुए वहीं से ट्यूशन निकलना था, लिहाजा मैं सड़क पर फुल स्पीड से भागती जा रही थी कि अचानक एक स्कूल की मित्र का फोन आया तो मैं न उठाने जैसा काम कर नहीं पाई।

"हेल्लो, स्वीटू, कहाँ मरी हुई थी इतने दिनों से?" मैंने पूछा।

"तू कमीनो।" वहाँ से जवाब आया।

जिसके बाद हँसी-ठहाकों का दौर चल निकला। अक्सर जब पुराने दोस्त के महीनों बाद अचानक फोन पर आने का समाँ बने, तो आसपास का माहौल पता ही नहीं लग पाता, बस उसी में कूद पड़ जाना होता है। मैं इतना खोई-खोई चलती जा रही थी कि न जगह दिखी, न बस। तभी अचानक किसी ने इतनी जोर से धक्का मारा कि पलटकर रोड के दूसरी तरफ जाकर गिरी मैं।

"क्या तुम एकदम पागल हो पाशना?" किसी ने इतनी जोर से मेरे सिर पर मारा कि मेरी हेयर क्लिप दूर जाकर गिरी।

गुस्से से तिलमिलाकर देखा मैंने, तो मिल्की थी सामने। कुछ सेकंड मैं समझ ही नहीं पाई कि ये हुआ क्या। मेरे फोन का चूरा हो चुका था, जो सड़क पर वहीं पड़ा रह गया था जहाँ से मुझे

धकेला गया था।

मुझे चोट लगी थी, पर मैंने ईश्वर का धन्यवाद किया, क्योंकि आज ट्रक के नीचे आने से बाल-बाल बच गई थी मैं। फिर उसने हाथ दिया मुझे, जिसके सहारे मैं उठकर खड़ी हो गई।

"तुम्हें बहुत लग सकती थी बेवकूफ लड़की।" वह फिर बोली।

"सॉरी दी।" मैंने बस इतना ही बोला मुँह लटकाकर।

मैं जानती थी उसने मेरी जान बचाई और 100% गलती मेरी ही थी।

"अरे नहीं, चलो अब तुम मेरे साथ स्ट्रेचिंग करा लो, मेरे पास गाड़ी है अभी।" उसने सामने खड़ी एक बड़ी-सी ब्लैक गाड़ी की तरफ इशारा किया, जिसमें एक लड़का भी बैठा था, जो शायद उसका कोई बॉयफ्रेंड या फ्रेंड रहा होगा।

"इट्स ओके दी, मैं खुद जाकर करा लूँगी, थैंक्स।" मैंने आभारी होकर कहा।

"अब ये फालतू की फॉर्मेलिटी हो गई हो तो चलें?" उसने कहा तो मुझे चलना पड़ा।

"दी, मुझे ट्यूशन के लिए लेट हो जाएगा, रहने दीजिए न। ज्यादा नहीं लगी है, मैं ट्यूशन के बाद चली जाऊँगी।" मैंने रोड क्रॉस करते हुए कहा।

"मैं आपको छोड़ दूँगा ट्यूशन आपकी स्ट्रेचिंग के बाद जल्दी से, लेट नहीं होगा।" उसका दोस्त बोला।

अब मैं चुपचाप गाड़ी में बैठ गई।

"मैंने अपना इंट्रो तो दिया ही नहीं, दिस इज चिराग, चिराग खन्ना, इसी सिटी में मॉल है मेरा।" उसने मुस्कराकर कहा।

"पाशना।" मैंने सिर्फ इतना कहा।

"काफी शर्मीली है ये।" चिराग ने मिल्की से कहा, तो वो हँसने लगी। वैसे मेरा झिझकना मेरे शर्मीले नहीं, बल्कि मेरे रिजर्व नेचर का हिस्सा था।

मिल्की और चिराग gf/bf ही हैं ये मैं अगले पाँच मिनट में ही जान गई, जब हम डॉक्टर के यहाँ स्ट्रेचिंग करा रहे थे। उनका आपस में बोलना, बात करना, एक-दूसरे को टच करना, खिलखिलाना था ही ऐसा उस टाइम। इसके बाद चिराग से मेरी कोई बात नहीं हुई, वो दोनों आपस में काफी बिजी रहे। मेरी स्ट्रेचिंग कराने के बाद मिल्की दी ने मुझे जबरदस्ती कुछ फ्रूट्स के पैकेट पकड़ा दिए, जिन्हें वो मेरे बार-बार मना करने के बावजूद वो मेरे बैग में डाल चुकी थी। ये सब लेने में मुझे इतनी हिचक महसूस हुई, मानो उधारी खा-खा कर गले तक एहसान भर गए हों उसके।

आरुष सर की कोचिंग के बाहर मुझे छोड़कर चिराग और मिल्की तो चले गए, पर छोड़ गए अपने लिए मेरे दिल में बहुत सारी रेस्पेक्ट। मिल्की चाहे दुनिया के लिए कैसी भी हो, अपनी पर्सनल लाइफ में कुछ भी हो, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता उससे। और पड़े भी क्यों, क्या फर्क पड़ता है उसकी लाइफ से मुझे, या किसी को भी क्यों पड़ता है? अभी जो आधा घंटे पहले हुआ यहाँ, उसके बाद मैं उसकी पर्सनालिटी और बोल्डनेस के साथ-साथ उसकी दरियादिली से भी इंप्रेस थी। उसका ये अपनापन... मैं यकीन ही नहीं कर पा रही थी। आज अगर वो न होती तो मैं सड़क पर बेमौत मारी गई होती या शायद अपाहिज हो गई होती... कुछ भी हो सकता था।

ये बात उनके लिए मिसाल हो सकती थी, जो उसे सिर्फ एक बिगड़ैल के रूप में देखते और समझते थे। उसमें आज मैंने एक ऐसी खूबसूरती देखी, जो उन सब में शायद न हो जो मिल्की को

बुरा गिनते थे।

"अब ये हाथ कहाँ फुड़वा आई तू?" सुमेधा ने पूछा, तो जैसे वर्तमान में लौट आई मैं।

"पट्टी-वट्टी फिट है मैडम?" गीतू ने कहा।

"ये फलों की दुकान कहाँ से ले ली?" सुम्मी ने आँखें फैलाई मेरे बैग में ऊपर तक लदे फ्रूट्स देखकर।

बस, न जाने क्या सोचकर मैंने मिल्की दी के बारे में अभी यहाँ इन्हें कुछ नहीं बताया। सोचा कि गीतू को बता दूँगी अकेले में, ये दोनों तो हमेशा की तरह मजाक ही बनाएँगे।

"रोड क्रॉस करने में गिर गई थी।" मैंने कहा।

"ठीक, आ जा अब।" सुमेधा ने हाथ पकड़कर अंदर लेने की कोशिश की मुझे उस कंजस्टेड कमरे में।

"तो क्या पाशना पार्टी दे रही है आज?" आरुष सर ने भी पूछ ही लिया।

पानी पड़ गया मुझ पर तो जैसे। 'अब गए सारे फ्रूट्स लगता है,' मैंने सोचा।

"नहीं सर, तबियत थोड़ी खराब थी, चोट लग गई इसलिए। वापसी में टाइम ज्यादा हो जाए, तो वार्डन टिक-टिक करती है, इसलिए अभी ले लिए।" मैंने साफ टालते हुए कहा।

"अच्छा ठीक है, बैठो।" सर बोले।

'थैंक गॉड।' मैंने सोचा, 'फ्रूट्स बच गए मेरे।'

पढ़कर यूँ ही वापस आ गए हम और मैं सीढ़ियों पर बैठी चाँद के आसपास फैले धीमे-से उजाले में खोकर देख रही थी उसमें खुद को मिलता हुआ कि अचानक वो आकर मेरे पास बैठ गई।

"सामने क्या देख रही हो?" उन्होंने पूछा।

"दिन और रात वहाँ मिल चुके हैं दीदी।" मैंने कहा।

"क्या?" वह बोलीं।

मैं बस उनके सवाल पर मुस्करा दी।

"तुम्हें पता है पिशी, तुम बहुत अलग तरीके से बातें करती हो।" उन्होंने कहा।

"पिशी?" मैं चौंकी।

"पाशु कहना मुझे पसंद नहीं है, इसलिए।" वह बोलीं।

"ये भी अच्छा है।" मैंने खुश होते हुए अपने इस नए निकनेम को स्वीकार कर लिया।

कुछ लोग मोबाइल फोन के उस ब्यूटी एप जैसे होते हैं, जिसका फोन में होना उनकी शक्ल के लिए बहुत ही लाभदायक हो सकता है। न होना भी कोई लंका नहीं लुटा देता, पर अगर हो तो मजा ही अलग। मेरी लाइफ में भी मिल्की दी कुछ यही स्टफ बनकर आई थीं।

"थैंक्स, उन फ्रूट्स के लिए।" मैंने कहा।

"अरे कोई नहीं।" उन्होंने टालते हुए कहा और मुझे अपने फोटोग्राफ, नए-नए फोटोशूट दिखाने लगीं।

इसके बाद उन्होंने मुझे अपने नए मॉडलिंग असाइनमेंट से लेकर अपने नए बॉयफ्रेंड तक के बारे में बताया, जो हाल ही में उन्हें किसी फोटोशूट के दौरान मिला। कुछ पुराने बॉयफ्रेंड्स और उन बिजनेसमैन के बारे में भी बताया, जो उन्होंने कभी डिच कर दिए थे या ब्रेकअप कर लिया था और कुछ वो भी जिन्होंने उनसे तगं आकर अलग होने का फैसला ले लिया था। घंटों कब बीते

इसका पता नौ बजे चला, जब सेल फोन बंद करने का टाइम आया। मैं श्योर थी कि गीतू बहुत नाराज होगी, क्योंकि उनसे मुझे डिनर के लिए ढूँढ़ा होगा और मैं नहीं मिली होऊँगी।

अंदर पहुँचने पर कमरे के हालात बाहर से भी ज्यादा गर्म लगे मुझे, जहाँ गुस्से में गीतू को कंट्रोल करना तो तपते सूरज को बास्केटबाल रिंग में उतारने जैसा था। ये मैं जानती थी कि कमरा नंबर 22 में इतना सन्नाटा होना तीनों रूमीज के मिले-जुले गुस्से का प्रतीक है, जो वहाँ के पत्ते-पत्ते में पसरा पड़ा था। मैंने ऐसे में बिना छेड़े सीधे जाकर लेट जाना ही उचित समझा, क्योंकि दबे पाँव की यह एंट्री हमारे सेफ्टी जोन के अंतर्गत आती है। तोरण का तीन, पापा का एक, सुमेधा के पाँच और गीतू के 14 मिसकॉल देखकर जैसे मन ही डूब हो गया मेरा। उफ, गीतू बहुत नाराज होगी, तभी कुछ नहीं बोल रही। लाइट्स तक ऑन करने की हिम्मत नहीं कर पा रही मैं। और सुम्मी, वो तो बड़ी अच्छी बनती है, नाराज न होने की एक्टिंग करती है, आज तो वो भी चुप है, क्यों! लेटी रही मैं एक तरफ जबरदस्ती आँखें मींचे, सुनती रही हर आहट, हर आवाज, हर खुसर-पुसर, बहुत देर तक, लगातार।

अचानक कान के एकदम पास जोर से चिल्लाने की आवाज हुई मेरे और मैं उछल पड़ी, सरप्राइज...!

ओह, ये क्या हुआ!! अच्छा, शायद हाँ, एक मिनट, ये मेरा 18th बर्थडे था।

लाइट्स ऑन हो गई थीं और जैसे आसमान के हजारों तारे चमक उठे सजावट में मिलकर। हूऊऊ... मैं कैसे भूल गई अपना ही बर्थडे, ऐसे भी क्या ख्याल। कुछ भी हुआ हो, पर आज तक मैं अपना बर्थडे कभी नहीं भूली थी और आज ये कैसे, मैं खुद नहीं समझ पाई थी।

हैप्पी बर्थडे टू यू, हैप्पी बर्थडे टू यू! से सारा कमरा गूँज रहा था। कमरे के आधे से ज्यादा रास्ते को मोमबत्ती लगाकर सजाया गया था, जो गेट से मेरे बेड तक आती थीं। ये मेरी खुशकिस्मती का एक और नया लम्हा था, जिसके लिए मैं आज फिर से एक बार अपने उन्ही रूमीज को थैंक्स करना चाहती हूँ। टेबल पर मेरा वो फेवरेट चॉकलेट केक और गिफ्ट्स में बड़ी-बड़ी चॉकलेट्स रखी थीं। अब ये फीलिंग ठीक वैसी थी, मानो कोई राजकुमारी नई-नई ब्याहकर महल आई हो। वहाँ से गीतू के गले लग जाना और लपककर उसकी गोद में चढ़कर केक काटना किसी 'लेसबो' वाली फीलिंग के उभर आने जैसा हो सकता है, जिस तरह बर्थडे पर आए पड़ोसियों ने हमें घूरा था। उसके बाद के बर्थडे बम के नाम पर ताबड़तोड़ कुटाई को कौन भूल पाएगा भला। रात संगीतमय थी और वक्त करवट लेकर समय को आधी रात में तब्दील कर रहा था कि म्यूजिक रोक दिया गया एकदम। थिरकते कदमों को थमने में भी दो मिनट लग गए।

"क्या हुआ, ये क्यों बंद हुआ है?" मैंने मुड़कर देखा तो सामने मिल्की दी को पाया।

सब रुककर उन्हें ऐसे देखने लगे, तो मुझे बहुत अजीब लगा। वो कोई एलियन नहीं हैं, जो सब उन्हें ऐसे देखकर रुक गए हैं।

"उम्म्म, मैं शायद गलत वक्त पर आ गई हूँ। मैंने शोर सुना कि पिशी का बर्थडे है तो...।" वह बोलीं।

"आपने अच्छा किया दी, आओ न अंदर।" कहकर मैं उनको अंदर खींचकर ले आई पार्टी में।

"हैप्पी बर्थडे स्वीटहार्ट," कहकर मिल्की दी ने मुझे एक बियर की बोतल थमा दी और हग कर लिया।

"देखो, जिसकी कमी थी वो तो यहाँ है, म्यूजिक लगाओ फिर से," कहकर मैंने बोतल

खोली और जश्न फिर से शुरू हो गया। हम सब उनके साथ नाचे और सबने एक-एक घूँट मारा।

"मिल्की दी, हुँह।" सुमेधा ने नजर बचाकर नाक-मुँह चढ़ाया, पर उससे आज के दिन मुझे कोई फर्क नहीं पड़ना था। यादगार दिनों में आज मिल्की दी के साथ मिलाकर एक दिन ये भी पूरा हो गया था।

फोर्थ सेमेस्टर के एग्जाम आने वाले थे, जिनको लेकर मैं बहुत उत्साहित थी। सब उसी तरह जा रहा था, जैसे जाना चाहिए था। मिल्की दी अब मुझे अच्छी से भी थोड़ी ज्यादा अच्छी लगने लगी थीं और मेरी फेवरेट सीनियर थीं। लेकिन अचानक आज की सुबह जो हुआ, वो चौंका देने वाला था।

मेरा लेक्चर फ्री तो नहीं, पर असाइनमेंट कम्पलीट न करने की वजह से आज मैंने क्लास बंक कर दी थी। अब ऐसे में कोई C.R. न देख ले का डर जेहन में कौंध ही जाता है।

इसलिए मैंने लाइब्रेरी में पनाह लेना ही उचित समझा। अकेले लाइब्रेरी की बड़ी-बड़ी लम्बी-चौड़ी मेज पर अपने छोटे-छोटे हाथ रखकर बैठना, वहाँ से गहरी सीढ़ीनुमा नीचे और ऊपर जाती बेसमेंट और अप फ्लोर की गहराती पैंड़ियों को देखना। पूरी लाइब्रेरी के चारों तरफ बनी लकड़ी और गोदरेज की शेल्फ। उनमें करीने से जमी हर राइटर की लिखी साइंस और मैथ्स की किताबें जहाँ विद्यार्थियों के लिए अक्सर घबराहट का सबब बन जातीं, वही साहित्य की अलमारियाँ मुझे बरबस ही अपनी और खींच लेतीं।

आज भी उस शेल्फ की क्रूर हरकत के चलते मुझे अपने असाइनमेंट को पूरा करने के विचार को त्यागने में सेकंड नहीं लगे और मेरा एक घंटा कब उस बुक में बंद दीवार घड़ी के सहारे निकल गया, इसका पता मुझे सवा घंटे बाद चला तो मैंने माथा पीट लिया अपना। ये टाइम है जनाब। इसके बड़े नखरे हैं। किसी शौक में उलझकर तुम जरा-सा ध्यान इससे हटाओ, तो ये कब अपनी बेइज्जती महसूस करने लग जाए पता नहीं लगता। जब तक एहसास हुआ देर हो जाने का, तब तक वाकई देर हो चुकी थी। अगले लेक्चर के 15 मिनट निकल चुके थे। मैंने अपने मन में अफसोस जताया, पर अब कर भी क्या सकते थे। "अब और नहीं इसमें लगूँगी, वरना फिर टाइम का नहीं पता चलेगा मुझे।" खुद से कहकर निकल गई मैं वहाँ से।

अपने आपसे बुदबुदाना फिर शुरू कर चुकी थी मैं। इसके बाद एंट्री क्लोज करके सीढ़ियों से होते हुए मैं आ पहुँची कैंटीन के बाजू वाले पार्किंग जोन में, जहाँ एक-दो जाने-पहचाने चेहरे देखकर ठिठक गई मैं।

ये मिल्की थी। उसकी बाहर लड़ाई हो रही थी। सामने खड़ा व्यक्ति और कोई नहीं बल्कि चिराग था।

मैंने वहाँ जाने की कोशिश की पर भीड़ ने न वहाँ जाने की इजाजत दी, न हालात ने मौका। मिल्की ने चिराग की पूरी शर्ट फाड़ दी थी और बदले में गुस्सा हुए चिराग ने मिल्की को दो थप्पड़ मारे थे। नजारा देखकर जैसे पाँव जम गए मेरे वहीं पर। कुछ देर बाद चिराग के परिवार वालों की गाड़ियाँ आनी शुरू हो गई कॉलेज में। पुल-सी ठहर गई मैं मानो जड़वत वहाँ।

"क्लास में चलें।"

देखा तो पीछे नीतिका थी।

"हाँ।" मैंने काँपते-से स्वर में कहा और वो मुझे लगभग धकेलते हुए ऊपर क्लास में ले आई।

"देखने भी नहीं दिया तूने।" मैंने उससे शिकायत की।

“क्लास शुरू होने वाली है यहाँ और तुझे लड़ाई की पड़ी है। दूसरों के मामले में टाँग न अड़ाया कर।” नीतिका बोली।

“बंक मास्टर, आज तुझे मिस विशु याद कर रही थी।” प्रीति ने कहा।

“हाँ, वो मेरा असाइनमेंट नहीं बना न, इसलिए।” मैंने फीका-सा जवाब दिया।

“क्या हुआ?” प्रीति ने पूछा।

“मन नहीं लग रहा।” मैंने कहा। मैं अब भी मिल्की दी को लेकर बहुत परेशान थी।

“ट्यूशन के पहले हॉस्टल मत जा, पीजी चल।” वह बोली।

“थोड़ा आराम तेरे यहाँ ही कर लूँगी फिर।” मैंने कहा।

परेशान होने पर प्रीति के साथ हमेशा ही गर्मी के मौसम में एक बर्फ के टुकड़े को चेहरे पर रख लेने जैसी फीलिंग आती थी।

मिल्की का उससे ब्रेकअप हो गया होगा, पर इस सबमें चिराग की फैमिली क्यों पड़ी बीच में, ऐसी क्या बात हो सकती है? सोचते-सोचते गोभी के पराठों ने मेरा मन मिल्की से निकालकर खुद में डुबा लिया था, जिनकी खुशबू प्रीति के किचन से आ रही थी। इसके चलते मिल्की के ख्याल कुछ वक्त के लिए दिमाग से पलायन कर गए।

“क्या पराठे हैं, बाय गॉड।” मैंने मुँह में ठूँसे-ठूँसे प्रीति से कहा।

भूखे को और क्या चाहिए, कुछ निवाले घी लगे। वो मिल जाएँ मट्ठा मार के, तो फिर क्या ही कहने। मिल ही गई जन्नत समझो।

“अभी तो टाइम है क्या करें? आइसक्रीम खाने चलते हैं।” मैंने कहा, तो तैयार हो गई वो।

हमेशा की ही तरह भीड़ बहुत थी और कुछ नई टीचर्स का ग्रुप दिख जाने की वजह से हम वहाँ से अपनी आइसक्रीम लेकर बस निकलने की फिराक में थे। प्रीति हमेशा की तरह टीचर्स को देखकर ओवर रियेक्ट करने लगी।

कभी-कभी सुविधाओं का फायदा हम डायरेक्टली महसूस नहीं कर पाते। इसका एहसास हमें उस वक्त होता है, जब ऐसे ही किसी का गर्म दिमाग ठंडा हो जाने से हमारे आसपास का वातावरण ताजा होने लगे।

चुपचाप पैक कराकर हम जा ही रहे थे कि अचानक मेरे कानों में पड़ीं कुछ आवाजें। “वो मिल्की के साथ वाला लड़का ही न।” कानों की खुजली बढ़कर अपने चरम पर पहुँच गई और बात पता करने की बेकरारी ने मुझे उन्हीं के पास वाली सीट च्युइंगम जैसे चिपका दिया।

“शादी का चक्कर है उस लड़की का भई। बुलाया तो है कल उसके माँ-बाप को भी प्रिंसी मैम ने।” बॉयकट बालों वाली एक टीचर बोली।

“अरे! कौन-सा प्रिंसिपल मैडम से कहकर की थी शादी उससे, जो अब मैडम सुलटाए इनके स्यापे।”

हम दोनों कान लगाए काफी देर बातें सुनते रहे, जब तक कि आइसक्रीम का आखिरी कतरा मुँह के सहारे गले से नीचे नहीं उतर गया।

“चलें अब, देर हो रही ट्यूशन को।” होश भरी दुनिया में कदम रखा मैंने, जब प्रीति ने कहा।

“हाँ।” मैंने बस इतना कहा और हम चल पड़े वहाँ से।

“वो जो हॉस्टल वाली मॉडल है, ये उसी के बारे में बात कर रहे थे न?” प्रीति ने पूछा।

“हम्म, मैटर जो हो गया आज उसी से बारे में।” मैंने कहा।

स्टूडेंट के नाम पर भी कॉलेज टीचर्स की राजनीति उस सुलगते सिगरेट के माफिक होती है, जो छल्ले छोड़कर जोर पकड़ रही हो। इसके बाद वहाँ पहुँचकर गीतू के असफल प्रयास और खराब दिमाग की चर्चा सर्वव्यापी करके ही छोड़ी थी मैंने।

"मिल्की दी ने चिराग से शादी कर रखी है, पर अब वो कमीना अपने घरवालों के सामने मान नहीं रहा।" मैंने बताया।

मैं पूरी तरह मिल्की दी के साथ थी और मेरे हिसाब से मिल्की दी के साथ पूरी तरह गलत हो रहा था, जिसे देखकर मेरा मन किसी परकटे पंछी जैसे फड़फड़ा रहा था। ये एक अजब किस्म की छटपटाहट थी, जो हर गलत होती चीज को देखकर मेरे अंदर जन्म लेती है। मिल्की दी के बारे में सोचते-सोचते हर काम अपने टाइम से हुआ, शाम आई और चादर ओढ़कर काली रात में बदल गई, पर मैथ्स के अन्सॉल्व्ड सम की तरह पहेलियों की गुत्थी अपनी जगह बनती, मुड़ती, बिगड़ती रही।

मिलने गई थी मैं रोज की तरह आज भी मिल्की दी से। हमेशा की तरह ही आज भी कुछ ज्यादा नहीं बताया उन्होंने। पर हाँ, वो परेशान बहुत थीं। उन्होंने बताया कि चिराग उनसे शादी कर चुका है, फिर भी फैमिली की पसंद से दूसरी शादी कर रहा।

"मैं कुछ दिन के टूर पर जा रही हूँ।" मिल्की दी ने कहा, जब हम और दिनों की तरह सीढ़ियों पर बैठे थे।

"कहाँ, अचानक?।" मैंने आश्चर्य से पूछा।

"हाँ, चंडीगढ़।" वो बोली।

"वापस कब आओगी?" मैंने आखिर में बस इतना पूछा।

"15 दिन का टूर है, शायद बेहतर लगे वहाँ जाकर।" वह बोलीं।

"मेरे सेमेस्टर एग्जाम भी हो जाएँगे तब तक तो।" मैंने कहा।

"कब से हैं एग्जाम तुम्हारे?" उन्होंने पूछा।

"कल से।" मैंने बताया।

"ओह, अच्छा, तुम्हें पढ़ने जाना हो तो जाओ तुम।" वह बोलीं।

"नहीं, कोई बात नहीं।" मैंने कहा।

वो कहीं दूर ताकने लगीं। कुछ नहीं, बहुत रुआँसी-सी थीं वो। सूनी-सूनी। इतना खालीपन मैंने उनकी आँखों में इसके पहले नहीं देखा था। देखकर न जाने क्यों दया-सी आ गई मुझे। उनकी खाली आँखों में वो तितली-सी दिख रही थी, जो काँच की किसी छोटी बोतल में कैद है और बंद ढक्कन के भीतर दयनीय-सी इधर-उधर टकरा रही है। बल्ब की टिमटिम जैसी चमकती उनकी वो खूबसूरत आँखें आज इतनी मद्धम-सी पड़ गई थीं कि उन पर सिगार रखा जा सकता था।

"मिलकर जाना, जब जाओ दी," कहकर मैं अपने कमरे की तरफ चल दी।

"तुम मत सोचो इतना। देखो, वो जा रही है न ट्रिप पर, सब हो जाएगा ठीक।" तोरण फोन पर बोला। उसने समझाते हुए कहा, "देखो, एग्जाम है न बेबी, अब तुम उन पर फोकस करो।"

"ओह, हाँ।" मैंने कहा।

"लो, और सोचो अपनी सीनियर के बारे में, न एग्जाम याद रहे न मैं।" उसने शिकायत की।

हँस पड़ी मैं मानो घने बादलों के बीच से बहुत तेज बिजली चमक उठी हो।

"हहहाहा, नहीं डियर, ऐसा नहीं है, तुम्हें कभी भूल सकती हूँ क्या मैं।" मैंने कहा।

"बस, सब कहने की बातें हैं। कितने दिन से बात तक नहीं कर रहीं तुम।" वह शिकायती लहजे में बोला।

उसका ये लहजा मुझे बहुत पसंद था, क्योंकि ऐसे में वो और भी आकर्षक हो जाता था। मैं सोच रही थी उसका वो चेहरा मन में रखकर।

"फिर खो गई तुम।" उसने टोका, फिर वह बोला, "तुम्हारे एग्जाम के बाद मिलने आऊँगा।"

"वैसे मेरी वेकेशन भी हो जाएँगी सेमेस्टर एग्जाम के बाद तो... समर वेकेशन।" मैंने चहककर कहा।

"तब ही आ जाता हूँ, तभी मिलते हैं और साथ ही में घर निकल जाएँगे।" वह बोला।

"तय रहा।" मैंने हामी भर दी।

कई बार हम अपनी मानसिक प्राथमिकता के आगे कुछ ऐसी आकस्मिक चीजों का आवरण बना लेते हैं, जो हमारी जिंदगी की प्राथमिक जरूरतों से होती तो कहीं पीछे हैं, पर सरक-सरक कर आगे आ ही जाती हैं और अपना फोर्स ऑफ अटैंशन इस्तेमाल करके हमारे दिलो-दिमाग पर हावी हो जाती हैं।

मिल्की दी भी वही ड्रग लगीं मुझे उस वक्त, जिसने मुझे मेरे एग्जाम, मेरे रूममेट्स, मेरे दोस्तों और तोरण से थोड़ा अलग तो किया था इसमें कोई शक नहीं।

मिल्की दी आई रात को मुझे मिलने। मुस्कराकर तो नहीं मिले हम, क्योंकि मन से वो दुखी थीं, ये मैं अच्छे से जानती थी। पर जाते हुए वो बड़ी-सी झप्पी दुनिया की सबसे खूबसूरत दोस्त की झप्पी थी, जो मेरी मिल्की दी ने मुझे दी थी।

"टेक केयर पिशी।" उन्होंने कहा।

"यू टू दी, बिल्कुल परेशान मत होना और ट्रिप एंजॉय करना। इस सबसे बाहर जरूर आ जाओगी आप।" मैंने कहा तो मुस्करा उठीं वो।

उनकी आँखों में पानी देखकर मैं समझ गई कि मुझे ये नहीं कहना चाहिए था, पर मैं कह चुकी थी।

"चलती हूँ।" मिल्की दी ने कहा।

वो सीढ़ियाँ पूरी स्पीड से उतरीं और अपना सामान अपने दोस्त के हाथ में थमाकर बिना पीछे देखे चली गई और मैं दूर तक खड़े देखती रही।

"गई तेरी जाने जिगर, तेरी मिल्की दी। ऐसे क्यों गमगीन-सा मुँह बना रही, जैसे हमेशा के लिए चली गई हो वो?" सुमेधा ने हमेशा की तरह ताने मारते हुए कहा।

"तू जरूरत से ज्यादा ही मुँहफट नहीं है कुछ?" मैंने झींककर कहा।

पर कहाँ, वो तो रेत का वह ढेर थी जिसे चाहे जितना संभालने की कोशिश करो और भरभरा जाती है। वो निकल गई थी मुँह पर गेट पटककर।

"वाट द हेल इज शी?" मैंने चिल्लाकर अपनी नाराजगी सुम्मी से जताई, जो हर बार की तरह इस बार भी मूकदर्शक ही बनी रहे।

"हाँ, ऐसे बोलना तो नहीं चाहिए था उसे।" गीतू ने कहा, जो हमेशा ही ऐसा करती थी।

"उसके सामने तेरी हमेशा फट जाती है, अब पीछे बोल लेगी, डरपोक।" मैंने त्योरियाँ चढ़ाते हुए कहा।

"अब मुझ पर चढ़ जा तू" वह बोली।

"कम से कम तुम दोनों की तरह चील-कौवे जैसे तो नहीं लड़ सकती मैं।" गीतू चिल्लाई।

मुँह फुलाकर दूसरी तरफ बैठ गई मैं।

पहले तो मिल्की दी अपनी ग्लैमर की दुनिया की तरफ इतना तेज भागी कि इस दुनिया के हर नियम-कायदे को लाँघ गई, समाज की बनाई हर लक्ष्मणरेखा को तोड़कर। कोई गाड़ी ऐसी नहीं बची, जिसमें होकर वो हॉस्टल के बाहर से गुजरी न हों। ऐसे में इतना दूर आकर वो एक ऐसा ठहराव चाहती थीं, जो शायद अब उन्हें नहीं मिल सकता था, क्योंकि इस समाज को हमेशा से सीता ही तो चाहिए, जो अग्निपरीक्षा दे, जो घूम-फिर कर पतिव्रता सीता के गेटअप में आ जाए। ये पुरुष प्रधान समाज आज भी वही है, जो पहले तो पवित्र नारी को अपवित्रता तक लाने के लिए अपना हरसंभव पासा फेंकता है और सफल हो जाने पर उसी नारी से उसकी पवित्रता का लाइसेंस भी चाहता है। जिस मोड़ पर मिल्की दी आज खड़ी थीं, क्या वहाँ से वापसी हो पाना संभव था? देखा जाए तो शायद नहीं, क्योंकि इस दुनिया में अपनाने वाले से कहीं-कहीं-कहीं ज्यादा कुछ भी करके पीछा छुड़ा लेने वालों की भयंकर तादाद है।

पढ़ते-पढ़ते कब आँख लगी पता नहीं। उठना हुआ तो तब, जब गीतू ने नाश्ते के लिए जाने को मेरे मुँह पर जोर से तकिया दे मारा।

"हाँ-हाँ, क्या हुआ?" मैं हड़बड़ाकर उठी और चारों तरफ देखा, तो प्राणी के नाम पर गीतू दिखी मुझे।

मैं आँखें मलते हुए टाइम देखने लगी, तो मानो यकीन नहीं हुआ मुझे घड़ी पर।

"इतना टाइम कब हो गया?" मैंने गीतू को टटोलते हुए कहा।

"जब तू गधे बेचे सो रही थी तब।" वह बोली, "अब जल्दी चल नाश्ता करने, फिर कॉलेज नहीं जाना?"

"भाँग खाकर सोई थी क्या?" उसने मेस में पूछा।

"नहीं तो," कहकर मैं हँसने लगी।

"सुम्मी, सुमेधा कल रात वाली बात की वजह से सड़े हैं, सुमेधा सड़ी है मतलब।" गीतू ने कहा।

"हम्म, सुम्मी तो पूँछ की तरह लटकती ही है उसके पीछे।" मैंने उनकी तरफ देखते हुए कहा, जो मेस में दूसरी ओर बैठे नाश्ता कर रहे थे।

"भाड़ में जाएँ। एग्जाम में तो मेरी ही हेल्प माँगने आते हैं, खुद तो कुछ होता नहीं।" मैंने मुँह बनाया।

"हेहेहे।" गीतू हाँ में सिर हिलाकर हँसने लगी।

मिल्की दीदी को गए एक हफ्ता होने वाला था, पर इस हफ्ते में एक दिन भी ऐसा नहीं रहा जब मैंने उन्हें याद न किया हो। कभी फोन पर हाथ गया और उँगलियाँ वापस हट गईं ये सोचकर कि कहीं उनको ये मेरा ओवरस्मार्ट न लगे या फिर शायद वो बिजी हों। आते-जाते मिल्की दी से भी मेल हो ही जाता ख्यालों के प्लेटफॉर्म पर, वहाँ तो वो भी मुस्कराते मिल ही जाते हैं जो हमारी फोन बुक में न हों। आज की इस शाम भी मुलाकातों के दौर ने मिल्की दी को मेरे पास लाकर खड़ा कर दिया रोज की तरह, जब घास के हरे-भरे मैदान में आज डूबते सूरज ने मेरे सामने से ढलते हुए अपनी लाइट 101 नंबर कमरे की खिड़की पर मारी। उत्सुकतावश मैंने जाकर 101

नंबर के लटके ताले को देखा और अपने कमरे की तरफ बढ़ आई।

आखिरी पेपर मैथ्स का था और दो दिन की थी छुट्टी। अब जो रूम क्लासेज शुरू हुई, तो सुमेधा के साथ हर बैर न जाने कहाँ घुल गया। अब तो सुबह दरवाजे पर आकर बेल बजाकर उल्टे पाँव लौट जाती और शाम अब स्वागत न होने के कारण नाराज होकर शिकायती अंदाज में बिना मिले रह जाती। अब मन का दरवाजा सिर्फ इमरजेंसी में ही खुलने लगा। इसका एहसास मुझे आज आखिरी पेपर की सुबह हुआ मेस में नाश्ता करते हुए कि मैं इस सब में कुछ भूल भी गई थी, कुछ बहुत करीब वाला।

"हेल्लो दोस्तो।" ये रचना थी।

"हाय।" हम सबने मुस्कराकर कहा।

"तैयार है सवारी मतलब हम्म्म।" शिखा बोली।

"लास्ट एग्जाम है। हम लोग तो एक ही रूट के हैं, साथ चलें घर, मस्ती करते हुए?" शिखा बोली।

"हाँ, दो दिन बाद जाएँगे आराम से, यहीं मस्ती करेंगे।" गीतू ने चहककर कहा।

पूरी टेबल चहक रही थी, सिवाय मेरे।

"मैं नहीं आ पाऊँगी, मेरा थोड़ा प्लान है यार।" मैंने कहा।

"हाँ निकल, हम सब कर लेंगे मजे, हुँह।" गीतू ने कहा, तो बाकी सबने भी सेम एक्सप्रेशन दिया।

"ओहो, अब एक लौंडे के लिए तू हमे पेंडिंग डालेगी, देखो तो।" सुम्मी बोली।

"जब दोस्त, दोस्त न रहे न, तो यही होता है।" सुमेधा ने भी कहा।

"चल होगा तो, फूट ले अब बस।" रचना बोली।

"और तेरी वो दीदी तो बड़े दिनों में दिखी कल रात हमें, थी कहाँ वो?" शिखा ने अचानक बात छेडी।

"मिल्की दी?" मैंने ब्रेड पर लगा जैम अचानक हाथ से छोड़ दिया।

"तेरी दीदी, प्यारी दीदी, मिल्की दीदी, जाने बहार, तेरी मलिका-ए-हुस्न।" रचना बोली चिल्लाकर।

"क्या?" मेरे मुँह से सहसा निकला।

"हो गया बेड़ा गर्क।" सुमेधा फुसफुसाई।

"अब नाश्ता खत्म कर, एग्जाम के बाद जाना उसके कमरे में गले मिलने, वरना लेट हो जाएँगे हम।" गीतू ने अपने पूर्वानुमान के आधार पर कहा।

"वैसे भी तुझे तो वहाँ जाकर बस वहीं रह जाना होता है।" सुम्मी बोली।

नाश्ता करके उठे, तो अगले पाँच मिनट में तैयार होने की हिदायत के साथ गीतू रिवाइज करने लग गई। "मिल्की दी आ गई और मुझे बताया भी नहीं।" मैं बुदबुदाई।

"यहाँ तू मुझसे लड़ी उसके लिए, मुझसे।" सुमेधा ने हाथ नचाए, मानो बात हाईकोर्ट ही लेकर जाएगी।

"कोई इस मच्छी बाजार को सिर्फ आज के लिए बंद करेगा?" गीतू चिल्लाई, तो हम तीनों शांत हो गए।

"चलो, मैं रेडी हूँ।" मैंने कहा।

"आज जल्दी रेडी है, तो आफत काटेगी क्या अब?" सुम्मी काजल लगाते हुए पीछे से गुर्राई।

"मैं हमेशा जल्दी ही तैयार होती हूँ, तुम्हीं लोगों का काजल नहीं लग पाता।" मैंने कह दिया।

"तुम रेडी हो रहे हो, तो मैं बस दो मिनट में आई," कहकर मैं दरवाजे की तरफ लपकी, तो सुमेधा ने टोक दिया।

"हाँ, तेरा न होगा पेपर बिना मिल्की दर्शन के।" वह बोली।

"नहीं, वो बात नहीं है। मैं तो बस बाहर रचना को देख रही कि वो आई नहीं अभी तक। साथ जाना है न उनको हमारे।" मैंने बात को छुपाते हुए कहा और किताब में आँखें गड़ाने लगी।

"चलें।" बाहर शिखा की आवाज आई और हम लोग जैसी भी हालत में थे, भाग पड़े बस।

बस का आलम वही रोज जैसा था, मानो लोकल ट्रेन का कोई तंग कंपार्टमेंट हो, जहाँ सरक-सरक कर तीन की सीट पर चार गुम्बदों को टिकाया जाता और पाँचवें का गुम्बद सीट के सहारे टिककर खड़ा हो जाता।

"अरे जल्दी आ, कितना लेट आई तू पाशु।" प्रीति मेरा गेट पर ही इंतजार कर रही थी।

"क्वेश्चन नहीं हो रहे, मैं कह रही हूँ आने हैं ये, देख लेना।" वह काफी घबराहट, लेकिन विश्वास से बोली।

अब यहाँ बात आती है कि घबराहट के साथ विश्वास से भला कैसे बोला जाता है? तो मैं बता दूँ कि ब्रेजुएशन के एग्जाम फीवर में ठीक ऐसे ही महसूस कर रहे थे हम। एग्जाम फीवर ही वो फीवर है, जिसमें हमें असमंजस और ज्ञान, दोनों ही होते है। एक साथ मिलकर वे एक एग्जाम फोबिया बना देते हैं, जिसमें डर हद से ज्यादा लगता है। यह फीवर लाइलाज है मैं बता दूँ और कोई तोड़ है ही नहीं।

पर हम तो खुश थे, क्योंकि ये हमारे 2nd ईयर की आखिरी सिटिंग थी इस एग्जाम थैरेपी की। जल्दी-जल्दी हल करने में जुट गई मैं और तब हटी, जब आखिरी वाली बेल बजी अंदर एंट्री की।

"चल, ओके पाशु, ऑल द वैरी बेस्ट।" प्रीति ने कहा।

"तुझे भी, मिलते हैं।" यह कहकर हम दोनों अपने-अपने एग्जाम रूम की तरफ चल दिए।

लाल रंग के कारपेट पर चढ़कर मैं लगभग गिरते-गिरते बची, क्योंकि मैं भागकर अंदर घुसने की फिराक में थी। दरअसल, मुझे आखिर में एंट्री करना बिलकुल अच्छा नहीं लगता था।

"आराम से लड़की।" ऑन ड्यूटी सर ने कहा, तो बड़ा-सा मुस्करा गई मैं।

ये हैंडसम से दिखने वाले गोरे रंग के सिक्स पैक्स वाले सर, जिनका नाम अमन था, हमारे कॉलेज के तीन जेंट्स स्टाफ में से एक थे। वो हमारी क्लास तो कोई नहीं लेते थे, पर सारी क्लास की छोरियों को खुद पर फ्लैट कर दिया था उन्होंने आते ही। अब पेपर मैथ्स का था तो अच्छा ही होना था, सो हुआ भी। तीन सेकंड के तीन मिनट हुए, जो कब तीन घंटे में बदल गए पता कहाँ चला।

मैं पैदल ही हॉस्टल भाग आई, क्योंकि मुझे ऑटो से ज्यादा विश्वास अपने पैरों पर था। हॉस्टल आकर मेरे कदम उठ चले 101 नंबर की तरफ, पग-पग मानो जैसे मील लग रहा था और सेकंड-सेकंड जैसे साल। बाहर के चेहरे की लालिमा अंदर से अग्नि रूपी तेज लिए मुझ पर आ बिखरी, जब मैंने उनके कमरे का ताला खुला देखा।

‘आ गई हैं मतलब सच में।’ मैंने सोचकर मुस्कराया।

“मिल्की दी,” कहते मैंने दरवाजा खटखटाया।

ठक ठक!

कोई जवाब नहीं आया, तो मुझे लगा कि सो तो नहीं रही हैं।

दो मिनट बाद…

ठक ठक!

मैंने फिर से बजाया, पर कोई आवाज नहीं आई।

‘शायद सो ही रही हैं।’ यह सोचकर मैं वापस चली आई।

वापस आकर चेंज ही किया था कि तोरण का फोन आ गया।

“कल आ रहा हूँ।” उसने कहा, तो मैंने हाँ करके सब पक्का कर दिया।

“सो जाऊँ मैं, काफी थकी हुई हूँ।” मैंने उससे कहा।

“ठीक है, शाम को करूँगा,” कहकर फोन रख दिया उसने।

मैं सो गई और दो घंटे बाद जब उठी, तो मेरे रूममेट मुँह फुलाए बैठे थे। वो गलत नहीं थे, ये मेरी बदतमीजी थी कि मैं उन्हें बिना बताए आ गई थी अकेले।

“इधर आ पाशु की बच्ची, कब से ढूँढ़ रहे थे हम तुझे कॉलेज में।” गीतू बोली।

“सॉरी यार, मैं थक गई थी तो आ गई।” मैं बोली।

“बस-बस, बना मत, पता है तू क्यों आई पहले।” सुमेधा ने कहा।

“नहीं, वो तो सो रही हैं अभी, मैं गई थी तब।” मेरे मुँह से निकल गया। मेरा झूठ पकड़ा जा चुका था।

“चल तू पहले, अभी चल तुझे उसी से मिलाऊँ पहले।” सुम्मी ने कहा।

गीतू बात खत्म करने के मूड से नहीं थी। वह तमतमाते हुए मेरा हाथ खींचकर सीधा ऊपर फ्लोर पर 101 नंबर के सामने ले गई।

“गीतू रुक ना।” मैंने कहा।

“नहीं,” कहकर वो जोर-जोर से मिल्की दी का दरवाजा बजाने लगी। पर काफी देर बाद तक भी कोई आवाज नहीं आई और गीतू गेट को बजा-बजा कर थक गई, तो मुझे कुछ अजीब लगा।

“पता नहीं, अब तो चिंता हो रही।” मैंने परेशान स्वर में कहा।

गीतू इन मामलों में शताब्दी से ऊपर थी, आनन-फानन में जाकर वार्डन को बताया, तो बिना देर किए वार्डन गार्ड को लेकर दरवाजा खुलवाने आ गई। मास्टर चाभी से मिनटों में इमरजेंसी लॉक खोल दिया गया, जिसके बाद का मंजर देखकर मानो मेरा दिल फटा का फटा रह गया। आँखों ने पलकों से न झपकने वाली दुश्मनी मोल ले ली और मुझे खुद से मानो घिन-सी आनी महसूस हुई। मिल्की दी जमीन पर उलटी पड़ी थीं। उनका पूरा सफेद शरीर नीला पड़ चुका था। मुँह से निकलते सफेद झाग अब सूख रहे थे और खुली आँखें मानो मुझे देख रही थीं। उनकी आँखें बर्फ की तरफ पथरा चुकी थीं, कभी न पिघलने के लिए। ये मेरी जिंदगी की सबसे तीव्र चीख थी, अँधेरा-सा सब तरफ तेजी से आने लगा और मैं जमीन पर गिरने लगी। कब, कैसे, क्या, फिर, बेहोश हुई या दौरा पड़ा कह नहीं सकती, कौन उठाकर लाया पता नहीं, दर्द की एक तेज लहर आई सुनामी की तरह और मानो सारे होश बहाकर दूर ले गई।

पर हाँ, याद है कि जब गिरते वक्त मेरी आँखें वो ठीक सामने से मिल्की दी की आँखों से टकराई, तो उनकी पथराई मृत आँखों ने मेरी जीवंत दृष्टि से हजारों बातें कर लीं। ताउम्र मेरे लिए छोड़ दिए ऐसे लाखों सवाल, जिनके जवाब हर रात के अँधेरे तकिए पर लिटाए रखें। हर शाम जब सूरज ढले तो सीढ़ियाँ बैठने न दें। ऐसे सवाल, ऐसी बातें जो बस होते-होते रह गई। उनका हर पीर, उसका हर जख्म, हर एहसास, वो हर दिन का पता जो उन्होंने न जाने किस किस्म की मनः स्थिति में गुजारा, वो सारे अर्श से लेकर फर्श तक की बात जो मेरी और उनकी आँखों ने उस पल में कर ली बिना मेरी इजाजत।

अभी मैंने देखा कि मैं होश में, अपने कमरे में, अपने बेड पर थी। सुम्मी मेरे पास बैठी थी और सुमेधा मेरी आँखें खुलते ही बाहर से गीतू को बुलाने गई थी।

"अब तू ठीक है न पाशना?" गीतू ने आकर पूछा, तो सन्न-सी हालत में चिपट गई मैं उससे, मानो कोई मेमना सहमकर अपनी माँ के पास आ गया हो।

"डर मत पाशु, तू अब ठीक है, अपना ख्याल रखना है तुझे बस।" वह बोली।

"मिल्की दी...।" कहकर बस जैसे तालू अंदर जाम हो गई मेरी और आँखों ने आँसुओं को सख्ती से अपने अंदर गिरफ्तार कर दिया।

मैं चाहती थी खूब चिल्ला-चिल्ला कर, सिर पटक-पटक कर रोना, आँसू बहाना, शोक मनाना, छाती पीटना... उसके लिए जो मुझे धोखा देकर, ऐसे अँगूठा दिखाकर, ऐसे बिना बताए पराया करके चली गई थी।

मैं कैसे रो सकती थी उनके मृत शरीर पर गिरकर, मैं कैसे उन्हें थप्पड़ मारकर सवाल कर सकती थी। क्या हक था मेरा? क्योंकि समाज सिर्फ खून के रिश्तों को ही ये अधिकार देता है, रिश्तों को नाम किसी जगजाहिर बंधन से जोड़कर ही दिया जाता है, किसी मनजाहिर रिश्ते की कोई मान्यता नहीं। उनके पास जाकर रोने के लिए मेरा उनका अपना होना जरूरी था, कोई ऐसा लेबल होना जरूरी था जो उनके और मेरे रिश्तेदार होने की पुष्टि कर दे, बस। मेरी आँखें समाज की किताब में बने उन नियमों को खंगाल रही थीं, जिन्हें ढूँढ़कर मैं आग लगा सकूँ, एक थैले में भरकर उन सब नियमों को कहीं बहते दरिया में सिला दूँ, या तो दफना दूँ, या कैसे भी बस अंतिम संस्कार कर दूँ उनका, ताकि वो फिर कभी न आ पाएँ ऐसे दुबारा किसी खोखलेपन को दिखाने। शाम अपने नियम से ही आई थी और सुम्मी का अपनापन मेरे लिए चाय बना रहा था।

गीतू अपने वो फेवरेट कुकीज मेरे लिए निकाल रही थी, जो वो किसी को देखने तक नहीं देती थी और सुमेधा कब से मेरा मन लगाने के लिए बातें करने की कोशिश कर रही थी। अरे! मैं हमेशा इसी प्यार को तो चाहती थी। यही तो थी मेरी वो चाहत। ये प्यार जो कोई मुझसे करे। मेरे दोस्त और यहाँ पर मेरे सबकुछ, मिले भी तो कैसे, किन हालात में।

तोरण का कॉल बार-बार आ रहा था, पर मेरी सेंसेशन तो मिल्की दी के शरीर के साथ ठंडी हो चुकी थी।

"बार-बार कॉल आ रहा है पाशना, तू चाहे तो मैं कल के लिए मना कर दूँ?" सुमेधा हल्के से बोली।

मैंने स्वीकृति में सिर हिलाया, तो वो फोन लेकर बाहर चली गई।

"घर आने का पूछ रहा है।" सुमेधा कुछ ही देर बाद वापस आकर बोली।

"पापा ले जाएँगे मुझे," कहकर मैंने आँखें बंद कर लीं।

“ठीक है,” कहकर सुमेधा वापस बाहर चली गई।

“चाय पी ले पाशना।” कुछ देर बाद सुम्मी ने चाय मुझे भी पकड़ा दी।

मम्मी वाली चाय के बाद आज दूसरे नंबर की वर्ल्ड्स बेस्ट चाय कहूँगी मैं उसे, क्योंकि उसमें चीनी कम और प्यार ज्यादा मिला हुआ था। उन तीनों की कोशिश जैसे धीरे-धीरे पिघलने लगी, तभी वार्डन अचानक हमारे कमरे में आई, जो हम चारों को काफी अजीब लगा।

“कैसी हो मिस मित्तल?” वह बैठते हुए बोली, तो मैंने नजरें उठाकर देखा। अलग साउंड लगा मुझे ये।

मैंने कोई जवाब नहीं दिया।

“मैंने कई अनाउंसमेंट कीं पर तुम आई नहीं, तो मैंने सोचा मैं ही चली आऊँ।” उसने कुछ रुककर कहा।

“ये एक नोट है जो हमें मिल्की के कमरे से तुम्हारे लिए मिला।” उन्होंने कुछ देर बाद कहकर एक नोट चिट मेरी तरफ बढ़ाई, तो मैंने एकदम-से लपक लिया उसे, मानो कोई और ले लेगा।

वार्डन इसके बदले में सिर्फ मेरे सिर पर हाथ रखकर चल दी कमरे से।

“तुम धीरे-धीरे इस हादसे से उबर जाओगी।” वो मुड़कर मुझसे बोली।

मैंने कोई जवाब नहीं दिया।

“इसे कल सुबह मीटिंग में लेकर आना, जो हॉस्टलर्स के लिए खासतौर पर रखी गई है। कॉलेज स्टाफ, प्रिंसिपल मैडम और कॉलेज अथॉरिटी आ रही है।” सुम्मी से कहकर वो चली गई।

इसके बाद काँपते हाथों से मैंने नोट चिट खोली।

Dearest Pishi,

Its your Milki,

i don’t know about philoshophy type thoughts and all but still i can clear one thing. I’m not strong as you want to see.

I’m really really surprise that how much stronger you are & you know, no one can able to be so strong in this worst condition.

Since I could tell you the truth that now I’m very tired. Quite often tried to tell you about my mystery but its enough Pishi.

Ofcourse, I’ll share one day on which you want to know actually.

Take care sweetheart, love you a lot …….

Milky …….

नोट खत्म हो गया था, पर मेरी आँखों से टपकते आँसू के कतरे न जाने कब तक बिस्तर गीला करते रहे, मैं खुद नहीं जानती। शायद आधी रात, शायद पूरी रात, शायद उस अगली सुबह तक, जो न होती तो मुझे ज्यादा अच्छा लगता। ये सुबह 10 बजे हुई थी। मैं कब सोई, ये तो पता नहीं पर जब उठी तो 10 बजे थे। आज किसी ने मुझे नहीं उठाया था।

“10 बज गए।” मैंने घबराकर फोन में देखा। इतने में गीतू पास आकर खड़ी हो गई।

मैं कुछ देर ऐसे ही चुपचाप बैठी रही, फिर ब्रश लेकर बाहर गई, तो जैसे चलचित्र की भाँति वो सीन सामने आने लगा, जब पहली बार मिल्की दी हमारे दरवाजे पर एक तेज बदबू के साथ पड़ी मिली थीं। सिर घूमने-सा लगा और मैं डरकर वापस पीछे आ गई।

"चल, मैं तेरे साथ चलती हूँ। तू ब्रश कर ले," कहकर वो मेरे साथ आ गई। उसके बाद ब्रेकफास्ट करके हम हॉस्टल के मेन हॉल में पहुँचे, जहाँ 11 बजे रिपोर्ट करना था।

"तुम सबका तो प्लान था न आज का?" मैंने सुम्मी से पूछा।

"हाँ, कल शाम तक था, पर फिर हमारा मन नहीं किया जाने का।" वह बोली।

"मेरी वजह से न...? थैंक्स यार, मैं बहुत लकी हूँ कि मुझे तुम लोग मिले।" मैंने आँखें भरकर कहा।

"रोई तो नहीं मिलेंगे समझ ले।" वह बोली, तो दर्दभरी मुस्कान उतर आई जैसे मेरे अक्स पर।

टाइम से पहले ही हम लोग हॉल में आ चुके थे, जहाँ काफी लड़कियाँ पहले से मौजूद थीं। वार्डन के साथ कॉलेज की प्रिंसी और अथॉरिटी स्टाफ भी आ चुका था जो जाहिर है, हमसे कल हुआ वाकया बाँटना चाहता था।

"गुड मॉर्निंग माय चाइल्ड्स।" वार्डन ने शुरू किया।

"चिराग जो मिल्की का बॉयफ्रेंड था, उसने उसका MMS बनाकर उसे बहुत दिन ब्लैकमेल किया और जब वो शादी की बात पर अड़ गई, तो उस विडियो को न सिर्फ सबके लिए अपलोड करने की धमकियाँ दीं, बल्कि वो सारा पैसा भी माँगा जो वो अब तक मिल्की पर खर्च कर चुका था। वो शायद न भी माँगता, अगर मिल्की उसकी शादी चुपचाप कहीं भी हो जाने देती बिना किसी ना-नुकर के। दूध में पड़ी मक्खी बन चुकी थी वो उसके लिए और अब उसकी पोजीशन के आड़े आ रही थी।"

मौत जहर खाने से हुई है, पर कोई उसका केस नहीं खोलने देना चाहता है, क्योंकि सबने उससे नाते खत्म कर लिए थे। उसने अकेले कमरे में पहली रात को जहर खाया, जो उसकी बॉडी में पहले से मिला था या घर से आए उस खाने में था या उस जूस में था जो उसने पहली शाम पिया या कोई टेबलेट...कुछ भी हो सकता है।

"होप यू ऑल आर अंडरस्टैंड।" वार्डन अंत में बोली।

यस मैम कहकर सब अपनी अलग-अलग भावनाओं, चेहरे के अलग-अलग भावों को लिए वापस अपने-अपने कमरों में लौट आए। मेरी छुट्टियाँ हो चुकी थीं और पापा मुझे समर वेकेशन के लिए लेने आ रहे थे। मैं तो जा रही थी। वहाँ छूट रहा था मिल्की दी का वो 101 नंबर कमरा, जिस पर अब हॉस्टल का ताला लगा दिया गया था, न जाने कब खुलने के लिए। मैंने उनके मुँह से निकलते झागों का नजारा देखा था, झाग जो कुछ सूख-से गए थे। एग्जाम के पहले जब सुबह आने की मैं जिद कर रही थी, तब आती तो झाग शायद गीले ही होते न! यह सोचकर आँखें बारिश कर पड़ती थीं बेमौसम, बेअदब होकर।

वो मेरा उनको मन ही मन कई थप्पड़ मारकर, झझकोरकर पूछना कि वो धोखेबाज क्यों निकलीं मेरे साथ, वो ऐसे कैसे चली गई, वो इतनी बहादुर पिशी की इतनी कायर दीदी कैसे हो सकती थीं?

वो उनके निर्जीव शरीर से पूछना था मुझे कि वो क्यों मजबूत नहीं रहीं, उनको किसने

इतना हक दिया कि वो वापस आकर मुझसे मिलने का अपना वादा तोड़ दें। मुझे उन्हें बताना था कि वो समझती क्या हैं अपने आप को, उन्होंने क्यों मुझे इतना गैर कर दिया कि कभी ये सब बताया ही नहीं।

आज मैं जा रही थी उस जिंदगीभर के बोझ जैसे अफसोस को साथ लिए। उनके बदले को पूरा न कर पाने का अफसोस। जब उन्होंने मुझे अपना कभी समझा ही नहीं, तो मैं उनका एहसान कैसे रख सकती हूँ का अफसोस। अफसोस कि उन्होंने तो मेरी जान बचाई, पर मैं उनकी जान नहीं बचा पाई। उनके वो ट्रिप पर जाने के 15 दिन बताकर मुझसे आखिरी बार मिलने के पल का अफसोस, जिसमें मैंने उन्हें सिर्फ ये सोचकर कॉल नहीं किया कि वो खुश होंगी, बिजी होंगी या रिकवर हो रही होंगी, कहीं वो डिस्टर्ब न हो जाएँ। उस हर मिनट, हर घंटे और हर दिन का अफसोस, जो न जाने किस तरह के दर्द, कितनी बेबसी और कैसी असहायता में गुजरे होंगे उनके। उस अप्सरा जैसी खूबसूरती और सोने जैसे दिल के एक-एक आँसू का हिसाब मेरा दिल चीखकर मुझसे माँग रहा था, जो मेरी मिल्की दी ने अपने उन आखिरी मनहूस दिनों में बहाए होंगे।

एक मासूम जिंदगी आज एक बार फिर एक बुरी ताकत के आगे घुटने टेक गई थी। मैं पूछना चाहती थी मिल्की दी से वो सब गिने हुए सवाल, जिनके जवाब अब कभी नहीं मिल पाएँगे। हमेशा के लिए फँस जाने वाली फाँस की तरह, जो ताउम्र मेरे हलक में अटकी रहेगी। मिल्की दी का हँसता चेहरा, जो अब मैं कभी नहीं देख पाऊँगी। मैं छोड़े जा रही थी वो कैफे, जहाँ मिल्की दी ने पहली बार मुझे अपने फेसबुक अकाउंट का सच दिखाया था। वो बाहर की रिचार्ज की दुकान, जिस पर खड़े होकर रात को वो मुझे अक्सर चिढ़ाती थीं, क्योंकि उनकी तरह मुझे और बाकी स्टूडेंट्स को परमिशन नहीं थी बिना आउटिंग पास बाहर जाने की। वो 3rd फ्लोर की सीढ़ियाँ, जहाँ से शाम का ढलता सूरज सबसे सुंदर दिखता था। वहाँ पर ही तो सबसे छुपकर, दिन और रात मिलकर सबसे प्यारी शाम हमारे सामने बनाते थे। वो बड़ा-सा कूड़ेदान जो खासतौर पर मिल्की दी के कमरे के बाहर की तरफ रखा जाता था, ताकि वो अपनी बियर की बोतलें यहाँ-वहाँ न फेंकें।

वो मेरे कमरे से 101 नंबर तक जाने में हर रोज रास्ते में पड़ने वाला गलियारा, जो आज बहुत सूना लग रहा था, इतना सूना कि कोई भी रौनक अब उसे कभी भर नहीं पाएगी। अब वो शाम उनके बिना एकदम चुपचाप आकर चली जाएगी, बिना शोर मचाए। वो गलियाँ, वो सड़कें, वो ग्लैमर, वो फैशन शो का स्टेज क्या जब दूसरी मॉडल लाएगा, तो उनकी कमी महसूस नहीं करेगा?

हॉस्टल में हर सुबह अब भी मेस खुलेगी, पहलवान आंटी अब भी वैसे ही पराठे देंगी, दूध के कम-ज्यादा होने पर अब भी लड़ाई होगी, वार्डन अब भी अनाउंसमेंट करेगी, लेक्चर भी होंगे, प्रेयर भी होगी, लाइब्रेरी वैसे ही खचाखच होगी, प्ले अब भी कराए जाएँगे, चंदा और ट्रॉफी कॉलेज के पास अब भी आएँगी। सब वैसा ही चल पड़ेगा। बस एक कुछ मिसिंग होगा, सिर्फ एक, मेरी मिल्की दी! मैं आज जा रही हूँ घर, आऊँगी वापस अपने फाइनल ईयर को पूरा करने और एक साल, सुपर सीनियर बनकर... पर मिल्की दी नहीं होंगी।

मन लगातार उड़ते-उड़ते ये भी नहीं देख पाया कि पापा लेने आ चुके थे और हम उस सफर के लिए निकल गए थे, जिसकी मंजिल मेरा घर था। मैं चल पड़ी थी अपने उस भावनात्मक जुड़ाव

के साथ मन पर एक बोझ लिए, वो बहुत सारी टीस भरी यादें जो अक्सर रातों को जगाकर बेचैन करेंगी। ढेर सारे वो आँसू बहा लेना उन रातों को, चौंककर जब नींद खुलेगी। अब रोड पर ध्यान से चलना होगा, क्योंकि मिल्की दी नहीं आएँगी अब ट्रक से बचाने। वो नाराज होंगी मुझसे, क्योंकि मैं उन्हें नहीं बचा पाई। पर मैं ऐसा क्या करूँ, जिससे वो मान जाएँ, वापस आ जाएँ फिर से लौटकर? मैं वो सब कुछ करूँगी जिससे मैं उन्हें वापस ला सकूँ पर शायद मैं भी ये जान चुकी हूँ कि वो इस रूप में अब कभी मेरे सामने आकर मुझे पिशी डार्लिंग नहीं कहेंगी। शायद अब कलेजा मुँह को आ रहा है, कहीं मैं दीवारें न नोंचने लगूँ। ये पागलपन बढ़ न जाए और मैं अपने सिर के बाल न नोंच दूँ। मैं वापस दबा दे रही हूँ मिल्की दी से जुड़ी हर टीस, उन पीछे छूट चुके जंगलों में जहाँ उनसे जुड़ी दास्ताँ, उनकी ये दर्दभरी कहानी कोई और न सुन पाए। इसे अपने सीने की कैदी बनाकर कहीं कूद जाऊँ पानी में, जो बहाकर कभी न खत्म होने वाले समंदर में डाल दे मुझे। जहाँ जंग मौत पर जाकर रुके, क्योंकि समंदर मौत पर जाकर खत्म होता हो। बस वहीं है मेरी असल मंजिल, मेरे सीने में दफन इस दर्दभरी कहानी की मंजिल, जहाँ मैं मिल्की दी से मिलकर उनको बस इतना बता सकूँ कि अगर जिंदा रहती तो अपनी जंग जीत सकती थीं वो, मर गई तो याद तक से जा रही हैं।

RAJ COMICS NOSTALGIA

For Comics Novels & Books Request

PLEASE JOIN

@comics4nostalgia

@pustaksangrahalaya